किकक्क १- एडी

[কবি মুকুন্দরাম-বিরচিত]

প্রথম ভাগ

শ্রীশ্রীকুমার বন্দ্যোপাধ্যায়, এম. এ., এল-এল. বি., পি-এইচ. ডি.



কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়

নৃতন সংক্রব : 1759 B. T.—August, 1952—E

PRINTED IN INDIA

TRINTED AND PUBLISHED BY PRADIPKUMAR GHOSH, SUPERINTENDENT, CALCUTTA UNIVERSITY PRESS
48, HAZRA ROAD, BALLYGUNGE, CALCUTTA.

ः मृठी :

| বিষয় | -\ | | | पृष्ठे' |
|-----------------------------|-------|-------|-------|------------|
| ভূমিকা | | | ••• | (>>) |
| গণেশ-বন্দনা | | | ••• | > |
| স রস্বতী-বন্দনা | | ••• | | 8 |
| মহাদেব-বন্দনা | | ••• | | • |
| লক্ষী-বন্দনা | • • • | | | ۶۰ |
| শ্রীরাম-বন্দনা | | •• | • • • | > 2 |
| চণ্ডী-বন্দনা | | • | • • | > e |
| ७क (দব-ব শ ন) | | ••• | ••• | >9 |
| ঐচৈতগ্য-বন্দন। | | ••• | | \$6 |
| मिश्-वन्म ना | ••• | | | २० |
| প্রার্থনা | ••• | ••• | | રહ |
| গ্রন্থ উৎপত্তির কারণ | | ••• | •• | २३ |
| স্ষ্টপালা আরম্ভ | • • • | | ••• | ૭ ૯ |
| আদি দেব | | *** | | ৩৫ |
| আদি দেবী | • • • | ••• | | ৩৬ |
| স্ষ্টি-প্রকরণ | • • • | | | દ્રષ્ટ |
| মহুর প্রজাস্ষ্টি | | ••• | | 88 |
| ভৃগুমুনির যজারন্ত | | ••• | •• | 8 4 |
| দক্ষের শিবনিন্দা | | | | 8 9 |
| দক্ষের প্রতি নন্দীর শাপ | • • | ••• | | 85 |
| শিবের নিকট গোরীর প্রাথ্না | | * * * | • • | (0 |
| গৌরীর দক্ষালয়ে গমন | | | • • • | (|
| দক্ষের প্রতি গৌরীর নিবেদন | | | | e 8 |
| দক্ষের শিবনিন্দা | | ••• | ••• | ee |
| শতীর দেহত্যাগ | ••• | ••• | ••• | 69 |

(৪) কবিকশ্বণ-চণ্ডী

| বিষয় | | | | পৃষ্ঠা |
|------------------------------|------------|-------|-------|-------------|
| দক্ষ-যজ্ঞনাশে শিবদূতের গমন | ••• | ••• | • • • | د ۶ |
| দক্ষয়জ্ঞ-ভঙ্গ | ••• | ••• | • • • | હર |
| গোরীর জন্ম • | | ••• | • • • | 92 |
| গোরীর রূপ | • • • | ••• | ••• | 98 |
| নারদাগমন | | ••• | | ৭৬ |
| হিমালয়ের প্রতি নারদোপদেশ | ও মদন-ভম্ম | ••• | • • • | 99 |
| রতির থেদ | ••• | ••• | | ۶. |
| রতির প্রতি দৈববাণী | ••• | | • • • | ৮৩ |
| গোরীর তপস্থা | ••• | • • • | ••• | ৮৫ |
| শঙ্করের ছলনা | ••• | ••• | | ৮৭ |
| হরগোরীর কথোপকথন | ••• | ••• | • | ৮৯ |
| গোরীর অধিবাদ | ••• | | | ٥٠ |
| মেনকার খেদ ও শিবের মদনমে | হিন বেশ ধা | রণ | ••• | 36 |
| নারীগণের পতিনিন্দা | ••• | • • • | | અષ્ટ |
| হরগোরীর বিবাহ | ••• | | ••• | 7。。 |
| গণেশের জন্ম | ••• | ••• | | ১৽৩ |
| গণেশের দেহে জীবন-সঞ্চার | ••• | 3 . 9 | | > ° ¢ |
| কার্ত্তিকে য়ের জ ন্ম | 37, | | ••, | ५०५ |
| গোরীর সহিত মেনকার কলহ | • • | ••• | • • | >>> |
| শঙ্করের ভিক্ষা | **" | • | *** | 220 |
| হরগৌরীর কলহারম্ভ | *** | | ••• | 226 |
| গোরীর খেদ | •• | ••• | *** | 224 |
| পদ্মার উপদেশ | | ••• | ••• | ५ २० |
| দেবীর আজ্ঞায় পুরী-নির্মাণ | • • • | ••• | ••• | ऽ२२ |
| কলিঙ্গরাজের প্রতি স্বপ্নাদেশ | ••• | ••; | ••• | ડર ૧ |
| চণ্ডী পূ জা | | *** | ••• | ১ २१ |
| কলিঙ্গরাজের স্তব | ••• | • 4 0 | ••• | ১২৯ |
| পশুদিগের প্রতি দেবীর বরদান | • • | ••• | ••• | 303 |

| | 35 | र्ही | | (@ ` |
|-----------------------------------|-------------|---|-------|----------------|
| বিষয় | | | | পৃ हे1 |
| পশুরাজ-সভা | | ••• | ••• | 200 |
| শিবপূজা প্রচার | | ••• | | 206 |
| শক্তিপৃজা-প্রচারের স্কনা | | ••• | | ે ૦૬ |
| নারদের প্রতি ইব্রুবাক্য | | | ••• | 202 |
| ইক্রের প্রতি নারদের উক্তি | ••• | | ••• | >8 |
| ইন্দ্রের শিবপৃ জা র উচ্চোগ | | ••• | | 785 |
| নীলাম্বরের প্রতি ইন্দ্রের আ | प्रम | ••• | | 284 |
| নীলাম্বরের পুষ্পচয়ন | | ••• | | >8€ |
| ইন্দ্রের শিবপূজা | | | | >89 |
| ভগবতীর-মৃগীরূপ ধারণ | ••• | | | 282 |
| नीनाश्वदत्रत्र (थम | | ••• | • • • | >6> |
| নীলাম্বকে মহাদেবের অভি | চশাপ | •• | | ১৫৩ |
| নীলাম্বরকর্তৃক শিবের স্তব | ••• | ••• | | >00 |
| ইন্দ্ৰকৰ্তৃক শিবেব স্তব | | ••• | | >69 |
| ছায়ার সহমরণ | | ••• | | ኃ৫৮ |
| নিদয়াকে ভগবতীর ঔষধ-দা | न | • • • | ••• | <i>>७</i> ० |
| নিদয়ার গর্ভ | | •• | | ১৬২ |
| সাধ-ভক্ষণ | | | ••• | 366 |
| কালকৈতুর জন্ম | | | ••• | ১৬৭ |
| ব্যাধ-নন্দনের নামকরণ ও ক | ৰ্ববেধ | ••• | ••• | ১৬৯ |
| কালকেতুর বাল্যক্রীড়া | ••• | ••• | | 590 |
| কালকেতুর বিবাহের অন্নবন্ধ | | ••• | ••• | 39 9 |
| কালকেতুর বিবাহ-উচ্চোগ | ••• | • | ••• | ১৭৬ |
| কালকেতুর বিবাহ | ••• | ••• | | >96 |
| কালকেতুর স্বদেশে গমন | | ••• | ••• | 76.7 |
| কালকেত্র মৃগয়া | ••• | | ••• | ১৮৩ |
| কালকেতুর ভোজন | ••• | | | 3 69 |
| সিংহের নিকট পশুগণের নি | বেদন | ••• | ••• | 745 |

(৬) কবিকশ্বণ-চণ্ডী

| বিষয় | | | | পৃষ্ঠা |
|--------------------------------------|---------|--------------|-------|--------------|
| দিংহের নিকট বাঘিনীর আ | বেদন | ••• | | زه ز |
| সিংহের সম র-সজ্জা | | | | \$25 |
| কালকেতুর প্রথম যুদ্ধযাত্রা | | | | 728 |
| পশুরাজের যুদ্ধে গমন | ••• | | ••• | 750 |
| পশুরাজের সহিত কালকেতুর | যুক | | • • • | 729 |
| পশুগণের র ণে ভঙ্গ | • • | | •• | २ ०० |
| পশুগণের ক্রন্দন | • • | | | २०५ |
| চণ্ডীর নিকটে পশুগণেব ছঃখ | -নিবেদন | ••• | | २०० |
| চণ্ডীব প্রশ্ন ও পশুগণের উত্ত | ব | | • • | ২০৮ |
| পশুগণকে ভগবতীর অভয়-দ | ান ও গো | ধকা-রূপ-ধারণ | ••• | >>> |
| কালকেতুর বনযাত্রা | • • • | | • • | २১१ |
| ভগবতীর মৃগীরূপ-ধারণ | • • | ••• | | 223 |
| মায়ামৃগ উপাখ্যান | | • | | २ २ २ |
| কাননে কালকেতুর খেদ | | | | ३२ 8 |
| গোধিকার্মপিণী দেবীর চিন্তা | | •• | | २ २ ९ |
| ফ্ ল বার থেদ | | •• | ••• | २२५ |
| ধুন্নরা ও কালকে তু র কথোপ | কথন | ••• | • • • | २७० |
| ভগবতীর নিজমূর্ত্তি ধারণ | ••• | •• | ••• | २७১ |
| বিশ্বকর্মার দশাবতার লিখন | | • • | ••• | ২৩৩ |
| বিশ্বকশার অক্তাক্ত বিবিধ লিং | ধ্ন | • • | | ২৩৭ |
| চণ্ডীর দহিত জুলরার সাকা | ** | | * * * | २8० |
| চণ্ডীকে ফ্ররার প্রশ্ন | | • • • | | २85 |
| চণ্ডীর পারিচয়-দান | • • | | •• | ₹8¢ |
| চণ্ডী র প্রতি ফুল্লরার উপদেশ | | | | २८৮ |
| ফুল্লরার পুনর্কার উপদেশ | | ••• | | २৫० |
| ফ্লরার প্রতি চণ্ডী | ••• | ••• | ••• | ૨ ৫৬ |
| ফু ল রার বারমাদের হ :খ | | •• | · • • | २৫१ |
| কালকেতুর প্রতি ফুল্লরা | | ••• | | २७७ |

| | স্হী | | | (9) |
|-------------------------------|---------------|-------|-------|--------------|
| বিষয় | | | | পৃঠা |
| ছন্মবেশিনী চণ্ডীর রূপবর্ণনা | | | • • | ર |
| কালকেতুর প্রতি ফুলবার উপ | TP * 1 | | | ২৬৬ |
| ফুল্লরার প্রতি কালকেতু | | | | २ १ ० |
| চণ্ডীর প্রতি কালকেতুর উপদে | न *। | | ••• | २१১ |
| দেবীর প্রতি কালকেতুর ক্রো | | | ••• | २ १७ |
| দেবীর পরিচয় প্রদান | | | • • • | २१७ |
| দেবীর শতনাম কথন | | | | २৮२ |
| মহিষমৰ্দিনীরূপধারণ | | | | २৮৫ |
| কালকেতুর ধনপ্রাপ্তি | | | | २৮१ |
| বণিক্কে স্বপ্প-প্রদান | | | | २वऽ |
| বণিকসহ কালকেতুর কথোপৰ | ক্থন | | | २ व्र |
| কালকেতুর অঙ্গুরী-বিক্রয় | | | | २ ३ 8 |
| কালকেতুর দ্রব্যাদি ক্রয় | | | • • • | २२१ |
| কালকেতুর নিকট বেকণিয়াগ | ণের আগমন | | ••• | २३३ |
| বনে ব্যাদ্র-ভীতি | • | | | ७०५ |
| ব্যাঘ্রসহ কালকেতুর যুদ্ধ | | • | | ७०३ |
| বন-কর্ত্তন | ••• | | ••• | ৩০৪ |
| কালকেতুকর্ত্ক ভগবতীর স্বব | ī | | • • • | ७०१ |
| কালকেতুর গৃহনিশ্বাণ | | ••• | | ७०३ |
| গুজুরাট নগ্র-নির্মাণ | | • | ••• | ٥٧٧ |
| কালকেতুর প্রার্থনা | | • | | 578 |
| গঞ্চার দহিত ভগবতীর কলহ | ••• | | ••• | ७১१ |
| সমূদ্র ও ইচ্ছের নিকট ভগবও | ীর গমন : | ••• | ••• | ۵۲۵ |
| মেঘগণের প্রতি ইন্দের আদে | pet . | | ••• | ৩২ ১ |
| কলিঙ্গদেশে ঝড়-বৃষ্টি আরম্ভ | | • • | | ৩২৩ |
| নদনদীগণের কলিঙ্গদেশে যাত | হা | ••• | ••• | ৩২ ৭ |
| কলিঙ্গরাজকর্তৃক বর্যার শান্তি | | | ••• | ৩২৯ |
| কলিন্ধবাসিগণের থেদ | . | • · · | ••• | ৩৩১ |

(৮) কবিকশ্বণ-চণ্ডী

| বিষয় | | | | पृष्ठे 1 |
|--------------------------------------|-------------------|-------|-------|-------------|
| বুলান মণ্ডলের প্রতি কালকে | হ | ••• | ••• | ७७८ |
| কালকেতুর নিকটে ভাঁডুদভের | র আগমন | • • • | | ৩৩৮ |
| কালকেতুর প্রতি ভাঁডুদ্ ত্ত | | ••• | • • • | 98 • |
| মুসলমানগণের আগমন | ••• | ••• | | ৩৪৩ |
| মুসলমানদিগের শ্রেণী-বিভাগ | ••• | ••• | | ৩8 € |
| ব্রাহ্মণগণের আগমন | ••• | ••• | • • • | ৩৪৭ |
| কায়স্থগণের আগমন | ••• | ••• | • • • | િલ્લ |
| গোপ প্রভৃতি জাতির আগম- | 4 | | | ં ૧ |
| ধীবর প্রভৃতি অক্যান্য জাতির | আগমন | ••• | ••• | ೧೯೨ |
| হাট পত্তন | | ••• | | ৩৬২ |
| রাজসমীপে হাটুরিয়াগণের অ | †বেদন | | ••• | ৩৬৩ |
| কালকেতু-সমীপে ভাঁডুদত্তের | | ••• | | ૭૯૯ |
| কলি ন্ধরাজ-সভা য় ভাঁডুদত্তের | আবেদন | | | ೦೬ ನ |
| গুজরাটে কলিঙ্গরাজের দৃত- | প্রেরণ | ••• | | ७१५ |
| কোটালের গুজরাট-দর্শন | | ••• | | ৩৭৪ |
| কলি সরাজ-সমীপে কোটালের | র গুজরাট-বর্ণন | ••• | | ৩৭৮ |
| কলিঙ্গরাজের যুদ্ধ-শব্দা | | | | ৫৮০ |
| ক লিঙ্গ রাজ-সেনার যুদ্ধযাত্রা | ••• | | | ৩৮২ |
| চর-মূথে কালকেতুর গুজর াট | -আক্রমণ-বার্কা- | শ্ৰবণ | ••• | ৩৮৪ |
| কালকৈতুর রণ-সঞ্জা | ••• | ••• | | ৩৮৬ |
| কালকেতুর যুদ্ধ-যাত্রা | | | | ৩৮৮ |
| কালকেতুর যুদ্ধ | ••• | ••• | ••• | ಆರಿತ |
| যুদ্ধ-দর্শনে ভাঁছুদত্তের চিস্তা | | ••• | | 450 |
| কালকেতুর প্রতি ফুল্লরার উণ | १ ८७*। | | | ತ್ವ |
| কোটালের চিস্থা | | ••• | | 8 • > |
| ভাডুদভের কালকেতৃ-অন্বেষ | ণ গমন | ••• | *** | 8 • 6 |
| ফুলবার নিকট ভ"বডুদত্তের ক | পট-বাক্য | | | 8 • 8 |
| একাকী কালকেতৃর যুদ্ধ | | | | 8•% |

| | স্চী | | | ৯ |
|--|----------------|-----------|----------|--------------|
| विषय | | | | পৃষ্ঠা |
| কোটাল-কর্তৃক কালকেতুর বন্ধ | 7 | | | 8 0 7 |
| কোটালের প্রতি ফুলরার বিনয় | | | ••• | ۥ8 |
| ফুল্লরাকে কোটালের শাস্থনা-দ | ান ও কাল | কেতুকে লই | য়া রাজ- | |
| সভায় গমন | | ••• | | 872 |
| কলিঙ্গ-নৃপতির সহিত কালকে | তুর কথোপ | কথন | | 875 |
| কালকেতুর কারাদণ্ড | | | •• | 87¢ |
| কালকেতুর থেদ | ••• | | ••• | 879 |
| কালকেতুকৰ্তৃক চৌতিশা স্থাতি | 5 | | ••• | 8 74 |
| কালকেতুর বন্ধন-মোচন | | | *** | 8२७ |
| কলিঙ্গরাব্দের প্রতি চণ্ডীর স্ব | প্লাদেশ | ••• | | 8२४ |
| রাজার স্বপ্ন-বিবরণ | ••• | | •• | 800 |
| পাত্রমিত্রস্ হ কলিঙ্গ রা জে র পর | াম ৰ্শ | ••• | •• | 807 |
| কলিশ্বাজ-কর্তৃক কালকেতুর | সম্মা ন | | ••• | 800 |
| মৃত দৈক্তগণের জীবনলাভ | | ••• | • • • | 8 ७ ৫ |
| গুজুরাটে আনন্দোৎসব | | ••• | •• | ৪৩৬ |
| কালকে তু র প্রতি ভাঁডুদত্তের | কপট বাক্য | | • • • | ४०५ |
| ভাডুদতের মন্তকম্ওন | | | ••• | 882 |
| কালকেতৃর শাপাস্ত | | | | 888 |
| নীলাম্বরের জন্ম ইন্দ্রের শোক | ··· | ••• | ••• | 88°C |
| কালকেতুর প্রতি স্বপ্নাদেশ | | ••• | •• | 886 |
| পূষ্পকেতৃকে রাজ্য-সমর্পণ | | | ••• | 886 |
| নীলাম্বের স্বর্গারোহণ | | ••• | ••• | 8 ¢ ° |

ভূমিকা

মধ্যযুগের মঙ্গল-কাব্যগোষ্ঠীর মধ্যে যে একখানি কাব্য সংকীর্ণ ধর্মগত প্রয়োজন ছাড়াইয়া সার্বভৌম রসস্বীকৃতি লাভ করিয়াছে তাহ। মুকুন্দরামের কবিকস্কণ-চণ্ডী। গ্রন্থখানির রচনা-কাল ১৫৭৯ খ্বঃ অং বলিয়া গৃহীত হইয়াছে। মুকুন্দরাম যে যুগে চণ্ডীকাব্য রচনায় ব্রতী হন, তাহা এই কাব্য ধারার প্রথম সূচনা হইতে বিশেষ দূরবতী ছিল না। ইহাতে তাঁহার মাত্র ছুই জন পূর্বগামীর কথা শোন। যায়। চণ্ডীধারার প্রবর্তক মাণিক দত্তের উল্লেখ মুকুন্দরামের গ্রন্থে মিলে, কিন্তু মানিক দত্তের রচিত পুঁথি এখনও প্রকাশিত না হওয়ায় এই ধারার আদিম স্তারের রূপ-সম্বন্ধে আমাদের ধারণা অম্পৃষ্টই আছে। চণ্ডীধারার দ্বিতীয় কবি দ্বিজ মাধব বা মাধবানন্দ মুকুন্দরামের ঠিক সমসাময়িক— ১৫৭৮ খ্রঃ অব্দে তিনি তাঁহার গ্রন্থ রচনা আরম্ভ করেন। স্থুতরাং মুকুন্দরাম ইহার দ্বারা যে প্রভাবিত হইয়াছিলেন তাহা বিশেষ সন্দেহের বিষয়। দ্বিজ মাধবের সহিত মুকুন্দরামের গ্রন্থের তুলন। করিলেই মুকুন্দরামের কল্পনার মৌলিকতা ওপ্রসারশীলতার স্তম্পত্ত নিদর্শন পাওয়। যাইবে।

চণ্ডাদেবার উদ্ভব, তিনি পৌরাণিক-দেবত। কি অনার্য-দেবতা, তাঁহার সহিত ব্যাধজাতির সম্পর্ক, তাঁহার পরিকল্পনার মধ্যে বিবিধ দেবীর গুণবৈশিষ্টোর সংমিশ্রণ ইত্যাদি যে সমস্ত ঐতিহাসিক বা সাংস্কৃতিক প্রশ্ন মঙ্গল-কাব্যের অধিষ্ঠাত্রী দেবতাবর্গের সহিত ঘনিষ্ঠভাবে সংশ্লিষ্ঠ, আমি এই ভূমিকায় তাহার পুনক্তিমূলক আলোচনা করিব না। যাঁহারা সাহিত্যের এই পরিমণ্ডলঘটিত আলোচনায় বিশেষ আগ্রহশীল তাঁহাদিগকে শ্রীআগুতোষ

ভট্টাচার্যের 'মঙ্গল-কাব্যের ইতিহাস' ও কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে প্রকাশিত শ্রীযুক্ত সুধীভূষণ ভট্টাচার্যের দ্বারা সম্পাদিত দ্বিজ মাধ্বের 'মঙ্গলচণ্ডীর গীত'-এর নানা মৌলিক-তথ্যসংবলিত ভূমিকা পাঠ করিতে অন্তুরোধ করি। দশম হইতে দ্বাদশ শতাব্দীর মধ্যে বৈদিক, বৌদ্ধ-তান্ত্রিক, হিন্দু-তান্ত্রিক ওপৌরাণিক ইত্যাদি বিবিধ উৎস হইতে উদ্ভূত দার্শনিক মতবাদ ও দেবমূর্তি-পরিকল্পনার একটি সমন্বয়স্টুচক সংমিশ্রণ ঘটিতেছিল ও নানা দেবীর অবয়ব ও অন্তঃপ্রকৃতি একটি বিশিষ্ট রূপে সংহত হইয়া উঠিতেছিল। বোধ হয় স্থসংবদ্ধ সমাজ-জীবনে যে মাতৃপূজা পারিবারিক সংস্থার কেন্দ্রশক্তিরূপে প্রতিভাত হইতেছিল, তাহারই একটা আতিলোকিক প্রতিরূপ এই নবজাত মঙ্গল-কাবাগুলিতে দৈবী-মহিমামণ্ডিত হইয়া আত্মপ্রকাশ করিতে আরম্ভ করিল। অথবা পরিবর্তনধারা এই প্রক্রিয়ার বিপরীত গতি অনুসরণেও প্রবাহিত হইয়া থাকিবে। ধর্মসাধনায় শক্তিপূজার ক্রম-প্রাত্তাব পরিবার-জীবনে মাতৃমহিনা-স্বীকৃতির ভিত্তি রচনা করিয়া থাকিবে। সে যাহাই হউক, এই সময়ে হয়ত যুগপ্রয়োজনের অনুরোধে বাঙ্গালীর মনে মাতৃশক্তির প্রতি একটা প্রবল আবেগ জাগিয়া উঠিয়া তাহার সাহিত্যে সংক্রমিত হইয়াছিল। বেদ ও উপনিষদের যুগে পুরুষ-দেযতারই প্রাধাম্ম; নারী-দেবতা এখানে প্রায় অশরীরী ছায়ামূর্তির মত পুরুষ-দেবতার কায়ার অনুগামী; তন্ত্রশাস্ত্রে নারী মুখ্য, পুরুষ গৌণ। মনে হয়, ব্রহ্মতত্ত্ব-জিজ্ঞাসার অতিরিক্ত জটিলতা ও সৃশ্ব মনন-প্রাধান্তের প্রতিক্রিয়ারপেই জনসাধারণের চিত্ত ভক্তিবাদের দিকে আকৃষ্ট হয়, এবং এই ভক্তিবাদ প্রধানত মাতৃরূপিণী নারী-দেবতাকে আশ্রয় করিয়াই স্ফুরিত হয়। তন্ত্রশাস্ত্র শক্তির অসীম মহিমা কীর্তন করিয়া ও শক্তিপুজার নানা ছরুহ সাধনপ্রণালী নির্দেশ করিয়া এই প্রবণতার স্ত্রপাত করে। বৈষ্ণবদর্শনে শ্রীরাধাতত্ব ও পদাবলীসাহিত্যে

শ্রীরাধার উচ্ছৃসিত স্তব-স্তুতি ও তাঁহার মধ্যে অসীমন্থের ব্যঞ্চনা বাঙ্গালীর চিত্তে নারী-দেবতার প্রভাব বদ্ধমূল করিতে সহায়তা করিয়াছে। মোটকথা, যখন দ্বাদশ-ত্রয়োদশ শতাব্দীতে বাঙ্গালীর মানস সংস্থিতি উহার স্থকুমারত্ব, ভাবার্ক্তা ও পুরুষ-কারহীন অদৃষ্ঠনির্ভরতা লইয়া স্থায়িরূপ গ্রহণ করিল, তখন উহার অধ্যাত্ম আকুতি ও কাব্যস্প্তি-বৈশিষ্ট্য মঙ্গল-কাব্যের দেবীপূজার মাধ্যমে আত্মবিকাশের স্বাভাবিক প্রেরণা আবিষ্কার করিল।

কাব্যে রূপ পাইবার পূর্বে প্রায় ছুই-তিন শতাব্দী ধরিয়া এই দেবী-পরিকল্পনা তন্ত্রশান্তের ধ্যানে ও ভাস্কর্যশিল্পের নিদর্শন শিলা-মূর্তিসমূহে জাতীয় চেতনাকে অধিকার করিয়া আসিতেছিল। সাধক-ও শিল্পী-কবির অগ্রদৃতরূপে এই নবক্ষুরিত ধর্মবোধকে আবেগময় অনুভূতি ও কলাসৌন্দর্যের বিষয়ে রূপান্তরিত করিতেছিল। এীসুধীভূষণ ভট্টাচায তন্ত্রশাস্ত্রের ধ্যান উদ্ধার করিয়া দেখাইয়াছেন যে, চণ্ডীব মধ্যে বৈদিক সরস্বতী, পৌরাণিক গজলক্ষ্মী ও নানা তান্ত্রিক দেবীর সংমিশ্রিত সত্তা এক সুষমাময় ঐক্যে সংহত হইয়াছে। এই যৌগিক-সত্তাবিধৃতা দেবী ভক্ত-মানসের একাগ্র অভিলাষের প্রেরণাতেই আবিভূতি হইয়াছিলেন --ভক্ত যাহাকে কামনা করিয়া ধ্যানের মধ্যে যাঁহার মূর্তি কল্পনা করিয়াছিল, সাহিত্য ও শিল্প তাঁহাকেই ধ্যানলোক হইতে প্রত্যক্ষ সৌন্দর্যলোকে প্রতিষ্ঠিত করিল। এখন প্রশ্ন এই যে, নানা দেবীর অন্তঃসার লইয়া গঠিত এইরূপ মিশ্রমূর্তির প্রতি শাস্ত্রকার ও কলাবিদের হঠাৎ এইরূপ আবর্ষণ কেন জাগিল ? বৌদ্ধ-তান্তিকেরা কয়েক শতাবলী ধরিয়া বৌদ্ধ-ধর্মের ক্ষীয়মাণ প্রভাবের প্রতিষেধক ব্যবস্থ। হিসাবে নিজেদের উপাস্তা, ধর্মতত্ত্বকে হিন্দু-দেবদেবীর সাদৃশ্যে রূপান্তরিত করিতে চেষ্টা করিতেছিলেন। এই রূপান্তরীকরণ-প্রক্রিয়ায় তাঁহারা বিভিন্ন হিন্দু-দেবদেবীর

পার্থক্যটি ঠিক মত বজায় রাখিতে ধত্মবান্ ছিলেন না ইহাই মনে কর। স্বাভাবিক। হিন্দুমূর্তির বহিরাবরণে বৌদ্ধ-ধর্মতত্ত্বের সারাংশ পরিবেশন করা তাঁহাদের মুখ্য উদ্দেশ্য ছিল বলিয়াই মূর্তিপরিকল্পনার আদিম বিশুদ্ধি তাঁহাদের হাতে নানা সমজাতীয় নৃতন উপাদানের সংমিঞাণে সংকররীতির বিমিঞাতায় পরিণত হইতেছিল। বিশেষত বৌদ্ধ কাপালিকদের মধ্যে বীভংস ও ভাষণের প্রতি বিশেষ পক্ষপাত ছিল বলিয়াই এই মিশ্রধাতুতে গড়। মঙ্গল-কাব্যের দেবীসংঘের মধো একটা হিংস্র উগ্রতা প্রধান উপাদানরূপে অন্তর্ভুক্ত ২ইল। এই উগ্রা, প্রচণ্ডা, ধ্বংসাত্মিকা শক্তির সঙ্গে হিন্দুপুরাণের শমগুণপ্রধানা, ভক্ত-বৎসলা, কল্যাণরাপিণী মাতৃমূতির সংযোজনা হইয়া ক্রমশ উভয়ের সমীকরণ সংঘটিত হইল। বিশ্বনিয়ন্ত্রী শক্তির মধ্যে, পৃষ্টি-স্থিতি-প্রলয়ের বিপরীত অথচ গৃঢ়নিয়মবদ্ধ কার্যাবলীর মধ্যে, একট। স্বাভাবিক সামঞ্জস্ত আছে বলিয়াই কবিকল্পনায় দেবীর এই ভাষণ ও মধুর দিক্ সহজেই এক হইয়া গেল, এই পরস্পরবিরোধী উপাদানগুলি যে বিভিন্ন উৎস হইতে সংগৃহীত তাহা লোকে ভুলিয়া গেল। মঙ্গল-কাব্যরচয়িতার কাব্যে এই দ্বিমূর্তি এক হইয়া গিয়াছে, তবে বিভিন্ন কবির রচনায় উগ্র ও শাস্তগুণগুলির আপেক্ষিক পরিমাণ বিভিন্ন। দ্বিজ মাধবে দেবার উগ্রচণ্ডামূতিই প্রধান; মুকুন্দরামে দেবার শান্ত বরাভয়প্রদা মূর্তির স্নিগ্ধতাই বিশেষভাবে প্রকটিত হইয়াছে।

এই মিশ্রগুণসম্পন্ন। দেবীর জনপ্রিয়তার কারণ অনুসন্ধান করিতে গোলে আমাদিগকে মুসলমান শাসনের প্রাবম্ভিক যুগের ঐতিহাসিক ও সামাজিক প্রতিবেশের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে হইবে। বৌদ্ধতন্ত্র হইতে উদ্ভূত এই ভীমকান্তগুণের সমাবেশ তৎকালীন সমাজের বাস্তব অবস্থার সমর্থন পাইয়া জীবনেব একটি প্রধান অভীক্ষার বিষয় হইল। পারিপার্ষিক প্রতিকৃলতার ও ইহার প্রতিবিধানে আত্ম-ও রাষ্ট্র-শক্তির অপ্রাচুর্যের হেতু মানুষ নিজ-স্থ-স্বাচ্ছন্দ্য, নিরাপত্তা-ঐশ্বর্যের জন্ম অতিমাত্রায় দৈব-শক্তির অনুগ্রহপ্রার্থী হইয়া পড়িল। বিশেষ দেবীর পূজা করিলে অভাব-অন্টন, সাংসারিক আধি-ব্যাধি, শত্রুর অভিভব ও উৎপীডন হইতে রক্ষা পাওয়া বাইবে এইরূপ একটি বিশাস সার্বজনীন হইয়া উঠিল। ভক্তির আতিশযা ও দৃঢ্তা, দৈব-প্রসাদের স্থানিশ্চত প্রাপ্তির প্রতি ঐকান্তিক প্রত্যয়ের ভিতরে এক করুণ, প্রমুখাপেক্ষী অসহায়তার স্থুরই ধ্বনিত হইয়াছে। এই দেবী নৃতন বলিয়া তাঁহার প্রসাদও সসীম; অনেকের গুণ তাহার মধ্যে মিলিত হইয়াছে বলিয়া প্রত্যাশা তাঁহাব কারুণ্যের পরিমাপ, তাঁহার দানশীলতার সামানির্দেশ করিতেও অসমর্থ। স্বোপরি এই অকুপণ প্রসাদবর্ধণের মূলে আছে মাতৃহাদয়ের অকৃত্রিম স্নেহশীলত। ও সন্তানবাৎসল্য। এই দান মাতৃমেহসিঞ্চিত বলিয়া ইহা নির্মল, বিশুদ্ধ, সর্বপ্রকার আত্মাব-মাননার স্পর্শবিমুক্ত। সন্তানের প্রতি মাতার অতিপক্ষপাত ভক্তের সমস্ত জীবন ধরিয়া উদাহত হইয়াছে; সাংসারিক একচোখো জননীর মত ইনি শুধু ভক্তের ভাল করিয়াই ক্ষান্ত নহেন, তাঁহার শত্রুর মন্দ করিতেও সর্বদা প্রস্তুত। এ যেন ঘরের মা স্বর্গের দেবার অমিতশক্তির অধিকারিণী হইয়া ভাঁহার সমস্ত শক্তি ভক্তহিতে নিয়োগ করিতে কোন উচ্চতর নীতির বাধা মানেন না। চণ্ডী কেবল যে কালকেতুকে সাত্যভাধন ও মহামূল্য অঙ্গুরীয় দিয়াছেন তাহা নহে; তাহার নগরে প্রজা বসাইবার জন্ম তাঁহার পূর্বভক্ত নিরপরাধ কলিঙ্গরাজের রাজ্যের উপর বতার ধ্বংসকারী প্লাবন বহাইয়া দিয়াছেন। ভক্তের ভূচ্ছতম খেয়াল পূর্ণ করিতেও তাঁহার কোন অনিচ্ছা নাই। তাঁহার নিয়মিত পূজা সম্পন্ন হইলেই তিনি ভক্তের অক্যান্স ত্রুটি-বিচ্যুতির প্রতি সম্পূর্ণ অন্ধ: মাতৃস্নেহের দীমাহীন প্রশ্রহের

সহিত যদি বিশ্ববিধানের অমোঘ শক্তির এরূপ শুভসমন্বয় ঘটে, তবে এই সন্মিলিত শক্তির নিকট যে পুরাতন আদর্শের দেবদেবী-সংঘ পরাজয় বরণ করিবেন, তাঁহার ভক্তের সংখ্যা যে দিন দিন বাড়িয়াই যাইবে, প্রসাদলোভী প্রাকৃত জনসাধারণের প্রতিনিধি-স্থানীয় অসংখ্য কবি যে তাঁহার স্তবগানে মাতিয়া উঠিবেন তাহাতে আশ্চর্গের বিষয় কি আছে ?

(2)

মঙ্গল-কাব্যে যে সমস্ত দেবদেবীর স্তবগান করা হইয়াছে. তাঁহাদের সকলের মধ্যেই কতকগুলি সাধারণ লক্ষণ লক্ষ্য করা যায়। ইহাদের মধ্যে শান্ত ও উতা রস বিভিন্ন পরিমাণে মিশ্রিত হইয়াছে ও ইহার। সকলেই ধর্মক্ষেত্রে নৃতন আগন্তকরূপে জনসাধারণের মধ্যে নিজ পূজাপ্রচারের জন্ম উৎকট ও অংশাভনরূপে আগ্রহশীল। এই নবাগত দেবদেবীগোষ্ঠীর মধ্যে চণ্ডী ও ধর্মঠাকুর মোটের উপর শমরস প্রধান। চণ্ডীদেবীর চরম পরিণতিতে যদি-ব। কোন অনার্ঘ-উপাদান মিঞ্জিত থাকে, তথাপি মোটের উপর ইহার পৌরাণিক রূপটিই আর্যধর্মের যুগ-যুগান্তরবাহী সহজ ধারার সঙ্গে সামঞ্জন্মীল। বাঙ্গালীর বিশিষ্ট মানসগঠন যখনই সর্বভারতীয় আদর্শ হইতে স্বাতস্ত্রো তীক্ষ্ণ ও উজ্জল হইয়া উঠিল, তখনই দৈবশক্তিকে মাতৃরূপে পরিকল্পনা কর। ইহার স্বভাবধর্ম হইয়। দাড়াইল। চণ্ডী এই স্বভাবধর্মের অনুকৃল ও পরিপোষকরপে শীঘ্রই বাঙালীর ধর্ম-সংস্কারের অঙ্গীভূত হইয়া পড়িলেন ৷ তাঁহার ভয়ংকর রূপকে আচ্ছন্ন করিয়া তাঁহার দয়াময়ী অন্নপূর্ণামূর্তি প্রবল হইয়া উঠিল। বিশেষত ভিথারী, ছন্নছাড়া, আত্মভোলা মহেশ্বরের গৃহিণী ও কার্তিক-গণেশের জননীরূপে তিনি বাঙ্গালী পরিবারের পালনী-শক্তির আধার মাতার সঙ্গে অভিন্নরূপে প্রতিভাত হইলেন।

যেমন বৃহত্তর জ্যোতির মধ্যে ক্ষুদ্রতর বিলীন হইয়া যায়, তেমনি বিশ্বমাতার দিব্য প্রভার মধ্যে গর্ভধারিণীর ত্যাগমহিমা-সমুজ্জল স্লিগ্ধ কান্তি মিশিয়া এক হইয়াগেল। সেইজক্য চণ্ডীপূজার প্রচলনের বিরুদ্ধে বিশেষ কোন উত্তম দেখা যায় না—কলিঙ্গরাজ ও কালকেতু উভয়েই স্বপ্নাদেশ পাইয়া দেবীর ইচ্ছাপুরণে তৎপর হইয়াছেন। অবশ্য মুকুন্দরামের চণ্ডীমঙ্গলের দ্বিতীয় খণ্ডে ধনপতি সদাগর দেবীর ঘটে পদাঘাত করিয়া বিপদ্কে আমন্ত্রণ করিয়া আনিয়াছে, কিন্তু এই ঔদ্ধতা কেবল অবিংবকপ্রসূত, কোন বন্ধমূল বিমুখতা বা বিরোধের ফল নহে। শ্রীমন্তের সহিত দেবীর আচরণ তাঁহার ছলনাময়ী প্রকৃতির নিদর্শন, কিন্তু মাতৃ-স্বেহের অগাধ গভীরতা ও অপরিমেয় বিস্তারের মধ্যে এইরূপ কপট অভিনয়ের স্থান আছে। কুপথগামী পুত্রের প্রতি শাসন-তর্জন মাতার স্নেহশীলতার বিরোধী নহে। ধর্মঠাকুর যদিও বিষ্ণুর অবতাররূপে হিন্দু-দেব-পরিমণ্ডলে স্থান গ্রহণ করিয়াছেন, তথাপি তাঁহার চরিত্র হইতে বহিরাগত আগস্তুকের চিহ্ন সম্পূর্ণ-ভাবে বিলুপ্ত হয় নাই। তাঁহার পূজাপদ্ধতি ও চরিত্র-পরিকল্পনায় আর্থেতর প্রভাব এতই সুস্পষ্ঠ, তাঁহার প্রতিবেশ ও প্রতিষ্ঠান-ভূমির মধ্যে এমন একটা উদ্ভট অসাধারণত বিভাষান, এমন কি উ৷হার আবিভাবের মধ্যে এমন একটা কুষ্ঠিত অপরিচয়ের অম্পষ্টতা পরিব্যাপ্ত, যাহাতে তিনি ঠিক হিন্দু-ধর্মসংস্কারের অনুমোদিত দেবতত্ত্বের অন্তর্লীন হইতে পারেন নাই। কিন্তু তিনি অন্ত্যজ সমাজের খিড়িকি দরজা দিয়া হিন্দুর পূজামগুপে প্রবেশ করিলেও তাঁহার বিরুদ্ধে কোন তীব্র বিদ্রোহ ও উগ্র প্রতিবাদ প্রাধুমিত হইয়া উঠে নাই। তাঁহার ভক্ত লাউদেনের প্রতি মহামাত্যের আক্রোশ রাজনৈতিক বা ব্যক্তিগত কারণে, ঠিক ধর্মবিরোধমূলক নহে।

মনসাদেবী কিন্তু এই সাধারণ নিয়মের ব্যতিক্রম ৷ তাঁহার ৪-2303 B. T.

দেবত্বস্বীকৃতি প্রচলিত সংস্কার ও ঔচিত্যবোধের প্রতি এরপ রচ্ আঘাত হানে যে, ইহা মানুষের মনে ভক্তিবৃত্তির সমর্থনবঞ্চিত। মানবমনের স্বাভাবিক গতির বিপরীতমুখী বলিয়া ইহার বিরুদ্ধে বিক্ষুদ্ধ প্রতিবাদ কোন দিনই সম্পূর্ণ শান্ত হয় নাই। বাস্তব জীবনের একট। রাচ বিভীষিকা, জন্তুজগতের গহনতার বিবর হইতে উৎক্ষিপ্ত একটা হিংস্ৰ জিঘাংসা, মতর্কিত অপঘাতের একটা ভয়াবহ আবিভাব—ভক্তির বাহা অনুষ্ঠান, পুজার. আড়ম্বরে দ্বারা যতই আবৃত হউক না কেন, কখনই দেবত্বেব অবিসংবাদিত মুর্যাদায় প্রতিষ্ঠিত হইতে পারে না। সেইজন্ম মনসার পূজাপ্রচার বরাবরই একটা বিরোধিতার সম্মুখীন হইয়াছে। অবশ্য মনস। ঠিক নূতন দেবতা নহেন, পৌরাণিক যুগ হইতেই তাহার দেব মহিমা স্বীকৃত হইয়া আসিতেছে। মহাভারতে নাগমাতা নিজ আত্মবিসর্জনের ছারা পিতৃকুল রক্ষা করিয়া দেবত অর্জন করিয়াছেন, তাঁহার মন্ত্র-উচ্চারণ সর্পদংশন হইতে রক্ষা করে, কিন্তু তাঁহার মহেতুক ক্রোধ বা প্রতিহিংসা-প্রায়ণতার কোন নিদর্শন দেখিতে পাই না। আর সর্প ইত্র জীব হইলেও মধ্যাত্মশক্তির প্রতীকরূপে সুপ্রাচীন কাল হইতে গৃহীত হইয়া আসিতেছে। কালিকাৰ মন্ত্ৰে, তিনি যে সৰ্পৰাহনা ও সর্পভূষণা তাহ। উল্লিখিত হইয়াছে, স্কুতরাং দেবপরিকল্পনার ভাবমণ্ডলে সর্পের একটা বিশিষ্ট স্থান আছে। কেহ কেহ মনে করেন যে, ভীষণা কালিকাদেবীর সর্প্রংকুলতা তাঁহার অক্সান্থ গুণ হইতে বিচ্ছিন হইয়। এক নৃতন দেবীবিগ্রহে মূর্ত হইয়াছে— মনসাদেবী যেমন লৌকিক সম্পর্কে চণ্ডীর সাত্মীয়া, তেমনি অধ্যাত্ম তাৎপর্যের দিক্ দিয়াও তিনি চণ্ডী প্রকৃতির ক্রুর অংশেরই একটা সমগ্র রূপায়ণ। দক্ষিণ রায় যেরূপ স্থুল, জড়শক্তিপ্রধান দেবতা, মনসা ঠিক তাহা নংহন--তাঁহার অঙ্গবিচ্ছুরিত বর্ণ-বৈচিত্র্যের আভা তাঁহার সুক্ষ্মতর সত্তারই সূচনা করে। সে যাহা

হউক, তিনি মানবের অবিমিশ্র ভক্তি আকর্ষণ করিতে পারেন নাই, ভক্তির মধ্যে যে ভয়ের অংশ বিভ্যমান ভাহাই তাঁহার পূজার পাদপীঠ রচনা করিয়াছে। যেমন কালীয় নাগ লক্ষ্মীন্দরের লোহার বাসরের অলক্ষ্য রন্ত্রপথ দিয়া প্রবেশ করিয়া তাহাকে দংশন করিয়াছিল, তেমনি মনসাদেবী আমাদের বদ্ধমূল বিরাগের লোইপ্রাচীরের অভ্যন্তরে ভয়ের যে সূক্ষ্ম সঞ্চরণপথ খোলা আছে তাহারই স্কুযোগ লইয়া আমাদের অন্তরে দেবত্বের আসম অধিকার করিয়াছেন ও তাহার বিষাক্ত প্রভাবে আমাদের

মনসাদেশীর প্রতি এই অপ্রশমিত বিরোধ বাঙ্গালী কবির পক্ষে এক হিসাবে বিশেষ হিতকর হইয়াছে, তাঁহার কল্পনায় উদ্দীপ্ত পৌরুষ ও অনমনীয় দৃচসংকল্পের প্রতীক চাঁদ সদাগরের স্ষ্ঠিপ্রেরণা সঞ্চার করিয়াছে। রণক্ষেত্রে বীরত্বপূর্দর্শনের মধ্যে বিশেষ কিছু অসাধারণত্ব নাই—কালকেতু ও লাউসেন যুদ্ধে ও পশুশিকারে অন্ত্রশিক। ও দৈহিক শৌর্যবীর্ষের পরিচয় দিয়া বীরত্বের সনাতন আদর্শের অন্তবর্তন কবিয়াছে। কিন্তু সাধারণ জীবনে, পারিবারিক শোকের উপযু পরি অভিঘাতের মধ্যে নিজ আদর্শে অবিচলিত থাকার ভিতর যে চারিত্রিক দূঢভার পরিচয় নিহিত, তাহার নৈতিক মূল্য অনেক উচ্চতর। কালকেতুর স্বাভাবিক নিঃশঙ্কতা অতর্কিত ত্রাসের দ্বার। অভিভূত হয়—সে কলিঙ্গরাজের সৈয়ের সহিও যুদ্ধে পৌরাণিক বীরের গ্রায় বিক্রম দেখাইয়া এক অপ্রত্যাশিত সংকটমুহুর্তে ধানের গোলার মধ্যে লুকাইয়াছে। কিন্তু চাদের দৃঢ়তা মনোবলের উপর প্রতিষ্ঠিত বলিয়া শত আঘাতে অচল, অটল। মনসা তাঁহার ক্রুব জিঘাংসার দারা বাঙ্গালীচরিত্রের এই অনমনীয় প্রতিরোধশক্তির উদ্বোধন ক্রিয়াছেন, বাঙ্গালী ক্বির কল্পনাকে বীরত্বের এক নূতন আদর্শের সন্ধান দিয়াছেন। বাঙ্গালা সাহিত্য এইজন্ম তাঁহার নিকট ঋণী।

চণ্ডীমঙ্গল-কাব্যে চাঁদ সদাগরের উল্লেখ থাকায় অনুমান করা যায় যে, মনসামঙ্গল চণ্ডীমঙ্গলের পূর্ববর্তী। পরবর্তী যুগের যে-কোন বনিক্-সন্মিলন হইতে চাঁদকে বাদ দেওয়া সম্ভব নয়।

মনসাদেবীর দ্বিতীয় অবদান বেহুলাচরিত্রের সতীত্বদীপ্ত মাধুর। বাঙ্গালীর সমাজে ও কাব্যে সতীর অভাব নাই। চণ্ডামঙ্গলে ফুল্লরা ও খুলনা সতীধর্মের মর্যাদা রক্ষা করিয়াছে। বিশেষত খুলনার সতীত্বপরীক্ষার কাহিনীতে পৌরাণিক সতীর অলৌকিক মহিমার ছায়াপাত হইয়াছে। কিন্তু তথাপি স্বামি-শব সঙ্গে লইয়া নির্জন নদীপথে বেহুলার নিরুদেশযাতা, তাহার মৃত্যুবিভীষিকার মধ্য দিয়া অমূতের সন্ধানে ছংসাহসিক অভিযান হৃদয়কে যেরূপ গভীরভাবে স্পর্শ করে, কল্পনায় যেরূপ তুর্গম রহস্যলোকের দোলা দেয়, অন্য কোন মঙ্গল-কাব্যে তাহার তুলনা মিলে না। ফুল্লরা ও খুলনাকে আমরা সাংস।রিক খুঁটিনাটির তুচ্ছতার দ্বারা খণ্ডিতরূপে দেখি; তাহাদের বুত্তি ও জাবন্যাত্রার বাস্তব স্থলতা তাহাদিগকে লৌকিক সীমার সংকীর্ণতার মধ্যে আবদ্ধ রাখিয়াছে। তাহাদের তুঃথকপ্তের মধ্যে মর্মান্তিক তীব্রতা বা কোন স্বদূরপ্রসারী ব্যঞ্জনা নাই—তাহাদের বিচ্ছেদ-ব্যথা ও উহার সান্ত্রনা উভয়েই সুলভ ও সাধারণ। বেহুলার অপরিমেয় তুর্ভাগ্য যেন মানবের সাধারণ অভিজ্ঞতার বহিভূতি, তাহার মধ্যে মানববুদ্ধির অতীত দৈবরহস্তস্পর্শ স্থপরিস্ফুট। তাহার নিয়তিবিভূম্বিত জীবন যে গভীর সমবেদনা ও করুগরসের স্ষ্টি করে তাহার মধ্যে তাহার ব্যক্তিগত হুর্ভাগ্যকে ছাড়াইয়া এক সার্বভৌম অনুভূতির ব্যাপ্তিও অনুরণন নিহিত। তাহার স্বামীর পুনজীবনলাভ ও সৌভাগ্যের পুনঃপ্রতিষ্ঠায় এই অন্তর্বিদীর্ণকারী শোকোচ্ছাস সমতা প্রাপ্ত হয় না। দাম্পত্য-মিলনের স্থুখ এই বেদনাক্ষতের অন্তন্তর পর্যন্ত সান্তনার প্রলেপ বিস্তার করিতে পারে না। মনসার অত্যাচার উৎপীড়িতের চিত্তে যে আলোড়ন জাগায় তাহারই সংবেগ এক দিকে চাঁদ সদ।গরের উপ্রেণিৎক্ষিপ্ত মহিমায়, অপর দিকে বেল্লার অতলস্পর্নী বেদনায় সঞ্চারিত হইয়াছে। মনসামঙ্গল-কাব্যপর্যায়ে মুর্ন্দ্রনামর মত অনবভ শিল্পস্থম।সম্পন্ন যুগপ্রতিনিধি কবি নাই; কিন্তু মুক্ন্দরাম যুগজীবনের যে সমতল ভূমিতে স্বচ্ছন্দ গতিতে বিচরণ করিয়াছেন, মনস।মঙ্গলের কবিরা তাহার উপ্রতি ও অধোদেশে প্রসারিত উচ্চাবচ ভূসংস্থানে আয়াসসাধা, অসম পদক্ষেপে এক অসাধারণ শক্তির পরিচয় দিয়াছেন।

· (•)

মঙ্গল-কাব্যের বহিঃপ্রতিবেশ ও অন্তঃপ্রেরণা ও বিভিন্ন জাতীয় মঙ্গল-কাব্যের পারস্পরিক প্রভাব সম্বন্ধে কিছু আলোচনা করা গেল। অভঃপর চণ্ডীমঙ্গল-কাব্যের বিষয়বিক্য:স ও কাব্যোৎপত্তি সম্বন্ধে আলোচনা কৰা হইবে। তাহার পূর্বে মঙ্গল-কাব্যগুলির কালপারম্পর্য সম্বন্ধে আর-একটি প্রমাণ বিচার করা উচিত। চণ্ডীকাব্য যে অক্সান্ত মঙ্গল-কাব্যের সহিত তুলনায় অনেকট। অর্বাচীন, তাহার প্রমাণ পাওয়া যায় ইহার উপর বৈষ্ণব পদাবলীসাহিত্যের প্রভাবে। দ্বিজ মাধব ও মুকুন্দরাম—চণ্ডীকাব্যের তুই প্রাচীনতম প্রবর্তকই বৈঞ্বভাব ও কাব্যরীতির দ্বারা বিশেষভাবে প্রভাবিত হইয়াছেন। দ্বিজ মাধব তাঁহার আখ্যায়িকার মধ্যে যেখানে যেখানে রাধাকৃষ্ণ-প্রেমলীলার সহিত কোন সাদৃশ্য আবিষ্কার করিয়াছেন, বা যে মুহুর্তে তাঁহার ভাবাবেগ উচ্ছৃসিত হইয়া উঠিয়াছে, সেইখানেই তিনি পদাবলীর অনুকরণে নৃতন পদ রচনা করিয়াছেন। এই পদগুলিকে তিনি বিষ্ণুপদ নামে ন্তন আখ্যা দিয়াছেন। ইংক্রের গুরুপত্নীহরণের পূর্বে ইন্দ্রের মনোহর রূপসম্বন্ধে অহল্যার মনোভাবভোতনার উপায়স্বরূপ তিনি 'কালিয়া'র রূপ বর্ণনা করিয়াছেন। কালকেতুর জন্মবৃত্তান্তের পূর্বসূচনারূপ এরূপ একটি কৃষ্ণের রূপপ্রশস্তিমূলক পদ রচিত হইয়াছে। চণ্ডীদেবীর নিকট পশুদের বিলাপ একটি ভক্তি-স্তোত্রের সংক্ষিপ্ত পয়ার-প্রবন্ধে স্বতই উচ্ছৃসিত ইইয়া উঠিয়াছে।

> "জয় গোপাল করুণাসিন্ধু। এহলোকে পরলোকে তুমি দীনবন্ধু॥"

কালকেতু যখন দেবীৰ মান্নায় পশুশিকারে বার্থকাম হইয়া সমচিন্থায় আকাশপাতাল ভাবিতেছে, তখন তাহার ক্ষুক্র বিমৃঢ্তা রাধিকার প্রণয়বিভ্রান্থ, নৈরাশ্ব্যবিশ্বত চিত্তের দিশাহারা ভাবের মাধ্যমে রঞ্জিত হইয়াছে। সময়ে সময়ে কবির এই বৈষ্ণবভাব প্রবণতা অনেকটা বিসদৃশভাবে ও বর্ণিত বিষয়ের স্তিত সঙ্গতি রক্ষা না করিয়া আত্মপ্রকাশ করিয়াছে। ভাঁড়ু-দুত্তের প্ররোচনায় যখন কলিঙ্গরাজ কালকেতুর ঐশর্যের খবর লইবার জন্ম গুজবাট নগরে কোতোয়ালকে পাঠাইলেন, তখন ছল্মবেশী কোতোয়ালের প্রসঙ্গে কবির মনে হইয়াছে কালার রসসারস্তার নিগৃঢ় ত্রনিরীক্ষতার কথা, যেখানে উচ্ছল লাবণাত্রক্ষে কালাগোরার ভেদ বিলুপ্ত হইয়াছে। কোতোয়ালের ছল্মবেশ্রের সহিত কালার ছলনাকুশলতার সাদৃশ্যবাধ কেবল বৈষ্ণবভাৱে সহিত কালার ছলনাকুশলতার সাদৃশ্যবাধ কেবল বৈষ্ণবভাৱে বাস্তব্যে বাস্তব্যে বাস্তব্যাহীন চিত্তেরই পক্ষে সম্ভব।

দ্বিতীয় খণ্ডে ধনপতি শ্রীমন্থ উপাখ্যানে বিষ্ণুপদেব সংখ্যা অপেকাকৃত কম। হয়ত আখ্যায়িকার নিজস্ব আকর্ষণের ফলে কবিচিত্তে বৈষ্ণব-ভাবপ্রবাহ অনেকটা মন্দীভূত হইয়াছে—গ্রের অন্তর্নিহিত রসই কবিকে আরোপিত মাধুর্যরসের প্রতিক্তকটা উদাসীন করিয়াছে। সপত্নীপীড়িতা খুলনার বনবাসের করুণরস বৈষ্ণবপদের একটি কলির মধ্যে ঘনীভূত নির্যাসের রূপ লভি করিয়াছে।

চল ঘর হামু পরিহরি। কালো কাহ্নায়ির লাগি হৈছ বনচরী। দীর্ঘ প্রবাস হইতে প্রত্যাগত ধনপতির পত্নীমিলন-প্রতীক্ষার অত্যাগ্রহ রাধার লাজভয়ে-জলাঞ্জলি-দেওয়া প্রেমোন্মত্তার স্থুরে নিজ মর্মকথা প্রকাশ করিয়াছে। যুবতী স্ত্রী ফেলিয়া ধনপতির সিংহলগমনে অনিচ্ছা, বাঁশীর স্থুরে ঘরছাড়া রাধিকার উদ্বেগ ও অস্বস্থির চিত্রটি স্মরণ করাইয়া দিয়াছে। বিচ্ছেদ-কাতরা খুলনার মনোভাবটি মাথুরযাত্রার প্রাক্তালে রাধিকার অশুভশংসী চিত্তের পূর্বান্তমানের বেনামীতে ব্যক্ত হইয়াছে। স্দাগর যথন গণকের অমঙ্গলগণনা উপেক্ষা করিয়া সিংহল-যাত্রার জন্ম প্রস্তুত হইতেছে, তখন খুলনার মনোভাবছোতনার জন্ম রাধিকার কাতরোক্তির আশ্রয় লওয়া হইয়াছে—বাধিকা প্রেমিকার অভ্রান্ত সংস্কারবংশ জানিতে পারিতোছন যে, শ্রাম আর মথুরা হইতে ফিরিবেন না, অন্ত প্রণয়িনী পাইয়া রাধাকে ভূলিবেন, সেইজন্ম শ্রামকে বাশী রাখিয়া যাইতে বলিতেছেন; খুলনারও স্বামীসম্বন্ধে অনুরূপ সন্দেহ ও মর্মবেদনা জাগিতেছে। শ্রীমন্তের প্রতি বাৎসলারস গোচারণেগত কানাইয়েব গ্রুশাদার উৎকণ্ঠা ও আত্মানুশোচনার ভাবপরিমণ্ডলে বিধৃত হইয়াছে। হারানো ছেলের জতা গৃহস্থবধুর লজাসম্ভ্রম হারাইয়া খুলনার পথে পথে অরেষণের প্রতি লহনা যে তিরস্কার করিতেছে তাহার উত্তর খুলন। মুখের কথা ও বৃন্দাবনলীলা-সম্পর্কিত গীত এই তুই রকম ভাবে দিয়াছে—গীতটি কান্সপ্রেম-কলঙ্কিনী রাধিকার আত্মসংযমে অক্ষমতাবিষয়ক। ঞ্জীমন্তের পিতৃ-অন্তুসন্ধানে সিংহলযাত্রার প্রস্তাবে খুলনার কাতরতা গোষ্ঠলীলার গীতে যশোদার উক্তির প্রতিধ্বনি—রায় অনম্ভ ভণিতাযুক্ত একটি পদ উভয়েরই মনোবেদনা প্রকটিত করিতেছে। আবার এই ঘটনাই নবদ্বীপলীলায় পুত্রশোকোন্নাদিনী শচীর শোকা-বেগের কথা স্মরণ করাইয়া দিতেছে। স্কুতরাং দেখা যাইতেছে যে, চণ্ডীমঙ্গলের কবি বৈষ্ণব-ভাবরস্সিক্ত মন লইয়া শক্তিপূজার

কাহিনী বিবৃত করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছেন—ইহার সমস্ত রুঢ় সংঘর্ষ, স্থূল বৈষয়িকতায় ক্লিল্ল জীবনযাত্রার উপরে অপার্থিব মাধুর্যরস সেচন করিয়া ইহাকে কাব্যলোকের উন্নততর স্তরে উঠাইতে ও ইহার মধ্যে ভাবসৌকুমার্য সঞ্চার করিতে চেষ্টা করিয়াছেন। কালকেতু-ফুল্লরার দারিদ্র্যজীর্ণ কুটীর, ধনপতির সপত্নী-কলহ-মুখরিত অট্টালিকা ও ভাঁড়ুদত্ত-সোমদত্তের শাঠ্য-প্রবঞ্চনামূলক দোকানদারীর উপর কেবল যে চণ্ডীদেবীর অলোলিক রূপপ্রভা মাঝেমধ্যে বিত্যুচ্চমকের মত উদ্ভাসিত হইয়াছে তাহা নয়; এই অসঙ্গতিপূর্ণ পরিহাসের উপাদানেভরা সংসার-জীবনের উপর মানবহৃদয়ের গভীর জানকাবেদন। ও বৃন্দাবনলীলার অধ্যাত্ম ভাবব্যঞ্জনার আরোপ ইহার তুচ্ছতাকে সহজ মহিমায় প্রতিষ্ঠিত করিয়াছে। মঙ্গল-কারো দৈবী শক্তিব সহিত মানবিক তুর্বলতার এই মিতালী স্বর্গমর্ত্যের সংযোগসেতু রচনা করিয়া আমাদের ভাঙ্গাচোরা জীবনের পর্ণকৃটীরে স্বর্গীয় দীপ্তির প্রথরতা ও চিন্ময় রসলীলার স্নিগ্ধ জ্যোৎসালোককে আমন্ত্রণ করিয়া আনিয়াছে।

মুকুন্দরামে এই বৈশ্ববভাবপ্রাধান্ত অনেকটা ক্ষীণ হইয়াছে।
ইহার প্রধান কারণ তাঁহার চৈতন্তপ্রবর্তিত প্রেম-ধর্মেব প্রতি
অনাস্থা বা পদাবলীসাহিতাের মাধুর্যের প্রতি ঔদাসীন্ত নহে।
তিনি তাঁহার দেববন্দনার মধ্যে চৈতন্তাদেবের অলােকিক চরিত্রনাধুর্য ও সর্বভূতে করুণার প্রশস্তি রচনা করিয়াছেন। চৈতন্ত-দেবের তিরাভাবের অর্থ-শতান্দীর মধ্যে তিনি কবির নিকট দেবমগুলীর অন্তর্ভুক্ত হইয়াছেন। আর-এক বিষয় বৈশ্ববধর্মের ভাবপ্লাবন সরিয়া যাইতে যাইতে তাঁহার কাব্যের বেলাভ্রমিতে একটি শুল্র রজতােজ্জল ফেনপুষ্পমালা রাখিয়া গিয়াছে।
তাঁহার কাব্যের অন্তর্ত্র বৈশ্ববেশ্রভাব লক্ষিত না হইলেও তাঁহার নায়িকার রূপ্রবিক্ষুট।

তাঁহার আছা ও চণ্ডী উভয়েই বৈষ্ণবকবিবর্ণিত শ্রীরাধিকার ভাবছ্যতিসমুজ্জল। স্থকোমল দেহলাবণ্যে, বর্ণনার মনোজ্ঞ-ভঙ্গীতে, স্থমাময় উপমাপ্রয়োগে ও মাধুর্যপ্রধান ভাবাবহরচনায় মুকুন্দরামের চণ্ডী বৈষ্ণবের রাধিকার সহিত অভিন্ন। তাঁহার বর্ণনায় তাঁহার উগ্রচণ্ডা প্রকৃতি, তাঁহার মাতৃমূতির গান্তীর্যমন্ত্রম সুকুমার রূপব্যঞ্জনার অন্তরালে চাপা পড়িয়। গিয়াছে। চণ্ডীর আচরণ ও সংলাপের মধ্যে, এমন কি তাঁহার হাসি-তামাসা-রহস্থাপ্রিয়তার আবরণেও তাঁহার মহিমময়ী, ভক্তবংসলা, শক্তি-রূপিণী প্রকৃতিটি স্থপরিস্ফুট হইরাছে। কিন্তু তাঁহার সৌন্দর্য বর্ণনা করিতে গেলেই বৈষ্ণব-আদর্শের ছায়া আসিয়া পড়ে। মনে হয় যেন মুকুন্দরাম তাঁহার প্রতিভার অবিসংবাদিত স্থকীয়তা সন্ত্বেও নায়িকার রূপায়ণে পদাবলীর ভাবাদর্শপ্রভাব অতিক্রম করিতে পারেন নাই।

প্রান্থের অন্থান্থ অংশে যে কবি যুগপ্রচলিত বৈষ্ণবাহালার আত্মসমর্পণ করেন নাই, তাহার কারণ তাহার পরিণত শিল্পজ্ঞান ও বিষয়ের স্বভাবধর্ম-সম্বান্ধ স্থান্ধতর সঙ্গতিবাধ। এই বিষয়ে দ্বিজ্ঞ মাধবের সঙ্গে তাঁহার পাথক্য সহজেই অনুভূত হয়। মঙ্গলকাব্যের রস যে গীতিকবিতার রসের সহিত এক নয়, উভয় শ্রেণীর কাব্যে কবিত্বশক্তি-স্কুরণের উপায় যে বিভিন্ন তাহা দ্বিজ্ঞ মাধব ও মুকুন্দ উভয়েই জানিতেন। কিন্তু দ্বিজ্ঞ মাধব নিশ্চিত আত্মপ্রত্যেরে অভাবে চণ্ডীমঙ্গলের আঙ্গিকের বৈশিষ্ট্য সম্পূর্ণকাপে আয়ন্ত করিতে পারেন নাই। তাঁহার চিত্ত পদাবলী-সাহিত্যের গীতিমাধুর্য ও আখ্যায়িকার বাস্তবরসপ্রাধান্মের মধ্যে দ্বিধাপ্রস্তভাবে আন্দোলিত হইয়াছে—ঘটনাবির্তির ফাঁকে ফাঁকে তিনি অহেত্ক গীতিগুপ্পরণের স্বর ভূলিয়া বাস্তববর্ণনার পূর্ণ রসটিকে জমাট বাঁধিতে দেন নাই। গীতিকবিতার উতলাবায়ু অংখ্যায়িকার শ্বির সরোবরে তরঙ্গ ভূলিয়া লেখক ও পাঠক

উভয়েরই কতকটা দৃষ্টিবিভ্রম ঘটাইয়াছে—-সমূদ্রের বিজ্ঞন বিস্তারে কমলে-কামিনীর অপ্রাকৃত সৌন্দর্য যেমন ধনপতি-শ্রীমস্তের চক্ষুকে প্রতারণা করিয়াছিল, আমরা কতকটা সেইরূপ বিসদৃশ বস্তুর সমাবেশজাত বিভ্রান্তি অন্তুত্তব করি।

(8)

অক্সান্ত চণ্ডীমঙ্গল-রচয়িতার সহিত তুলনায় মুকুন্দরামের শ্রেষ্ঠত প্রমাণিত হইয়াছে তঁহার আখ্যায়িকার স্বভাবধর্ম-আবিষ্কারে ও বাস্তবরস প্রসারে। আখ্যানে বাস্তব প্রবর্তনের কৃতিহ ঠিক মুকুন্দরামের প্রাপা নহে, কেন-না, দেখা যাইতেছে নে, সমস্ত চণ্ডীমঙ্গল-কাব্যের কাঠামোতে বাস্তব স্বীকৃতির ছাপ আছে। অভিশপ্ত ইন্দ্রকুমারের মাতৃগর্ভে জ্রাণরূপে জন্মগ্রহণের সঙ্গে সঙ্গেই আখ্যায়িকা তাহার অনুসবণে স্বর্গলোক হইতে মর্তালোকে নামিয়া আসিয়াছে ও গর্ভস্থ শিশু মাতার জীবনী রসে পুষ্ট হইবার সঙ্গে সঙ্গে বাস্তবরসেও পুষ্ট হইতে আরম্ভ কবিয়াছে। প্রস্থৃতির আহারে অরুচি, গর্ভবেদনা, নবজাতকের মাঙ্গলাকর্মানুষ্ঠান, কালকেতুর শৈশবলীলা ও বিবাহের উল্লোগ, বিবাহের পণনির্ধারণ ও উৎসব, কালকেতুর জীবনসংগ্রাম ও ব্যাধর্ত্তি, তাহার দ্রিজ্র-সংসারের অভাব-অন্ট্রের তালিকা, অঙ্গুরীয়-বিক্রুয়কালে বণিকের শঠতা, নবনির্মিত নগরে প্রজা-সংস্থাপন ও তাহাদের বিভিন্ন রুত্তিবর্ণনা, ভাড়াুদত্তের বাবসায়ী ঠকাইয়া জীবিকার্জনের অভিনব কৌশল ও প্রভুদ্রোহিতা, কলিঙ্গরাজের সহিত যুদ্ধের পৌরাণিক-প্রভাবমুক্ত বাস্তব চিত্রণ —বাস্তবরসের এইরূপ স্থপ্রচুর বিস্তার ও পরিণতি যেমন মুকুন্দরামে তেমনি দ্বিজ মাধবেও পাওয়া যায়। চণ্ডীমঙ্গলের এই বাস্তব প্রাধান্তের কারণনির্দেশ অনেকটা অনুমানের পর্যায়েই পড়িবে। যদি ধরিয়া লওয়া যায় যে, সমস্ত মঙ্গল-কাব্যের মধ্যে **ठ** छोप्रक्रमहे नर्गाराका व्यक्तिर्म, जाहा हहेरन वना याहेरज

পারে যে, যুগধর্মের স্বাভাবিক প্রেরণাতেই চণ্ডীমঙ্গল-রচনার যুগে কবিমানসে সমাজচেতনা ও প্রত্যক্ষনিষ্ঠা তীক্ষ হইয়া উঠিয়াছে. অলৌকিক কাহিনীর মধ্যেও সংসার-জীবনের প্রতিচ্ছবি লেখকের কৌতৃহল ও বর্ণনাশক্তিকে উদ্রিক্ত করিয়াছে। চণ্ডীমঙ্গলের আদিম আঙ্গিক রচনার জন্ম কে কৃতিত্বের দাবী করিতে পারে তাহা আমাদের অজ্ঞাত—ইহার প্রথম নামহীন স্রপ্তা ইতিহাসের পাতায় কোন ব্যক্তি পরিচয় মৃদ্রিত করিয়া যান নাই। কিন্তু ষোড়শ শতকের শেষ পাদে যখন দ্বিজ মাধব ও মুকুন্দরামের সমকালীন কাব্যরচনার সহিত অনিশ্চিত অনুমানের যবনিকা আমাদের সম্মুখ হইতে উল্ভোলিত হইল, তখন দেখা গেল যে, আখ্যানের মূলধারা ও বস্তুনিষ্ঠা-সম্বন্ধে চণ্ডীমঙ্গল-কবিগোষ্ঠীর মধ্যে একটা সর্বস্বীকৃত স্কুপ্রতিষ্ঠিত হইয়া গিয়াছে। এই পরিকল্পনা ও রূপস্টিগত এক্য নিশ্চয়ই আক্সাকভাবে, কবিপ্রতিভার অতর্কিত খেয়ালে আবিভূতি হয় নাই। মাধব-মৃকুন্দের পূর্ববর্তী দীর্ঘকালব্যাপী কবিপরস্পরার সম্মিলিত চেষ্টাতেই এই আঙ্গিকের উদ্ভব ও ক্রমবিবর্তন-সঞ্জাত দূচবদ্ধতা সম্ভব হইয়াছে। চণ্ডীমাহাত্ম্য-কীর্তনের দৈব আধারে রক্ষিত মর্ত্যপ্রীতির একটি ক্ষুদ্র বীজ যে অঙ্কুরিত অবস্থা হইতে পুষ্টিলাভ করিয়া পরিণতির রূপ গ্রহণ করিয়াছে, ইহা নিশ্চয়ই অভিব্যক্তির স্থার্থ প্রক্রিয়ার ফল। এই প্রথম অবস্থার কোন কাব্যপ্রতিরূপ আমাদের নিকট পৌছে নাই; ইহার দৃষ্টান্ত থাকিলে বাংলা কাব্যসাহিত্যে বাস্তবতার ক্রমবিকাশের যোগসূত্রটি আমর। সহজেই ধরিতে পারিতাম। এখন আমাদের একমাত্র উপায় হইতেছে মঙ্গল-কাব্যের অস্তান্ত শাখার সহিত চণ্ডীমঙ্গলের তুলনা করিয়া ইহার মধ্যে বাস্তবতার ক্রমিক প্রসার, বাস্তব কোতৃহলের ক্রমোন্মেষের ছন্দটি নির্ণয় করার প্রয়াস। যুগপ্রতিবেশের প্রভাবে, সুসংহত পারিবারিক জীবনের কেন্দ্রবিন্দু মাতার সহিত চণ্ডীদেবীর ক্রমবর্ধমান ভাব-সারপ্যের ফলে, মানব-জাবনের প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতালক অমু-প্রেরণায় চণ্ডীমঙ্গলের করিসম্প্রদায় স্বর্গ হইতে চোথ ফিরাইয়া মর্ভ্যে নিবদ্ধ করিলেন, স্বর্গের অধিষ্ঠাতী দেবীকে কালকেতুর ভাঙ্গা কুটীরদ্বাবে নসাইয়া তাহার দৈবী বিভার আলোকে তাহার রিক্ত গৃহস্থালার টুকরা-টাকনা, জীর্ণ আসবাব ও গৃহসজ্জাগুলি আমাদিগকে দেখাইয়া দিলেন। চণ্ডীমঙ্গল-কাব্যগুলিতে কবি-মানস-রূপান্তরের একটি বৈপ্লবিক ইতিহাসের ইঙ্গিত প্রচ্ছন্ন আছে।

চণ্ডীমঙ্গলে বাস্তবরস-ক্ষুরণের আপেক্ষিক উৎকর্ষ ও প্রাচুর্যের কারণ ইহার অধিষ্ঠাতা দেবার মানবিক আবেদনের মধ্যেই নিহিত। মঙ্গল-কাবোর প্রাচানতম রূপ ধর্মমঙ্গলে ধর্মঠাকুরের মানবিক প্রকৃতি ও প্রবিচয়টি অনেকটা অম্পষ্ট ও অনির্দিষ্ট। তাঁহার অবয়বচিক্তহীন, লেপামোছা শিলামূর্তিটি তাঁহার আন্তর অনির্দেশ্যতারই প্রতাক। তাঁহার পূজার উৎকট সাধনাপদ্ধতি ও উপচারবৈশিষ্ট্য, তাঁহার চারিদিকে একটা অর্ধ-বিলুপ্ত অতীতের গোধূলিপরিমণ্ডল, তাঁহার সেবকগোষ্ঠীর সামাজিক হীনতা ও অদ্ভূত রাতিনীতি যেন তাঁহাকে আমাদের অন্তরের সহজ ভক্তির উৎস ও আত্মীয়তাবোধ হইতে খানিকটা দূরে রাখিয়াছে। তিনি যেন হিন্দুধর্মের মূলধারা হইতে বিচ্ছিন্ন এক বালুকাবিশীর্ণ শাখা-নদীপথে পাড়ি দিয়া ভক্তিসাধনার এক হুর্গম জনবিরল তীর্থে তাঁহার ভক্তবুন্দকে আহ্বান করিয়াছেন। যে বল্লুকানদীর সহিত তাঁহার স্মৃতি বিজ্ঞতিত তাহা যেন কোন পরিচিত ভাবাসঙ্গের মধ্যে বিধৃত নয়; এই নদীপথ দিয়া যে চাঁদসদাগর বা ধনপতি কোন দিন তাহাদের অভাস্ত বাণিজ্যযাত্রায় বাহির হইয়াছিল. তাহা আমরা কখন কল্পনা করিতে পারি না। ইহা আমাদের সহজ গতিবিধি, দৈনন্দিন কক্ষপথের সম্পূর্ণ বহিভূতি। ধর্ম-

ঠাকুর ভক্তের প্রতি সদয় ও বর দিয়া ভক্তের দ্বারা অসাধ্যসাধন করাইতে পারেন; এমন কি তাঁহার বিশেষ শক্তিতে পূর্বের সূর্য পশ্চিমে উদিত হইয়া জগতের চিরাচরিত বিধানের বৈপরীত্য ঘটাইতে সমর্থ। কিন্তু তাঁহার অসীম অলৌকিক শক্তিসারেও তিনি ভাক্তের হাদয়-উৎস হইতে ভক্তির সহজ অনাবিল স্রোত বহাইতে পারেন না। যে আত্মবিশ্বত, এক¹গ্র ভক্তি ভক্ত ও ভগবানের মধো সমস্ত পার্থকা লোপ করিয়া নিবিড একাত্মতার সৃষ্টি করে ধর্মসঙ্গলে আমরা তাহার কোন নিদর্শন পাই না। অবশ্য ধর্মঠাকুর সময়ে সময়ে নিজের অপূর্ণ নৈধ্যক্তিকত। উপলব্ধি করিয়া হিন্দু-ভাবকল্পনার স্থপরিচিত নারায়ণের রূপান্তররূপে আত্মপরিচয় দিয়াছেন, কিন্তু এই ধার-কর। মাধুর্যমহিমা তিনি ঠিক আপনার করিয়া লইতে পারেন নাই। স্বুতরাং সহজেই বোঝা যায় কেন ধর্মঠ।কুর ভাঁহার চারণকবিদের মধ্যে বাস্তব্বোধের উদ্দৌপন করিতে সমর্থ হন ধর্মক্ষলের কবিগোষ্ঠী তাহাকে নিজেদের চিরপরিচিত বাস্তব পরিবেশের মধ্যে অন্তর্ভুক্ত করিতে পারেন নাই বলিয়া প্রতিবেশের প্রতিও তাঁহাদের দৃষ্টি ঝাপ্সা হইয়াছে। প্রকৃতি বিধানের বৈপরীত্যসাধন যাহার শক্তির পরিমাপক মানদণ্ড. তিনি যে বস্তুনিষ্ঠ কৌতৃহলের সহায়ক হইবেন না তাহা সহজেই অনুমেয়।

মনসামঙ্গলের স্থানসংস্থিতি অবশ্য এরূপ অপরিচয়ের কুহেলিকামণ্ডিত নহে। মনসাদেবীর স্থায় তাঁহার অধ্যুষিত অঞ্চলও আমাদের অতি-বাস্তব জগতেরই একটা অংশ। কিন্তু আশ্চর্যের বিষয় যে, এই অতিপরিচিত পরিমণ্ডলও আমাদের বাস্তববোধকে তীক্ষতর করিতে পারে নাই। মনসাকে দেবীর আসনে বসাইতে যে আমাদের মনে একটা অমুচ্চারিত প্রতিবাদ প্রচল্পর ছিল, তাহাই কবিমানসের উপর একটা

অম্বচ্ছন্দতার ভাব চাপাইয়া তাহার সহজ ফুর্তির অন্তরায় হইয়াছে। যেখানে ভক্তি প্রধানত ভয়মূলক, যেখানে দেব-প্রশস্তি দেবরোষ এড়াইবার একটা গত্যন্তরহান উপায়মাত্র, যেখানে মন আসন্ন বিপৎপাতের সম্ভাবনায় সংকুচিত ও শঙ্কাতুর, সেখানে সহজ-আনন্দজাত বাস্তববোধ-ফুরণ প্রত্যাশা করা যায় না। মধ্যযুগের বাস্তবতা ও অতি-আধুনিক বাস্তবতার মানস উৎস সম্পূর্ণ বিভিন্ন। আধুনিক বাস্তবতা রোমান্সের **প্রতি** আস্থাহানতা ও জানানর প্রতি গভার নৈরাশ্যবাদ হইতে উদ্ভুত ; বস্তু-ও মনো-জগতের রুগ্ন, ভগ্ন, জীর্ণ উপাদানগুলিকে একত্রিত করিয়া কবি-জীবনের এমন একটি অস্বস্থ, বিকৃতরূপ সৃষ্টি করেন, যাহা রোমান্স ও স্কুস্-জীবনবোধ হইতে প্রায় সমান দূরে অবস্থিত। আধুনিক বাস্তবতা হইতেছে দীপ নির্বাপিত হওয়ার পরে যে উগ্রগন্ধ, শ্বাসরোধকারী বুম কক্ষমধ্যে পরিব্যাপ্ত হয় তাহার অনুরূপ। মধ্যযুগের সাহিংত্যের বাস্তবতা হইতেছে আলোছায়ার সহজ লীলায় আকাশে যে মাঝে মাঝে মেঘ ঘনাইয়া আসে তাহার মত, তাহাতে জীবনের স্বাভাবিক রূপের কোন বিপর্যয় ঘটে ন।। মনসামঙ্গলের কবিরা মনসার সম্ভাবিত রোষ ও বেহুলার তুঃখরাহুগ্রস্ত জাবন লইয়া এত উন্মনা যে, বাস্তব জীবনযাত্রার সহজ আনন্দ ও কৌতৃহল তাঁহাদিগকে অত্যন্ত ক্ষীণভাবে স্পর্শ করিয়া গিয়াছে। চাঁদসদাগরের জীবনে উশযুপিরি এমন বজ্রাঘাত নামিয়া আসিয়াছে যে ইহার প্রচণ্ডতা আমাদের চিত্তকে অসাড় ও বাস্তববিষূঢ় করিয়া তোলে। চণ্ডী-মঙ্গলে ফুল্লরা ও খুলনার মত মনসামঙ্গলে বেহুলারও বিবাহ হইয়াছে। কিন্তু যে বিবাহের বাসররজনী আসন্ন সর্বনাশের অসহায় প্রতীক্ষায় লৌহকক্ষের মৃত্যুশীতল আবহের মধ্যে কাটাইতে হয়, সেখানে জীবনের সহজ উল্লাসের, ক্ত্রী-আচারের সরস খুঁটিনাটি বর্ণনার, বাস্তবরসের কৌতৃহলপূর্ণ উপভোগের

অবসর কোথায় ? লোহপ্রাচীরের স্ফান্তপ্রপ্রথা দিয়া যে মৃত্যুদূত বাসরকক্ষে প্রাবেশ করিয়া তাহার বিষাক্ত ফুৎকারে উৎসবের সমস্ত মঙ্গলদীপকে নিবাইয়া দিবে ও নববধুর তরুণ ললাটের সৌভাগ্য-সিন্দুরবিন্দুকে লেহন করিয়া মুছিয়া দিবে, কবিও বেহুলার মত তাঁহার সমস্থ চিত্ত একাগ্র করিয়া এই আলোছায়া-চঞ্চল, বিচিত্র জীবন-লীলা হইতে তাহার দৃষ্টি সংহরণ করিয়া, তাহারই সর্পিল অভ্যাগমের প্রতি নিবদ্ধ করিয়াছেন। ভবিষ্যুৎ বিপন্মক্তির পূর্বজ্ঞানও কবি ও পাঠকের এই আভঙ্ককণ্টকিত চিত্তের অসাড়তার মধ্যে কোন পুলকচাঞ্চল্য জাগায় না; হতভাগিনী বেহুলার সর্বনাশের অতলকুপে আমাদের সমস্ত আশা-আনন্দের সাম্য়িক সমাধি ঘটে। মেঘ কাটিয়া যাইবে এট আশাসও আমাদের ঘনমেঘাচ্ছন্ন অদৃষ্টের উপর একবিন্দু সূর্যালোকেরও প্রবেশপথ রচন। করে না। অবশ্য চাঁদসদাগরের বাণিজ্যযাত্রায় ও সিংহলবাসীর সহিত তাহার জ্বাবিনিময়ের কাহিনীতে থানিক সুলভ, অথচ উদ্ভট কৌতুকরসের সৃষ্টি হইয়াছে। কিন্তু তাহার দৈবাহত জীবনের এই স্বল্পস্থায়ী পরিচ্ছেদ্টুকু ব্যতিক্রম বলিয়াই আমাদের মনে হয়। বিশেষত মনসামঙ্গলে যে নৌযাত্রা আমাদের মনের উপর গভীর রেখায় অঙ্কিত হয় তাহ। চাঁদের বাণিজ্যাভিযান নয়, তাহ। মৃতস্থানীর শব লইয়া কলার মান্দাসের উপর বেহুলার স্বর্গমর্ত্যের সীমান্ত উত্তীর্ণ হইয়। অনির্দেশ্যলোকে প্রয়াণ। অদৃষ্টরহস্থোদ্ভেদের উদ্দেশ্যে বেহুলার এই মায়ানদীবাহিত অসমসাহসী অভিযাত্রা আমাদের মনে বাস্তব জগতের সমস্ত স্মৃতিকে ঝাপ্সা করিয়া দিয়া উহাকে এক অনির্বচনীয় আশ্চর্যরসে, এক অপার্থিব লোকের স্থদূরাগত আভাসব্যঞ্জনায় পূর্ণ করিয়া তোলে। মনসা ও বেহুলা এই হুই বিপরীত কোটির মধ্যে আবর্তিও

মনসামঙ্গলের জীবনযাত্রা ঠিক যেন বাস্তব-জীবনের প্রতিরূপ বলিয়া আমাদের মনে হয় না: মনে হয় যেন ইহার উপর আর-একটা সচেনা রহস্তাঘেরা জগতের আকর্ষণ ইহাকে কতকটা কক্ষচাত করিয়াছে। অস্থান্থ মঙ্গল-কাব্যে দেবতামানুষের সহজ বিরোধ-মিতালির কাহিনী লিপিবদ্ধ হইয়াছে—এ যেন রূপকথার রাজ্যের ফুৎকারে-উড়িয়া-যাওয়া মায়ামেঘের উদ্ভববিলয়ের কথা। কিন্তু মনসামঙ্গলের শেষ সমাধানের মধ্যে যেন একটি বেদনার স্থর, একটা গড়মিলের সন্দেহ প্রচ্ছন্ন থাকে। বিরোধমিলন উভয়ের মধ্যেই একটি আতিশয্য যেন সম্ভাব্যতার সীমা অতিক্রম করিয়াছে; বাঁকা ধন্তুক আর সম্পূর্ণ সোজ। হয় ন।। মনস।-দেবী সমুদ্রে-ডোবা ধনরত্বভর। জাহাজগুলি উদ্ধার করিয়া, চাঁদের মৃত ছয় পুত্রকে বাঁচাইয়া দিয়া তাঁহার পূর্ব-অত্যাচারের ক্ষতিপূরণ করিয়াছেন। কিন্তু আমাদের যেন মনে হয় ক্ষতরেখা সম্পূর্ণ বিলুপ্ত হয় নাই—বেহুল। দিগন্তপারের রাজ্য হইতে কি একটা সংসারভোলানে মন্ত্র শিখিয়া আসিয়াছে; যাহাতে এই পৃথিবীর দাম্পত্য-জীবনের নিবিড় আনন্দ তাহার নিকট ফিকে হইয়া গিয়াছে—আর চাঁদ্দদাগরের অপ্রশমিত মান্দ বিজ্ঞাহ তাহার বামহাতে দেওয়। অবহেলার পূজাঞ্জলির তির্যক্ তাৎপর্যের মধ্যে আত্মপ্রকাশ কবিয়াছে।

স্তরাং মধ্যযুগীয় সাহিত্যে বাস্তববোধ-ক্ষুরণ কেন যে প্রধানত চণ্ডীমঙ্গল-কাব্যের মাধ্যমে ঘটিয়াছে তাহার কারণ কিছুটা বোঝা গেল। দেবমহিমার খরোজ্জল রৌজ ও ভাবাবেগ-বিগলিত ভক্তির স্নিগ্ধ চন্দ্রিকা মানব-জীবনের উপর পতিত হইয়া উহার মধ্যে ন্তন তাৎপর্য ও আকর্ষণীয়তা সঞ্চার করিল ও মানবের সহিত সম্পর্কস্থাপনের জন্ম দেবতার আগ্রহাতিশয্যের স্ত্র অমুসরণ করিয়া কবিও সাধারণ মান্ত্রের প্রতি অনিবার্যভাবে আকৃষ্ট হইলেন। দেবতা যাহাকে চাহেন কবি তাহাকে উপ্পক্ষা

করিতে পারিলেন না। যে অমুপাতে দেবতা ঘরোয়া জীবনের অন্তর্ভুক্ত হইয়া পড়িলেন, ঠিক সেই অনুপাতে সেই ঘ্রোয়া জীবনও কবির চক্ষে নূতন কৌতৃহলের আকর হইয়া উঠিল। চণ্ডী ব্যাধ কালকেতুকে দয়া করিয়াছেন, অতএব ব্যাধের দারিদ্রাবিড়ম্বিত, 'চোয়াড়' জীবনযাত্রা কবিকল্পনার বিষয়ীভূত হইল—দেবানুগ্রহের সোপান বাহিয়া এই অনার্যজাতির প্রতিনিধি কাব্যকৌলীয়ের উচ্চ শিখরে অধিষ্ঠিত হইল। খুলনা-লহনা-ধনপতি-শ্রীমন্ত তাহাদের পারিবারিক জীবনের সমস্ত ছোটখাট কোন্দল ও ধনিগৃহের আদর্শহীন সংসারনীতি ও ভোগবিলাস লইয়া কবির বাস্তব চিত্রণে বিধ্বত হইল-স্বর্গীয় আলোকসম্পাতে, বাঙ্গালী ঘরের এই সাদা-মাটা, আত্মন্তপ্ত ও সর্বতোভাবে আদর্শলোকের জ্যোতিঃসংস্পর্শ হইতে আডাল-করা জীবনযাত্রা কবির আলোকচিত্র-যন্ত্রে ছবি হইয়া ফুটিয়া রাধাকৃষ্ণ-প্রেমলীলার ভাবের পরিমণ্ডলে শাশুড়ী-ননদী, কলম্ক-পরিবাদের উল্লেখ থাকা সত্ত্বেও বাঙ্গালী-জীবনের দৈনন্দিন তুচ্ছতা স্থান পায় নাই। চণ্ডীমঙ্গলে কিন্তু আমাদের জীবনের সমস্ত ইতর কাকলী, সবটুকু মলিনতা ও স্থুল ধূলি-অবলেপ নিঃসংকোচে, মাতৃ-অঙ্কে ধূলিধূসরিত শিশুর স্থায়, স্থান গ্রহণ করিয়াছে—দেবাশীর্বাদের পূতস্পর্শ উহার সমস্ত অশুচিকে শুচি করিয়া দিয়াছে।

(()

মুকুন্দরাম এই বাস্তবতার প্রবর্তক নহেন, কিন্তু তাঁহার কাব্যে ইহার শ্রেষ্ঠতম, সাবলীলতম প্রকাশ। বিষয়নির্বাচনের দিক্ দিয়া তিনি বিশেষ মৌলিকতার দাবী করিতে পারেন না। যে সমস্ত বর্ণনা আমরা তাঁহার মৌলিক বাস্তবতার নিদর্শনরূপে উল্লেখ করিয়া থাকি সেগুলি দ্বিন্ধ মাধ্বেও পাওয়া যায়, স্মৃতরাং সেগুলি তাঁহার নিজস্ব উদ্ভাবন নহে, ঐতিহ্যের C—2303 B.T. উত্তরাধিকার হইতেই প্রাপ্ত। বরং কোন কোন স্থলে দ্বি**জ** মাধবের সহিত তুলনায় মুকুন্দরাম অধিকতর আদর্শবাদী; ঘটনাকে তিনি ব্রাহ্মণ্য-সংস্কৃতি-সাধনার আদর্শে পরিমার্জিত করিয়া লইয়াছেন। দ্বিজ মাধবে কালকেতুর বিবাহব্যাপারে বরের পিতা সোজাস্থজি কন্সার পিতার নিকট গিয়া তাহার নিকট প্রস্তাব উত্থাপন করিয়াছে ও ব্যাধস্থলভ সরলতার সহিত পণ নির্ধারণ করিয়াছে। মুকুন্দরামে কিন্তু এই সমস্ত দরদল্পর ঘটকের মাধ্যমে সংঘটিত হইয়াছে, উচ্চ বর্ণের রীতিনীতি তিনি নির্বিচারে নীচ বর্ণে আরোপ করিয়াছেন। দ্বিজ মাধবে ধর্মকেতুর মৃত্যু ঘটিয়াছে সচরাচর বক্সপশুশিকারে নিযুক্ত ব্যাধের যেরূপ ভাবে ঘটিয়া থাকে—সিংহের আক্রমণে; অবশ্য নিদয়া উচ্চবর্ণস্থলভ হিন্দু-আদর্শ অনুসরণে স্বামীর চিতায় পুড়িয়া সহমরণে গিয়াছে। বান্ধণ্য-সংস্কৃতিপুষ্ট মুকুন্দরাম কিন্তু এরূপ প্রাকৃত মৃত্যুতে সম্ভষ্ট না হইয়া নিজ কাব্যের আভিজাত্য বজায় রাখিতে ধর্মকেতু-নিদয়াকে বৃদ্ধ বয়সে সংসার ত্যাগ করিয়া কাশী পাঠাইয়াছেন। জাতকর্ম বা বিবাহের আচার-অনুষ্ঠানেও তিনি ব্যাধপরিবারে ভদ্রঘরের শাস্ত্রীয় ক্রিয়াকলাপের আডম্বর. ব্রাহ্মণ্যশাসিত সমাজের নিখুঁত ব্যবস্থার প্রবর্তন করিয়াছেন্। ইহাদের উৎসবকালীন সচ্ছলতার সহিত দৈনন্দিন সংসার্যাত্রার দারিদ্য-বিভূম্বনার যে অসামঞ্জস্ত তাহা অবশ্য বাস্তব-জীবনে বিরল নহে; তথাপি মনে হয় যেন এইরূপ জীবনচিত্রণে কবি অবিসংবাদিত বাস্তববোধের সহিত কবিজনস্থলভ আদর্শপ্রীতির খানিকটা সংমিশ্রণ ঘটাইয়াছেন।

কিন্তু তথাপি মুকুন্দরামের ৮ণ্ডীমঙ্গলে জীবনের যে প্রত্যক্ষ রূপ, যে স্বতঃফুর্ড ও প্রচুর জীবনরস-রসিকতা পাওয়া যায় তাহা বাংলা সাহিত্যে সম্পূর্ণ অভিনব। তাঁহার ক্বৃতিত্ব কেবল বস্তুসঞ্চয়ে নহে, বাস্তবরসের পরিবেষণ্-নৈপুণ্যে। তাঁহার কাব্য

হইতে কেবল যে সমকালীন সামাজিক অবস্থার প্রচুর উপকরণ সংগ্রহ করা যায় তাহা নহে, ইহাতে সমাজ-জীবনের স্বচ্ছন্দ-লীলায়িত গতিচ্ছন্দ, ইহার বহির্ঘটনার অন্তরালশায়ী মর্মস্পন্দন চমৎকারভাবে ফুটিয়া উঠিয়াছে। মুকুন্দরাম যে সহজ কৌতুক ও স্বস্থ, বলিষ্ঠ উপভোগশক্তির সহিত তাঁহার আখ্যায়িক। বিবৃত ক্রিয়াছেন, তাহাতে আমরা আমাদের সাধারণ ঘ্রোয়া জীবনকে নৃতনভাবে আস্বাদন করিতে শিখিয়াছি। তাঁহার প্রনন্ন কৌতুকপ্রিয়তা, বঙ্কিম কটাক্ষ, ঈবং তির্যক্ দৃষ্টিভঙ্গী দারিদ্যের উষর উপরিভাগের অভ্যন্তরে যে রসনিঝর প্রচ্ছন্ন আছে, তাহাই শাবিষার করিয়াছে। বস্তুর কারবারী ও বাস্তবরসের স্রষ্টা ঠিক এক নহে—বল্তপুঞ্জ হইতে বাস্তবরস-নিষ্কাশন বিশেষ **पृष्टिच्य**ी- ७ भि**द्या**राध-मार्थक। देश्त्वको माहिएडा हमात ৰাস্তবরসের কবি, কেন-না, তিনি ইংলণ্ডে চতুর্দশ শতকের যে সমাজচিত্র আঁকিয়াছেন, তাহাতে বস্তুত্থ্যসমূহ এক রসভরঙ্গে ভাসমান হইয়া তাহারই অঙ্গীভূত হইয়াছে। উনবিংশ শতকে জ্যাব জীবনের তিক্ত অভিজ্ঞতা, দারিদ্যের নিরানন্দ, রক্তশোষী সংগ্রাম, রিক্ত জীবনের মানস ও অনুভূতিগত রিক্ততা প্রশংসনীয় মনস্তত্বজ্ঞানের সহিত লিপিবন্ধ করিয়াছেন, কিন্তু স্প্রেধর্মী দৃষ্টি-শক্তির অভাবে তিনি এই উপাদানসমূহকে রসে পরিণত করিতে পারেন নাই। সমসাময়িক যুগের কার্যে যে অবাস্তব সৌন্দর্য-বোধ ও শৃত্যগর্ভ আদর্শবাদ পল্লীজীবনের আসল রূপটিকে শাড়াল করিয়া উহাকে এক কল্পলোকে শ্রীমণ্ডিত দেখাইয়াছে, ক্র্যাবের কবিতা তাহারই প্রতিবাদ; কিন্তু এই নিম্নতম মানের জীবনের প্রাণকেন্দ্র কোথায় তাহা তিনি ধরিতে পারেন নাই। স্থতরাং তিনি ৰম্ভর কবি, কিন্তু বাস্তবরসের কবি নহেন। মুকুন্দরামের বস্তুনিষ্ঠতা চসারের পর্যায়ের; জীবনের সমস্ত ক্রটি-অসঙ্গতি-অকিঞ্চিৎকরতা সত্ত্বেও ইহা যে প্রচুর আনন্দরসের উৎস ও উপভোগ্য আস্বান্ততার কারণ তাহা তিনি স্বয়ং আবিষ্কার করিয়াছেন ও পাঠককে অনুভব করাইয়াছেন।

মুকুন্দরাম-সম্বান্ধ একটি বহুপ্রচলিত মতবাদ এই যে, তিনি ত্বঃখবাদের কবি ও তাঁহার জীবনের অত্যাচার-উৎপীড়ন-জনিত তিক্ত অভিজ্ঞতা তাঁহার কাব্যে প্রতিফলিত হইয়াছে। এই মন্তব্যের যাথার্থ্য সম্বন্ধে সন্দেহের অবকাশ আছে। যিনি জীবন-রসরসিক কবি, তিনি জীবনে ছঃখ পাইলেও ছঃখকে খুব বড় করিয়া দেখেন না। তাঁহার কাব্যে তুঃখের উল্লেখ থাকিলেও তিনি ত্রঃখবাদের কবি নহেন। ত্রঃখের অভিজ্ঞতা তাঁহার মানস প্রবণতাকে এক বিশেষ রূপ দেয়, কিন্তু তাঁহার মনকে অপ্রীতি-কর স্মৃতিরোমন্থন ও নৈরাশ্যবাদের অন্ধকৃপে আবদ্ধ রাখে না। ক**ন্টে**র খনিত্র দিয়া তিনি জীবনের ক্লেশবন্ধুর ভূমিকে কর্ষণ করিয়া তাহার মধ্যে স্নিগ্ধ সমবেদনা ও সরস কৌতুকের ভোগবতীধারা প্রবাহিত করেন। মুকুন্দরামের অন্মজীবন-কাহিনী মধ্যযুগীয় সাহিত্যের একটি সনাতন ধারারই অনুবর্তন —প্রত্যেক কবিই গ্রন্থারম্ভে তাঁহার কিঞ্চিৎ বংশপরিচয় লিপিবদ্ধ করিয়াছেন, ভাঁহার পূর্বপুরুষ-সম্বন্ধে ছই-একটি বিচ্ছিন্ন ৩থ্য পাঠককে জানাইয়াছেন। কিন্তু মুকুন্দরামের হাতে পড়িয়া এই মামুলি আত্মপবিচয় এক নূতন আলোকে উদ্ভাসিত হইয়া উঠিয়াছে, নিজ ব্যক্তিগত জীবনের ক্ষুদ্র পটভূমিকায় সমগ্র যুগের পরিচয় উজ্জ্বল, অবিম্মরণীয় বর্ণে দীপ্ত হইয়াছে। কিন্তু এই অবিচার-অরাজকতার স্বরূপ-উদ্বাটনে কবির কোন তীব্র উষা বা মর্মদাহী জ্বালা প্রকাশ পায় নাই। যে লেখনীসাহায্যে তিনি প্রজাসাধারণের ছর্দশা বর্ণনা করিয়াছেন, তাহা তিনি বিজ্ঞাপের বিক্ষোরক জাবকরসে ডুবান নাই, তাহাকে এক শাস্ত, কৌতুকস্মিত বিষ্ময়বোধের দ্বারা অভিষিক্ত করিয়াছেন। এই অত্যাচারীদের প্রতি তিনি

রক্তচক্ষু অভিশাপ বর্ষণ করেন নাই, সমস্ত ব্যাপারটির অহেতুক অসঙ্গতিটি তাঁহার মনে একটি কারুণ্যমিঞ্জিত কিংকর্তব্য-বিমূঢ়তার সৃষ্টি করিয়াছে। কবি যেন এই নির্মম অত্যাচারের দ্রপ্তা-রূপে গালে হাত দিয়া ভাবিতেছেন যে, এই স্বস্থমস্তিষ, স্থানিয়ন্ত্রিত জীবনটা হঠাৎ পাগলামির খেয়ালে পরিণত হইল কি করিয়া ? এই বেদনাবিদ্ধ আকস্মিক বিপর্যয়বোধই তাঁহার বর্ণনাভঙ্গীর বৈশিষ্ট্য। অত্যাচারের নিষ্পেষণ-যন্ত্রে তিনিও ব্যক্তিগতভাবে পিষ্ট ও দলিত হইয়াছিলেন, কিন্তু তাহাতে তাঁহার মানসভঙ্গী বদলায় নাই, নিজের কথা বলিতে গিয়াও তাঁহার কণ্ঠস্বরের স্বাভাবিক রহস্থপ্রিয়তা অশ্রুবাম্পোচ্ছাদে অভিভূত হয় নাই। "তৈল বিনা কৈল স্নান করিলু' উদক পান শিশু কাঁদে ওদনের তরে"—দারিদ্যের এই মর্মভেদী অনুভূতি তাঁহার শিল্পিজনোচিত প্রশান্তি ও সার্বভৌমতাবােধকে বিচলিত করে নাই। ঝটিকাতাড়িত বালুকণা যেমন বিলয়ের আশঙ্কার মপেক্ষা বায়ুসঞ্চরণের অভিনব অভিজ্ঞতার কৌতুকাবহ দিক্টি বেশী অনুভব করে, তেমনি রাষ্ট্রবিপ্লবের প্রলয়ঝটিকায় উন্মূলিত ও উধেব থিকিপ্ত এই কবিসত্তা নিজ ক্ষতি ও সর্বনাশের দিক্টা লঘু করিয়া, দেবীর প্রত্যাদেশে তাঁহার কবিত্বশক্তির ফ্রণজনিত আনন্দ, নৃতন স্থানে আশ্রয়প্রাপ্তির নিশ্চিম্ত আরাম ও আশ্রয়দাতার প্রতি কৃতজ্ঞতার উচ্ছাসকেই মুখ্যভাবে উপলব্ধি করিয়াছেন। হাস্তরসিকের বৈশিষ্ট্য জলসিক্ত রাজহংসের পাখার স্থায় তাঁহার ত্বঃখ-আর্দ্র চিত্ত সংসক্ত তুঃখকণিকাগুলিকে ঝাড়িয়া ফেলাইয়া আরও মস্থণ ও উজ্জ্বল দেখায়।

কোন কোন সমালোচক কালতুকের দ্বারা উৎপীড়িত পশুসমাজের অনুযোগের ভিতর তাঁহার ব্যক্তিগত জীবনের হুঃখ-তুর্দশার যে প্রতিধ্বনি, তাহার মধ্যে তাঁহার তিক্ত অভিজ্ঞতার উদ্গিরণের নিদর্শন পান। কিন্তু সত্য ইহার সম্পূর্ণ বিপরীত। নিজের বেদনাদায়ক অভিজ্ঞতা উহার তীব্রতা হারাইলে, উহার স্থুল বস্তুঅংশ ও মানস তীক্ষ্ণ অভিঘাত বর্জন করিয়া সৃক্ষা রস-রূপে, একটা উধ্বায়িত নিরপেক্ষ অনুভূতিরূপে অধিষ্ঠিত হইলে তবেই উহাকে এক সম্পূর্ণ উদ্ভট প্রতিবেশে স্থানান্তরিত করিয়া অবিমিশ্র রসিকতার উপাদানে পরিণত করা সম্ভব। উত্তাপের আলোকে রূপান্তরের মত শিল্পিমনের রহস্তময় প্রক্রিয়ায় ব্যথা হাসিতে বিলীন হয়। এ যেন রূপকথার রাজকন্মার "হাসিতে মাণিক, কান্নায় মুক্তা" ঝরার মত ব্যাপার—হাসি ও কারায় তফাৎ যেন মাণিক ও মুক্তার মত। নিজের মর্মবেদনা পশুতে আরোপ করার পিছনে হুঃখবোধের স্থায়িত্ব তভটা নাই, যভটা আছে হুঃখক্লিষ্ট মনের স্থিতিস্থাপকতা। 'নেউগি চৌধুরী নই না রাখি তালুক'— এই উক্তির প্রকৃত তাৎপর্য আত্মতঃখ-নিবেদন নহে, জমিদার ও সাধারণ প্রজার মধ্যে ব্যবধানের ইঙ্গিত। ভালুকের বেনামীতে কবির অনুযোগ এই যে, যে অত্যাচার জমিদার-ডিহিদারের উপর অনুষ্ঠিত হইলে বিধানসঙ্গত হইত, তাহা সাধারণ পশু বা মানবের উপর কেন অনুষ্ঠিত হইতেছে ? ঝড বড় গাছে লাগিলে কাহারও কিছু বলার থাকে না, কিন্তু ঘাসকে উৎপাটিত করিলে সঙ্গতিবোধ বিপর্যস্ত হয়। বড় শোষক ক্ষুদে শোষককে গ্রাস করিলে শোষণক্রিয়াই দণ্ডিত হয় ও স্থায়নিষ্ঠার মর্যাদা রক্ষা হয় : কিন্তু যে সামাস্ত প্রজা সমস্ত মধ্যস্বত্বকেই মানিয়া লইতে প্রস্তুত, তাহার উপর অনর্থক জুলুম কি শক্তির অপব্যবহার নয় ? এখানে লক্ষ্য করা উচিত যে, কবির কাতবতার মধ্যে তাঁহার প্রতি অনুষ্ঠিত আচরণের অসঙ্গতির অন্তুযোগই মুখ্য সুর। ইহা গভীর মর্মবেদনার অভিব্যক্তি নয়, হাস্থরসিকের তির্যক্ কটাক্ষ ও

বিচারের কৌতুকাবহ মানদণ্ড। এই উক্তির গৃঢ় তাৎপর্যটি বুঝিতে পারিলে পশুরাজ সিংহ যে ভালুককে স্নেহালিঙ্গনে বদ্ধ করিতেন না তাহা নিশ্চিত এবং কবির আশ্রয়দাতা 'সুধন্য বাঁকুড়া রায়'ও যে তাঁহার শিরোপার ব্যবস্থা করিতেন না তাহা ধয়িয়া লওয়া যাইতে পারে।

"ফুল্লরার বারমাস্তা" তুঃথকাহিনী-বর্ণনাও সমালোচকগণ কবির হুঃখবাদ-প্রবণতা ও দারিদ্যের প্রতি সহামুভূতির অকাট্য প্রমাণ-রূপে গ্রহণ করিয়াছেন। সহামুভূতি কবিমাত্রেরই থাকিবে ও তাঁহার মানসস্ষ্টি যদি দরিজ্ঞাণীভুক্ত হয়, তবে এই সহামুভূতি যে বহুলাংশে দারিদ্যের প্রতি তাহাও ধরিয়া লওয়া যাইতে পারে। কিন্তু তাঁহার অপত্যস্ত্রেহ প্রধানত অবলম্বন করিয়াছে কালকেতু-ফুল্লরা বা হর-গৌরীকে, তাঁহাদের দারিদ্রোকে নহে। প্রতি পিতামাতা কানা ছেলেকেও ভাল-বাসে, কিন্তু সে কানা বলিয়া নহে। সমালোচকগণ ব্যাধ-জীবনের দৈনন্দিন অভাব-অনটন, উহার উপকরণের স্বল্পতাকেই বড করিয়া দেখিয়াছেন, কিন্তু এই ঘটা করিয়া দারিদ্রাবর্ণনার উপলক্ষের প্রতি তাদৃশ গুরুত্ব আরোপ করেন নাই। এই দারিদ্রোর আডম্বর যে সম্ভাবিত সপত্নীকে তাড়াইবার কৌশল-মাত্র, ফুল্লরার মনের কথা নয়, তুংখবাদগ্রস্ত, আধুনিক সমালোচক তাহা বুঝিবেন না। হয়ত এই চিত্রের মধ্যে তথ্যগত অতিরঞ্জন না থাকিতে পারে, কিন্তু ইহার ভাবগত প্রেরণা যে করুণরস-উদ্দীপন নহে. তাহা অত্যম্ভ স্কুম্পষ্ট। ফুল্লরা কাহারও সহামুভূতি আকর্ষণের জন্ম তাহার গৃহস্থালীর রিক্ততা ও তাহার জীবন-সংগ্রামের তীব্রতার মসীময় চিত্র আঁকে নাই, এক 'উড়িয়া-আসিয়া-জড়িয়া-বসা' অবাঞ্ছিত আগন্তুককে বিদায় দিবার জন্মই এ প্রসঙ্গের অবতারণা করিয়াছে। তাহা না হইলে সে এতদিন এ সম্বন্ধে নীরৰ ছিল কেন ? যখন চণ্ডীর ছলনার

শিকার না পাওয়ার দিন সে সই-এর কাছে চাল ধার করিতে গেল, ও পূর্ব-ঋণ পরিশোধ না করার খোঁটা নিঃশব্দে পরিপাক করিল, তথন তাহার ত এই দারিদ্র্যাবিলাসের কোন চিহ্নই দেখি না। আমাদের আধুনিক সমাজতস্ত্রবাদী মন মাস হইতে মাসাস্তরে প্রসারিত অভাবের এই স্থদীর্ঘ, ক্রমবর্ধমান তালিকা দেখিয়া মধ্যযুগীয় বাংলাতেও যে সমাজতন্ত্রী কবি ছিল এই নিজ মনের মত সত্য প্রমাণ করিতে বদ্ধপরিকর হইয়াছে। কিন্তু এই চিত্র আঁকিবার সময়ে কবি যে ক্রমাল বাহির করিয়াঘন ঘন অশ্রুমোচন করিতেছিলেন না, পরস্তু বিবদমানা ত্রই নারীর মাঝখানে দাঁড়াইয়া ও তাহাদের বিভিন্নভাব-প্রতিবিম্বী মুখের দিকৈ চাহিয়া মিটিমিটি হাসিতেছিলেন—এই দৃশ্য বোধ হয় আমাদের দৃষ্টি এড়াইয়া গিয়াছে।

হর-গৌরীর দারিদ্রান্ত সেই একই মনোভাবের ছোতক।
দেবম হিমা-কীর্তক মঙ্গল-কাব্যের পটভূমিকায় দারিদ্রোর এই
চিত্র ইহাকে গুরুত্ব দিবার জন্ম নহে, ইহাকে লঘু করিয়া
দেখিবার জন্ম। যেখানে স্বয়ং শিব ভিখারী ও অন্নপূর্ণা
অন্নরিক্তা, সেখানে তোমার আমার দারিদ্রোর প্রতি অন্নযোগে
উচ্চকণ্ঠে গগন বিদীর্ণ করিবার কি অধিকার আছে ? পৃথিবীর
যত অনাহার-অর্ধাশনক্রিপ্ত জনসাধারণ সকলেই হর-গৌরীর
পরিবারভূক্ত। দরিদ্রের দেবতাকে আমাদের মাঝে পাইয়াও
কি দারিদ্রা আমাদের বিভীষিকা হইবে ? আর ইহা কি
ব্ঝিতেছ না যে ইহা সমস্তই মায়াপ্রপঞ্চ, দেবের ছলনা ? যে
অন্নপূর্ণা অন্নবিহনে স্বামী ও পুত্রকন্তাকে উপবাসী রাখিতে বাধ্য
হইতেছেন, তিনিই আবার ভক্ত কালকেতুকে সাত ঘড়া মোহর
দান করিতেছেন। স্থানিপূর্ণ গৃহিণীর স্থায় ইহার এক ঘড়া
নিজের জন্ম রাখিলেই ত তিনি এই তিক্ত গৃহবিবাদের হাত
হইতে রক্ষা পাইতেন। অতএব দারিদ্রোর জন্ম বুণা মাথা না

ঘামাইয়া যিনি কটাক্ষমাত্রে রিক্তভাকে রাজৈশ্বর্যে পরিণত করিতে পারেন, তাঁহারই চরণাশ্রয় ইহকাল ও পরকাল এই উভয় অবস্থারই যে কাম্য এই সভ্য হৃদয়ঙ্গম কর। কবি আমাদের এই কথা বুঝাইতে চাহিয়াছেন, কিন্তু যুগধর্মের প্রভাবে আমরা বুঝিতেছি অহ্যরূপ।

আসল কথা ছঃখদারিদ্যের প্রসঙ্গ কাব্যে উত্থাপন করিলেই কবি ছঃখবাদী হন না। আমরা তাঁহার অভাবের তালিক। দেখিতেছি, ভাঁহার হুঃখজয়ী মনোভাবকে ঠিক গ্রহণ করিতে পারিতেছি না। এই ছঃখ সম্বন্ধে সম্পূর্ণ নির্বিকারছ, ছঃখ-সচেতনতার একান্ত অভাব, হুঃখে আকণ্ঠ নিমগ্ন থাকিয়াও জীবন রসের উপভোগ—ইহাই ইতিহাসের যুগযুগান্তর ধরিয়া বাঙ্গালী নিমতর সমাজের বৈশিষ্ট্য ও টিকিয়া থাকিবার রহস্ত। ফুল্লরার জীর্ণ কুটীরে পাতার ছাউনি ও ভেরেণ্ডার থাম কালবৈশাখীর ঝড়ে উড়িয়া ভাঙ্গিয়া যাইতেছে, কিন্তু যে অবিচল শাস্তি ও সস্থোষ, স্বামিসৌভাগ্যের যে স্থৃদৃঢ় স্তপ্তাশ্রয় তাহার গার্হস্থ্য জীবনকে আচ্ছাদন ও স্থায়িত্ব দিয়াছে তাহার ঝটিকার কোন এক্তিয়ার নাই। পাত্রের অভাবে সে মেজেতে গর্ভ খুঁড়িয়া আমানি রাখে, কিন্তু তাহাতে আমানির স্বাহ্তার বিন্দুমাত্র অপচয় ঘটে না। যে কবি অভাবপীড়িত কালকেতুর অন্নের গ্রাসকে 'তে-আঁটিয়া তালের' সহিত তুলনা করিয়াছেন, তিনি যে অভাবের শোকে মুহ্মান হইয়া পড়িয়াছেন এমত বোধ হয় না। জানিনা চণ্ডীপূজার সহিত ব্যাধ-জীবনের সম্বন্ধ কি সূত্রে স্থাপিত হইয়াছিল, কিন্তু বিখ্যাত স্মার্ত রঘুনন্দন চণ্ডীপূজার যে স্মৃতির ব্যবস্থা দিয়াছেন, তাহাতে ব্যাধোপাখ্যান-শ্রবণ পূজার একটা অপরিহার্য অঙ্গরূপে নির্দিষ্ট হইয়াছে। ব্যাধের সঙ্গে সক্ষে অনার্যজাতির হীন মানের জীবন্যাত্রার চিত্র আসিয়া পড়িয়াছে; এবং এই চিত্রাঙ্কনের জন্ম মুকুন্দরাম দারিদ্যোর প্রতি বিশেষভাবে সহামুভূতিসম্পন্ন কবি বলিয়া সমালোচক-মহলে পরিচিত হইয়াছেন। তাঁহার বিষয়নির্বাচনে স্বাধীনতা থাকিলে এই মন্তব্যের যাথার্থ্য অনস্বীকার্য হইত। কিন্তু দ্বিজ্ঞ মাধব ও মুকুন্দরাম উভয়ের কাব্যেই ঘটনাগুলি সাধারণ থাকায়, মুকুন্দরামের সহামুভূতির প্রমাণ খুঁজিতে হইবে তাঁহার বিষয়বিক্যাসের মধ্যে নহে, আলোচনাপদ্ধতি হইতে অনুমিত তাঁহার মনোভাব ও জাঁবনদর্শনে।

(७)

দ্বিজ মাধব ও মুকুন্দরামের মধ্যে তুলনা করিলে উহাদের মধ্যে বাস্তবরসের আপেক্ষিক প্রসারসম্বন্ধে ধারণা করা যাইবে। মোটের উপর এই কথা বলা যাইতে পারে যে, দ্বিজ মাধবে বাস্তবতার অঙ্কুর আছে, কিন্তু ইহা শাখা-পল্লবে, ফুলে-ফলে ব্যাপ্ত হয় নাই। তিনি যেখানে বাস্তব তথ্যের অবতারণা করিয়াছেন, সেখানেও স্বচ্ছন্দ গতি ও পরিপূর্ণ প্রসারের দিকে লক্ষ্য রাখিতে পারেন নাই, তাঁহার বস্তুবর্ণনার মধ্যে খানিকটা আড় ভাব রহিয়া গিয়াছে। বস্তুবিক্যাসকে চারুশিল্পে পরিণত করিতে হইলে প্রয়োজন প্রশস্ত পরিবেশ ও কবিচিত্তের সহজ উল্লাস। বর্ণনীয় বিষয় যে আত্মপ্রসারণের উপযোগী বিস্তারভূমি পাইয়াছে ও লেখকের বর্ণনাভঙ্গী যে তাঁহার জীবনরসিকতার পরিচয় বহন করিতেছে, এই ছুইটি সর্ভ পূর্ণ না করিলে বাস্তব-রসের কবি হওয়া যায় না। দ্বিজ মাধব ভাঁহার পর্যাপ্ত বস্তুসঞ্যের মধ্যে সহজ গতিচ্ছন্দ আনিতে পারেন নাই, বা তাঁহার বস্তুর প্রাচীর ভেদ করিয়া তাঁহার চিত্তের আনন্দহিল্লোলও আমাদিগকৈ স্পর্শ করিতে পারে নাই।

হর-গৌরীর পারিবারিক জীবন তাঁহার কাব্যে স্থান পায় নাই; দরিদ্রের ঘরের গৃহিণী, সাংসারিক কর্তব্যভারে ক্লিষ্টা

গৌরী তাঁহার কাব্যে উগ্রপ্রকৃতি, মঙ্গলদৈতাসংহারিণী চণ্ডী। কালকেতুর মাতার গর্ভসঞ্চারের সহিত কবির উর্ধালোক-সঞ্চারিণী কল্পনা মাটিতে নামিয়া আসিয়াছে--নিদয়ার গর্ভযন্ত্রনা কতকটা বিস্তৃতভাবেই বর্ণিত হইয়াছে, তবে ইহার মধ্যে বাস্তব-রসবিস্তারের যে স্থায়েগ ছিল, কবি যেন তাড়াতাড়িতে তাহার সবটা গ্রহণ করেন নাই। মুকুন্দরামে গর্ভবতী ব্যাধরমণীর সাধভক্ষণের যে আয়োজনকে আশ্রয় করিয়া কবি তাঁহার জীবনরসিকতার পরিচয় দিয়াছেন, দ্বিজ মাধ্বে তাহার কোন উল্লেখ নাই। কালকেতুর শৈশব-জীবনের যে অনুপম চিত্র আমরা মুকুন্দরামে পাই, দ্বিজ মাধ্যে তাহার একটা সংক্ষিপ্তসার মাত্র আছে—বর্ণনার যেরূপ সরস, সাবলীল ও পূর্ণাঙ্গ বিস্তারে র্প স্থাষ্টি হয় দ্বিজ মাধ্ব ততদূর অগ্রসর হইতে পারেন নাই। মাধৰ এক নিঃশ্বাসে কালকেতুকে শৈশৰ হইতে যৌবনে উত্তীৰ্ণ করিয়া দিয়াছেন—শৈশবক্রীড়া ও বাঁটুলদ্বারা পক্ষিশিকারে শিক্ষানবিসির রস উপভোগ করিবার পূর্বেই জীবিকার্জনের জন্ম পশুবধে প্রবৃত্ত করাইয়াছেন। মুকুন্দরামে ক্রীডারত 'শিশু মধ্যে মোডল' ব্যাধবালকের উপর পৌরাণিক বাখালরাজ জ্রীকুঞ্রে খানিকটা ছায়াপাত হইয়াছে, তাহার অসাধারণ শক্তিসামর্থ্যের ভিতর দিয়া তাহার মধ্যে একটা বৃহত্তর সম্ভাবনা প্রত্যক্ষ করি; মাধবের কাটা-ছাঁটা, স্বল্লতম তথামাত্রে সীমাবদ্ধ বর্ণনা আমাদের মনে কোন উদারতর কল্পনা জাগায় না। কালকেতুর বিবাহবর্ণনা দ্বিজ মাধবে খুব সংক্ষিপ্ত, এবং উহার বৃহত্তর অংশ তুই বৈবাহিকের মধ্যে পণনির্ধারণ লইয়া ব্যাপৃত; বিবাহের আচার-অনুষ্ঠান, অনার্য-বিবাহে মন্ত্রপাঠের মত, অনেকটা নমো নমো করিয়া সারা হইয়াছে; রন্ধনের তালিকাও ব্যাধের রুচি ও অর্থসঙ্গতির মানদণ্ডে খুব স্বল্লোপকরণ। মুকুন্দরামে বিবাহের কৌতুকরস, প্রাকৃত

নর-নারীর সহজ আনন্দ সমস্ত বর্ণনার বাহুল্য ও প্রসারের মধ্য দিয়া স্থপ্রচুর ধারায় প্রবাহিত। বিবাহপূর্বের ক্রিয়াকাণ্ড প্রায় সমস্তই বৈদিক-নির্দেশান্মসারী, ও বিবাহোৎসবের মধ্যেও উচ্চবর্ণস্থলভ মাঙ্গলিক অনুষ্ঠানেরই প্রাধান্ত। অবশ্য গৃহসজ্জা-যৌতুক-উপহারের মধ্যে ব্যাধ-জীবনের বাস্তব রুচি ও বৃত্তির কথা লেখক বিশ্বত হন নাই। মাধব বিবাহসভায় উপস্থিত ব্যাধরমণীগণের শরীরের তুর্গন্ধ ও উদ্ভট সাজসজ্জার কথা উল্লেখ করিয়। আমাদের কৌতুকরস উদ্রিক্ত করিতে চাহিয়াছেন। মুকুন্দরাম কিন্তু উৎসবের সমীকরণশক্তির মধ্যে উচ্চ ও নিমবর্ণের সমস্ত ভেদকে বিলুপ্ত করিয়াছেন, তাঁহার এয়োরা আচরণ ও বেশভ্ষায় কোন অনার্যজাতিস্থলভ বৈশিষ্ট্যের চিহ্ন বহন করে না। মাধব ধর্মকেতুর জীবনাবসান ঘটাইয়াছেন থুব স্বাভাবিক উপায়ে—বন্য পশুর আক্রমণে; ব্রাহ্মণ্যসংস্কৃতি-শাসিত মুকুন্দ কিন্তু তাহাকে বারাণসীধামে বানপ্রস্থ অবলম্বন করাইয়াছেন ও প্রতিদিনকার সম্বলহীন কালকেতুর দ্বারা উচ্চবর্ণের অনুকরণে পিতামাতার জন্ম মাসিক বৃত্তিপ্রেরণের ব্যবস্থা করিয়াছেন। ব্যাধের এই পরিণাম হয়ত ঠিক বাস্তবান্থগামী নহে, কিন্তু পূর্বাপরসঙ্গতির দিক্ দিয়া অত্যন্ত উপযোগী। কালকেতুর বিবাহসভায় যে বৈদিক-অনুষ্ঠান-প্রাধান্য ও তাহার ভবিষ্যজ্জীবনে চণ্ডীর অনুগ্রহে তাহার যে আভিজাত্যে উন্নয়ন তাহাদেরই সহিত মিল রাখিয়া তাহার পিতামাতার এই বারাণসী-প্রয়াণ।

কালকেত্র পশুশিকার-কাহিনীকে উপলক্ষ্য করিয়া মুকুন্দরামের কাব্যরস, হাস্থরসিকতা ও রূপকের আরোপদক্ষতা যেন
উদ্ধেল হইয়া উঠিয়াছে। বিভিন্ন পশুর চরিত্রস্থাষ্টি, তাহাদেব
উক্তির মধ্যে চরিত্রান্থ্যায়ী সঙ্গতিবিধান ও কবির নিজ
অভিজ্ঞতা হইতে এই আরণ্যক নাটকে মানব-জীবনের

কৌতুককর সাদৃশ্য-আরোপ-এই সমস্ত মিলিয়া একটি উপভোগ্য নাট্যরস জমিয় উঠিয়াছে। কবিপ্রতিভার যাহস্পর্শে বন যেন লোকালয়ের মত মুখর হইয়া উঠিয়াছে; পশুদের পারস্পরিক সম্পর্ক, তাহাদের কাতর কলরবের বিচিত্র ঐকতান, তাহাদের জীবনস্পৃহার রসোচ্ছল আকুতি, মানব-অফুকরণে পশুসমাজের অধিকার-কর্তব্য-নির্দেশ কবিমানসের একটা গভীর আলোড়ন, একটা উতরোল প্রাণ-হিল্লোলের সংবাদ বহন করে। এই কাছিনী যেন কবির বেদনাময় পূর্বস্মৃতি ও দীর্ঘসঞ্চিত কৌতুকরসকে জাগাইয়া দিয়া তাঁহার মনোরাজ্যে একটা বিরাট তোলপাড়ের **স্**ষ্টি করিয়াছে ও তাঁহার সরস বর্ণনাকৌশলের ভিতর দিয়া এই উত্তেজনার চেউ পাঠকের হৃদয়তটে আসিয়া প্রহত হইতেছে। অবশ্য দ্বিজ মাধ্যেও পশুজগতের এই জীবনচাঞ্চল্যের খানিকটা পরিচয় পাওয়া যায়। কিন্তু মুকুন্দ যেমন প্রাণের গভীর অন্কুভৃতি ও নাটকীয় রসস্ষ্টির উদগ্র বাসনা লইয়া এই চিত্র আঁকিয়াছেন, তাহার সহিত মাধবের ক্ষীণ ঔৎস্কুক্যের তুলনা হয় না। আখ্যানভাগ উভয়ের মধ্যে কেহই উদ্ভাবন করেন নাই— উভয়েই ইহা কোন-এক সাধারণ ভাণ্ডার হইতে গ্রহণ করিয়াছেন। কিন্তু কবিচিত্তের ভাবাসঙ্গস্জনের কোন এক নিগৃঢ় সূত্র ধরিয়া এই কাহিনীটি মুকুন্দরামের অন্তর্জগতের সহিত একাত্মতা লাভ করিয়াছে ; অকস্মাৎ ভাঁহার পূর্বজীবনের উৎপীড়নের স্মৃতি ইহার সহিত যোগ দিয়া তাঁর মর্মকোষ-ক্ষরিত প্রাণরদে ইহাকে অভিষিঞ্চিত করিয়া তুলিয়াছে। আমরা পূর্বেই দেখিয়াছি যে কবির বেদনা কেমন করিয়া কৌতুকরদে, জীবনকৌতূহলে পরিণত হইয়াছে; বেদনার বিস্মৃত হৃদ্যাবেগ বাস্তবচিত্রণের বর্ণাঢ্যতাবিধানের রূপে আত্মপ্রকাশ করিয়াছে। ইহার রূপ বদলাইয়াছে, কিন্তু শক্তি নিঃশেষিত

হয় নাই। চণ্ডীমঙ্গলের এই প্রাণিজগতের চিত্র কবিমনস্তত্ত্বের এক কোতৃহলোদ্দীপক নিদর্শনরূপে বাংলাসাহিত্যে চিরস্তনত। লাভ করিবে।

তারপর মুরারি শীল ও ভাড় দত্ত মধ্যযুগীয় বাংলাসমাজের এক নৃতন স্তরের প্রতিনিধিরূপে আমাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। এই ছইটি চরিত্রও সাধারণ ভাণ্ডার হইতে গৃহীত। মাধবে যে বেনের নিকট কালকেতু চণ্ডীদত্ত অঙ্গুরীয় ভাঙ্গাইতে গেল তাহার নাম সোমদত্ত। মুকুন্দরামের সহিত তুলনায় এই আখ্যানভাগ অনেক নীরস ও সংক্ষিপ্ত। এখানে খুড়া আছে, কিন্তু খুড়ার উপযুক্ত সহধর্মিণী, তাহার শাঠ্যের সহযোগিনী খুড়ী নাই। ধার শোধ দিবার ভয়ে বেনের আত্মগোপন, রঙ্গমঞ্চে বেনেনীর আবিভাব ও স্তোকবাক্যে কালকেতুকে এড়াইবার চেষ্টার মধ্যেই আবার নূতন ধারের প্রস্তাব, লাভের গন্ধ পাইয়া খিড়িকি দরজা দিয়া বেনের প্রবেশ, কালকেতুকে ঠকাইবার ফিকির ও শেষ পর্যন্ত দেবার আকাশবাণী শুনিয়। ভক্তিতে নয় ভয়ে, বাধ্যতামূলক সাধুতার অবলম্বন—এ সমস্ত মাধবের গ্রন্থে নাই। এই তথ্যসমাবেশের মধ্যে যে প্রাণের ঝলক, ধর্মনীতি-নিরপেক্ষ নিছক অস্তিত্বের যে আনন্দ তাহাই এই ক্ষুদ্র ঘটনাসংস্থানকে একটি কৌতুকোজ্জল জীবন-নাট্যের রূপ দিয়াছে। দ্বিজ মাধবে ঠকাইবার একটা প্রাণহীন উভাম আছে, কিন্তু বেনে আকাশবাণীর সাহায্য ব্যতিরেকেই অঙ্গুরীয়টি যে চণ্ডীর ধন তাহা বৃঝিয়া তাহার ঠকাম হইতে প্রতিনিবৃত্ত হইয়াছে। তবে দ্বিজ মাধব যে এই বিষয়ে তাঁহার পর্যবেক্ষণ-শক্তিকে প্রথাবদ্ধতার আফিং-এর নেশায় সম্পূর্ণ অচ্ছন্ন হইতে দেন নাই, তাহার প্রমাণ নিমোদ্ধত এই ছুই ছত্রে মিলে :---

> চাকর ধরিল বীরে তারে কিছু দিয়া। ছালায়ে ভরিয়া ধন লই যায়ে বহিয়া॥

বাস্তব জীবনের ভগ্নদৃত এই চাকর ও বাস্তব দারিদ্যের প্রতীক বহিবার ছালা কবিকল্পনার নেপথ্যলোক হইতে অতর্কিতভাবে নিজ্ঞান্ত হইয়া ইহাকে বস্তুরাজ্যের অঙ্গীভূত করিয়াছে। মুকুন্দরাম আকাশবাণীর সহিত তাঁহার বাস্তব-বোধের একটা আপস-নিষ্পত্তি করিয়া এই দেব-প্রত্যাদেশকে কেবল বেনেরই গোচরীভূভ করিয়াছেন। ষোড়শ শতাব্দীতেও সংশয়বাদীরা আকাশবাণীর সার্বজনীন পরিবেষণে ঠিক রাজী ছিল বলিয়া মনে হয় না।

নগরপত্তন-ব্যাপারেও বাস্তববোধ ও প্রথান্থত্বির মধ্যে একটা সন্ধিবন্ধন-প্রবণতা লক্ষ্য কর। ষায়। নগরের ঐশ্বর্য ও আয়তন পৌরাণিক যুগের স্বর্ণলঙ্কার আদর্শে নির্ধারিত হইয়াছে— মণিমাণিক্যের ছড়াছড়ি অতিক্ষীত কল্পনার প্রভাব বহন করে। কিন্তু আবার সঙ্গে সঙ্গে এই অলৌকিক সমৃদ্ধিবর্ণনার ফাঁকে ফাঁকে কোন অসতর্ক মুহূর্তে বাস্তব অবস্থার ত্ই-একটি ইঙ্গিত কবিকল্পনার শাসন অতিক্রম করিয়া আত্মপ্রকাশ করে। এক দিকে "ইক্রনীল-পাষাণে রচিত কৈল পোতা"; আবার অক্সত্র "চারি হাল। খড়েতে ছাইল চারি পাট"—মনে হয় যেন কবি সৌধকিরীটিনী, রত্মদীপ্তিমপ্তিতা কোন পৌরাণিক পুরীর কল্পনার সহিত তাঁহার বাস্তব প্রতিবেশের খড়ো ঘরের প্রত্যক্ষতাকে মিশাইয়াছেন।

এই কল্পনাবাস্তবের সংমিশ্রণ-ব্যাপারে দ্বিজ মাধব ও মুকুনদ একই পদ্ধতির অনুসরণ করিয়াছেন। দ্বিজ মাধবেও দেখি "কনক কলসী ভরি প্রজা খায়ে পানি"; কিন্তু ছেলেদের খেলা বর্ণনা প্রসঙ্গে তিনি চোখে যাহা দেখিয়াছেন তাহাই লিখিয়াছেন—"আনিয়া পোতলা ভাল নাচায়ে ছাওয়ালে।" যেখানে প্রজাসাধারণ সোনার কলসী হইতে জল পান করে, সেখানে ছেলেদের খেলার জন্ম অন্তত সোনার ভাটার ব্যবস্থা করিলে কল্পনায় সঙ্গতি রক্ষা হইত। মধ্যযুগীয় বাংলা কবির ভূগোলতত্ত্ব-বিশারদ হওয়ার জন্ম কোন বাধ্যবাধকতা ছিল না, তথাপি নবনির্মিত ও পুরাতন তূইটি নগরের নামকরণ-ব্যাপারে কলিঙ্গ ও গুজরাট এই তূইটি ইতিহাসপ্রসিদ্ধ জনপদের নাম কেন ব্যবহৃত হইয়াছিল তাহা কৌতৃহলপূর্ণ অনুমানের ব্যাপার। কলিঙ্গ যাহা হউক প্রতিবেশী প্রদেশ—মেদিনীপুর হইতে উড়িয়্মার ব্যবধান তথনকার দিনের পক্ষেও খুবই সামান্তা। কিন্তু ভারতের স্থান্তর পশ্চিমপ্রান্তিহিত সমুদ্রতরঙ্গবিধীত গুজরাট দেশ কেন যে বাঙ্গালী কবির কল্পনাকে অধিকার করিয়াছিল তাহার কারণ ভাবিয়। পাওয়া কঠিন। যোড়শ শতকে ঐতিহাসিক সংঘটনের দিক্ দিয়া না হইলেও হয়ত কোন ধর্মাত আন্দোলনের স্থাত্ত ধরিয়া গুজরাট বাংলার মনোরাজ্যের অতি সন্ধিতি হইয়া থাকিবে। তবে উভয় কবিই কলিঙ্গ-গুজরাটের দূর্ছ কমাইয়া উভয় দেশকে প্রতিবেশী রাজ্যে পরিণত করিয়াছেন।

ন্তন সহরে প্রজা বসাইবার জন্ম আকিঞ্চন, আগন্তুক জনসংঘকে বিশেষ স্থবিধাদানের ব্যবস্থা, নানাজাতির আগমন ও বৃত্তিবৈচিত্র্য ও মণ্ডল বা'দেশমুখের পদগৌরব লইয়া স্বর্ধা-প্রতিযোগিতা—উভয় কবিই সরস বাস্তববোধের সহিত বর্ণনা করিয়াছেন। মাধবে দেখি যে চণ্ডীর স্বপ্লাদেশ পাইয়াই গ্রামপ্রধান বুলন মণ্ডল কলিঙ্গ হইতে সমস্ত প্রজা পাঠাইয়া আনিয়া গুজরাটে বসতি স্থাপন করিল। কিন্তু মুকুন্দরামের গ্রন্থে এই migration বা দেশত্যাগের ব্যাপারটি এত সহজে সম্পন্ন হয় নাই। তখনকার যুগে ধর্মবিশ্বাসের বোধ হয় খানিকটা শিথিলতা আসিয়া থাকিবে; কেন-না, দেবীর স্বপ্লাদেশকে মণ্ডল নিছক স্বপ্ল বলিয়াই উড়াইয়া দিল। দেবীকে প্রাকৃতিক ত্র্যোগ ও অতিবর্ষণের ফলে জলপ্লাবন ঘটাইয়া কলিঙ্গদেশের প্রজাকে

দেশত্যাগে বাধ্য করিতে হইল। কিন্তু তথাপি দৈব অপেকা অর্থ নৈতিক কারণই দেশত্যাগের প্রবল প্রেরণা যোগাইল। কলিঙ্গরাজ যে এই ছুর্দৈবপ্রশীড়িত প্রজাবন্দের খাজনা মাপ করিবেন না এবং কালকেতুর নবপ্রতিষ্ঠিত রাজ্যে যে তিন বংসর রাজস্ব দিতে হইবে না, দেবমহিমার সহিত সম্পূর্ণরূপে অসংশ্লিষ্ট এই হিসাবী মনোবৃত্তিই তাহাদের শেষ সিদ্ধান্তে প্রতিফলিত হইয়াছে। মুকুন্দরামের কাব্য মনোযোগ দিয়া পড়িলে বোঝা যায় যে, সমসাময়িক সমাজের বাস্তব প্রেরণাই কেমন করিয়া দৈবপ্রভাবের সার্বভৌম প্রসারের মধ্যে ধীরে ধীরে আত্মপ্রতিষ্ঠা করিতেছে। সমুদ্রের নির্দেশে কলিঙ্গদেশকে ভাসাইবার জন্ম সমস্ত নদনদীর উল্লসিত ক্রতথাবন কবির বর্ণনার মধ্যেও সরস গতিবেগের সঞ্চার করিয়াছে। এই সর্বভারতীয় নদীসংঘের অধিবেশনের পরিকল্পনাটি মুকুন্দরামের নিজস্ব। স্থুদুর ইংলণ্ডের সমসাময়িক কবি স্পেন্সার তাঁহার Faery Queene কাব্যে টেম্স্ ও মেডওয়ের বিবাহ উপলক্ষে ইংলণ্ডের সমস্ত নদনদীকে বিবাহবাসরে আমন্ত্রণ করিয়াছেন ও বিপুল বিচিত্রনামা জলরাশির কল্লোলিত শোভাযাত্রা-সমারোহের একটি মনোজ্ঞ, কবিত্বপূর্ণ বর্ণনা দিয়াছেন। ভাবিলে আশ্চর্য হইতে হয় যে, পৃথিবীর অপর প্রান্তে অবস্থিত বঙ্গীয় কবির মনেও ঠিক त्मरे ममरत अञ्चल कल्लनात छेम्य रहेग्राष्ट्र। भार्थका अहे या, ম্পেন্সারের নদনদীবৃন্দ বিবাহের আমন্ত্রিত অতিথিরূপে সভ্য-ভব্য-বেশে ও শালীন গতিচ্ছন্দে শোভাষাত্রায় যোগ দিয়াছে। মুকুন্দরামের স্রোতস্বতীসমূহ প্রলয়কালীন উচ্চুঙ্খলতা ও ধ্বংসাত্মক গতিবেগ লইয়া এই সংহারযক্তে অবতীর্ণ হইয়াছে। মনে হয় যে, মুকুন্দরামের নদীগুলি যেন মনসামঙ্গলের দর্পগোষ্ঠীরই এক প্রাকৃতিক সংস্করণ—তাহাদের দর্শিল গতি ও হিংস্র উদ্দেশ্য মনসামঙ্গলের ক্রুর জিঘাংসা দ্বারাই অমুপ্রাণিত। D-2303 B. T.

যে সমস্ত বিভিন্ন জাতি ও ব্যবসায়বৃত্তির প্রতিনিধি এই নৃতন সহরে বাস করিতে আসিল, তাহাদের মাধ্যমে ঝোড়শ শতকের বাঙ্গালা-সমাজবিত্যাসের একটা অতি তথ্যসমূদ্ধ ও চিত্তাকর্ষক ছবি পাওয়া যায়। এই বিবৃতি মাধবের **গ্রন্থে** किक्षिः मः किल, पूकुन्त्रारम आत्र विख्य ७ तमान। ব্রাহ্মণের যে সমস্ত গোত্র ও গাঁই উল্লিখিত হইয়াছে, তাহাদের মধ্যে অধিকাংশই এখন বৃহত্তর কয়েকটি স্থপরিচিত গোষ্ঠীতে সংহত হইয়াছে। অন্যান্ম জাতির মধ্যে কায়স্থের উল্লেখ কবির বিশেষ ঔৎস্থক্যের পরিচয় বহন করে—সম্ভবত কায়স্থ-কুল-তিলক ভাঁড়ু দত্তের মহিমারশ্মি সমস্ত জাতির উপরই বিচ্ছুরিত হইয়াছে। কায়স্থের কৌলীন্সগর্ব ও নেতৃত্বস্পূহা যেন ব্রাহ্মণকেও ছাড়াইয়া গিয়াছে। মসীজীবি-সম্প্রদায়ের স্বভাবসিদ্ধ ধূর্ততা প্রথম কায়ন্তের মধ্যেই ক্ষুর্ত হইয়াছে। হিন্দুসমাজের বহুল-বিভক্ত সাম্প্রদায়িক সংস্থিতি ও তাহাদের ব্যবসায়-বাণিজ্যের সরস বর্ণনা এক সমৃদ্ধ, প্রাণবেগচঞ্চল, দূচসংহত সত্তার ধারণা জনায়। বর্ণনা পড়িয়া মনে হয় যে, ষোড়শ শতকের শেষপাদ যেন হিন্দুসমাজের একটি স্বর্ণযুগ—ভেদের তুর্বলত। নাই, কিন্তু বৈচিত্র্যের বহুমুখী কর্মোগ্রম ও সংহত সমবায়শক্তি আছে।

এই সমাজবিন্তাসের সর্বাপেক্ষা কৌতুহলোদ্দীপক স্তর হইতেছে নবাগত মুসলমান-সমাজ-সম্বন্ধীয়। তিন শত বৎসরের এক ত্রাবস্থানের ফলে মুসলমান জাতি যে বাঙ্গালী সমাজের এক অবিচ্ছেল্য অঙ্গরূপে পরিগণিত হইয়াছে ও তাহাদের মধ্যেও যে ধর্মগত একেরর মধ্যে বৃত্তিগত নানা বিভাগ গড়িয়া উঠিয়াছে তাহার সরস বর্ণনা আমরা চণ্ডীমঙ্গল-কাব্যে পাই। আরও আশ্চর্যের বিষয় যে, মুসলমানের উল্লেখে কোন সাম্প্রদায়িক সংকীর্ণতা বা তিক্ত মনোভাবের চিক্তমাত্র নাই। সেইজক্ত মনে হয় যে, সে যুগে হিন্দুসমাজের উদার পরমতসহিষ্কৃতা ও

সুস্থ সংহতিবোধ প্রবল ছিল। মুকুন্দরামের ব্যক্তিগত তিব্ধ অভিজ্ঞতায় ডিহিদার মামুদ শরীফের যে অংশ ছিল, কবি তাহাকে বৈষয়িকতার সীমাতেই আবদ্ধ রাখিয়াছেন, ইহার মধ্যে কোন বৃহত্তর সাম্প্রদায়িক তাৎপর্য আরোপ করেন নাই। দ্বিজ মাধব ছইটি সংক্ষিপ্ত ত্রিপদী পংক্তিতে মুসলমান সমাজের ধর্মপরায়ণতার কথা উল্লেখ করিয়াছেনঃ—

বৈসয়ে মুসলমান পত্নে কিতাব কোরাণ
নমায়াজ পত্নে পাঁচবার।
সোলেমানী মালা করে খোদার নামে জিগির কাঢ়ে
সৈদ কাজী বোসিল অপার ॥

মুকুন্দরামের বর্ণনা আরও বিস্তৃত ও বাস্তবগুণসমৃদ্ধ।
মুসলমানের জীবনযাত্রার যে চিত্র কবি আঁকিয়াছেন তাহা এক
দিকে যেমন সত্যানুগ, অন্ত দিকে তেমনি সহাদয়। তাহাদের
ধর্মপ্রায়ণতার সঙ্গে যে গোঁড়ামির সংমিশ্রণ ছিল তাহা তীক্ষ্ণৃষ্টি
কবির দৃষ্টি এড়ায় নাই :—

বড়ই দানিশবন্দ না জানে কপট ছন্দ প্রাণ গেলে রোজা নাহি ছাড়ি। যার দেখে খালি মাথা তার সনে নাহি কথা নারিয়া চেলার মারে বাড়ি॥

হিন্দুর চক্ষে মুসলমানের আচার-ব্যবহারের অপরিচ্ছন্নতার প্রতি কবি কটাক্ষ করিতে ছাড়েন নাই—"ভূঞ্জিয়া কাপড়ে মোছে হাত"। বর্তমানকালেও জীবিকার জন্ম মুসলমানেরা যে মানা বৃত্তি অবলম্বন করিয়া থাকে ও বৃত্তি অন্থুসারে নানা বিচিত্র আখ্যায় আখ্যায়িত হয়, তাহার ভিত্তিপত্তন মুকুন্দরামের যুগেই হইয়া থাকিবে। কালকেতুর রাজত্বে এই হুই প্রতিবেশী সমাজ আপন আপন বৃত্তি ও ধর্মগত আচার-অনুষ্ঠান পালন করিয়া পরম সৌহার্দ্যের সহিত বাস করিত, তাহাদের মধ্যে কোন বিরোধের চিহ্নমাত্র দেখা যায় না। হিন্দুর্রিত কাব্যে মুসলমানের এই অপক্ষপাত ও সহৃদয় চিত্রণ বাঙ্গালাসাহিত্যের ইতিহাসে এক উজ্জ্বল অধ্যায়।

(9)

এইবার চরিত্রচিত্রণের দিকু দিয়া চণ্ডীমঙ্গলের সার্থকতম স্ষ্টি ভাড়ু দত্তের বিষয় আলোচনা করিলেই ভূমিকাটি সম্পূর্ণ হইবে। মাধব ও মুকুন্দের ভাঁড়ুবিষয়ক আখ্যান অনেকটা পরস্পরের পরিপূরক। মাধব বলেন যে, ইদিলপুর হইতে যে শঠপ্রকৃতি ধোল শত প্রজা আসে, ভাঁড়ু তাহাদের অক্সতম ও সে বিনা খাজানায় নগরে সাতখানা বাড়ী তৈয়ার ও অধিকার করে; কিন্তু ভবিষ্যতে যখন কর নির্দিষ্ট হইবে, তখন সে খাজানা কেমন করিয়া দিবে কালকেতুর এই সতর্কবাণী উচ্চারণের ফলে সে ছয়খানি বাড়ী ছাড়িয়া দেয়। বিভি**ন্ন** ব্যবসায়ীর সহিত ভাঁড়ুর ঠকাম ও নানা মিথ্যা অজুহাত ও ভীতিপ্রদর্শনে তাহাদের নিকট ভোজ্যদ্রব্যাদি আদায়ের কাহিনী মাধব সবিস্তারে ও সরসভাবে বর্ণনা করিয়াছেন। এ বিষয়ে ভাঁড়ুর ভয়ে কালকেতুর নিকট কোন প্রবঞ্চিত ব্যবসায়ী নালিশ করিতে সাহস করে নাই। কিন্তু তৎপরদিন সভায় বুলন মণ্ডলকে গ্রাম্যপ্রধানের পুষ্পচন্দন দেওয়াতে ঈর্ষ্যাবশে ভাড়ু কালকেতুকে কটূক্তি করায় তাহাকে শাস্তি ভোগ করিতে হয়। কালকেত্র বন্ধনমৃক্তির পরে ভাঁড়ুর সহিত মহাবীরের অকস্মাৎ সাক্ষাৎ হওয়ায় কালকেতুর হুকুমে তাহার মাথা মুড়াইয়া ও তাহার গালে চুণকালি দিয়া তাহাকে নগর হইতে বাহির করা হইল ও মৃত্তিতমস্তক ভাঁড়ু নিজ লজ্জা ঢাকিবার জন্ম সে যে

গঙ্গাসাগরে মাথা মুড়াইয়াছে ইহাই প্রচার করিতে লাগিল। মাধব এইথানেই ভাঁড়ু-উপাখ্যানের উপর যবনিকাপাত করিয়াছেন।

মুকুন্দরামের বর্ণনাভঙ্গী আরও সরস ও ব্যক্ষের তির্থক্ ব্যঞ্জনা আরও তীক্ষ্ণ সাহিত্যিক গুণসমৃদ্ধ। ভাঁড় দৃত্ত কালকেতুর নিকট আসিয়াছে কোন দলে মিশিয়া নয়, কিন্তু পোষাকপরিচছদের দৈত্যের অন্তরালে আত্মপ্রেতাবোধের একক স্বাতন্ত্রে। সে আসিয়াই উচ্চকণ্ঠে নিজ কুলগরিমা ঘোষণা করিয়া মণ্ডলপদের ও সকল রকমের স্ব্থস্থবিধা-প্রাপ্তির জন্ম নিঃসংকোচে দাবী জানাইয়াছে। কুটকৌশলী জমিদার-কর্মচারীর স্থায় প্রজার নিকট কি প্রকারে পাওনাগণ্ডা আদায় করিতে হইবে সে সম্বন্ধে সে কালকেতুকে অ্যাচিত সত্পদেশ দিয়াছে। যে বুলন্ মণ্ডলকে কালকেতু প্রধানের মর্যাদা দিয়াছে সেযে ভাঁড়ের তুলনায় অতি তুচ্ছ তাহাও বলিয়াছে। অ্যাণ্য পাত্রে আন্থাস্থাপনের কুফল যে কি তাহা কবি ভাঁড়ের মুখ দিয়া তীক্ষাগ্রা, অবিশ্বরণীয় প্রবাদবাক্যের মধ্যে অভিব্যক্ত করিয়াছেনঃ—

"নফরের হাতে খাণ্ডা বহুড়ীর হাতে ভাণ্ডা পরিণামে দেয় অতি হুখ।"

মুক্নদরামে ভাঁড়ু দত্তের হাটুরিয়াদের নিকট তোলা দাবী ও তাহাদের প্রতি অত্যাচারের কাহিনী দ্বিজ মাধবের মত এত তথ্যবহুল ও উদ্ভাবনীশক্তির পরিচায়ক নহে। তাহার আচরণ সোজাস্থুজি লুটতরাজ ও জোরজবরদক্তি—ইহার মধ্যে কোন স্ক্রতর উপায়নৈপুণ্যের নিদর্শন মিলে না। তাহার পুত্রকন্তাও এই অত্যাচারে অংশ গ্রহণ করিয়াছে—পুত্রের জ্বালায় ঝি-বৌ-এর বাড়ীর বাহির হওয়া দায় ও কন্তার কোনন্দলপট্টতা ও দাম না দিয়া হাঁড়িও মাছ আদায় করার

অভ্যাস সমস্ত পরিবারটিকে এক সাধারণ হীনতায় চিহ্নিত করিয়াছে। এই ব্যাপার লইয়া মহাবীরের সহিত তাহার বচসা ও মহাবীর-কর্ত্তক তাহার মণ্ডলপদ্যুতি—'প্রজা নাহি মানে বেটা আপনি মণ্ডল। মুকুন্দরামের কারো ভাঁড় কলিঙ্গরাজের দৈক্তদলে থাকিয়া কোটালকে যুদ্ধে উৎসাহি করিয়াছে ও কোটাল যখন রণে ভঙ্গ দিতে উন্নত তখন তাহাকে ভয় দেখাইয়া পুনরায় যুদ্ধ চালাইতে বাধা করিয়াছে। ভাঁছুর এই বৈরনির্যাতন-স্পৃহা এক চমৎকার রণনীতিব স্থায় ফলপ্রস্থ হইয়াছে। পরাজিত শত্রুর পুনর ক্রমণে কালকেতু এক অজ্ঞাত বিপদ আশস্কা করিয়া ফুল্লরার পরামর্শে ধাক্তঘরে লুকাইয়াছে। সে বনে বাঘভালুকের সঙ্গে যুদ্ধ করিয়াছে ও অপরিমিত শক্তির অধিকারী; কিন্তু সত্যিকার ক্ষাত্র সংস্কার ও বীর্জাভিন্ন তাহার নাই। কাজেই ক্ষত্রধর্মবিগঠিত এই পলায়নে তাহার চিত্তে কোন অন্তর্দ্ধ দেখা দেয় নাই। মুকুন্দরাম তাহার বীরত্বের আদর্শচ্যুতি দেখাইয়া তাহার চরিত্রের বাস্তবান্ত্রগামিতা চনৎকারভাবে রক্ষা করিয়াছেন। যাহা হউক, এখানেও ভাড়ু দত্তের ধুর্ততা কালকেতুর আত্মগোপনস্থলের রহস্য ভেদ করিয়াছে। ধর। পড়িয়া কালকেতু আবার অকুতোভয়ে যুদ্ধ করিয়াছে ও শেষ পর্যন্ত চণ্ডীর ইচ্ছায় সে বন্দী হইয়াছে। তাহার বন্ধনমোচনের ও রাজ্যে পুনরধিষ্ঠানের পর নিল'জ্জ ভাঁড়ু নিজেই রাজসভায় উপনীত হইয়াছে ও অপরিসীম ধুষ্টতার সহিত তাহার সমস্ত আচরণই যে কালকেতুর কল্যাণের জন্ম তাহা বুঝাইতে চেষ্টা করিয়াছে। দ্বিজ মাধবে ভাঁড়ুর সহিত অতর্কিত সাক্ষাৎ; মুকুন্দরামের সে গায়ে-পড়া হইয়া আসিয়া আবার কালকেতুর বিশ্বাসভাজন হইবার চেষ্টা করিয়াছে। শেয পর্যন্ত তাহার লাঞ্চনাশাস্তি ও প্রত্যাখানের কাহিনী উভয় কবিতেই একরূপ;

তবে মুকুন্দের ক্ষমাশীলতা একটু বেশী, তিনি আবার ভাঁড়ুদ্তুকে নগরে বাস করাইয়াছেন। চণ্ডীমঙ্গলের ভাঁড়ু দত্তের মত এরূপ জীবস্ত চরিত্র মধ্যযুগীয় বাংলাসাহিত্যে আর কোথাও মিলে না। ইহার জন্ম দায়ী কতকটা সে যুগের নবোমেষিত বাস্তবসচেতনতা, কিন্তু প্রধানত কবির স্থিটিপ্রতিভা। দ্বিজ মাধ্বেও ভাঁড়ু যথেষ্ট সজীব; কিন্তু মুকুন্দরামের কাব্যে সে আরও গভাঁরভাবে পরিকল্পিত ও নিগৃঢ় প্রাণরসে অধিকতর সঞ্জীবিত। ভাঁড়ুদ্ত্রের পিতৃদত্ত নাম কি ছিল তাহা অজ্ঞাত রহিয়া গিয়াছে; তাহার চরিত্রগোতক সংজ্ঞাটিই তাহার আসল নামকে চিরকালের মত আরত করিয়া যুগযুগান্তরে তাহার পরিচয় ঘোষণা করিতেছে।

(b)

মধ্যযুগের কাব্যে যুদ্ধবর্ণন। এক গতারুগতিক রীতির অন্বর্তান করিয়াছে। এই রীতি মূলত পৌরাণিক মহাকাব্যের আদর্শানুযায়ী। কৃত্তিবাসী রামারণ ও কাশীদাসী মহাভারতে যে অতিরঞ্জনপ্রবর্ণতা ও অতিপ্রাকৃত ঘটনাসংস্থান যুদ্ধবর্ণনার প্রধান অঙ্গরূপে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে সমস্ত পরবর্তী সাহিত্য সেই প্রথারই জের টানিয়া চলিয়াছে। যেমন পুরাণে তেমনি পরবর্তী মঙ্গলকাব্যে মানবশক্তির ভিতর দিয়া প্রধানত দৈব শক্তিরই অভিব্যক্তি ঘটিয়াছে—কাজেই অলৌকিকত্বের অতিপ্রাধান্তই ইহাদের সাধারণ লক্ষণ। তবে মঙ্গলকাব্যের যুগে বাস্তবতা আরও সম্পূর্ণভাবে অতিপ্রাকৃতের অধীন নহে, ইহার স্বতন্ত্র স্কুরণেরও কিছু কিছু চিক্ন পাওয়া যায়। প্রথমত ছন্দ-ও শব্দ-নির্বাচনের মধ্য দিয়া যুদ্ধের ভয়াবহতা ও তুমুল বিপর্যয়ের কিছুটা আভাস দিবার চেষ্টা দেখা যায়। কৃত্তিবাস-কাশীদাস অবলীলাক্তমে স্কুদীর্ব্যথিত পয়ার-পরম্পরার ভিতর দিয়া রণক্ষেত্রের স্বছন্দ প্রবহ্মাণ, একটানা ঘটনাধারার বর্ণনা দেন—তাহার

মধ্যে কোথাও বিশেষ উত্তেজনা, সংগ্রামতরক্ষের জোয়ারভাটার রূপান্তর ও ভাগ্যবিপর্যয়ের অভাবনীয়তার ছন্দোবৈলক্ষণ্য প্রতিবিশ্বিত হয় নাই। শ্রাবণমেঘের ধারাপাতের স্থায় শর-বর্ষণের অবিচ্ছিন্নতা যুধ্যমান সৈন্তের যেমন চিরনিদার ব্যবস্থা করে, তেমনি পাঠকেরও চিত্তে একটা অসাড় নিজালুতার সঞ্চার করে। আমরা যুদ্ধক্ষেত্রের স্বপ্নাবেশ হইতে জাগিয়া উঠিয়া চোখ মুছিয়া ভক্তিরসাত্মক হাদয়োচ্ছাসের অভিব্যক্তিগুলির প্রতি আমাদের সচেতন চিত্তবৃত্তিকে নিয়োজিত করি। মঙ্গল-কাব্যে লেখক বাস্তবতার দাবী একেবারে উপেক্ষা করিতে পারেন নাই। সৈত্যসমাবেশে, যুদ্ধের গতিচ্ছন্দে, সংঘর্ষের বাস্তব অভিঘাতে, হাতী-ঘোড়া-পাইক-মাহুত-রণবাগ্য-আত্মাঘা-আক্ষালন প্রভৃতি যুদ্ধসজ্জার যান্ত্রিক ও মানসিক উপকরণ-বাহুল্যে মঙ্গলকাব্যের লেখক নিজ উত্তেজিত কল্পনা বাস্তবামুভূতির কতকটা পরিচয় দেন। তবে সমস্তটা মিলিয়া একটা অস্পষ্ট কোলাহল, একটা দ্রুতসঞ্চারী দৃশ্য-পরিবর্তনের আবছা প্রতিচ্ছবি, সৈত্যপদোখিত ধূলিজালে সমার্ত দিগন্তের গ্যায়, আমাদের অন্তভূতিকে আচ্ছন্ন করে।

ইহার মধ্যে কতকটা local colouring বা মৃৎ-বৈশিষ্ট্যপ্রবর্তনের চেষ্টা দেখা যায়। যুদ্ধ যে বাঙ্গালা দেশে ও বাঙ্গালী
সৈত্যের মারফত হইতেছে লেখক সে সম্বন্ধে সচেতন আছেন।
বাঙ্গাল পাইক, বাহ্মাণ পাইক, ডোম পাইক, এমন কি মুসলমান
পাইকও এই যুদ্ধে অংশগ্রহণ করিয়াছে ও যুদ্ধে পরাজয়ের পর
আপন আপন জাতীয় বৈশিষ্ট্য অনুসারে কাতরোক্তি করিয়া
প্রাণভিক্ষা চাহিতেছে। এমন কি, বেগার পাইক তাহাদিগকে
যে বলপূর্বক যুদ্ধে যোগদান করিতে বাধ্য করা হইয়াছে এই
অজুহাতে বিজেতার অনুগ্রহ-যাজ্ঞা করিতেছে। মোটের উপর
এই জাতীয় যুদ্ধবর্ণনা পড়িয়া মনে হয় যেন কবিও মালসাট

মারিয়া এই মল্লযুদ্ধে অবতীর্ণ হইয়াছেন। তাঁহার ভাঙ্গা-চোরা অসম দৈর্ঘ্যের ছন্দ, মাঝে মাঝে ছন্দোযোজনায় শ্বাসকৃচ্ছতা, উদ্ভট শব্দ-সমাবেশপ্রবণতা, হাঁক-ডাক-লক্ষ-ঝম্পের বীররসস্ষ্টির হাস্থকর প্রয়াস—সবই কবির মল্লবেশের বহির্লক্ষণরূপে প্রতিভাত হয়। কবি সেনাপতির মত নিয়ন্ত্রণ না করিয়া একেবারে সৈনিকের মত ধূলাকাদা মাখিয়া **যুদ্ধের** প্রতি তাঁহার শিশুক্রীড়ামূলক মনোবৃত্তির পরিচয় দিয়াছেন। এই ব্যাপারে দ্বিজ মাধব মুকুন্দরামের সহিত তুলনায় অধিকতর বাস্তবপ্রবর্ণতা দেখাইয়াছেন—তাঁহার চণ্ডী গ্রন্থারন্তে মঙ্গল-দৈত্যকে বিনাশ করিয়া তাঁহার রণপিপাসার নিবৃত্তি করিয়াছেন, কাজেই কলিঙ্গ-কালকেতুর যুদ্ধে তিনি প্রত্যক্ষ অংশ গ্রহণ করেন নাই। মুকুন্দরামের চণ্ডী কিন্তু ডাকিনীযোগিনী সঙ্গে লইয়া সশরীরে যুদ্ধে অবতীর্ণ হইয়াছেন ও তাঁহার অতিমানবিক শক্তির প্রয়োগে কালকেতুকে বিপক্ষের অস্ত্রক্ষেপ হইতে রক্ষা করিয়াছেন। আরও একটা বিষয়ে মাধবের বাস্তবতা প্রকটিত হইয়াছে-—কালকেতু যুদ্ধজয়ের পর নিরস্ত্র অবস্থায় শত্রুসৈন্মের নিকট অত্কিতভাবে বন্দী হইয়াছে—সে মুকুন্দরামের কালুর মত স্ত্রীর পরামর্শমতে ধাতাঘরে লুকাইয়া নিজ বীর-নামে অনপনেয় কলঙ্ক লেপন করে নাই।

(a)

মহাকবির প্রকৃত পরিচয় তাঁহার প্রকাশের ঋজুতা, যাথার্থ্য ও চমৎকারিছে। মৃকুন্দরাম রোমান্টিক কবি ছিলেন না, জীবনের স্কুল, অপ্রত্যক্ষ ভাবব্যঞ্জনা তাঁহাকে স্পর্শ করে নাই। তিনি প্রত্যক্ষ বাস্তবের কবি এবং এক স্প্রতিষ্ঠিত ধারার বাহন। কাজে বৈষ্ণব কবির অতীন্দ্রিয়, ভাববিভার কল্পনা তাঁহার মধ্যে প্রত্যাশা করা যায় না। কিন্তু আমাদের প্রাত্যহিক জীবন্যাত্রা ও স্ব্পরিচিত ভাবসমূহের অভিব্যক্তিতে

তিনি মপ্রতিদ্বন্দী। মঙ্গলকাবোর কবির শিল্পবোধ সাধারণত শিথিল ও অপরিণত, বিষ্যমহিমা তাঁহার চিত্তকে এমনভাবে অভিভূত করিয়াছে যে, প্রকাশে অনবত্ত মনোহারিতা তাঁহার নিকট গৌণ। তিনি গতাতুগতিকতার প্রবহমাণ ধারায় গা ভাসাইয়া দিয়া কোনমতে সমাপ্তির তারে উঠিতে পারিলেই কৃতার্থ: জলমধো দেহসঞালনের ছান্দাময় লালাভঙ্গি বা সম্ভরণকৌশল ভাঁহার সচেত্র উদ্দেশ্যের অন্তর্ভুক্ত ছিল না। এই শিথিল, ঢিলে-ঢালা, হাই-তোলা-আড়ি-মোড়া কাব্যাদর্শের মধ্যে মুকুন্দরামই প্রথম এক সদাজাগ্রত শিল্পবোধ ও চারুহ-স্ষ্টির প্রবর্তন করিলেন। এমন কি দেববন্দনার মধ্যেও দেবমাহাত্মাজ্ঞাপক বিশেষণ-নির্বাচনেও তাঁহার পরিমিতিজ্ঞান ও প্রয়োগসার্থকতার নিদর্শন মিলে। অতিপল্লবিত, অহেতুক বিস্তারের স্থলে অর্থান সংক্রিপ্তি, অনিয়ন্ত্রিত ভাবাবেগ ও ভক্তি-বিহ্বলতার অস্বচ্ছতার স্থলে মিতভাষিতা ও তীক্ষ ভাস্বরতা, নিবিচার প্রথান্তবর্তনের স্থালে বাস্তবস্থাকৃতির প্রথব মৌলিকতা, অর্ধ-যান্ত্রিক পূর্বরোমন্তনের স্থলে নৃতন অনুভূতির দীপ্ত ঝলক— এই সমস্তই তাঁহার রচনারীতির বৈশিষ্ট্য। তাঁহার রচনার উপর এক সচেতন, সমগ্রপ্রসারিত মননশক্তির পরিচয় দেদীপামান। ভাঁহার শিল্পবে।ধনাজিত, জীবনবাদসম্ভুত রসিকতা তাঁহার পূর্ববতীদের গ্রাম্য ভাড়ামো হইতে স্বতন্ত্র-জাতীয়। তাঁহার কৌতুকরস কেবল কথায় সীমাবদ্ধ নহে, তাঁহার বঙ্কিম কটাক্ষ, অর্থগৃঢ় মন্তব্য ও সমগ্র মনোভাব ও জীবনদর্শনের নানামুখা বিস্তার হইতে ইহা তির্ঘক্ রেখায় ঠিকরাইয়া পড়িয়াছে। বাবমাস্থার ত্বঃখবর্ণনাতেও তিনি চোখ হইতে প্রথাবদ্ধতার ঠুলি সরাইয়া ব্যাধজীবনের নানা বাস্তব ছুর্ভোগের প্রতি দৃষ্টিক্ষেপ করিয়াছেন, তাঁহার বর্ণনাকে কাব্যবেষ্টনী হইতে উদ্ধার করিয়া প্রত্যক্ষ জীবনের সহিত

সংযুক্ত করিয়াছেন। ভারতচন্দ্রে যে ছন্দঃকুশলতা ও মার্জিত ভাষণনৈপুণ্য আমাদিগকে মুগ্ধ করে, তাহার প্রথম স্কুচনা মৃকুন্দরামে; তফাৎ এই যে, মুকুন্দরামের সরস কৌতুক ও সরল গ্রাম্যজীবনের স্বাভাবিকতা ভারতচক্রে রাজসভার কুহিম আবহাওয়ায় শ্লেষপ্রধান, আক্রমণশীল মনোভাবে পরিণত হইয়াছে। মুকুন্দরামের স্নিগ্ধ পরিহাস নিউগি-চৌধুরী-প্রমুখ অত্যাচারী মধ্যস্বরভোগীদের, এমন কি বিশ্বজননী চণ্ডীকে ও মুছভাবে স্পর্শ করিয়াছে; তাহাতে কোন জ্বালা বা দাহ নাই। ভারতচন্দ্রের কামকলাচাতুরীর ওস্তাদী বর্ণনা, তাঁহার নাগরালা অভিজ্ঞতা-প্রকাশের বাগ্ভঙ্গীর বৈদগ্ধ মুকুন্দরামের স্বতঃস্কুর্ত কৌতুকরসকে নৃতনভাবে ভিয়ান করিয়া উহাকে ঘন ও গুরুপাক করিয়া তুলিরাছে। এক চৌতিশা স্তবেই মুকুন্দরামের সদাসক্রিয় বাস্তবতাবোধ কাব্যপ্রথার অভিভবে আত্মসাতন্ত্রা হারাইয়াছে। তুঃথের বিষয় মুকুন্দরাম তাঁহার কাব্যে বঙ্গ-সাহিত্যে যে নৃতন বাস্তবতাধার প্রবাহিত করিয়াছেন, পরবতীদের রচনায় তাহাতে আবার চড়া পড়িয়াছে। চণ্ডা কালিকা ও অন্নদায় রূপান্তরিত হইয়া বিভাস্থন্দরের কুরুচিপূর্ণ কেলিবিলাসের প্রশ্রাদাত্রী ও সমর্থনকারিণীরূপে আত্মপ্রকাশ করিয়াছেন। সাধারণ জীবনযাত্রার বহুবিসর্পিত বিস্তার সংকুচিত হইয়া রাজসভার কৃত্রিম আদবকায়দা-ঘেরা সংকীর্ণ গণ্ডীতে, তন্ত্রসাধনার ছন্মবেশধারী স্থুল ভোগাসক্তির প্রমোদ-কক্ষে আত্মসংহরণ করিয়াছে। প্রথার প্রস্তরশৈল ভেদ করিয়া বাস্তবতার যে প্রবাহ নির্গত হইয়াছিল, নৃতন প্রথার চড়ায় প্রতিহত হইয়া আবার তাহা স্রোতবেগ হারাইয়া ফেলিয়াছে। এমন কি পাশ্চাত্ত্য সাহিত্যের সহিত পরিচয়ও আমাদের বাস্তববোধ অপেক্ষা আমাদের আদর্শবাদ-প্রবণতাকেই অধিকতর উদ্দীপ্ত করিয়াছে। কিন্তু মুকুন্দরাম বঙ্গসাহিত্যে এই বাস্তবতার

ক্ষণস্থায়ী স্বচ্ছন্দলীলার চিরস্তন প্রতিনিধিরূপে বিরাজ করিতে থাকিবেন।

(>0)

চণ্ডীমঙ্গলের বর্তমান সংস্করণটির পাণ্ডলিপি প্রস্তুত ও ইহাকে প্রকাশযোগ্য করার সম্পূর্ণ ভার আমার সহকর্মী বাঙ্গালাবিভাগের অন্যতম অধ্যাপক শ্রীবিশ্বপতি চৌধুরী মহাশয়ের উপর ক্যস্ত হইয়াছিল। তিনি এক বংসরের অধিক কাল অক্লান্ত পরিশ্রম করিয়া ও অনেক পুঁথি ও পূর্ববর্তী মুদ্রিত সংস্করণের পাঠ মিলাইয়া বর্তমান সংস্করণের পাঠ নির্ধারণ করিয়াছেন। বহুছলে প্রচলিত গ্রন্থসমূহে যে লিপিকরপ্রমাদ ছিল বিশ্বপতিবাবু তাহার সংশোধন করিয়াছেন ও অনেক ছর্বোধাস্থলের যথার্থ অর্থনিধারণে সমর্থ হইয়াছেন। গ্রন্থ সম্পাদনার জন্ম তিনি চণ্ডীমঙ্গলের অন্তরাগী পাঠকর্নের ধন্যবাদভাজন ইইয়াছেন তাহাতে সন্দেহ নাই। এই সম্পাদনা-বিষয়ে বাঙ্গালাবিভাগের সরকারী করণিক শ্রীরবীন্দ্রনাথ মিত্র বিশ্বপতিবাবুকে পাঠোদ্ধার ও পুঁথিনকলের কাজে বিশেষভাবে সহায়তা করিয়াছেন।

প্রথম ভাগ গ্রন্থ মুদ্রণে, নানা অনিবার্য কারণে অনেক বিলম্ব ঘটিয়া গেল। বিশ্ববিত্যালয়ের পাঠ্যপুস্তকরূপে ইহা নির্দিষ্ট হওয়ায় ইহার জন্ম ছাত্রমহলে বিশেষ তাগিদ ছিল ও সময়মত ইহার মুদ্রণকার্য সমাপ্ত না হওয়াতে তাহাদের বিশেষ অস্থবিধা ঘটিয়াছে। এজন্ম বিশ্ববিত্যালয়ের কর্তৃপক্ষ সত্যই অত্যন্ত জুঃখিত। দ্বিতীয় খণ্ডের মুদ্রণ শীঘ্রই আরম্ভ হইবে ও মনে হয় এই বংসরের শেষেই সমগ্র গ্রন্থটি পাঠক-বৃন্দের হস্তগত হইবে। আশা করা যায় যে, পাঠের বিশুদ্ধ-সম্পোদনে ও সম্পাদনার উন্নত্তর রীতি অবলম্বনের জন্ম ইহা মুকুন্দরামের কাব্যপ্রতিভার যথার্থতর পরিচয় দিয়া পাঠক-সমাজের তৃপ্তিবিধানে সমর্থ হইবে।

এই গ্রন্থে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের পুঁথিশালার ১০৯০ নং পুঁথির পাঠই মুখ্যতঃ অমুস্ত হইয়াছে। কেবল যেসকল স্থানে আদর্শ পুঁথির পাঠ তেমন সঙ্গত বলিয়া বিবেচিত হয় নাই এবং অন্য কোনও পুঁথিতে অপেক্ষাকৃত সঙ্গত পাঠ পাওয়া গিয়াছে, সেইসকল স্থানে আদর্শ পুঁথির পাঠের পরিবর্তে অন্য পাঠ গৃহীত হইয়াছে।

আদর্শ পু'থির পাঠের সহিত অক্সান্ত পু'থি এবং মুক্তিত সংস্করণের পাঠ মিলাইয়া পাঠান্তরগুলি পাদটীকায় সন্ধিবেশিত করা হইল। অক্তান্ত পু'থি বা মুক্তিত সংস্করণে অতিরিক্ত যেসকল পংক্তি বা নৃতন বিষয় পাওয়া গিয়াছে, সেগুলিকেও পাদটীকায় স্থান দেওয়া হইয়াছে।

পাঠান্তরগুলি কোন্ কোন্ পুঁথি বা মুদ্রিত সংস্করণ হইতে গৃহীত হইয়াছে, তাহা বুঝাইবার জন্ম পাদটীকায় কয়েকটি সাঙ্কেতিক চিহ্ন ব্যবহার করা হইয়াছে। এই সাঙ্কেতিক চিহ্ন পরিচয় নিমে দেওয়া হইল—

ক = কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের পুঁথিশালার ১০৯০ নং পুঁথি। খ = কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের পুঁথিশালার ৪৪০০ নং পুঁথি। গ = কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের পুঁথিশালার ১০৯৩ নং পুঁথি। বঙ্গ = বঙ্গবাসী-সংস্করণ।

দী = অধ্যাপক দীনেশচন্দ্র সেন প্রভৃতি সম্পাদিত কলিকাত। বিশ্ববিজ্ঞালয়ের সংস্করণ।

৬১নং সাদার্ণ এভিনিউ কলিকাতা ৪ঠা **ভুন,** ১৯৫২ **এ এ কুমার বক্ষ্যোপাধ্যায়** রামতত্ব লাহি**ড়ী** অধ্যাপক, কলিকাতা বিশ্ববিভালয় বাংলা বিভাগ

কবিকঞ্চণ-চণ্ডী

গণেশ-বন্দনা

বেদান্ত-দরশনে 'ব্রহ্ম করি যাঁরে ভাবে আনে বলে পুরুষ-প্রধান।

বিশ্বের পরম গতি হেতু-অন্তরায়-পতি ভাঁরে মোর লক্ষ পরণাম॥

বন্দো দেব গণপতি দেবের প্রধান। ব্যাস আদি যত কবি তোমার চরণ সেবি প্রকাশিল আগম-পুরাণ॥

গিরিস্থা-অঙ্গ-জন্ত খর্ব্ব সুপীবর তন্ত্র একদন্ত কুঞ্জর-বদন।

প্রণত জনার নিম্ন দূর কর মোর বিম্ন তব পদে করিলু বন্দন ॥

অবনী লোটায়া। কায় প্রণাম তোমার পায়
কর মোরে কুপা-বিলোকন।

তোমারে করিয়া ভক্তি নিগণ পাইল মুক্তি ।
চারি °পুরুষার্থের সাধন॥°

অংশর 'বন্ধুক-ছটা' আজ।কুলম্বিত জটা শশিকলা মুকুট-মণ্ডন।

চরণ-পঙ্কজ-রাজে রতন নৃপুর সাজে

অঙ্গদ বলরা বিভূষণ।

পরিধান দ্বীপিচর্ম নিরস্তর জপকর্ম

ছই করে ইকুস্থম শোভন।

স্থাদে যোগপাট্টা শোভে অলিকূল মধুলোভে চৌদিকে বেড়িয়া করে গান॥

*

কৃষ্ম-চর্চিত অঙ্গ শুণ্ডে শেতে মাতৃলুঙ্গ শ্লদণ্ড ইষুপাশ করে।

শিবস্ত লম্বোদর আজাতুলস্বিত কর রণে জয়ী যে তোমারে স্থারে॥

১-১ বিহ্যুৎছটা (ক)
বরণ-ছটা (খ)

২-২ কুশ শোভ্যন। (খ)

অতিবিক্ত—

বিগলিত মদজলে মধ্লোভে অলিকুলে
চঞ্চল কণোলযুগলে।
দন্তাঘাত বিদারিত রিপকুলে শোণিত
বিরাজিত দিশ্বর মওলে ॥ (থ)

५-७ खीनिएस (थ) भूनीएस (मी) নিরস্তর জপস্তুতি বিশ্বরাক্ষ গণপতি হৈমবতী-হাদ্যনন্দন। গাইয়া তোমার আগে গোবিন্দ-ভক্তি মাগে চক্রবর্তী শ্রীকবিকঙ্কণ॥*

* অতিরিক্ত-

সূর্য্য-বন্দনা

বল্দো কমলীনী বন্ধ অদেদ গুণের দিন্ধ যগত অধিপ নিরঞ্জন।

করবর পদ্মধর অরুণাস্গ রুচিবর দিপু করে শকল ভূবন ॥

করে ধরি মনীবর আদী (?) দেব রথোপর সপ্ত অস্ব রথে নিজোজীত।

বাদশ আদী ত্যবর পূজা করে নিরন্তর অর্থ্যদান করে স্থপ্সিত।

মোহাধ্বাস্ত-নাসকারী ছাইয়া স্থী ছুই নারী কাশ্রুপ শগোত তিলোচন।

অন্ধ কৃষ্ঠ ব্যাধি ভ জে জন শরণ লয় তার ত্রংথ হয় বিমোচন॥

দ্যাবান দিনপতি দশদীগ দেহ জ্যোতি অন্তদিন স্থমের উপর।

ক্ষিতি পালনের তরে ফিরে প্রভূ নিরস্থারে তৈল জন্মে যেন বুষবর॥

আর শব্প (?) দানে দানে প্রণীপাত প্রদক্ষীণে পূজা করি করে শোঙ্বগ ।

তব নাম দ্বিজ্ঞার জপ করে যেই নব সর্কাতে রক্ষাহ সেই জন। মহামিশ্র ইত্যাদি। (দী)

সরস্বতী-বন্দনা

বিধিমুখে বেদবাণী বন্দে । দেবী বীণাপাণি
ইন্দু-কুন্দ-তুষার-সঙ্কাশা ॥
কৈলোক্য-তারিণী ত্রয়ী বিষ্ণু-মায়া বর্ণময়ী
কবিমুখে অস্তাদশ ভাষা ॥
শ্বেতপদ্মে অধিষ্ঠান শুক্লধৃতি পরিধান
কপ্তে ভূষা মণিময় হার ।
শ্বেবণে কুণ্ডল দোলে ইন্দুলা করে শোভে জপমালা
শুক-শিশু শোভে বাম করে ।
নিরন্তর আছে সঙ্গী মসীপাত্র পুথি খুঙ্গী
শ্বরণ জড়িমা যায় দুরে ॥

* অতিরিক্ত—

বিষ্ণু-প্রিয়া পৃচ্ছ পদ্মাদনে।
পুস্তক লইয়া করে উর দেবি এ আদরে
চন্দ্রাননি সহাস্থাবদনে॥
হিমদিশ্ব চন্দ্রন শরদিন্দু গঞ্জন
তন্ত্রকচি অকথ্য কথন।
স্থগন্ধি চন্দ্রন গায়ে যোজন দৌরভ ধায়ে
কঠে রম্মহার বিভূষণ (বন্ধ)
১-১ হাদিতে বিশ্বুরি আভা কুম্তুল শ্রবণে শোভা (দী)

নমছ' নমছ' বাণী কণা কর নারায়ণী

দিবানিশি করি ভাগ সেবে যাঁরে ছয় রাগ অনুক্ষণ ছত্রিশ রাগিণী।

রবাব-খমক-বেণী- সপ্তস্থরা-পিনাকিনী-বীণা-বেণু-মৃদঙ্গ-বাদিনী॥

দেবতা-অস্থ্র-নর- যক্ষ-রক্ষ-বিভাধর সেবে তুয়া চরণ-সরোজে।

^২তুমি যারে কর কুপা সেই জনা মহাতপা^২ বৈসে সেই পণ্ডিত-সমাজে॥

সঙ্গে বিজ্ঞা চতুর্দ্ধশে কবিত্ব-কৌতুক-রসে আসরে করহ অধিষ্ঠান।

কহিগো অঞ্জলি-পুটে উর গায়কের ঘটে দূর কর তুর্গতি কুজ্ঞান॥

হাতে লইয়া পত্ৰমসী আপনি কলমে বসি যেবা লিখ যে বোল বানান।

নাহি জানি কি কোতুকে অম্বিকা মুকুন্দ-মুখে আপন সঙ্গীত রস গান॥

দিবানিশি তুয়া সেবি রচিল মূকুন্দ কবি । নৃতন মঙ্গল অভিলাষে।

উরগো কবির কামে কুপা কর শিবরামে চিত্রলেখা যশোদা মহেশে॥

মহাদেব-বন্দনা +

খটক ডম্বরু করে বিদেশ দেব দিগম্বরে ব্যে আরোহণ পঞ্চানন। ব্যাক্তার্ক দেবাদিদেবের গুরু তন্তুক্চি ভুবনমোহন॥

*

রজত-ভূধর-আভ। জিনিয়া শরীরশোভা ভূজঙ্গ-ভূযণ-কলেবর। মস্তকে রাজিত জটা ভালে ইন্দু অর্দ্ধ-ফোঁটা গঙ্গা ধরিলান গঙ্গাধর॥

১-১ তিদশ গনের নাথ গুহু গনেদের তাত স্থরাস্থর নরের জীবন॥ (গ)

অতিরিক্ত-

তুমি পিব জোগরাজে ইতিন ভুবনে পুজে
তুমি হর গুণের গরিমা।
গরল করিতে নাস কীর্ত্তি কৈলে কীতীবাস
কি কহিব বেদে নাহি সিমা॥ (গ)

ণ পাঠান্তর--

মহাদেব-বন্দনা

সম্পূট করিয়া কর বন্দো প্রভু মহেশ্বর
বৃষভ-বাহন শূলপালি :
দেখি কোটি ইন্দু কিবা জিনিয়া অক্ষের আতা
চরণে মঞ্জীর করে ধ্বনি ।
অজিন-বজিত মাঝে রতন-কিন্ধিণী সাজে
ভুজক বলিয়া যোগপাটা ।
স্থ্রস্ত্রস্থান ইন্দু
নীলক্ষ্ঠ শিহোপতি জটা ॥

বাহন বৃষভরাজে গলে হাড়মালা সাজে কপাল-ভাজন করতল।

ভূজক-বলয়া করে গলে পাটাশ্বর ধরে ফণিহার ফণীর কুগুল॥

সাপে শোভে কটিবন্ধে সাপের পৈতা কা**দ্ধে** পায়ে শোভে সাপের নৃপুর।

গৌরীনারী অর্দ্ধ অঙ্গ নন্দী-ভৃঙ্গি সঙ্গী সঙ্গ স্মরণে কিলিশ যায়ে দূর॥

পরিধান বাঘছাল সঘনে বাজান গাল কৃষ্ণগুণে সদা আমোদিত। সত্য আদি চারি যুগে শিবের অর্চনা আগে

দেব-নর-অস্থর-পূ:জিত॥

ষ্ণটাতে আছয়ে গধ অন্ধ তার সতী-অধ বিভূতি ভূষণ কলেবরে। গলে শোভে হাড়মাল অন্ধচন্দ্র রেখা ভাল অধদ-বলয়া ভূষা করে॥

রাগ ভান মান ভেদ প্রেকরি চারি বেদ বদনে নাচয়ে যার বাণী।

শৃদে রাম ধ্বনি করি ভমুর বোলয়ে হরি যার গানে হৈলা ফলাকিনী।

বন্দে প্রভু ভূতনাথ ভবেশ ভবানী সাধ ভবভীম ভজে পরায়ণ। ভব-ভয়ে কবি কুপা ভীতি ভঙ্ক মহাতপা ভব-খি ভবানী-ভরণ॥ ভারতে যতেক জীব যে জন ভজায়ে শিব তার কভু আপদ না হয়। ঐহিকে না দেখে ত্থ ভুঞ্জিয়া সংসার-স্থুখ পরকালে কৈলাস মিলয়॥

নিরপ্তন নিরাকাব নিগম পুরাণ সার

নিগৃঢ়-বিষ্ণ-নারায়ণ।
বোগ শোক তৃঃথহরা দৈন্ত-তৃঃথ-পাপহরা

মোক্ষদাতা পতিত-পাবন॥
বন্দে-দিগম্ববে থকম ভমরু কবে

বন্দে । শক্ষ ভ্যক্ত কবে বৃষ্টে আবিগহণ পঞ্চানন।
প্রম্থগণের নাথ গুহুগণেশের সাথ

তুমি হরি যোগয়াজে এ তিন ভ্বন প্জে তুমি হরি গুণের আত্ময়।

করিয়া তোমার সেবা মূনিগণ মহাতপা সিদ্ধ সাধ্য লোমাব আশ্রয়॥

তুমি হরি পুণ্যরাশি শূল-অগ্রে বারাণসী যাহাতে বৈকুণ্ঠ অবতার।

ভাতে যেই মরে জীব সে জন সাক্ষাৎ শিব কি কহিব মহিমা ভাহার ।

মহামিশ্র জগন্ধাথ হদর মিশ্রের তাত কবিচন্দ্র হদর-নন্দন :

তাঁহার অহম ভাই চণ্ডীর আদেশ পাই বির্চিল শ্রীকবিকস্কণ ॥ (বন্ধ) শ্বয়শৃঙ্গ আদি মূনি সদা সেবে শ্লপাণি
অমুক্ষণ করিয়া ধেয়ান।
প্রণমি শিবের পায় শ্রীকবিকস্কণ গায়
নায়কের করহ কল্যাণ॥

মহাদেব-বন্দনা

ব্যাদ্র চন্ম পরিধান শোভেন বুষবজান বন্দো তিলোচন তিপুরারী। জটায় জাহুবিশ্বিতি ভালে শোভে বস্ত্ৰমতি বাস্থকী ভূষণ শূলধারী॥ সিশা সে ভমরুধাবী জিনি তহু রূপ্যগারী প্রসন্ন বদন পদ্মাণন। যক্ষ রক্ষ নিশাচর স্থুরাস্থর আদি নর সবে শিবে করয়ে পূজন ॥ গলে দোলে অন্তিমাল করে শোভে নৃকপাল পৰ্ব অঙ্গে বিভৃতি ভূষণ। (?) কতাঙ্গদ্ধার বসনে চিতায় পিশাচগণে সঙ্গে সহচর যক্ষগণ॥ সঙ্গতি প্রমোথগণ নৃত্য গাঁত অনুক্ষণ স্থপল শিব মোহাশয়। ব্র দেন জেই জনে সেই ত্রিভুবন জিনে শিববরে থাকয়ে নির্ভয়॥ শমুদ্র মন্থনকালে দাহ বিষ কালানলে विज्वत रश विनासन। দেবতা করিলা স্থতি বিষ পিলা পশুপতি তবে রক্ষা পায় ত্রিভুবন #

মহামিশ্র ইত্যাদি। (দী)

লক্ষ্মী-বন্দনা

সজিত-বল্লভা লক্ষ্মী ব্রহ্মার জননী। তোমার চরণ বন্দে। জোড করি পাণি॥ যখন ছিলেন হরি অন্ত শয়নে। তাঁহার উদরে ছিল এতিন ভুবনে॥ জন্ম জরা মৃত্যু তোমার নাহি কোন কালে। সেইকালে ছিলে তুমি হ্রিনদ-তলে॥ অনল গরল আদি কুম্ভার মকর। কত কত রত্ন খাছে সমুদ্র ভিতর ॥ প্রতি গোপরম রক্ষ বিদিত সংসারে। তোমা লক্ষা হৈতে রত্মাকর বলি তারে॥ ধন জন যৌবন নগর নিকেতন। পদাতি বারণ বাজা রথ সিংহাসন ॥ ২এত অহঙ্কার গো তাবৎ শোভা করে। ১ কুপামরী লক্ষ্মী গো যাবং থাক ঘরে॥ সেইজন প্রশংসিত সেই অভিরাম। সেজন কুলীন গো সকল গুণধাম॥ তুমি গোবল্লভা কুশা নাহি কর যারে। আছুক সংখ্যর কাজ দারা নিন্দা করে॥ লক্ষ্মীরে চঞ্চলা বলি বলে যেই জনে। তোমার মহিমা সেই কিছুই না জানে॥ ছাড়ুহ সে জনে মাত। তার দোষ দেখি। অদে। য পুরুষে রাখ চিরকাল সুখী।।

১-১ তুমি গোপরম আ**ত্মাসকল সংসারে।** (থ)

২-২ তার ধন **জন গো তাবত** শোভা করে। **(খ**)

*

তোমারে বলেন মাতা সর্ব-গুণধাম। বিফল জনম লক্ষ্মী তুমি যারে বাম॥ লক্ষ্মী সে থাকিলে মান সকল ভুবনে। তুমি বাম হইলে বিজয় নহে রণে॥

সেজন পণ্ডিত মাতা সেই মহাবীর। বাহার মন্দিরে লক্ষ্মী তুমি হও স্থির॥

কমলার পদে যার স্থির নহে মন।
কি কারণে জীয়ে সেই জীবনে মরণ॥
লক্ষ্মীর মহিমা কবিকঙ্কণে গায়।
ভকত নায়েকে মাতা হবে বর্ষায়॥

- শতিবিজ্ঞল
 কাব্য কোন অলহার ভারত প্রাণ।
 নাটক নাটীকা জানে কাব্যের বিধান॥

 যদি দয়া না হয়ে ভোমার হেন জনে।
 বিসতে না জানে দে লোকের বিভ্যমানে॥ (দী)
- *** অভিনিক্ত— লক্ষীছাড়া পুৰুষ কুটুছ-বাড়ী যায়। জন-পীড়িন দায় থাকুক সম্ভাষণ না পায়॥ (বন্ধ)

শ্রীরাম-বন্দন।*

প্রথমে বন্দিব রাম মুক্তিপ্রদ ধার নাম
প্রভু রাম কমললোচন।
মাযোধ্যার পতি রাম বন্দো দূর্ব্বাদল-শ্যাম
প্রণমহ কৌশল্যা-নন্দন॥

* পাঠান্তর---

শ্রীরাম-বন্দনা

শ্রীদশর্থ ক্ষাত (?) রাম নাম স্থবিদীত দেবদেব কোশল্যানন্দন্। অজোধ্যার অধিপতি সঙ্গে শোভে সিতা সতি শরে ছত্র ধরেন লক্ষণ॥ বন্দো রাম কমল্লোচন। তন্ম তুর্বাদলশ্রাম করেতে কোদও রাম দেবঋষি করয়ে স্তবন॥ অঙ্গে আভরণ বহু অজানুদম্বিত বান্ত্ অন্পাম চারু বিলোচন। গমনে তুলনাহীন অতি চারু মধ্য ক্ষীণ শিরে চারু মুকুট ভূষণ ॥ কুঞ্চীত কুঞ্চীত কেশ মদন নিন্দীয়া বেস জিনী মূখ কত সুধাকর। কনককুণ্ডল শ্রুতি পরিধান দিব্য ধুতি নথ দশে ভাসে শ্শোধর ॥ স্থপণ্ডিত দইয়াবান প্রাথা ছিন্দে দেন দান ধন্তুদ্ধর ধর্ম অবভার। রিপুজনে জেন যম প্রজার পালনে ক্ষম

হল্মান সহচত জাব !

>ধাঁর নামে জীব ত্রাণ> মন্ত্রী যাঁর জান্ববান মিত্র যাঁর গুহক চণ্ডাল।

সদা সতাপরায়ণ রিপু যাঁর দশানন যাঁর কীত্তি সমুদ্রে জাঙ্গাল ॥

পক্ষিতিতলে উপনীত। বামের বনিতা সীতা সঙ্গে যার অনুজ লক্ষণ।

°আসি দেব°পুরন্দরে °যার শিরে ছত্র ধরে° স্তুতি করে প্রন-নন্দন॥

বশিষ্ঠ স্থপুরোহিত গুহুক চণ্ডাল মিত

মন্ত্রি সে ভন্তুক জাস্থ্বান।
বাস্ত্র কপি য়াদি নিশাচর নানাবিধি

সর্বি সেনা রামের পরাণ॥

শ্রীরাম গুণের নিধি হেলে বান্ধি মহোদিধি ভূজবলে বধিলা রাবণ।

রত্ত্বময় লহাপুরি বিভীষণে রাজা করি দিলাধন জন সিংহাসন॥

শুনহে সকল লোক খণ্ডিয়া হর্গতি শোক রামনাম রদ মুথ ভরি।

কেব**ণ** নামের গুণে আম তরে **লগজ**নে বাদ করে বৈকুষ্ঠ নগরী॥

১-১ প্রণমহ প্রভূ রাম (গ)

২-২ লক্ষিক্রতা উপনিতা (খ)

৩-৩ আদি দেব (খ)

৪-৪ কোদশু ধরান সিরে (খ) দশু ধরত সিরে (গ)

হাদয় মিশ্রের স্থত
বিচারিয়া অনেক পুরাণ।
রাম-পদ-যুগাস্থ্
শ্রীকবিকঙ্কণ রস গান॥ (দী)
১-১ পক্ষারাজ রাজার বাহন। (থ)
২-২ কর্ণের স্থান দাত। (ব্ধ)
৬-৩ কামিনী জিনিয়া বেশ (খ এবং বঙ্গ)
কাম জিনিয়া বেশ (গ)

দশানন মজিল সবংশ॥

ধমুর্বাণ করে ধরি তরেতে পালায় তারি তামুগত জনে দয়াবান। রঘুপতি পদাসুজে মত্ত মধুকর দ্বিজে শ্রীকবিকঙ্কণ রস গান॥

চণ্ডী-বন্দনা

বৈশ্ব-বিনাশিনী তৈরবী ভবানী
নগেন্দ্রনন্দিনী তেরী।
মুরজ মন্দিরা বীণা সপ্তস্বরা
বাজায়াা তুন্দুভি ডিভি॥
স্থল-উতপল চরণ-কমল
ভিথি শোভে নগচন্দ।
চরণে চণ্ডীর কনক-মঞ্জীর
গঞ্জি গজমভি মন্দ॥
জিনি করিকর জঘন স্থান্দর

কটিতে কিঙ্কিণী বাজে॥

*হেম-কাস্তি বরআননে ঈষৎ হাস।

করি-অরি জিনি ক্ষীণ মাঝাখানি

চরণে রতন নানা আভরণ দশদিকে পরকাশ॥

১-১ বন্দো পিনাকিনি (গ)
 বিদ্যা-বিলাদিনী (বন্দ)
 বলাকে অভিরাম অভিনব কাম (খ)

জিনি শতদল বয়ান-কমল অধরে বন্ধক ভোর। পরিহরি ব্রীড়া কত করে ক্রীড়া নয়ান-খঞ্জন-জোর॥ নয়ানের কোণে আছে কত তৃণে े अञ्चत-नाभिनी > देषु। চাঁচর কুন্তলে মালতীর মালে ভ্রময়ে ভ্রমর-শিশু॥ তথির উপর নাভি-সরোবর তন্ত্রকহাস্কুরদাম। উচ কুচ-গিরি জিনি কুম্ভকরী করী করে জল পান। শিরে শশিকলা তারকার মালা ने य९ जन्मन विनम् । ললাট-ফলকে অলকা ঝলকে किनि कलिकनी देना। উরহ গায়নে তাল-মান-গানে

বলি বেদস্কৃতি মতে।

^২পূর্ণকর কাম আইস্থ এই ধাম**২** কুপা করি গিরিস্থতে॥

১-১ অস্থভনাদিনি (খ)

* অতিরিক্ত—

জিনিঞা মূনাল বিঘনি বিদাল জাহে চক্র ধন্তস্বর।

কটিতে কিছিনি বগনে বান্ধনি স্বগন্ধন-মনোহর ॥ (গ্)

२२ नाम प्रणिपम गाँह अन जन (थ)

ভব-পারাবারে ভার করিবারে

ইহা বহি নাহি আন।

চণ্ডাব চরিত মধুর সঙ্গীত

শ্রীকবিকঙ্কণ ভাগ॥

শ্রকদেব-বন্দন।*

ব কো শুক্দেরের চরণ। ্যই মুনি স্বৰজন হৃদয়ে পদা যেন প্রবেশ করিল কোলে বন ! সেই মুনি নেরুপ্র জ্যান-দাংপর সম ালখন নিগমের সাব। প্রকাশিল ভাগবত সংসারেব জীব যভ সভাকার করিল উদ্ধার॥ শিশুক ::ল বনবাস ভেজি সব অভিলায উপনয়ন আদি ছাভিয়া। পুত্র বাল ব্যাস ডাকে ১উত্তর না দিল তাংক ত পোবনে প্রকেশ করিয়া॥ বিবসন কলেবরে শুকদেবে কত দূবে তাকে দেখে বিছাধরীগণ। অক্লে নাহি দেয় বাস; তার পাছে দেখি ব্যাস অবিলক্ষে পরিলা বসন ॥

কঙ্বাদী সংস্করণ হইতে।
 ১-১ উত্তর দিলান তাকে (দী)
 2—2303 B.T.

দেখি এত অদ্ভূত করে প্রাশ্ব-সূত ই
লাজ কেন কর বৃদ্ধজনে।
মার পুত্র গুণধাম নবীন-জলদ-শ্রাম
দেখি কেন না পর বসনে॥
তবে বিজ্ঞাধনী ব্যাসে হাসিয়া মধৃব ভাষে
ইন্ডেদবৃদ্ধি না আছে তাহার।ই
ইন্থাপুরুষে ভেদবান কছু নহে দিব্যজ্ঞান
বৃষিয়াছি চরিত্র তোমার॥
এনত তাহার গুণ শুনিয়া ত তপোধন
ত্যজিলেন স্থাতর বিরক্তে।
গোবিন্দ-পদার্যবিন্দ- বিগলিত-সকরন্দহালি কবিকস্কণে গাহে॥

গ্রীচৈতগ্য-বন্দন।

অবনাতে অবতরি টেডক্সরপেতে হরি
বন্দিব সর্নাসিশিরোমণি।
নদীয়া-নগরে ঘর ধন্স মিশ্র পুরন্দর
ধন্স ধন্স ধন্স শচীঠাকুরাণী॥

১-১ জিভানে বাসপি সূত (দী)

২-২ **ভে**দবৃদ্ধি আছয়ে ভোমার। (দী)

৩-৩ ভরুণী পুরুষ জান (দী)

৪-৪ ভনি প্রভুনারায়ণ (নী)

ভূবনে বিদিত নাম সুধন্ত নদীয়া গ্রাফ জমুদ্বীপ-সার নবদ্বীপ।

ঘোর কলি অন্ধকার শ্রীটেডকা অবভার প্রকাশিল হরিনাম-গীত।

ত্রিভূবনে অবতংস স্কলিয়া বিত্রে বংশ ।

ত্রাণ কৈলে অখিল প্রাণী।

সঙ্গে প্রভু নিত্যানন্দ ভুবনে আনন্দ-কন্দ মুকুতির দেখাল্য সর্রাণ॥

*

ংসংক্রেম সাক্ষাপ্রি ভট্টাচার্য্য শিরেমণিং বড়্ভুজ দেখি কৈলা স্তাত।

্প্ম-ভাক্তি-কল্পতক ওম্থিল জীবের গুরুও গুরুইকল কেশ্ব ভাবতীয়

ক প্রচে সন্ন্যাসাঁ-বেশ ভ্রমিল। অনেক দেশ সঙ্গে পারিষদ পুণ্যশালী।

*রাম লক্ষ্যা শাধার গোরী বাস্থ পুরন্দর মুকুন্দ মুরাবি বন্দালা॥

১-১ হইয়া মাহর অংশ (বজ) ংয়া প্রভু জার বংশ (দী)

* অভিবিক্ত-

প্রণমই শচির নন্দন।

হৈয়া অথিঞ্চন বস দিয়া জিবে প্রেমংস নিস্তার কবিলা সর্বজন॥ (দী)

২-২ ভট্টাচাজ্য সান্তমূনি সর্বাসান্তে শিরমনি (খ.)

৬-৩ অখিলি তদ্ধের গুকি (দী) অখিলি মক্তের শুকি (খি)

8-৪ বামকৃষ্ণ (বঙ্গ)

স্থিত কংশুন গৌর ভুবন-লোচন-চৌর

কল্মু-.কাপীন-দণ্ডধারী।

নিয়নে গলয়ে লোল গলে দোলে প্রেমডোর

সত্ত বোলেন হরি হরি॥

কুপাময় অবত্যর কলিযুগে কেবা আর

শাষণ্ড-দলন বীরবানা।

জগাই মাধাই আদি অশেষ পাপের নিধি

হরিপদে দৃঢ় কৈল মনা॥

মহামিশ্র জগল্লথ স্থান্য তাত

কবিচন্দ্র স্থান্য নামন্য তাত

কবিচন্দ্র স্থান্য নামন্য বিরচিল শ্রীকবিকস্কণ॥

पिश्-वन्त्र *+

সাদি দেব বন্দিব ঠাকুর নিরঞ্জন। যাহাব স্থজন সৃষ্টি সকল ভুবন॥

- ১-১ অপরণ অবতার কলিকালে কেবা আব সদাই বলাহ হবি হরি॥ (क) কপটে লোচন লোব গলে শোভে নাম ভোর সদত বলাল হবি হরি॥ (দী)
 - * থ-পুথি হইতে।
 - ণ পাঠান্তব--

पिश्-वन्पना

প্রথমে বন্দিব দেব ধর্ম নৈরাকাব। একই মণ্ডণে বন্দো এ চারি ছুআর॥ মাতা বস্ত্রমতী বন্দো জোড় করি হাথ।
বৌদ্ধরশে বন্দিব ঠাকুর জগন্ধাথ ॥
নীলাচলের মহিমা কহনে না যায়।
শৃদ্ধে কিনা আনে অন্ন দিজে লয়া খায়
স্তভ্রে বলাই সাথে যত সিদ্ধার্গণ।
জোল হাথে বন্দিব কুন্ফের বৃন্দাবন ॥
ক্সিক নাগর বেশে বংন্দা তুইজন।
একে একে বন্দিব যতেক গোপীগণ॥
চতুর্মাংখ ব্রন্দা যাবে ধাংধ অনুপাম।
স্বাধাায় বন্দিব ঠাকুর শ্রীরাম ॥
শ্রীরাম বন্দিব ভরত শক্রঘন।
শিরে ছত্র ধবে যার স্থমিক্রমন্দন॥

ব্যভনাহনে বন্দোঁ দেব প্ঞানন।
দেবগণ সঙ্গে বন্দোঁ মনাল-বাহন।
গরুড়ের পিঠে বন্দোঁ মরাল-বাহন।
শাশিচক্র সাহিত বন্দিব গ্রহগণ।
হারোধাা নগরে বন্দোঁ শ্রীরাম-লক্ষ্মণ।
সভিন্যায় বন্দিব ঠাকুর জগন্নাথ।
সভজা বলাই বন্দোঁ করি প্রাণিপাত।
নবছীপে বন্দোঁ গোরা শচীর কুমার।
হরিনাম দিয়া কৈল জীবের উদ্ধার।
আবনী লোটায়া বন্দো শচী ঠাকুরাণী।
যার গভে গোরাচাদ জন্মিলা আপনি।
কীর্তন সিজ্জন কৈল খোল করতাল।
প্রকাশি জীবের লাগি প্রেমের প্রসার।

গয়ায় গদাধর বন্দো প্রয়াগে মাধব।
শ্রীহরি দ্বারিকা বন্দো অনস্ত যাদব॥
হিঙ্গুলাটে দেবতা বন্দো হিঙ্গুলাই।
হস্তিনাপুরের দেবতা বন্দিব পলাসাই॥
হেমগিরি বন্দিব করিয়া প্রাণিপাত।
লিঙ্গুরূপে বন্দিব দেবতা বৈত্যনাথ॥
বারাণসী বন্দিব কুষ্ণের অর্দ্ধ অংশ।
ছাপার কোটী দেবতা বন্দিব যত্ত্বংশ॥
নারায়ণপুরের ব্রাহ্মণী বন্দিব বিনয়।
হিঙ্গুলীর দেবতা বন্দিব কালুরায়॥
সদানন্দে বন্দিব ঠাকুর দক্ষিণরায়।
যাঁহার স্মরণে সর্ব্ব বিল্প দূরে যায়॥
তামলুকে দেবতা বন্দিব কৃষ্ণহরি।
তপ্ত বারাণসী বন্দো জয় যোগেশ্বরী॥

যেই জন নাম লয় নাম দেন তারে।
প্রভু নামে বান্ধ ভেলা সিন্ধু তরিবারে॥
দশ অবতার বন্দেশ একচিত্ত মনে।
বরাহ নৃসিংহ কুর্ম অদিতি-বাঙনে॥
দাম্ফার ঠাকুর বন্দিব চক্রাদিতা।
যার পাদপদ্ম সেবি করিলু কবিত্ব॥
বোড় গ্রামের বলরামে নত কৈলু শির।
হন্তমান বন্দিব গরুড় মহাবীর॥
কামেশ্বর লিন্ধ বন্দেশ কোঙাঞি নগরে।
চন্দ্রকোণার গড়পতি বন্দেশ মলেশ্বরে॥
তাটেশ্বর গোটেশ্বর বন্দিলু গোতানে।
অগ্নিমুথ হর বন্দেশ বাদ প্লাদনে॥

সক্ষেত মাধব বন্দো অষ্টলোকপাল।
মাকালপাটের বন্দিব প্রত্যক্ষ মহাকাল॥
রঙ্গিনী বন্দিব যাঁর পুরী পাটশিলা।
কালীপাটের বন্দিব প্রত্যক্ষ মহাবলা।

ল্যাড়গ নগরে বন্দে । সর্বমঙ্গলা। অস্থর বধিয়া মায়ের গলে মুগুমালা ॥ মৃগুযোপ গ্রামে মাতা বন্দৌ মস্তেশ্বী। জয়চণ্ডী মাতা বন্দো চয়ডা নগরী॥ কাইতির বাণেশ্বর বন্দি গাব আগে। মোলায় রঙ্কিণী বন্দেঁ। মস্তকের পাগে ॥ ক্ষীর গ্রামের যোগান্তা বন্দিত্ব বিধিমতে। তমলুকের বর্গভীমা বন্দে । মুঞি মাথে ॥ আমতার মেলায়ের চরণ বন্দিয়া। थानी विभानाकी वत्नां श्राम कविशा॥ বিক্রমপুরের বাশুলী বন্দিছ গাঁত নাটে। বাছ্যাবাড়ী নীল মাতা রাজ্বোল হাটে॥ চণ্ডীপুরের বারাহী বন্দিল বিধিমতে। বড়ই পিরিতি মাতার কুস্কম পরিতে 1 শিবাক্ষেত্রে বন্দেশ মাতা উত্তরবাছিনী। ইলীপুরের রঙ্কিণীকে যোড় করি পাণি। বালিগড়াার ভগবতীর পদে পরণাম। বৈত্যপুরে ভগ্নিরূপে করয়ে বিশ্রাম 🛭 পাড়াম্বর্যার কামার বুড়ীর বন্দিয়ে চরণ। দশঘরার বিশালাকী হও স্থপ্রসর। তেরঘরার বিশালাক্ষীর পদে কৈলু নতি। রামনগরের ভবানীরে করিয়া ভকতি॥ রাণীহাটের ভগবতীর পদে কৈলু নতি। মুগুমালা গলে শোভে ভীৰণমুরতি।

সদানন্দে বন্দিব ত্রিভুবনেশ্বরী।
স্মরণে হরয়ে সব ছঃখ মৃত্যুপুরী ॥
আগ্রন্থান বটে মায়ের বিক্রেমপুর।
অপ্ত আভরণ শোভে ললাটে সিন্দুর॥
মায়ার কারণ সাধু বিদিত সংসার।
শিরাখালার দেউল আছে উত্তর ছ্রার॥

চারি চতুম্বল ঘর দেখিতে **হুন্দ**র। ডানি বামে হুই পী'ড়া অতি মনোহর॥ এক্তমুখী বৃষ্ণিনী যে ব্ৰক্ত পীল বৃদি। কেহ নাঞি জানে স্থান গুপ্ত বারাণদী॥ হাথেতালে বন্দিলু বড়ার বিষহরি। চারিদিগে নাগেতে বেষ্টত যার পুরী॥ দ্রষ্টকেদারপুর আর হাসনহাটা। যথা তথা বুলা চলা মণ্ডলগ্রামে বাটী॥ বালীভাঙ্গার বন্দ্যোপাধ্যায় বাডীর চরণ। প্রণাম করিয়া যত দেবদেবীগণ ॥ জযদেব বিভাপতি বন্দে। কালীদাস। মাদি কবি বাল্মীকি বন্দিল মুনি ব্যাস। মাণিক দক্ষেরে আসি করিয়ে বিনয। যাহা হৈতে হৈল গীত-পথ পরিচয়॥ বন্দিলু গীতের গুরু শ্রীকবিকঙ্কণ। প্রণাম করিয়া মাতা-পিতার চরণ॥ গায়ন গুণিন লেই নাটুয়া লেই পো। কবি**ত্ব** শিথি**লু** মাতা তব মায়া মো॥ হাথে তালে ডাকি আমি হইয়া কাতর। নায়কের আ**সরে তুর্গা** উরহ **সত্ত্**র॥ তুই পালোর কন্ধে দিয়া তুই পাও। আমার কন্ধেতে বসি রহনি থেলাও চ

রাজবলহাট সেই গ্রাম নদীকূল। ডিঙ্গা লইয়া দিল সাধু চণ্ডীর দেউল। কোথা চণ্ডী আছ গো তুমিত মশানে। দণ্ড চারি উর মাতা সেবক স্মরণে॥ কাইতির বাণেশ্বর বন্দিলাম আগে। মউলা রঙ্গিণী বন্দো মস্তকের পাংগ। ভেউটিয়া গ্রামের বন্দো দেবী ভদ্রকালী। হুলাহুলি দিয়া বন্দো দামুন্সার বাস্থুলী॥ গ্রামের দেবতা বন্দো আসর ভিতর। জাজপুরের বরাহ বন্দো মস্তক উপর॥ সিংহপুষ্ঠে বন্দে। জয়া হেমন্ত-ঝিয়ারী। জউপ্রামের বন্দিব জয় বিষহরি॥ সদাই মানস যার লইবারে গঙ্গা। পথের বিশ্রাম শুন নারিকেলডাঙ্গা॥ দামুম্থার ঠাকুর বন্দিব চক্রবর্ত। যাহার চরণ ধরি করিলু কবিজ। কামেশ্বর শিব বন্দো কঙর নগরে। চন্দ্রকণার গণপতি বন্দো মহেশ্বরে॥ বেতারগডেতে বন্দো চণ্ডীকা বেতাই। খেপ্তের খেপাই বন্দো আমতার মেলাই॥

ভাকিনী যোগিনী বন্দেঁ। শ্রীধর্মের পা।
লব্ধ হইয়া যে মোর আসরে করে থা।
ভিনি মোর ভগিনী আমি ভার ভাই।
আসরেতে করে ঘা চণ্ডীর দোহাই।
ভভয়া মদল কবিকঙ্কণে গায়।
হরি হরি বলহ বন্দনা হৈল সায়। (বন্ধ)

রাইপুরের দেবতা বন্দো শবাসিনী।
খড়পুরে হিড়িমাই অস্কর-দলনী॥
আছা কবি বাল্মীকিরে করিয়ে প্রণতি।
পরাশর ব্যাস শুক বন্দো বৃহস্পতি॥
জয়দেব বিছাপতি বন্দো কালিদাস।
কর জুড়ি বন্দিব গণ্ডিত কুত্তিবাস॥
মাণিক দত্তকে করিয়ে পরিহার।
বড়ু সর্বানন্দকে করিল নমস্কার॥
হেন সব কবিদের বন্দিয়া চরণ।
অভয়া-মঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ॥

প্রার্থনা

茶

তেজিয়া কৈলাস গিরি উর মা মরতপুরী
ভূত্যের কবিতে পরিক্রাণ।
বিশ্রাম দিবস আট শুন গীত দেখ নাট
আসরে করক অধিষ্ঠান॥

* অতিরিক্ত—

বেদ-ধ্বনি বাছতালে আরাধিয়ে শুভকালে
হরি হরি বল সর্বজন।
পিতৃগণ লৈয়া মাতা আসনে অসিবে যথা
নায়কের পূর্ণ কর মন॥
ক্ষেম ক্ষেম ক্ষম অপরাধ।
গায়ন বায়ন জনে রাখিবে সকল স্থানে
রূপা করি থণ্ডাহ বিষাদ॥ (দী)

লিখি পড়ি নানা গ্রন্থ ^২না জানি সঙ্গীত পন্থ ^২ কুপা করি দিলে গুরুভার।

অনভিজ্ঞ তালমানে কেমনে বুঝাব আনে দোষগুণ সকলি তোমার॥

ুপ্রচার যেমন কাব্য নহে গো যেমন ভাব্য করি চিন্তা, হর মোর ক্লেশ।

বলি-হোম-ধৃপ-দীপে তোমা পৃজে সপ্ত দ্বীপে তোমার সেবক জগজন।

° তুমি রমা তুমি বাণী যোগনিদা নারায়নী ° গিরি-কতা ঈশান-গৃহিণী।

আগম-নিগম-তন্ত্র- বীজরপা নানা-মন্ত্র তবেদমাতা বিশ্বের জননী ॥

১-১ না পাই সঙ্গিত অন্ত (গ)

২-২ তুমি কবি মোর বাপদেশ। (দী) তুমি গুরু মোর উপদেশ।

৩-৩ প্রচারে জে করে কাব্য জাহার জেমন ভাব্য কর চিস্তা হর মোর ক্লেস ॥ (থ)

8-8 कद मर्क इःथ वित्याहन ॥ (मी)

৫-৫ তুমি আভা মহামায়া সকরি সকর প্রিয়া ('থ)

৬-৬ বছরপা(খ) বিজরপা(দী) যোগময়ী জোগত্রাণী শক্তিভূতা সনাতনী ত্রৈবিছা অনাদি বাসনা। মহাযোগে কালরাত্রি গায়ত্রী ভুবনধাত্রী শক্তিরূপা সংসার-বাসন।॥ সলিলে ডুবিলে মহী আশ্রু করিয়া অহি শয়ন করিলা নারায়ণ। ্সেই অবসান-কালে প্রভুর প্রবণ-মূলে ছুই দৈত্য কৈলা মহারণ। মধুসে কৈটভ নাম তুই দৈত্য অনুপাম বিধাতারে করে বিভম্বন। নাভিপন্নে প্রজাপতি তোমারে করিল স্তুতি তার তুমি হইলে শরণ॥ যে জানে তোমার তত্ত্ব তুমি রজ-তম-সত্ত্ব বেদমাতা সানিত্রী-রুপিণী। তুমি আতা মহামায়। শঙ্করী শঙ্করকায়া আমি নর কি বলিতে জানি॥ মহামিশ্র জগরাথ স্থাদ মিশ্রের তাত

কবিচন্দ্র হৃদয়-নন্দন। ভাহার অমুজ ভাই চণ্ডীর আদেশ পাই বিরচিল শ্রীকবিকস্কণ॥

গ্রন্থ উৎপত্তির কারণ * †

শুন ভাই সভাজন কবিছের বিবরণ

এই গীত হইল যেন মতে।

উরিয়া মায়ের বেশে কবির শিয়র-দেশে
চণ্ডিকা বসিলা আচস্থিতে ॥

সহর সিলিমাবাজ তাহাতে সজ্জন-রাজ
নিবসে নিয়োগী গোপীনাথ।

তাহার তালুকে বসি দামিস্থায় চাষ চিষ
নিবাস পুরুষ ছয় সাত॥

ধন্ম রাজা মানসিংহ বিষ্ণুপদাস্কুজ-ভুঙ্গ
গৌড়-বঙ্গ-উৎকল-অধিপ।

সে মানসিংহের কালে প্রজার পাপের ফলে

বঙ্গবাসী সংস্করণ হইতে।

১-১ কাঁশদার (গ)

ক পাঠান্তর—

অথ আদি পালারম্ভ

'ডিহিদার' মামদ সরিপ॥

কুলে শীলে নিরবধ্য কারস্থ প্রান্ধণ বৈদ্য
দামিকাটি সজ্জন-প্রধান।
অভিশন্ধ গুণ বাড়া স্বধক্ত স্কবি সমান।
ধক্ত ধক্ত কবিলাশাল্প বিজ্ঞান্ত নাকের কুলে
অবভার কবিলাশাল্প।
ধবি চক্রাদিতা নাম দামিকা কবিলাধাম

ै विकास है स्मानगर ॥

উজির হলো রায়জাদা >বেপারিরে দেয় খেদা>
বাহ্মণ বৈষ্ণবের হল্য অরি।

মাপে কোণে দিয়া দড়া পনর কাঠায় কুড়া নাহি শুনে প্রজার গোহারি॥

সরকার হইলা কাল থিল ভূমি লেখে লাল বিনা উপকারে খায় ধুতি।

পোদ্দার হইল যম টাকা আড়াই আনা কম

বিশাই লভ্য লয় দিন প্রতি ॥

ডিহিদার অবোধ খোজ কড়ি দিলে নাহি রোজ ধান্ত গরু কেহ নাহি কেনে।

প্রভু গোপীনাথ নন্দী বিপাকে হইলা বন্দী হেতু কিছু নাহি পরিত্রাণে ॥

পেয়াদা সবার কাছে প্রজারা পালায় পাছে

তুয়ার চাপিয়া দেয় থানা।

প্রজা হইল ব্যাকুলি *বেচে ঘরের কুড়ালি*
টাকার জব্য বেচে দশ আনা॥

বুঝিয়া ভোমার ভত্ত দেউল দিল ধুষদন্ত কতকাল তথাই বেহার।

কে বুঝে তোমার মায়া স্থরকুল তেয়াগিয়া চলদলে করিলা সঞ্চার॥

গঙ্গাসম স্থনির্মল তোমার চরণজ্জল পান কৈলা শিশুকাল হৈতে।

সেই ত পুণ্যের ফলে কবি হ**ই** শিশুকালে রচিলাঙ তোমার দঙ্গীতে।

১-১ বেপারি না করে সয়দা (গ)

২-২ পাই লভ্য খায় ভদা প্ৰতি॥ (গ)

৩-৩ বেচে ফাল কোদালি (গ)

সহায় শ্রীমন্ত খাঁ চণ্ডীবাটী যার গাঁ যুক্তি কৈলা 'মুনিব খার' সনে। দামুকা ছাড়িয়া যাই সঙ্গে বনানাথ ভাই পথে চণ্ডী দিলা দরশনে॥ ভেঠনায় উপনীত রূপ রায় নিল বিভ যতু কুণ্ডু তিলি কৈল রক্ষা। দিয়া আপনার ঘর নিবারণ কৈল ডর দিবস তিনের দিল ভিক্ষা॥ বহিয়া গোড়াই নদী সদাই স্মরিয়ে বিধি তেউট্যায় হইলু উপনীত। পাইল বাতন-গিরি দারুকেশ্বর তরি গঙ্গাদাস বড কৈলা হিত॥ নারায়ণ প্রাশ্র এড়াইল দামোদর উন্নীত কুচট্যা নগৱে। তৈল বিনা কৈল স্থান করিলু উদক পান শিশু কাদে ওদনের তরে॥

হরি নন্দী ভাগ্যবান্ শিবে দিলা ভূমিদান
মাধব ওঝা ধামাদি করণী।
দামন্তার লোক যত শিবের চরণে রত
সেই পুরী হরের ধরণী॥
পাষশুকুলের অরি প্রীয়ম্ম অধিকারী
কল্পতক নাগ উমাপতি।
আশেষ পুণ্যের কন্দ নাগ ঋষি স্ববানন্দ

মণেধ পুণ্যের কন্দ্র সেই পুরী সজ্জনবস্তি॥

১-১ গরিব থা (গ)

२-२ वामानम (घ)

'আশ্রম পৃথরি আড়া নৈবেছ শালুক পোড়া পৃজা় কৈন্তু কুমুদ-প্রস্থনে।

ক্ষ্ধা-ভয় পরিশ্রমে । নিদ্রা যাই সেই ধামে
চণ্ডী দেখা দিলেন স্বপনে॥

হাতে লইয়া পত্ৰ মদী আপনি কলমে বসি নানা ছন্দে লিখেন কবিত্ব। যেই মন্ত্ৰ দিল দীক্ষা সেই মন্ত্ৰ করি শিক্ষা

মহামন্ত্ৰ জপি নিত্য নিতা ॥

কানা দিয়া বন্দী ঘাটা বেদান্ত নিগম পাটা ঈশান পণ্ডিত মহাশ্য। ধন্য ধন্য পুৰবাদা বন্দ্য দে বালাল পাদী লোকনাথ মিশ্র ধনজয়। কাঞ্চি কলের সা মহাসিতা অলঙ্কার শক্ষকোষ কাব্যের নিধাম। কয়াডি কুলেব বাজা স্তুক্তি তপন ওঝা তক্ত সভে উপাপতি নাম॥ তন্ত্ৰ হাধৰ শৰ্মা ক্ষুক্তি স্তুক্তকৰ্মা তার নয় তন্য দোদর। নিত্যান**ন্দ স্থ**রেশ্বর উদ্ধরণ পুরন্দর বাহুদেব মহেশ সাগর ৷ গর্ভেশ্বর অনু**জা**ত মি**শ্রনাথ জগরাথ** একভাবে সেবিলা শঙ্কর। বিশেষ পুণোর ধাম গুণীরাজ মিশ্র নাম

কবিচন্দ্র ভার বংশধর 🛚

১-১ - আসম (গ)

পদেবী চণ্ডী মহামায়া পিলেন চরণ-ছায়া
আজ্ঞা দিলেন রচিতে সঙ্গীত।
চণ্ডীর আদেশ পাই শিলাই বাহিয়া যাই
আড়রায় হইলু উপনীত॥

অহল মৃকুন্দ শর্মা ককবি স্থকত কর্মা নানাশাল্প মিশ্রা বিভান। শিবরাম বংশধর কুপা কর মহেশর রক্ষ পুত্রে পোল্রে ত্রিনয়ান॥ (দী)

মঙ্গলবারের পালা আরম্ভ

আজ্ঞা দিল মহীপাল

ভভক্ষণে বারি সংস্থাপন।
নৈবেছ বিবিধরপ গন্ধ পূপ দীপ ধূপ
পট্টবন্ধ নানা আয়োজন ॥

ভাতি বন্ধু পুরোহিত আর যত নিমন্ত্রিত

আনন্দিত সব এক স্থানে।
ভেরী তুরী বাজে ভাল কাংস্ত বাল্প করতাল
পটহ ভুনুভি বাজে বীণে ॥

রাজা দেয় জয়ধনন সপ্তক্ষরা পিনাকিনী
বাজে নানা মঙ্গল-বাজন।

হয়ে অভি ভচিকায় বিজ্ঞারাধন ॥

>-> চণ্ডীকা কবিল দয়া (গ) 3--2803 B. T.

আড়রা ব্রাহ্মণ-ভূমি ব্রাহ্মণ যাহার স্বামী নরপতি ব্যাসের সমান। পড়িয়া কবিছ বাণী সম্ভাষিত্ব নুপমণি পাঁচ আড়া মাপি দিলা ধান॥ স্থুখন্স বাকুড়া-রায় ভাঙ্গিল সকল দায় শিশুপাছে কৈল নিয়োজিত। তার স্থৃত রঘুনাথ রাজগুণে অবদাত গুরু করি করিল পুজিত। সঙ্গে দামোদর নন্দী যে জানে স্বরূপ সন্ধি অমুদিন করিত যতন। নিত্য দেন অমুমতি রঘুনাথ নরপতি গায়নেরে দিলেন ভূষণ॥ ^১বীরমাধবের স্থত^১ রূপে গুণে অদৃভূত ংবীর বাঁকুড়া ভাগ্যবান। তার স্থৃত রঘুনাথ বাজগুণে অবদাত জ্রীকবিকঙ্কণে রস গান॥"

ঘট-সংস্থাপন করি মহামায়া মহেখরী
স্থিতি কর এ অট বাসর ।
লক্ষী বাণী আদি করি আর যত সহচরী
লয়ে শরক্ষমা ল্যোদর ॥
-১ বিক্রম সংক্রে করে (গ্রা) ২-২ ব্যানাধ নপ্তিক্ষ

১-১ বিক্রম হতের হত (গ) ২-২ রঘুনাথ রূপতিভূষণ। (গ)
৩-৩ মৃকুশ রচিত পুঁথি শুনি হুখে নরপতি
কাতি দিল ঞ্জিববিক্ষণ। (গ)

অথ সৃষ্টিপালা আরম্ভ

আদি দেব

আদি দেব নিরঞ্জন যাঁর সৃষ্টি ত্রিভূবন পরম পুরুষ পুরাতন। শৃস্থেতে করিয়া স্থিতি চিন্তিলেন মহামতি সৃষ্টির উপায় কারণ॥

নাহি কেহো সহচর দেবতা অস্থ্র নব
সিদ্ধ নাগ চারণ কিল্পর ।
নাহি তথা দিবা নিশি না উদয় রবিশশি
অন্ধকার আছে নিরস্তর ॥
কোটি ভামু পরকাশ পরিধান পীতবাস
'অন্ধকার পারে ভগবান।'

"কিরীটী" কিন্ধিশী হার দূর করে অন্ধকার

তুমি আন্থা মহামায়া আর যে তোমার কায়া স্মানুধে করহ অধিষ্ঠান।

পুর্ট-মুকুট মণিদাম॥

ভক্ত নাম্নকের প্রতি ক্লপা কর ভগবতি শ্রীক্বিকঙ্কণ রস গান॥ (বঙ্গ)

অভিবিক্ত-

সর্বা রূপ ধরে প্রভূ
হাজিয়া নাশেন বারেবার।

অক্ষয় প্রকৃতি গুণ সীমা দিব কোনজন যার বে করণ ইচ্ছা তার ॥ (দী)

দক্ষকারে ভাবে ভগবান। (বক)
 বক্টিভে (গ)

কণ্ঠেতে কৌস্তুভ আভা কোটি চান্দ জিনি শোভা কৃগুলে মণ্ডিত হুই গণ্ড।
নবীন জলদ কাঁতি মৃখ জিনি বিধুপতি মাজামূলস্বিত ভুজদণ্ড॥
আচিন্তা অনন্ত শক্তি হুদয়ে ভাবেন যুক্তি জলস্থল নাহি অধিষ্ঠান।
কোথাও সংহতি নাহি চিন্তিলেন গোঁসাঞি আপনারে 'অসত্য' সমান॥
চিন্তিলে এমত কাজ এক চিন্তে দেবরাজ তন্তু হইতে হইল প্রকৃতি।
অভয়া করিয়া ধ্যান শ্রীকবিকঙ্কণ গান চণ্ডীপদে করিয়া প্রণতি॥

আদি দেবী

আদি-দেবরাজ-শক্তি ভূবন-মোহন-মূর্ণ্ডি
উরিলেন সৃষ্টির কারিণী।
রচিয়া সম্পুট পাণি মৃছ্ মন্দ স্থভাষিণী
সমুখে রহিলা নারায়ণী॥
কষিত-কাঞ্চন-কায় ভূষণ ভূষিত তায়
পায়ে শোভে সোনার নৃপুর।
বিমল অঙ্কের আভা নানা অলঙ্কারে শোভা
রবির কিরণ করে দূর॥

১-১ অশক্ত (বঙ্গ)

রাজহংস রব জিনি চরণে নৃপুর-ধ্বন্ধি **पण नत्थ पण हेन्द्र** ভারে। কোকনদ-দর্পহর বেষ্টিত 'বাবক কর' অঙ্গুলি চম্পক পরকানে। রাজহংস-মন্দগতি হেম জিনি দেহ-জ্যোতি গজকুম্ভ চারু পয়োধরে। তাহে শোভে অনুপাম মণি মুকুতার দাম যেন গঙ্গা স্থুমেরু-শিখরে॥ রাম-রস্তা যিনি উরু নিবিড় নিতম্ব গুরু কেশরী জিনিয়া মধ্যদেশ। পরিধান পট্ট সাজে কনককিঙ্কিণী বাজে বচন-গোচর নহে বেশ। মণিময় হার ছলে কিবা সে তাহার গলে স্থির হইয়া সৌদামিনী বদে। নিরুপম পরকাশ মন্দ স্থমধুর হাস ভঙ্গী নব শিথিবার আশে॥ বন্ধক-কুস্থম-ছটা ললাটে সিন্দুর-কোঁট। প্রভাত কালের জিনি রবি। অধর বিম্বক জ্যোতি দশন মুকুতা পাতি

দোঁহার বদল করে ছবি॥

>-> यावक-वन्न (मी)

২-২ য়ধর বিষুক বন্ধ্ বদন সারদ **ই**ন্দু কুরদ জিনিয়া বিলোচন। প্রতাপে ভান্তর ছটা কপালে সিন্দুর ফোঁটা তম্বরচি ভূবনমোহন । (গ)

নব-অর*বিন্দ-ব*দ্ধ কপালে সিন্দুর-বিন্দু তাহে শোভে চন্দনের বিন্দু। ধরিয়া কুন্তল-ছলা তিমির করিয়া মেলা বন্দী কৈল তথি রবি ইন্দু॥ তিল ফুল জিনি নাসা 'বলুকি' জিনিয়া ভাষা জ্রমুগল চা শ-সহোদর। অকলক্ষ শশিমুখী খঞ্জন-গঞ্জন-আঁখি শিরোরুহ অসিত চামর॥ ভূবনে উপমা রঙ্ক অঙ্গদ, বলয়া, শঙ্খ মণিময় মুকুট মগুন। হাসিতে বিজুলি খেলে শ্রবণে কুণ্ডল দোলে *হেম-মুকুলিকা স্থানোভন ॥ প্রভুর ইঙ্গিত পাইয়া আদি দেবী মহামায়া স্ষ্ঠি স্থজিবারে কৈল মন। রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিলা বন্দ

চক্রবর্ত্তী জ্রীকবিকঙ্কণ।

>-> বনপ্রিয় (বঙ্গ) অতিবিজ্ঞ-

শ্রবণ উপর দেশে হেম মৃক্লিকা ভালে
কুটিল কুঞ্চিত কেশপাশে।
আবাটিয়া মেঘমাঝে যেমন বিজ্বী সাজে
পরিহরি চাপলাক দোধে। (গ. বল ও দী)

স্টি-প্রকরণ সৃষ্টি-প্রকরণ

ভেদ জমু কর ভেদ জমু। যো হরি সো হর এক তমু॥ ধুয়া॥ 'একদেব' নানা মূর্ত্তি হৈলা মহাশয়। হেম হৈতে বস্তুত কুণ্ডল ভিন্ন নয়॥ প্রকৃতিতে তেজ প্রভু করিলা আধান। রূপময় হৈল তথি তনয় মহান॥ মহতের পুত্র হৈল নাম অহংকার। যাহা হইতে হৈল সৃষ্টি সকল সংসার॥ অহংকার হইতে হৈল এই পঞ্জন। পৃথিবী উদক তেজ আকাশ পবন॥ এই পঞ্চ জনে লোক বলে পঞ্ছূত। ইহা হইতে 'প্রাণীবৃন্দ' হইল বহুত॥ গুণভেদে একদেব হৈল তিন জন। •রজোগুণে হৈলা ব্রহ্মা স্বৃষ্টির কারণ॥১ সত্ত্থেণে বিষ্ণুরূপে করেন পালন। তমোগুণে মহাদেব [•]বিনাশ-কারণ[•]॥ ব্রহ্মার মানসপুত্র হৈল চারি জন। সনংকুমার আর সনক সনাতন॥ সনন্দ হইল চারি ভাইর পুরণ। কৃষ্ণকথা বিনে তার অস্থে নাহি মন॥

२-२ लागैवृद्धि (वन) ১-১ (वमरमव (मी) রজগুণে দেবরাজ মরাল-বাহন 🛚 (দী)

রজোগুণে হৈলা বিধি মরাল-বাহন। (বন্ধ) বজোগুণে বন্ধা হৈলা মরাল-বাহন। (খ)

স্তী সংহারণ (গ)

>কৃষ্ণ-আরাধনে তারা পাইল বড় সুখ।> পিতৃবাক্য না শুনিয়া সংসারে বিমুখ। চারিপুত্র তেজিলা বাপের অমুরোধ। বিধাতার হৃদয়ে বাড়িল বড় ক্রোধ। ংসেই ক্রোধ ভুরাযুগে রহে বিধাতার। তাহাতে জন্মিল নীল-লোহিত কুমার॥ বাল্যভাবে মহাদেব করেন রোদন। নামধাম জায়া মোর কর নিয়োজন ॥ বিচারিয়া রুদ্রনাম থুইল প্রজাপতি। °উন্মত্ত মহেশ আর শিব পশুপতি॥° क्रमग्न देखिय त्राम वाय विक जन। মহী চন্দ্র দিবাকর তারে দিলা স্থল। •ধৃতি বৃদ্ধি ঈশী বশী শিবা আর অণিমা। একভাবে ছয় নারী ভজিবেক তোমা॥ স্ষ্টি করহ পুত্র বাড়ুক পরমাই। « আজ্ঞা লব্জিয় গেল তোর জ্যেষ্ঠ চারি ভাই॥ «

শ্বিকি

প্রাথা

১-১ চারি জনে জানিলেন হরিভক্তি হথ। (গ)

২-২ সেই ক্রোধ হৃদয়ে রহিল বিধাতার। (বঙ্গ)

৩-৩ মক্তমহুমহিক্তস শিব পশুপতি॥(দী)

৪-৪ ধৃতি বৃদ্ধি ইলা সর্পি শিবা অসিলোমা। (গ)

৫-৫ আভ্রালয়ালয়ালয়াবেদবড় চারি ভাই॥(দী)
 আভ্রালয়াক।জ্যকর জেট চারি ভাই॥(খ)

ুত্রক্ষার আজায় সৃষ্টি করেন শঙ্কর। স্থজিলেন প্রেত ভূত দানা নিশাচর ॥^১ জটা ভস্ম হাড়মালা বিভূতি-ভূষণ। দেখিয়া বিধাতা কৈল সৃষ্টি-নিবারণ n ভয়ঙ্কর স্থান্তি পুত্র না কর গঠন। তপস্তা করিয়া ভজ দেব নারায়ণ **।** ২পিতৃবাকো দিলা হর তপস্তায় মন। তবে জন্ম হৈল ব্ৰহ্ম-ঋষি দশজন ॥ মরীচি অঙ্গরো অত্রি ভৃগু দক্ষ কেতু। পৌলস্ত্য পুলহ হৈল। সংসারের হেতু॥ বশিষ্ঠ হইলা তবে মুনি মহাতপা। °নারদ হইল যারে কৃষ্ণ কৈল কুপা॥° আপনার তমু ধাতা কৈল হুই খান। বামভাগে নারী হৈলা দক্ষিণে পুমান। শতরূপা নারী হৈলা অতি বরতমু। পুরুষ হইলা স্বায়ন্ত্র নামে মন্ত্র॥ মন্তুরে কহিল ব্রহ্মা শুন মোর কথা। প্রজা সৃষ্টি করি মোর দূর কর ব্যথা। এতেক শুনিয়া মন্থ ব্রহ্মার বচন। জোড় হাত করিয়া করেন নিবেদন॥

১-১ পিতৃবাক্যে শিবদেব স্বষ্টে দিল মন। প্রথমে স্ঞ্জিল প্রেত় ভূত দানাগণ॥ (ক)

২-২ তবে জনাইল এই দশ ছত। আঠার বিছা রূপগুণ্যুত॥ (খ)

৩-৩ নারদ জন্মিয়া কৃষ্ণ ভক্ষে রাত্রিদিবা॥ (বঙ্গ)

সৃষ্টি স্কিবারে ভাল বলিলে গোসাঞি কোথা প্রজা.বসিবে এমন স্থল নাই॥ যুগে যুগে প্রজান্থিতি আছিল ধরণী। অস্থরে হরিয়া নিল পাতাল-সরণী॥ এমন শুনিয়া ব্রহ্মা হইলা চিন্তিত। নাসাগথে বরাহ নির্গত আচম্বিত ॥ অভ্যার চরণে মজুক মোর চিত। শ্রীকবিকঙ্কণে গান মধুর সঙ্গীত।

অচিস্ক্য অনস্থ রায় ধরিয়া বরাহকায়

অঙ্গে শোভে যজ্ঞপত্রজাল।

'ধরোদ্ধারে' মহারস্ত প্রলয়-জলধি-অস্ত প্রবেশিয়া পাইল পাতাল॥

#ভকত বৎসল ভগবান।
দশনে ধরণী ধরি হিরণ্যাক্ষ বীরে মারি
তল হৈতে করিয়া উত্থান।
দশন মুকুতা-আভা তথি দেবী পান শোভা
তমাল-শ্যামলা বস্ত্মতী।
যেন করি-দস্তমাঝে সপত্র পদ্মিনা সাজে
ঋষি সিদ্ধগণ কৈল স্তুতি।

১-১ धीदा धीदा

জলের উপরে ক্ষিতি আরোপি ভূবনপতি শরীর ঝাড়েন ঘনে ঘন। ১উঠে বিম্ব ছট। ধৃত ২ ভুবন করয়ে পৃত ২স্থর মহ তপঃ সত্য জন॥ জল তেজি দেবরায় সঘনে ঝাড়েন কায় অঙ্গ হৈতে °ছয় লোম° খসে। পাইয়া ধর্ণীগর্ভ তথি হৈল ছয় দৰ্ভ °মঘবিল্ল খণ্ডে সেই কুশে॥° অখিল-পর্ববত-গুরু মধ্যে আরোপিলা মেরু মন্দার-প্রমুখ গিরিচয়। গন্ধমাদন মাল্যবান শ্রেত নীল শুঙ্গবান হিমকৃট গিরি হিমালয় 🛚 প্রথমে উদয়গিরি পাছে সে অস্ত-শিখরী कोि कि विष्या लोकालाक। বাহিরে কাঞ্চন ক্ষিতি তথি যোগেশ্বব-পতি দেখি বিধাতার ঘুচে শোক ॥ স্থ্যমক্র-শিখর-ভাগে রবিরথ যাহে লাগে বেডিয়া ফিরয়ে দিবাকর। গতাগতি করি লক্ষ্য দিবা নিশি মাস পক্ষ হৈল ঋতু অয়ন বৎসর।

১-১ উঠে বিন্দৃছটা ধৌত (বন্ধ)

২-২ জত তুরে সঞ্জে প্রনা (গ)
শিরোক্ত তপ স্ত্য জন। (বঙ্গ)

[্]৩-৩ লোমচয় (দী) ৪-৪ মঘবিয় নাহি আইলে দেলে। (গ)

e-e ববি-রখচজ্ঞ লাগে (বন্ধ) বিরখ্য লাগে (দী)

হৈল প্রভু শিশুমার কুপাময় অবতার উদ্ধ পুচ্ছ হেট যার নাথা। ফিরে প্রভু নিরন্তর ^১তথি রাশিচক্র ভর^১ গ্রহতারাগণ বৈসে যথা। উদ্ধলোকে বহে গঙ্গা প্রবল চপল-ভঙ্গা মেরুশুঙ্গে হৈলা চারিধারা। সিতা ভদ্রা বন্ধু নাম অশেষ পুণ্যের ধাম ২ঞ্জীঅলকানন্দা ইত্তীর্থবরা॥ °বৈবস্বত-রাজধানী° তথা মন্তু রূপমণি শতরূপা সঙ্গে কৈল বাস। শ্রীকবিকঙ্কণে গায় স্থুখী রঘুনাথ রায় পঞ্চালিকা করিলা প্রকাশ।

মন্থর প্রজাসৃষ্টি

শতরূপ। মনু সঙ্গে ক্রীড়া কুতৃহলে।
গুণযুত ছই সূত হৈল কতকালে।
জ্যেষ্ঠ সূত প্রিয়ব্রত হইলা নূপবর।
রথচকে হৈল যার এ-সপ্ত সাগর।
কনিষ্ঠ উত্তানপাদ বিদিত ভুবনে।
গুব নামে পুত্র যার বিদিত পুরাণে।
তিন কন্তা হইল তার রূপগুণবতী।
আকৃতি প্রসূতি হৈল আর দেবহুতি॥

১-১ এক চক্র করি ভর (ক)

२-२ जनकनिक्ती(क)

৩-৩ দেবে শত রাজধানী (বন্ধ)

আকৃতিরে বিভা দিল রুচি মুনিবরে।
দিলেন যৌতুক রথ তুরঙ্গ কুঞ্জরে।
কর্দন মুনিরে বিভা দিল দেবহুতি।
দিলেক অনেক ধন দেব প্রজাপতি।
প্রস্তিরে পরিগ্রহ কৈল দক্ষ মুনি।
জন্মিলা তাঁহার যোল তনয়া-রূপিণা।
বেন্দা-মোক্ষ-হেতু দেবা আপনে প্রকৃতি।
নহাদেবে বিভা দিল নামে কন্সা সতী।
নানা ধন যৌতুকে প্রিয়া অভিলাষ।
বর-কন্সা পাঠাইয়া দিলেন কৈলাস।
অভয়ার চরণে মজুক নিজ চিত।
শ্রীক্বিকঙ্কণে গান মধুর সঙ্গীত।

অথ ভৃগুমুনির যজ্ঞারন্ত

এমন সময়ে ভৃগু বিরিঞ্চি-নন্দন।
বৃহস্পতি আনি যজ্ঞ কৈল আরম্ভন ॥
চারি বেদে পণ্ডিত অঙ্গিরা যাহে হোতা।
•সভাসদ হৈল যাহে আপনি বিধাতা॥
*

১-১ প্রসতিকে পাণিগ্রহন কৈল দক্ষপাত। জন্মিলা ভাষার গভ্যে তনয়া পাব্যতি॥ (গ)

২-২ নারদের স্থানে গিয়া দক্ষ প্রজাপতি। ক্রমন্দ করিয়া সিবে বিভা দিল সতি॥ (গ)

৩-৩ সভা লয়া আইল্যা তথা মাপনে বিধাতা। (গ)

দেবগণে নিমন্ত্রণ কৈল ভৃগুমুনি। ঘরে ঘরে বার্তা দেন নারদ আপুনি ॥ আইলা দেব চক্রপাণি চাপিয়া গরুড়। বৃষভে চাপিয়া আইল দেব চন্দ্ৰচূড় 🛭 •মহিষে চাপিয়া আইলা চতুৰ্দ্দশ যম।• হরিণে আইল উনপঞ্চাশ পবন। রাশিচক্তে চাপিয়া আইলা গ্রহগণ। রথে দশদিক্পাল কৈল আগমন ॥ মরীচি কশ্যপ আদি যত দেবঋষি। যত্র দেখিবারে সবে হৈলা অভিলাষী ॥ কেহো রথে কেহো গজে কেহো তুরঙ্গমে। আইলান দেবঋষি ভৃগু মুনি-ধামে ॥ লক্ষ্যী সরস্বতী আদি যত দেবগণ। বিমানে ভৃগুর পুরে করিল গমন ॥ পাছ অর্ঘ্য দিল মুনি বসিতে আসন। মধুপর্ক দিয়া দিল নানা আয়োজন ॥ সিদ্ধান্ত করয়ে কেহ কেহ পূর্ব্বপক্ষ। এমন সময়ে তথা আইলা মুনি দক্ষ ॥ দক্ষকে দেখিয়া সভে করিল উত্থান। বিধি বিষ্ণু হর বিনে করিল। প্রণাম ॥ ২অনত ২ দেখিয়া শিবে দক্ষ কাঁপে রোষে॥ দেবগণে নিবেদয়ে গদগদ ভাষে ॥ অভয়ার চরণে ইত্যাদি।

১-১ মহিলে চাপিয়া আল্যা চণ্ড জমের নন্দন। (থ) ২-২ অনীত (বন্দ), অনাদর (থ), উল্লেখ (গ)

দক্ষের শিবনিন্দা

>শুন রে সভার লোক > এ বড় দারুণ শোক এই শিব আমার জামাতা। আসি আমি মথ-স্থান না করে আমার মান

মোরে নতি না করিল মাথা।

নারদে বলিব কি তব বাক্যে দিমু ঝি হেনই ভাঙ্গড় মতি পাপে ।

° ত্রিভূবনে এক ধকা। অপাত্রে দিলাম কক্ষা° তমু শুখাইল পরিতাপে॥

নাহি জানি আদি মূল কিবা জাতি কিবা কুল নাহি জানি কেবা মাতাপিতা।

আমি ছার মন্দমতি অনলে ফেলিন্থ সতি সভামাঝে লাজে হেঁট মাথা॥

অঙ্গরাগ চিতা-ধূলি কান্ধেতে ভাঙ্গের ঝুলি
বিষধর উত্তরি-বসন।

°হেন অমঙ্গল ধাম শিব থুইলা কেবা নাম° দেব বৃদ্ধি করে কোনজন॥

চাহিতে চাহিতে ভাল কুল মোর হইল কাল মোরে বাম হইল বিধাতা।

ভূষণ হাড়ের মাল। শাশানে বিনোদশাল। হেন জন আমার জামাতা।

- ১-১ দেখরে সকল লোক (গ)
- ২-২ অধিপাপে (খ, গ এবং দী)
- ৩-৩ জ্রিলোকে প্রশংসে যারে অনলে ফেলিল তারে (দী)
- ৪-৪ শ্মশানে ঘাহার স্থান তারে কেবা করে মান (বন্ধ)

যক্ষ রক্ষ প্রেত ভূত বসতি যাহার যূথ সহযোগ শ্য়ন-ভোজনে। ^১জাতির নাহিক স্থিতি হেন জন সতীপতি দেবকুলে কেবল গঞ্জনে ॥^১ সতী ঝিয়ে গুণনিধি তারে বিভম্বিলা বিধি পতি সে দরিদ্র দিগম্বর। *কুলে হইল বড় দোষ মনে নাহি পরিতোষ* অপয়শ গেলা দিগন্তর n শ্বশুর যেমন তাত তারে না জুড়িল হাত সভা মাঝে কৈল অপমান। নহে লোকে অনুরাগ ঘুচুক যজের ভাগ বেদ-পথে নয় অবধান 🛚 মহামিশ্র জগরাথ স্থাম মিশ্রের তাত ক বিচন্দ্র হৃদয়-নন্দন। তাহার অনুজ ভাই চণ্ডীর আদেশ পাই বির্চিল ঐীকবিকঙ্কণ॥

দক্ষের প্রতি নন্দীর শাপ

এমন শুনিয়া নন্দী দক্ষের বচন।
কম্পমান তমু হইল লোহিত লোচন॥
দক্ষে শাপ দিতে নন্দী জল নিল হাতে।
নাহি হবে দক্ষ তোর গতি মুক্তিপথে।

১-১ হেন অমঙ্গল ধাম শিব থুইল কেবা নাম দেব মধ্যে কে করে গণনে ॥ (বঙ্গ) ২-২ মনে নাহি পরিভোষ লোকে গায় ধর্মদোষ (বঙ্গ) মহাদেবে যেই মুখে বল কুবচন। অচিরাতে হবে তোর ছাগল-বদন ॥ পরস্পর তৃইজনে হইল প্রতিকৃল। জামাতা-শশুরে হইল ভুজঙ্গ-নকুল ॥ জামাতা শশুরে দ্বন্ধ হৈল বহুকাল। দক্ষের হৃদয়ে শোক বাডিল বিশাল। বিমনা হইয়া শিব চলিলা কৈলাস। দক্ষ প্রজাপতি গেলা আপনার বাস॥ ক তকালে কৈল ব্ৰহ্মা দক্ষেব সম্মন। সকল পুত্রের মাঝে করিল প্রধান ॥ >ব্রাহ্মণেরে প্রজা বলি > ধরাইল ছাতা। প্রসাদ করিল তারে কনক পইত।॥ ব্রাহ্মণে পালিতে বুদ্ধি তারে দিল বিধি। ২এই হইতে হইলা ওঝা কুলের পালধি॥ ব্রহ্মার প্রসাদে দক্ষের হুইল মহাদ্য । বৃহস্পতি আনি যক্ত করিল আরম্ভ। নিমন্ত্রণ দিল দক্ষ স্থর-নাগ-নরে। কহিল নারদ মুনি °সবাকার ঘরে ॥° বিধি বিষ্ণু শিব বিনে দিল নিমন্ত্রণ। • সাইল সকল লোক দক্ষের সদন ॥ •

১-১ ব্রাহ্মণের রাজা করি (গ)ও (বঙ্গ)

২-২ সেই হৈতে কুলেতে হইল পালধি॥ (থ) এই হেতু কুল স্ঠে হইল পালধি॥ (বঙ্গ)

৩-৩ প্রতিমরে মরে (বঙ্গ)

৪-৪ নাগ নর ঋষি আইলা দক্ষের সদন ॥ (খ) শিব বিনে আইলা সকল দেবগণ॥ (গ)

⁴⁻²³⁰³ B. T.

আকাশেতে শুনিয়া বিমান-কোলাহল। দক্ষের ত্বহিতা সতী হইল চঞ্চল। লোকমুখে শুনিয়া দক্ষের ১ক্রভুবর।১ নিবেদয়ে শঙ্করে যুড়িয়া তুই কর।। দক্ষপ্রজাপতি নাথ তোমার শ্বশুর। তার যতে তিন লোক চলিলা প্রচুর ॥ তুমি আজ্ঞা দিলে আমি যাই পিতৃবাস। বাপের উৎসব দেখি বড় অভিলাষ॥ শুনিয়া ঈষৎ হাসি বলেন শঙ্কর। হেন বাক্য অমুচিত কি দিব উত্তর ॥ বিনা নিমন্ত্রণে গেলে হবে মাথাকাটা। আমার প্রসঙ্গে তুমি পাবে বড় থোঁটা n ैবিনি নিমন্ত্রণে যাব বাপের সদন। ইথে দোষ নাহি নাথ লোকের গঞ্জন ॥ এমন বলিয়া ধবে শিবের চরণ। নয়নে নিকলে জল গদগদ বচন॥ অভয়ার চরণে ইত্যাদি।

শিবের নিকট গৌরীর প্রার্থনা

অনুমতি দেহ হর যাইব বাপের ঘর যজ্ঞমহোৎসব দেখিবারে। ত্রিভূবনে যত বৈসে চলিল বাপের বাসে তনয়া কেমনে প্রাণ ধরে।

১-১ কছন্তর (বঞ্) ২-২ ভবানী বলেন যাব বাপের সদন। (বঙ্গ) চরণে ধরিয়া সাধি কুপা কর কুপানিধি যাব পঞ্চ দিবসের তরে।

স্থমঙ্গল সূত্র করে আইন্সু তোমার ঘরে ব্পূর্ণ বংসর হইল সাত।

দূর কর °অপরাধ° পূরহ মনের সাধ মায়ের রন্ধনে খাব ভাত॥

পর্বতকন্দরে বসি নাহি পাট-পড়সী সীমস্থে সিন্দুর দিতে স্থা।

°একদিন কে!থা যাই° যুড়াইতে নাহি ঠাই বিধি মোরে কৈল জন্মতঃখা॥

পিতা বড় পুণ্যবান করিবে অনেক দান ক্সাগণে করিবে ব্যভার।

' মলস্কার পরিধান আগে আমি পাব মান মহাবুদ্ধি নাহিক বাবার ॥ '

১-১ নিবেদন করি যোড় করে । (∙বঙ্গ)

২-২ পূর্ণ হৈল বৎসর পাঁচ সাত। (বঙ্গ)

৩-৩ বিসম্বাদ (খ), বিবাদ (বন্ধ)

8-8 এক তিল কোথা যাই (খ এবং বঙ্গ)

বসন ভূষণ আদি পাব বস্তু নানাবিধি
 ভেদ বৃদ্ধি নাহিক বাপার। (বঙ্গ)

শুনিয়া সতীর বাণী কহিলেন শূলপাণি
শুন প্রিয়া আমার বচন।
বাপঘরে যাবে যবে ভাল ত নহিবে তবে
বাহে তুমি ত্যজিবে জীবন॥
মহামিশ্র জগন্নাথ ইত্যাদি।

গৌরীর দক্ষালয়ে গমন

যাইবারে অনুমতি নাহি দিল পশুপতি
দাক্ষায়ণী হইলা কোপবতী।

'সক্রোধে' হইয়া বামা চলিলা জ্রক্টি-ভামা
একাকিনা বাপের বসতি॥

হইয়া উন্মত্ত-বেশা যান দেবী মুক্তকেশা
না শুনিয়া শিবের বচন।

শিবের ইঙ্গিত পায়া৷ পাছে নন্দী যান ধায়া
ব্যভের করিয়া সাজন॥

'সাড়িকা কুগুল পেড়ি' পাছে নিয়া যায় চেড়ি
কেহ লয় 'বিউনী' দর্পণ।

পূরিয়া সুগন্ধি বারি কেহ লইয়া যায় ঝারি
শ্বেভছত্র ধরে কোন জন॥

১-১ ভবিশ্বে করিব বিমোচন॥ (খ)
অবশ্ব হইবে বিভূম্বন॥ (বন্ধ)
২-২ সম্ভারে (ক এবং বন্ধ) ৩-৩ সারিকা কনক সাড়ি (গ)
৪-৪ চামর (গ)

০০ চাৰ্য (গ) চি**ক্ৰণী** (খ)

চলিলা অনেক সেনা সঙ্গৈ প্ৰেত-ভূত-দানা নেকাচোকা তুই সেনাগতি ।

আগে পাছে দানা ধায় বাঙ্গা ধ্লা মাথে গায় দেখি হর্ষিতা হৈল সতী 🕆

বৃষ যোগাইলা নন্দী 'চাপিয়া চলিলা চণ্ডী' 'শিরে ছত্র নন্দী সে ধরান।

না জানি চলিলা কত তিন দিবসের পথ তু'পহরে করিল প্য়ান॥

পাইলে বাপের গ্রাম শুনিয়া সতীর নাম প্রস্থৃতি ধাইল বেগবতী।

কোলেতে করিয়া সতী প্রস্তি পুলক অতি কৈল সতী মায়েরে প্রণতি॥

আনিয়া আপন ঘরে প্রস্থৃতি দিলেন তারে প্রাক্ত-অর্থ বসিতে আসন।

যতেক বহিনগণ সবে কৈল ' আলিঙ্গন' ধরের কুশল জিজ্ঞাসন।

জননী ভগিনী সঙ্গে ক্ষণেক থাকিয়া রঙ্গে যান দেবী যজের সদন।

রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিয়া বন্ধ বিরচিল শ্রীকবিকঙ্কণ ॥

১-১ চাপে চণ্ডী শিব বন্দি (দী) ২-২ সম্ভাবণ (খ)

দক্ষের প্রতি গৌরীর নিবেদন

জননী ভগিনী সঙ্গে করি সম্ভাষণ।
সহরে চলিলা মাতা ইয়জেরই সদন ॥
দক্ষের চরণে চণ্ডী করিল প্রণতি।
হেটমুথে আশীর্কাদ কৈল প্রজাপতি॥
আইয়াতে যাউক কাল ঘুচুক তুর্গতি।
চিরজীবী হউক স্বামী স্বস্থির স্থমতি॥
না দেখিয়া যজে দেবী শিবের পূজন।
কোশে কম্পবান তন্ত বাগে জিজ্ঞাসন॥
শুন বাপা তোমারে করি যে অভিমান।
ইসতী ঝিয়ে কেন তুমি টুটাইলে মান॥
ধর্ম আদি তোমার যতেক বন্ধুজন।
সবারে আসিতে যজে দিলে নিমন্ত্রণ॥
শিবে নিমন্ত্রণ বাপা নাহি দিলে কেনে।
সম্পদে মাতিয়া বৃঝি না দেখ নয়নে॥

মন্ত জামাতারে দিলে বস্ত্র অলঙ্কাব।
শিব পরে ভাল নহে তোমার বেভাব।।
তৃষ্টদৈব গ্রহ ফলে আমি তোমার ঝি।
না করিলে ভাল কর্মা নিবেদিব কি॥

১-১ দকের (খ)

২-২ সভী-ঝিএ তুমার ছুটিল অবধান । (গ)

শ্বিকি —
 ব্রহ্মা থার বাঞ্ছিত করেন পদ্ধুলি।
 ইন্দ্র আদি দেব থারে করে পুটাঞ্জলি॥ (বঙ্গ)

এমন শুনিয়া দক্ষ সতীর বচন।

বিলেন সক্রোধ বাণী শুনে সর্বজন॥

অভয়া ইত্যাদি।

দক্ষের শিবনিন্দা

কহিতে উচিত কথা মনে পাছে পাও ব্যথা

যেবা ছিল কপালে লিখন।
তোমার কর্মের গতি পতি হইল বাম-পথী
তারে যজে আনি কি কারণ॥
বিভাতিভ্যণ শোভে অকে।
শাশানে যাহার স্থান কেবা তার করে মান
প্রত-ভৃত চলে যার সঙ্গে॥
আরোহণ ব্যবরে শিঙ্গা-ডম্বরু করে
ভক্ষাদ্রবা ধুতুরার ফল।
ভব্দেসং বড় অভিলাষ ভুজঙ্গ উত্তরী-বাস
ফণী হার ফণীর কুগুলা॥

১-১ ভীষণ ভাষাতে বলে ভনে সর্বজন। (ক)
নিন্দিয়া বলেন বাণী ভনে সর্বজন। (বঙ্গ)

২-২ পরিধান বাঘছাল গলেতে হাড়ের মাল বিসধর উত্তরি বসন। হেন অমঙ্গল ধামে কেবা খুল্য শিব নামে দেবকুলে কেবল গঞ্ন ♣ (গ)

৩-৩ কানেতে **ধুত্**রার ফ্ল। (থ)

৪-৪ নাগে (দী)

তোমার কর্মের ফল পতি হইল পাগল দেভি অন্ন নাহি থাকে বাসে। অনুচিত কর্ম তার নাথ'তে জটার ভার দেখি যত দেবগণ হাসে ॥ আবাধিয়া পশুপতি পাইলে পশুর গতি মহিসঙ্গে একত্রে শ্যুনে। হরশিরে শশিকলা হাহি সঙ্গে যার মেলা ত্ই জন বঞ্চিত ভূবনে॥ সামি ত ব্রহ্মার স্কৃত - ত্রিভুবনে স্থবিদিত মোরে ভার শুন ব্যবহার ভৃগুর যজের স্থানে দেবগণ বিভামানে মোরে না করিল নমস্কার॥ ° শুন ঝিগো মোর বাণী । যতে যদি শিবে আনি অবশ্য হইবে যজনাশ। দেখিয়া শিবের গুণ আর যত দেবগণ এক স্থানে নাহি করে বাস॥ শুনিয়া ভুবন-মাতা এমন দক্ষের কথা ৈকোধমুখে বলেন উত্তর। রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিয়া বন্ধ গাইল মুকুন্দ কবিবর॥

১-১ শুন ঝিএ সভ্য বানি (গ) ২-২ জেলাধে কাপেন থর থর ৷ (গ)

সতীর দেহত্যাগ

অণিমাদি করিয়া যাহার অষ্টসিদ্ধি।
যাহার চরণ-বজঃ বাঞ্চা করে বিধি।
পিনাক ধন্তক যাব অনস্ত শিঞ্জিনী।
যাহাতে হইলা শব দেবচক্রপাণি।।
সমুদ্র-মন্তরে ঘোর উঠিল গবল।
তিন লোক দহে যেন প্রলয়-অনল।।
হেন বিষ পিয়ে শিব রাখিল জগং।
সম্পদে মাতিয়া মূঢ় না জান মহং।।
চবণ-নিছনী যার চরণেব রজ।
হুর্লভ জানিয়া যাব বাঞ্ছা করে অজ।
*

লোক-রিপু এপুর দহন কৈল হব।
কি কারণে হেন জনে বল ১কট্টুর ১
শিবনিন্দা—শ্রবণে কবিব প্রতিকার।
তোমার অঙ্গজ তন্তু না বাখিব আব ॥

* আতারক্ত

সহস্র কমলে হবে পূজা কবে হরি।

একটি কমল তার শিব কৈল চুরি ॥

মন্ত্র আছে পূজা নাছি ভাবে গদাধর।

ডানি চক্ষ্ দিল নিযা শিবের উপর ॥

কপালে ধরিয়া চক্ষ্ হৈল ত্রিলোচন।

কমল-নয়ন হৈলা দেব নারায়ণ॥

দেব নাগ নরে শিবে করয়ে পূজন।

তোমা বিনা ধেষভাব করে কেন্ জন॥ (বঙ্গ)

গুরুজন-নিন্দা শুনি আচ্ছাদি শ্রবণ।
যেই নিন্দা করে তার করিয়ে শাসন।।
সেই স্থান ছাড়ি কিংবা যাই অন্য স্থান।
পাপ-প্রতিকার-হেতু তেজিয়া পরাণ॥
হৃদয়-সরোজে চিন্তি শিবের চরণ।
দৃঢ় করি মহামায়া পরিলা বসন॥
যোগেতে তেজিলা তন্তু জগতের মাতা।
মুকুন্দ রচিল গৌরী-মঙ্গলের গাথা॥
**

* অতিরিক্ত ---

প্রস্থৃতির খেদ

মিত স্থতা কোলে করি কান্দএ দক্ষের নারি চক্ষে বহে কালিন্দির ধার। কজ্জলে মলিন গণ্ডে বধিব দাক্তন দণ্ডে ধুলায় লোটায় হেমহার॥ সভীরে করিয়া কোলে প্রস্থৃতি বিনএ বলে স্থন ঝিএ কব য়বধান। নিদারন হঞা মতি কোথাকারে গেলা সতি তোমা বিস্থ না বহে জিবন ॥ চিমায়া উত্তর দেহ মাএরে দঙ্গতি নেহ ভোমা বিহু বহিতে না পারি। তোমার ঝিএর গুনে পাগ্নরে লাগিল ঘুনে তিল আধ না দেখিলে মরি॥ গেলা ঝিএ জজ্ঞদালা কেমন দাকন বেলা দেখিবারে পিতার চরণ। দারন তোমার বাপ দিল তুমায় বহু ভাপ তেঞি ঝিএ তেজিলা জিবন।

দক্ষ-যজ্ঞনাশে শিবদূতের গমন

কাঁদে সব দানাগণ ভূমে লোটাইয়া।
তেজিল পরাণ সতী কি বলিব গিয়া॥
সুরাস্থরগণে সবে কৈল কোলাহল।
যোগবলে সতীদেহে উঠিল অনল॥
দেবতা অসুর নরে করে হাহাকার।
কেহো বলে দক্ষযুক্তে হইল মহামার॥
সতী যজ্জ্ঞ্খানে যদি তেজিল জীবন।
যজ্ঞনাশ করিবারে ধাইল দানাগণ॥
আগে নন্দী ধাইল তুই দিগে নেকাচোকা।
শত শত দানা ধায় নাহি লেখা জোখা॥

আদি তুখে দস মাস
কালে কাথে করিল পালন।
থাইআ আমার মাথা আর না কহিলে কথা
তুমা বিনা না বহে জীবন ॥
নিদ্যা নিষ্ঠুর হয়। গেলে ঝিএ ছাডিয়া
অভাগারে না দিলে বলান।
ধূলাএ ধুস্তর কান্দে কেস বেস নাহি বান্ধে

প্রস্থৃতির খেদ

কান্দে প্রস্থতি দেবী গোরি লৈআ কোলে। হদয়ে ভাসিআ চলে লোচনের জলে॥ কেন বা আইলে ঝিএ য়েই জক্তম্বলে। বিধাতা লিখন কিবা আছিল কপালে॥ বিপক্ষ নাশিতে 'ভ্গু দিলেন আহুতি।
যক্ত হইতে উঠিল অনেক সেনাপতি ॥
রথ তুরঙ্গম পত্তি উঠিল কুঞ্জর।
খর শরে দানাগণে করিল জর্জ্জর ॥
ভঙ্গ দিয়া দানাগণ পালায় সম্বরে।
বিষ লইয়া যান নন্দী হারিয়া সমরে॥
শাবের কিন্ধর সব হইলা হতাশ।
কাঁদিতে কাঁদিতে তারা গেলেন কৈলাস।।
শাবির আছেন গোসাই স্বস্তিক আসনে।
কান্দিতে কান্দিতে দানা গেল সন্নিধানে॥
আধামুখে বার্তা নন্দী কন মহেশ্বরে।
লোটাইয়া কাঁদেন শিব মহীর উপরে॥

রোহিনি সকল সঙ্গে ছিল কুতুহলে।
জিবন তেজিলে কেন কেবা কিবা বল্যে।
করেতে য়ম্ব ধরি ঝাপিয়াছ মুখ।
উত্তর না দেহ কেন বিদরয়ে বুক ॥
স্থানে নিম্বাস ছাড়ে সিরে মারে ঘাত।
ব্রেণা জজ্ঞে মরন হহল য়বঘাত॥
মুকুন্দ বলেন ব্রেণা কান্দহ প্রস্থতি।
হিমালএ উপস্থিত হইল পার্বাতী॥ (খ)

- ১-১ দক্ষ (দী এবং থ)
- ২-২ বৃষভ লইয়ানন্দী চলিলা সমরে । (ক)
 বৃষ লৈয়া যায়নন্দী বহিয়া সমরে । (দী)
- ৩-৩ সিবের কিষ্করগন তুলিল ছতাস। ধাইঞা গেলেন সভে পর্বতে কৈলাস॥ (গ)
- 8-8 বসিয়া আছেন সিব সাত্রলের ছালে। (গ)

না শুনে বারে বারে আমার বচন। মকারণে যজ্ঞালে তেজিল জীবন n কোথা গেলে প্রাণ-প্রিয়া আমারে ছাড়িয়া কেমনে ধরিব প্রাণ তোমা না দেখিয়া ম নন্দী বলে আর কেন কান্দহ ঠাকুর। দক্ষের বিনাশ কর তৃঃখ হোক দূর॥ এমন শুনিয়া শিব নন্দীর বচন। কেপেদৃষ্টে চারি দিকে চান ঘনে ঘন॥ ছি ভিয়া ফেলিলা শিব মহীতলে জটা। ^১বীরভদ্র হৈল তথি সঙ্গে বীরঘটা ॥১ তিন সূর্যাসম বীরের তিন্টা লোচন। মাথার মুকুট গিয়া ঠেকিল গগন॥ শূল হাতে কুতাঞ্জলি রহিলা সম্মুখে। নয়নে নিকলে বহি ঝলকে ঝলকে n প্রণাম করিয়া শিবে করে নিবেদন। কি কার্য্য করিব নাথ ২করহ শাসন ।। পর্বত ভাঙ্গিব কিবা সমূদ্র শুষিব! কিংবা উলটিয়া প্রভু পৃথিবী ফেলিব ম ত্যাক্তা দিল শিব তারে যজ্ঞ বিনাশিতে। বিশেষে বলিল দক্ষ মুনিরে বধিতে ৷

১-১ বিরভন্র উপনীত সঙ্গে বিরঘটা। (গ) বীরভন্র ক্ষেতী হৈলা সঙ্গে বীরঘটা। (দী)

২-২ কহত কারন(গ)

৩-৩ তারে পান দিলা শিব যঞ্জ বিনাশীতে।(দী)

ইআজ্ঞা মাত্র বারভক্ত যান শীব্রগতি।
সঙ্গে অনিমাদি করি ধায় সেনাপতি॥ই
আগে নন্দী ধাইলা ছদিকে নাকাচোকা।
কত শত সেনা ধায় নাহি লেখা জোখা॥
দামামা দগড় বাজে বিয়াল্লিশ বাজনা।
সঙ্গে যোল কোটা ধায় প্রেত ভূত দানা॥
দানাগণের কোলাহলে কিছুই না শুনি।
আচ্ছাদিত ধূলাতে হইল দিনমণি॥
যজ্ঞশালা ভঙ্গয়ে যতেক দানাগণ॥
প্রাণভয়ে দ্বিজগণ দেখায় পইতা।
প্রাণে নাহি মারে দানা মারে লাথালোগা॥
যক্ত বিনাশিতে হৈল বারের প্রান।
অধিকামঙ্গল কবিকস্কণে গান॥

দক্ষযত্ত-ভঙ্গ

প্রশেল বীরভদ্র যজ্ঞ নাশিবারে।
দক্ষের নিজ পুব ভাঙ্গিয়া করে চুব
নাহি কেহ নিবারিতে পারে।।
ব্রাহ্মণে মারিয়া পুথি নিল কাড়িয়া
ডোর দিয়ে তুই ভুজ বাঁধে।
ব্রাহ্মণে না মার ব্রাহ্মণে না মার

১-১ পান লইয়া বীরভদ্র যায় লঘুগতি।
নন্দী মণীমান আদি সঙ্গে সেনাপৃতি।(দী)
২-২ পোইতা দেখাইয়া কান্দে॥(খ এবং গ)

যেই জন পালায় দানাগণ ধরে ভায় পাড়িয়া উপাড়য়ে দাডি। ছিণ্ডিল বসন ভাঙ্গিল দশন মারিয়া ১০ক্রবের ১ বাডি॥ হইয়া অচেতা ধাইল প্রচেতা বীর ধরিয়া তারে বান্ধে। ***কর্য্যে নিবেদন** না মার ব্রা**ফা**ণং বলিয়া প্রচেতা কান্দে॥ দক্ষের বীরবর ছাড়য়ে খরশর মেঘে যেন পানিব পশলা। °বাজিয়া বীর-গায় বাণ পাছু পুনঃ যায় জইছন পুম্পেব মালা॥° ধাইল গজবল দক্ষের আ গুদল লোহার মুদ্দার শুণ্ড। করিল জরজর ধাইয়া বীরবর মুটকি মারিবা মুভে॥ ধরিয়া সে রগে তুরঙ্গ চরবে

মাথায় তুলি দেই নাড়া। অঙ্গ ছি'ড়িল তুরঙ্গ পড়িল হাতেতে রহিল ফড়া॥

১-১ যূপের (থ), শ্রুপের (দী এবং ক) ২-২ ব্রাহ্মণের জীউ রাথ বিঙ্গ ৩-৩ ঠেকিয়া বির গায় চন্ত হয়া জায় পুষ্পের জেমত মালা। (গ)

বারবর লক্ষে বস্থা কম্পে অষ্ট কুলাচল ফিরে। ^১ছাড়িয়া মণিগণ পডিলা ফণিগণ ফণিপতি মাথা ঘুরে॥ করিল মোচন ২ভগুর লোচন প্রহারে ভাঙ্গিল দন্ত। ছিণ্ডিয়া দড়া স্থূৰ্য্যের ঘোডা দিকের পাইল অন্ত। উভ করি পাণি নাচে বীরমণি করিবর গাঁথিয়া শূলে। °ক**ধি**রের পানা আলগোছে দানা পান করে কুতৃহলে ॥° সঙ্গে দানাঘটা ধাইল ল্যাংটা মৃতায়ে যাজের কুণ্ডে। কপাট ভাঙ্গিয়া ভাণ্ডার লুটিয়া

১-১ ফণিগণ ছাড়িযা মণিগণ পড়িয়া (ক)

ঘৃত মধু ঢালয়ে তুণ্ডে॥

২-২ ভগের বিলোন করিলা বিবেচন পুষার ভাঙ্গিলান দন্ত। (দী) ভগের লোচন করিলা বিমোচন স্থ্যাস্থ্যের ভাঙ্গিল দস্ত। (গ্

৩-৩ শ্নীতে করি পানা পান করিয়া দানা নাচয়ে কেহ দও হান ॥ (দী) দক্ষেব নিজ শির কাটিয়া মহাবীর ফেলিল যজ্ঞের কুণ্ডে। মুকুন্দ-নিবেদন শুনগো জগজন

भशाराव-निन्मात पर**७ ॥***

* অতিরিক্ত—

দক্ষের ছাগযুগু

দক্ষয় নাশি বীর মনে অভিলাষ।
দণ্ডমাত্র বীরভক্র আইলা কৈলাল।
সক্ষে বোলকোটি লড়ে প্রেত ভূত দানা।
দামামা দগড় কাডা ব্যাল্লিশ বাজনা।
প্রাণাম করিয়া শিবে কৈল নিবেদন।
প্রাণাদ করিয়া তারে দিলা নানা ধন।
এমন দক্ষের মথ শুনি বিনাশন।
তপস্তায় মন দিলা দেব পঞ্চানন।
ছাগলের মৃণ্ড দক্ষে করিল যোডন।
ক্ষেরে কপায় দক্ষ পাইল জীবন।
অভয়ার চরণে মজুক নিজ চিত।
শ্রীকবিকঙ্কণ গান মধুর সন্ধীত। (বন্ধ)

সতীক্ষদে শিবের ভ্রমণ

বৈরাগে চলিলা জিলোচন। ব্রহ্মা আদি পুরন্দরে বহাবারে যত্ন করে নাঞি স্কনে কাহার বচন। 5—2808 B. Tr. সতীকে নইয়া শূলে তুলিয়া স্কজের মূলে
ক্রিভুবন করেন ভ্রমণে।
কাটিতে সতীর শব জগতের নাথ দেব
অন্ধ্যাতি দিল স্বদর্শনে।

চক্র কীটরূপ ধরি শরীরে প্রবেশ করি গ্রান্থে গ্রান্থে কাটিতে লগিল।

বাম চরণ নিলা পড়িল যে ঘাটশিলা তার নাম কৰিলী হ∈ল।

দক্ষিণ চরণবরে পড়িল যে যাজপুরে তার নাম হইল বিংজা।

দেবতা সকল মেলি সিদ্ধপীঠ তাবে বলি স্থৱপতি তার করে পূজা।

চক্রে সব্য হাথ কাটে পড়ে রাজবোলহাটে বিশাল-লোচনী মাহেশ্বনী।

সতীর দক্ষিণ হাথ বালিডাঞ্চায় হৈল পাত বাজেশবী বলি নাম ধরি ।

তবে সদাশিব রায় মহাপরিশ্রম পায়
ক্ষীরগ্রামে করিলা বিশ্রাম।

তাকে পৃষ্ঠদেশ পড়ে দেবের আনন্দ বাড়ে যোগাতা হহল তার নাম॥

তবে প্রভু ধুৰ্জ্জটে গেলেন নগরকোটে

দিবদেক রহিলা পিনাকী।

মস্তক কাটে চক্ৰকীট সেই মহা সিদ্ধপীঠ তার নাম হৈল জালামুখী।

তবে ত দেবের রাজ উত্তরিলা হিংলাজ নাভিম্বল পডিল তথায়!

দেব করে তন্ত্রমান সেই মহা সিদ্ধান জপিলে পাতক নাশ পায়॥

ঈশানে ঈশান যায উত্তরিলা কামাখ্যায তথা হৈল দেবী প্রিয়ম্বান। মধ্য অঙ্গে কাটে কটি সেহ মহা সিঙ্গীঠ বামবপ কাম।থ্যা ভাব -াহ ॥ ভবে ভ কৈলাস্বাসী ভাইনিলা বাবাণ্সী বক্ষ.স্থল পাঁডল ভাহাতে ॥ বিশালান্দী বপ হৈল স্বাদেশ্ব পূজা কৈল উঠে শিব শল করি হাথে॥ এছ শুল শুক্ত দেখি স্লেহে ত সজন **আঁ**থি আত্তথণ্ড পাহল পল আগে। ্বারণ্য প্রাক্ত (১) বলি সেই অস্থি ব্রেধি ধ্যান কাব বসিলেন যোগে ॥ াসদ্পীঠ হত স্থান শ্বব স্থায় ও।• ক। ব্যাসদ্ধ হয জপগুণে। ৬-, বে নাধক ভাষ্যা এই স্থ . জপ গিয়া শ্ৰাকবিকস্কণ < সভণে॥ (৴ন

বীরভদ্রের কৈলাস গমন

এমন দক্ষের জন্ত কবিষা বিনাস।

সিব সিব বলি বির চলিলা কৈল স।
পালায় সকল দেব বিরেব তবাসে।
কেস নাহি বান্দে সভে ধায় উন্ধ্যাসে।
পালান ত্রিদসপতি কবিন্দ্র বাহনে।
পালাইতে ঠেকিলেন বিবভক্র স্থানে।
ক্রীবৃত চরনে ধরি মারিল আছাড়।
হক্র বলে নামারিহ দেবক ভোমার।

নাক মুখে বক্ত পড়ে স্বজ্য ধান পথে। পালাইতে ঠেকিলেন বিরভন্ত হাথে॥ দস্ত ভাঙ্গা গেল এক তোমার প্রহারে। একজনার হুই সাস্তি কোন জনা করে। মহিসের পিষ্টে পালান ধ্যুরাজ। পালাইতে ঠেকিলেন বিরভন্ত মাঝ॥ প্রানেতে কাতর জম নামিলা ভূমিতে। সিবের কিন্ধর বলি কুটা নিল দাতে॥ কেছ কেছ বলে য়হে বিরভক্ত ভাই। আমাকে জদি মার তবে সিবের দোহাই॥ কেছ কেছ বলে আমি সিবের কিঙ্কর। কোন জন বলে আমি তুমার নফর॥ এতেক বিনতি করি সব দেবগণ। বিরভন্ত গেল জোথা দেব পঞ্চানন ॥ প্রনাম করিয়া বন্দে শিবের চরণ। আস্থাসিয়া শিব তারে দিলা আলিঙ্গন ॥ (গ)

ব্রহ্মা কর্ভৃক শিবের স্তব

তুমি দেবনিরঞ্জন
তুমি দেব পুরুস প্রেধান।
জত তব রধিকার পরম কারন দার
তুমি দেব ব্রহ্মার গেয়ান॥
স্থাবর জঙ্গমময় তুমি বিহু কেহ নয়
সংসার জড়িত তুমি এক।
একুই য়াকাসেঁ জেন ঘটে ঘটে দেখি ভিক্স
সকল সংসারে প্রতেক॥

স্বজিয়া য়মর নর করিলে য়াপ্ন প্র শতি ঘোর তিমিরে দিলে মেলা। ভারিয়া গড়িলে তুমি গড়িলে ভার্মিলে জানি ছাওয়ালে পাতায় জেন থেলা। ন্তন গলাধর স্থলপানি নিবেদন করি য়ামি তুমি দেব সংসারের সার। জে হয় সকল দোস থেমহ সকল গোস অকালে প্রন্য হান কেনে। দতেক বছর ধরি তুমার মহন্ত বরি তবে কেবা বলিবারে পারে। তুমার মহক্ত গুনে দক্ষ তুমা নাহি জানে ना प्रानिकां करत ग्रहकारत ॥ ক্ষেমিয়া সকল দোস তুর কর অভিরোস वार्यक मकर्त् कर म्या। ঘুচাহ য়ক্সরাগ পাইবে জজের ভাগ উপজিবে দেবি মহামায়া॥ স্কুনি দেব স্কুলপানি এমন ব্রহ্মার বানি তুষ্ট বড় হইলা য়স্তরে। বচিয়া ত্রিপদি হন্দ পাচালি করিয়া বন্ধ গাইল মুকুন্দ কবিবরে ॥ (গ)

দক্ষের জীবনলাভ এবং হেমন্তগৃহে গোরীর জন্ম

ব্ৰহ্মার বচন স্থনি সিবের হইল স্থথ।
কহিতে লাগিল প্রাভূ যত মনোছুথ।
তৃমি কিনা জান ব্রহ্মা দক্ষের চরিত।
জ্বত য়হন্বার কৈল সংসারে বিদিত।

বারে বারে সহিল তোমার মুথ লাজে। না দিল জল্পেব ভাগ দেবতা সমাঝে॥ বাপঘৰ বলিয়া দেখিতে গেল সতি। পাত য়র্ঘ নাহি দিল পাপিষ্ট তুর্মতি॥ না দিল জভোব ভাগ না দিল য়াসন। এই অভিমানে সতি তেজিল জিবন। বড পরিতাপ পাইল সতির মবনে। সম্বিল সব দোস তুমা দরসনে॥ এবোল বলিয়া প্রভু দেব স্থলপানি। চলিলা ব্রহ্মার সনে করি সিঙ্গাধনি । বিসপিষ্টে চাপিয়া চলিলা দিগম্ব। নন্দি ভুগু য়াসিয়া যোগায় বিসবর॥ চাবি পাত্র বান্দিল ঘাগব উক্মাল। পালান ভিডিয়া বানেদ কেওদা বাগের ছাল ॥ বিদপিষ্টে চাপিঞা চলিলা তিপবারি ৷ হিমালয় শিখরে উবিলা কেসবি। বাসকি সহস্রফনা সিরে ছত্র ধরে। যুক্ত বিকে সিদ্ধাগন মঙ্গল যাচবে ॥ দক্ষের সদনে গেলা দেব তিন জন। সদয় হইয়া প্রভু বলিলা বচন। প্রসন্ম বদনে হর বসিয়া ধেয়ানে। প্রাণ সঞ্জমিনি মস্ত জ্বপে মনে মনে ॥ কান্দে মুণ্ডে জোড় লাগে উঠে বৈদে সক্তগন ! দক্ষকে করিল রূপা দেব পঞ্চানন। দক্ষ জিয়াইতে সিব করে য়সুবন্দ। মৃত বিনে কেবল নাচিঞা বুলে কন্দ। থেনে উঠে থেনে পড়ে থেনে ছায় ছবে। আদে পাদে ঠেকি মা ঘূরিয়া ঘূরিয়া পড়ে !

দক্ষের তুর্গতি দেখি দেবগন হাসে। করপোটে বলেন ব্রহ্মা সঙ্করের পাসে॥ তোমার সম্বর দক্ষ হয় গুরুজনা। দোস থেমা দেহ প্রভু না দেহ জন্ত্রনা॥ यि कल्वदा देश्य ना देश्य मुथ। বিনি মুথে কিবা তার জিবনের স্থক ॥ এতেক স্থনিয়া তবে বলেন চন্দচুড়। দক্ষ কান্দে জোড় দেহ ছাগলের মুড়॥ পূর্বে সাপ দিল নন্দি দেবের সভায়। দক্ষ পত্ম্যথ হবে থওন না যায় ॥ নন্দির বচন কভু না হইব য়ান। আর কিছু না বলিহ দেব প্রমান। কাটা ছাগ মুগু ছিল যজ্ঞবরে। লাগিল দক্ষের কলে মহাদেৱের বরে॥ সেই অধিকার দক্ষের সেই ত স্মান। দেব দানবগন পাইল প্রানদান ॥ অদিতি আদিতি করি জত নারিগন। বরদান ভার হউক অক্ষয় ভৌবন। मित्र विद्रम्म वर् मिला अल्लामि । জেজন হইবে ইন্দ তাহারি ইন্দানি॥ বর দিল দক্ষকে সংপুতা জ্ঞ কর। স্থাপিল সিবের ভাগ জজের ভিতর॥ কদ্রে ভাগ নাহি দিয়া জেবা জঞ্জ করে। পিসাচ বেতাল আসি সেই জ্ব্ৰু হবে। সিব হেতু জজে প্রান দিলা মহামায়া। পুরুষ্ত দেখি হিমালএ কৈল দয়া॥ তুসার সিথরি ভাগ্যে নিবেদিব কি। ভূবনজননি যাহার হইল্যা ঝি॥

গোরীর জন্ম

এমন দক্ষের যজ্ঞ করিয়া বিনাশ।
দশুমাত্রে বীরভদ্র চলিলা কৈলাস।
সঙ্গে প্রেত ভূত সিংহনাদ পুরে দানা।
দামামা দগড় বাজে বিয়াল্লিশ বাজনা।
শ্রপ্রাম করিয়া শিবে কৈল নিবেদন।
প্রসাদ করিয়া শিব দিল নানা ধন।
দক্ষযত্ত্বে সতী যদি তেজিল জীবন।
শুনিয়া ত তথা গেল ব্রহ্মা নারায়ণ।
বহুবিধ শিবে শুতি কৈল তুই জনে।
মূঢ়মতি দক্ষপতি তোমা নাহি চিনে।
বারেক করহ দয়া বলে প্রজাপতি।
জিয়াইতে শিব তারে দিল অনুমতি দ

মেনকার ভাগ্যের কিবা করিব গনন।
জাহার উদরে ছুর্গা লভিলা জনম ॥
মৈনাগ জাহার ভাই ভুরনে হুন্দর।
কাটীতে নারিল জার পাখা পুরন্দর ॥
দিনে দিনে অন্ত মুর্তি সর্বমঙ্গলা।
সিত্রপক্ষে জেমত বাড়এ সসিকলা ॥
পর্বতরাজার ছিল জত কুলাচার।
অন্তপ্রাসন আদি করিল তাহার ॥
করিল প্রবন-বেদ পঞ্চম বরিসে।
মোনহর বেস ধরে দিবসে দিবসে ॥ (থ এবং গ)

>-> युक्त नांगी मिरद दी द रिक्ना निरंत्रमन। (मी)

দক্ষের যজ্জের শালে গেলা তিন জন। কহিলা নিন্দার কথা দেব পঞ্চানন।। 'ছাগমুগু দক্ষ-স্কন্ধে কৈল নিয়োজন।' কুষ্ণের কুপায় দক্ষ পাইল জীবন।। নন্দীর শাপের হেতু ছাগল-বদন। ব্ৰহ্মা বিষ্ণু নিজালয়ে করিলা গমন।। এমন দক্ষের যজ্ঞ করি বিনাশন। তপ্রসাতে মন দিলা দেব পঞ্চানন ॥ নিজালয়ে গেলা সবে যার যেই স্থান। অবধান করি শুন সতীর আখ্যান॥ ২দক্ষযজ্ঞালে সতী পরাণ তেজিয়া।^২ পুণ্যবান দেখিয়া হিমালয়ে কৈল দয়।।। তুষার-শেখরী ভাগ্য নিবেদিব কি। ভূবন-জননী হইয়া হৈলা যার ঝি॥ মেনকার ভাগা কত করিব গণন। যাহার উদরে তুর্গা লভিলা জনম।। মৈনাক যাহার ভাই ভুবনে স্থন্দর। কাটিতে নারিল যার পাখা পুরন্দর॥ ॰দশ মাস দশ দিনে হৈল জন্মদিন।° হিমালয়-যশে লোক হইল মলিন॥ দিনে দিনে বৃদ্ধিমতী সকলমঙ্গলা। সিতপক্ষে যেমত বাডয়ে শশিকলা।।

১-১ ছাগমাথে দক্ষয়দ্ধে করিলা জোড়ন। (দী)

২-২ বিশেশরী হেন মজ্ঞ বিনাশ করিয়া। (দী)

৩-৩ লোক-মোক্ষ হেতু তার হৈলা কর্মদীন। (দী)

পর্বত-রাজার যত ছিল কুলাচার।
ওদন প্রাশন আদি করিল তাহার॥
করিলা জ্রাবণ-বেধ পঞ্চন বর্ষে।
মনোহর-বেশ চণ্ডী দিবনে দিবদে॥
অভয়া ইত্যাদি॥

গৌরীর রূপ

হিমাল্যে বাডেন চণ্ডিকা। হা'ন বেশ হা'ন দিনে শোভা অলঙ্কাব বিনে দেখি সুখী হইলা মেনকা॥ উরুষ্ণ কবিকর নাভি সে গভীব সব তুই ভূজ ইয়গাল-সন্ধাশ । বিমল অক্টেব আভা নানা অলঙ্কার-শোভা অন্ধকার করয়ে বিনাশ ॥ গৌরীৰ দশন-রুচি দেখিয়া দাডিম্ব-বিচি মলিন হইলা লজাভারে। হেন ব্ঝি অনুমানে ঐ শোক ভাবি মনে প্ৰকালে দালিম বিদরে ॥ বদন শার্দ ইন্দ্ যধর বন্ধ*ক-ব*ন্ধ করঙ্গ-গঞ্জন বিলোচন। ংগ্রুসী-কুম্বন তন্ত্র জ্রুপুর্ব কামের ধন্ত সুগন্ধি চন্দ্ৰ বিলেপন।

১-১ মৃণাল প্ৰকাশ (খ)

২-২ প্রভাতে ভান্তর ছটা কপালে **নিম্পুর ফোটা** তন্থ-কটি ভূবনমোহন ! (বন্ধ)

নাসার উপরে মোতি হীরায় জড়িত তথি বদন-কমলে ভাল সাজে। 'তবে তুলা দিতে পারি যদি অতি মনোহারী শোভে তারা স্থাকর মাঝে ॥> ংগৌরীর বদন-শোভা লখিতে না পারি বিবা দিনে চান্দ নাহি দেয় দেখা। মলিন চান্দ এ শোকে, না বিচারি সর্বলোকে মিথ্যা বলে কলক্ষের রেখা ম শ্রবণ-উপর-দেশে, হেম-মুকুলিকা ভাসে •কিঞ্চিত-কুঞ্চিত কেশপাশে।• আষাঢ়িয়া মেঘ মাঝে থেমন বিজুরি সাজে পরিহরি চপলতা-দোষে॥ সিন্দুর চন্দন ভালে মুকুতার হার গ**ে**ল ভূজে শছা কঙ্কণ বেয়ুব। অসিত চামর কেশে কুণ্ডল শ্রবণ-দেশে পদযুগে স্থনাদ নূপুর॥ বলে তা লুটিয়া নিল স্থলতা উদ্বে ছিল উরস্থল জঘন তুজনে। ্রুলোচন করিল লভে চরণ-চঞ্চল-ভাব নব রূপ আসিতে যৌবনে॥

১-১ তুলনা যে দিতে নারি তাহে অতি মনোহারী
তারা যেন স্থাকর মাঝে। (বন্ধ)
২-২ দেবির বদন শোভা লথিতে না পারি য়াভা
লাজে চন্দ নাহি দেয় দেখা। (গ)
৩০০ কোটী ভন্ধা যুত কেশপাদে। (খ)

দেখিয়া গৌরীর রূপ ভাবেন পর্বত-ভূপ কারে দিব এই কন্সা দান। উমাপদে হিত-চিত রচিল নৌতুন গীত ইঞ্জীকবিকস্কণ রস গান॥ই

নারদাগমন

হিমালয় অমুদিন চিন্তিত অন্তর। কুল**শীলর**পবান নিজ-বংশ-সমমান কোথা পাব কন্সা-যোগ্য বর॥ অকুলীনে দিলে স্থতা সভা-মাঝে হেঁটমাথা বংশে বংশে থাকিবে গঞ্জন। মনে নাহি 'পরিতোষ' লোকে ঘোষে 'ধর্মদোষ' বহু পুণ্যে পাই কুলজন॥ বিস্তা-নিবেশিত মন যদি পাই কুলজন সদাচারী বিনয়-ভূষিত। সকল লোকের মাৰে অতি**শ**য় সেই সাজে করিদন্ত °কনকে জড়িত°॥

২-১ বিজ্ঞরাজ করিলা সমান॥ (क)

२-२ मरस्वाव (क)

৩-৩ কর্মানেধ্য (গ) অপ্যশ (বন্ধ)

হীরাতে জডিত (দী)

ত্বৰ্ণজড়িত (গ)

মিলি যত বন্ধুজন
যথা পাবে অমলিন কুল।

ক্রিভ্বনে এক ধন্যা তারে সমর্পিয়া কন্যা
কর্বনে আমি হব নিরাকুল ॥

বন্ধুজন মিলি করি বিচার করয়ে গিরি
সভার ভিতরে দিনে দিনে।
ভ্রমিয়া এমন কালে শ্রীনারদ কুতৃহলে
তথা আসি দিলা দরশনে ॥
পাত্ত অর্ঘ্য আচমন দিলা তাঁরে হেমাসন
জিজ্ঞাসেন করিয়া অঞ্জলি।
শ্রীমৃকুন্দ গাইল গীত শুনিয়া হরষ্চিত
ব্যুনাথ রায় কুতৃহলী॥

ত্যাধান করিয়া কুতৃহলী॥

হিমালয়ের প্রতি নারদোপদেশ ও মদন-ভস্ম

কুতাঞ্চলি করি জিজ্ঞাসেন হিমগিরি।
কৌন বরে বিভা দিব কন্সা মোর গৌরী॥
হেমস্তের কথা শুনি বলেন নারদ।
গৌরী হইতে তোমার বাড়িবে সম্পদ॥
অচিরাৎ হবে গৌরী হরের ঘরণী।
"অর্দ্ধ অঙ্গ দিবে হর গৌরীকে আপনি॥"

১-১ তবে দোস এড়াব সকল । (খ)

২-২ ব্রাহ্মণ রাজার কুতুহলী। (দী ও খ)

৩-৩ অন্ধতমু দিব গৌরী হরকে আপনি ॥ (খ এবং গ)

এই উপদেশ তবে কহে হরিদাস। তেজিল হেমন্ত অন্য-বর-অভিলাষ।। এমন সময়ে হর তপস্থা-কারণে। গঙ্গার নিকটে আইল হিমালয়-বনে ॥ >হর দেখি আনন্দিত হইল হিমালয়।> ্মঞ্জলি করিয়া নিবেদয়ে সবিন্য ॥ পূর্বে কাল ধকা মোর গঙ্গার মিলানে। ততোধিক পুণ্য হইল তোমা দরশনে।। আমার আশ্রম নাথ হৈলা পুণ্যশালী। সংযোগ হইল যাতে তব পদধূলি॥ আমার সকল তন্তু এ/বে ফলবান। মামার ভবনে প্রভু তুমি বিছমান ॥ ° মামার কামন। নাথ করহ সফল ।° মোর কন্স। আনি দিবে পুষ্প গঙ্গাজল।। হেমজের বিনয় গুনিয়া পঞ্পতি।

হেমন্তের বিনয় শুনিয়া পশুপতি। গোরীকে করিতে পূজা দিলা অনুমতি॥ প্রতিদিন গিরিস্থতা সেবেন শঙ্করে। হেনকালে দৈত্য-ভয় হইল স্থ্রপুরে॥

১-১ দেখি হরসিত হৈলা গিরি হিমালয়। (খ) সিবকে দেখিঞা আনন্দিত হিমালয়। (গ)

২-২ পাদ্য অর্ঘ্য সাসন দিয়া বলেন বিনয়। (দী) হৃদ্ধ হৈল আৰু য়ামার য়ালয়। (গ)

৩-৩ মনের মানদ ইবে হইলা সফল। (দী)

^{*} অতিরিক্ত-

পতিত-পাবন তুমি রূপাময় ধাম। দেবকের প্রতি নাথ কবহ সমান॥ (গ)

তারকের রণে ইন্দ্র পাইয়া গরাজয়।
দেবতা মিলিয়া গেলা ব্রহ্মাব নিলয়।
তারকের ভয় ইন্দ্র কারল গোচব।
ধ্যানেতে জানিয়া ব্রহ্মা দিলেন উত্তব।।
*

মহেশের পুত্র হইব নামে ষড়ানন।
গৌরীর উদবে হইব তাহাব জনম।
তার বানে তারকেব হইব নিধন।
সবে মিলি শিবেব বিবাহেতে দেহ সন।
ব্রহ্মাব বচনে ইন্দ্র হেট বৈল মাথ
অভিপ্রায় জানি ভাবে বলেন বধাত।

অতিবিজ–

হচ্চের স্থানিয়া কথা মনে বড় লাগে বেখা কহে বিদ্যাহচ্চের সনমুখে।

সামার ব**চন ধ**ব উপ য সিজ্জন কব প্রিহরি **হৃদ্**এব হুখে॥

আমি তারে বর দিল তিভূবনে জহ হৈল আপনে না মাবিতে বুআয়।

আপনে কপিয়া হাতে আপনে নাক ঢা ভাথে জাদি সে বিসম জান হয়।

সঙ্গামে ভাহাকে জিনে নাহি হেন তৃভ্বনে সংসারে অধিক বল নয়।

সন্ধরের পুত্র হবে সড়ানন নাম ২বে তবে তার মরন নিশ্চয়।

সেই দেব পৃত্বপতি তপস্থাতে দিয়া মতি আথি মেলি নাহি চান নারি।

রচিয়া ত্রিপদি **ছন্দ** পাচালি ক[ি]য়া ব**ন্দ** র**ঘুনাথ নু**পতি কেসরি । (গ) অযোধ্যা-নগরে আছে ভূপতি মান্ধাতা। সূর্য্যসম তেজ 'কল্পতরু সম দাতা।।' তাহার তনয় মহাবীর মুচুকুন্দ। রণ পাইলে যাহার হৃদয়ে আনন্দ।। যতদিন না হবে কার্ত্তিক অবতার। ততদিন মুচুকুন্দে দেহ রাজ্যভার॥ ব্রহ্মার আজ্ঞাতে ইন্দ্র পরম আনন্দে। প্রণিপাত করিয়া আনিলা মুচুকুন্দে॥ মুচুকুন্দ তারকের রজনী-দিবা রণ। কামদেবে পান দিয়া ইব্রু আদেশন॥ ং আমার আরতি তুমি চল হিমগিরি। তপস্থা করেন যথা দেব ত্রিপুরারি॥ আছেন পার্বতী তার হয়ে অনুচরী। তোমার প্রসাদে শিব হবে কামাচারী॥ ইন্দ্রের বচনে কাম হইলা ত্রাযুত। সঙ্গে লৈয়া সহচর বসন্ত-মারুত॥

চল দেব ইন্দ্রাজ সাধহ আমার কাজ দেবী আছে শভু-সন্নিধানে।
করাইবে ধ্যানভঙ্গ হয়ে যেন এক অঙ্গ আরতি দেই কামবাণে ॥
আর যেই কথা কই তারে তুমি হবে জয়ী যুক্তি করি যাহ নিজ বাস।
অভয়া চরণে চিত রচিয়া নোতুন গীত পঞ্চালিকা করিলা প্রকাশ ॥ (বন্ধ)
১-১ কর্ণসম দাতা (গ)
২-২ সন্মোহন বাণ লঞা চল হেমশিবি। (গ)

ফুলময় ধন্থ ফুলময় পাঁচ বাণ।
মধুকর কোকিল করয়ে কলগান।।
প্রণতি করিয়া ইন্দ্রে চলিলা মদন।
দশুমাত্রে গেলা বীর যথা পঞ্চানন।।
ধাানেতে আছেন হর ইঅজিন আসনেই।
ঝারি হাতে পার্বতী আছেন সন্ধিধানে।।
ইআকর্ণ পুরিয়া ধন্ধ বীর এড়ে শরে।ই
ইলা হর চারিদিকে চান।
সম্মুখে দেখিলা চাপধারী পাঁচ-বাণ।।
কোপদৃষ্টে মহেশের বরিষে দহন।
দেখিতে দেখিতে ভস্ম হইলা মদন।।
তপোভঙ্গ হৈল হর যান অক্সন্থান।।
অধিকা চরণে ইত্যাদি—

রতির খেদ

কোলে করি মৃত পতি কামকাস্তা কান্দে রভি
ধ্লায় ধূসর কলেবর।
লোটায়ে কুস্তল-ভার তেজি নানা অলঙ্কার
সঘনে ডাকয়ে প্রাণেশ্বর॥

১-১ স্বস্তিক আদনে (দী)

২-২ সম্মোহন বাণ বীর পুরিল সম্বরে। (বঞ্চ)

৩-৩ কেনাধ হৈল; হর চঞ্চল য়স্তরে ৷ (স.)

⁶⁻²³⁰³ B. T.

পড়িয়া চরণ-তলে রতি সকরুণ বলে প্রাণনাথ কর অবধান।

তিলেক দারুণ হৈয়া পাসরিলে নিজ জায়া দূর কৈলে সোহাগ-সম্মান।।

^১জাগিয়া^১ উত্তর দেহ রতিরে সংহতি লহ পাসরিলে পূর্ব্বের পীরিত।

তুমি নাথ যাও যথা আমি আগে যাই তথা এবে কেনে কৈলে বিপরীত॥

শঙ্করে মারিতে বাণ ইন্দ্রের লইলে পান রতিরে করিতে অনাথিনী।

দিয়া নিদারুণ শোক গেলা নাথ পরলোক মোর তরে পোহাল্য রজনী॥

তোমার কুস্থম-ধন্ন ভাদি পাঁচ বাণ।

লোটায় ধরণীতলে মোর পাপকর্মফলে বিদারুণ না যায় পরাণ ॥ ব

যেই হর-কোপানলে তোমারে °বধিল হেলে° না হরিল রতির জীযন।

্ তোমা বিনে প্রাণপতি তিলেক যে জীয়ে রতি শ্এই বড় রহিল গঞ্জন ॥°

১-১ চিয়াঞা (খ এবং গ)

২-২ বাহির না হয় পাপ প্রাণ॥ (খ)

৩-৩ করিলাবল (দী এবং বঙ্গ)

৪-৪ লোকমাঝে বহিল গঞ্ন । (গ)

কুলশীল রূপগুণ জীবন যৌবন ধন
বিধবার সকলি বিফল।
বসন্ত স্বানীর স্থা মোরে আসি দেহ দেখা
কুণ্ড কাটি জ্বালহ অনল।।
স্থারঙ্গ সিন্দূর ভালে চিরুণী কুন্তল-জ্বালে
সঘনে নাড়য়ে আম্রডাল।
চৌদিকে হুলুই পড়ে রতি চতুর্দ্দোলে চড়ে
ইন্দ্রের হৃদয়ে বাজে শাল॥
অনুমূতা হব বতি হেন কালে সরস্বতী
আকাশে কহিল হিতবাণী।
রচিয়া ত্রিপদী-ছন্দ পাঁচালী কবিয়া বন্ধ
পরিতৃষ্টা যাহারে ভবানী।

রতির প্রতি দৈববাণী

হিতবাণী তোরে বলি শুন ঝিয়ে রতি

তথ্যামার বচন তুমি কর অবগতি॥

অনলে পুড়িয়া নষ্ট না করিহ তন্তু।

অবিলম্থে পাবে তুমি স্বামী ফুলধনু॥

* অতিরিক্ত—

দেহ যোগ নহে নিত্য কেবল মরণ সত্য
এই কথা সর্বলোকে জানে।
জোবনে মরন কার্ল হদয়ে রহিল সাল
নাহি মানে প্রবোধ পরাণে। (খ)
১-১ জেদ কবি কহি শুন ভবিশ্ব ভারতী। (দী)

কতদিন থাক গিয়া সম্বরের ঘরে তথায় তোমার স্বামী মিলিব তোমারে।। আপনার নাম তুমি না করিহ রতি। আজি হইতে নাম তুমি ধর মায়াবতী॥ রন্ধনের ধামে তুমি হবে সধিকারী। হন্যা মানিবে হোরে সম্বরের নারী॥ বলবৃত্তি তোমারে যদি করে কোন জন। সেই কালে হবে তার অবশ্য মরণ॥ যতুকুলে শ্রীহরি করিব অবতার। হরিব অস্থর-বধে অবনীর ভার ॥ দৈবকী-ত্রয় বস্তুদেবের নন্দন। কংস কারাগারে হবে ভাহার জনম।। কংস-ভারে যাবে কৃষ্ণ নন্দের মন্দিরে। নন্দের তন্য়। দিয়া ভাগুাব রাজারে॥ কংস-আদি দৈতা কৃষ্ণ করিয়া বিনাশ। অবনীর ভার প্রভু ইকরিবে উদাসই॥ রুক্মিণীরে বিবাহ প্রভু করিবে প্রথম। ^২তার গর্ভে কামদেব লভিবে জনম ॥^২ সম্বর পাইয়া নারদের উপদেশ। তাহার স্থৃতিকাশালে করিব প্রবেশ।। চুরি করি লৈয়া যাবে কুঞ্জের নন্দনে। সমুদ্রে ফেলিয়া যাবে আপন ভবনে॥

১-১ করিবেন হ্রাপ (বঙ্গ) **উশ্বাস** (দী)

২-২ তাহার উদরে হবে কামদেবের **জনম ॥ (ব)**

বিশাল বোয়ালী তারে করিবে গরাস। কুষ্ণের নন্দন কভুনা হয় বিনাশ।। পডিবে বোয়ালী বন্দী ধীবরের জ্বালে। পাইবে স্বামীর ভেট রন্ধনের শালে॥ বোয়ালী কুটিতে তুমি পাবে নিজ স্বামী। সকল বিশেষ কথা কহিলাম আমি॥ কোলে-কাঁথে করি তারে করিবে পালন। মতি অল্পকালে তিই পাবেন যৌবন।। মা বলিয়া যখন করিবে সম্ভাষণ। সেইকালে আচ্ছাদন করিত ভাবণ।। ইতার বিজ্ঞা তারে দিয়। দিবে পরিচয় ।ই সম্বরে বধিয়ে যেন চলে নিজালয়।। সরস্বতী-চরণে করিয়া পরণাম। ছরায় চলিলা রতি সম্বরের ধান।। ব্সভয়ার চরণে মজুক নিজ-চিত। **শ্রীকবিকঙ্কণ গান মধুর সঙ্গীত**॥^২

গৌরীর তপস্থা*

তপস্তা করেন গৌরী শিবপদ-আশে। আহার টুটিল গৌরীর দিবসে দিবসে॥

- ১-১ এসব বিভাস্ত তারে দিও পরিচয়। (গ)
- ২-২ তপস্তা প্ৰেদকে নোচাড়ী বল গীত। শ্ৰীকবিকিষ¶ গানি মধুর সংগীত । (খ)
- অতিরিজ্ঞ
 তন্ত্র থেন কচি ননি।
 রৌজ্রে মিলিল্যা হেন জানি।

দিন এক উপবাস, দিনেক ভোজন।
তেজিল তামুল তৈল ভূষণ চন্দন॥
এক পদে কৃতাঞ্জলি দিবস-ক্ষেপণ।
রজনী সময়ে করেন কুশেতে শয়ন॥
পঞ্চতপ সাধেন জ্বালিয়া পঞ্চানলে।
উদ্ধাথে দৃষ্টি দেন অরুণ-মণ্ডলে॥
রক্তবাসা পিঙ্গলকেশা অরুণমূরতি।
বৈশাথে জ্যাষ্ঠে কৈল ব্রতের নিয়তি॥
ফুই উপবাস করি করিলা পারণা।
মহেশ-পূজন করি ধেয়ান-ধারণা॥
চিন্তেন শিবের পদ মুদ্তিত-লোচন।
মাঘমাসে নিশাকালে উদকে শয়ন॥
ব্রত কৈলা গিরিস্কৃতা তিন উপবাস।
পারণা করিল দেবী সবে তিন গ্রাস॥

সহজে তুমি সে কমলিনী
হেন পাকে হারাবে পরাণী॥
আধ অষ্টম বংসর বয়সে।
বনে যাবে কেমন সাহসে॥
কি বৃদ্ধি জন্মিল তোর বাপে।
কি জানি পাঠাল্য তোমা তপে॥
শিবের কঠিন বড় সেবা।
সেবা ভোমা নাহত্যে পারে কিবা॥
বর নাকি নাহি ত্রিভুবনে।
তপস্থা করিবে কি কারণে॥
শীক্বিক্ষণে বিরচনে।
অধিকা নিধেধ নাহি মানে॥ (খ)

অন্ন তেজি খান মাতা কপিখ বদর।
কতকাল পান কৈলা কেবল পুষ্কর।।
শিবপদ-ধ্যান দেবী কৈল সর্বক্ষণ।
বুক্ষের্-গলিত পত্র করিলা ভক্ষণ।।
তেজিলা বুক্ষের পত্র ছাড়িলা অন্নপান।
সেই হইতে অপর্ণা ধরিলা অভিধান।।
ছলিতে আইলা হর দ্বিজরূপ ধরি।
জিজ্ঞাসিতে উত্তর দিলেন তারে গৌরী।।
তপ্রিনী হইয়া কর শিবপদ আশা।
মুকুন্দ রচিল গীত গৌরী-মঙ্গল ভাষা।।

শঙ্করের ছলনা

কহ গো নিরুপমা কাহার বোলে রামা
ইচ্ছিলা বুড়া জটাধরে।
হইয়া স্থনারী 'ভজহ ভিখারী '
দরিদ্র বর দিগম্বরে॥'
শুনগো পদ্মমুখি তোরে আমি দেখি
রূপেতে ভ্বন-মোহিনী।
কতেক আছে বর ভ্বনে মনোহর
ইচ্ছিলে বুড়া বর কেনি॥
তুমি গো রূপবতী দেহের 'হেম্জ্যোতি'
মাণিক্য-রুচির-দশনা।
ইচ্ছিলে এমন বরে তল নাহি পাবে ঘরে
হইবে বিভৃতি-ভূষণা॥

১-১ ভক্তহ ভিকাহারী (দী) ২-২ পাত্র হব দিগম্বরে । (ম) ৩-৩ ক্ষেমজোতি (ম) ভিক্ষার অমুসারে ^১ভ্রমেন ^১ হরে হরে করেতে ডমক্র বাজনা।

দারুণ দৈবের গতি ইচ্ছিলে হেন পতি তোমারে বিধি-বিডম্বনা ॥

থাকিয়া হরশিরে ভিক্সুক দেখি তারে মিলিলা গঙ্গা রত্বাকরে।

শুন গো গুণমই তোরে যে হিত কই নির্ধনে কেহ না আদরে ॥

কাহার পুত্র হর না জানি কোথা ঘর নাহি দেখি ভাই-বন্ধুজন।

^२বরিয়া শূলপাণি হইবে ছখিনী ^२ দারুণ দৈবের কারণ ॥

দরিজ পতি যার বিকল জনম তার দারিজ্যে গুণরাশি নাশে।

গৃহিণী হইবে ছঃখে জনম যাইবে ভিক্ষে দরিদ্রে কেহ না সম্ভাবে ॥

বসন বাঘের ছাল গলায় হাড়ের মাল উত্তরী যার বিষধরে।

১-১ ভূলমেণ(দী)

২-২ **দে**ধিয়া পশুপতি পাইবে **দুঃখ অতি (দী**)

৩-৩ ইচ্ছিলে কেন হেন বরে। (খ)

দ্বিজ্ঞের শুনি কথা বলেন গিরিস্থতা ব্রাহ্মণ কর অবধান। যেবা যার মনে ভায় সেই নারা ভজে ভায় শ্রীকবিকঙ্কণ-চণ্ডী রস গান॥

হরগোরীর কথোপকথন

অণিমা লখিমা আদি যার অন্তর্গিদ্ধি।

বাহার যোড়শ সংশ না ধরিল। বিধি॥

ত্রিভুবন রক্ষিলা করিয়া বিষপান।

মৃত্যুঞ্জয় বিনে বর কেবা আছে আন॥

ক্রন্মা কার বাঞ্ছিত করেন পদগুলি।

ইল্রু আদি দেব যারে করে কৃতাঞ্জলি॥

ত্রিভুবনমধ্যে দেখ যাহার সম্পদ্।

এমন গৌরীর কথা শুনি তপোধন।

পুনরপি কিছু নিবেদিতে কৈল মন॥

তপস্থার দেখি কিছু চপল অধর।

সেই বন ছাড়ি তুর্গা যান অন্তান্তর॥

এমন সময় হর নিজ বেশ ধরিন।
পার্ব্বতীর সমুখে রহিলা ত্রিপুনারি॥

১-১ সোল কলা অংশে জার ধরিলেন বিধি । (গ)

২২ আছে। আদি দেবগণকভেন অঞ্জী। (গ)

৩৩ ত্রিভুবনে যত দেখ পরম সম্পদ। (क)

ইমদনদহনই হর দেখি বিভ্যমানে।
ইসন্ত্রমে পাসরে গৌরী পূজার বিধানে॥ই
সম্মুখে দেখিয়া গৌরী ত্রিদশের নাথ।
অবনী লোটাইয়া করিলা প্রণিপাত॥
অভিপ্রায় বুঝি হর বলিলেন তারে।
তপস্তায় বুশ হামি হইলাম তোমারে॥
কুপা করি যদি নাথ দিবে বরদান।
আমার পিতারে প্রভু করহ প্রণাম॥
এমত শুনিয়া হর গৌরীর বিনয়।
নারদ মুনিরে পাঠাইলা হিমালয়॥
আসিয়া নারদ মুনি কহিলা সকল।
শুনি হিমালয় হৈলা আনন্দে তরল॥
অস্থিক। চরণে ইত্যাদি॥

গৌরীর অধিবাস

হেমস্ত হরিষে

করিল সর্বব দেশে

আনন্দে তুন্দুভি-ঘোষণা।

অম্র নাগ নর

আসিব মোর ঘর

যত মোর বন্ধুজনা॥

১-১ মদনমোহন (গ)

২-২ সম্ভ্রমে করেন মাতা পূজার বিধানে। (খ)
মনেতে জানিল দেবি তপস্থা কারণে। (গ)

সকল দোষহীন আজি মোর শুভদিন গৌরীর বিবাহ মঙ্গল ॥ > সুশঙ্খ-বেণু-বীণা- মৃদঙ্গ-ভেরী নানা বাজনে হৈলা কোলাহল ॥ আনিঞা মুনিগণে স্থাদন শুভক্ষণে করিলা স্বস্থিক-বাচন। আরোপি হেমঘটে যুগল করপুটে গণেশে কৈল আবাহন॥ পার্বতী রূপবতী হরিদাযুত ধুতি পরিয়া বসিলা আসনে। মিলিয়া যত মুনি করেন বেদধ্বান কন্সার গন্ধাধিবাসনে॥ মহী গন্ধ শিলা দুৰ্ববা পুষ্পমালা ধান্য ঘুত ফল দধি। স্বস্তিক সিন্দুর কজল "কর্পূর" চামর শঙ্খ যথাবিধি॥ বান্ধিল করে সূত্র প্রশস্ত দীপপাত্র মস্তকে করিল বন্দনা। কনক-সিঁথি শিরে অঙ্গুরী দিয়া করে

করিল আশীষ যোজনা॥

১-১ ত্নুভি শভা জোড়া মুদক বাজে কোড়া
বাজনায় হৈল কোলাহল । (থ)
২-২ করিয়া স্বরভেদ ব্রাহ্মণে পড়ে বেদ
করিলা গন্ধাধিবাসনে। (গ)
আবোপি হেমঝারি করিলা হিমগিরি
কন্তার গন্ধাধিবাসন। (ক এবং দী)
৩-৩ কর্ণপুর (দী)

নৈবেন্ত দিয়া ভূরি মাতৃকা পূজা করি

দিলেন বৃস্থারা দান।

বস্থার পূজা করি করিলা হেমগিরি

নান্দীমুখের বিধান॥

কাঁখেতে হেমঝারি মেনকা মিলি নারী জল সহে ঘরে ঘরে। এয়ো আসি মিলি করি হুলাহুলি ১তণ্ডুলমঙ্গলন করে॥১

* অতিরিক্ত—

করি অমঙ্গল আচরণ আনিল নারিগণ আহল সত আও জনে। তুলদি মাতাবতি কৌদল্যা য়ন্ধৰতি আহল ঋষির ভবনে॥ সাধু মধু হার গন্ধ হৰ্কা পার কমলা কলাবতি রানি। চিত্রবেথা তিলতমা স্থভদ্রা তারা উমা শ্রীমন্তি সাবিত্রি ভবানি। মন্দোদরি জয়া গোরী দচি মারা রেফুকা হিরা সিলা হার। বিজয়া শত্যভামা ক্রিকিন তিল্তমা ইন্দু সিন্ধু ভাগু পার। ইন্দ্রানি সতি সিলা ভার্থি সসিকলা মাধবি সিতা অরম্বতি। বিমলা বিছাধরি ফুলুরা কাদস্বরি

স্থমিতা কেকই পাৰ্কতি । (খ)

১-১ মঙ্গলস্তুত্র বাঁধে করে॥ (থ)

হোথা অধিবাস আদি মহাদেব যথাবিধি
করিলেন বেদের বিধ'ন।
আপনার বেশ ধরি চলিলেন ত্রিপুরারি

ে হেমস্থ ঋষির সন্নিধান॥

গলেতে হাড়ের মাল পরিধান বাঘাছাল বৃষভে করিল। মারোহণ।

অমাত্যসকল ধায় চলিংলন দেবরায় দৈউটি ধরেন দানাগণ॥

শিঙ্গার বাজন। করে ভূতদান। *চলয়ে ঝড় বরিষণ।*

আইলেন ত্রিপুরারি হিমালয় হাতে ধরি বসাইল কনক-আসনে॥

"অস্থুরী বসন মালা গিরিরাজ শিরে দিলা যথাবিধি করিলা বরণ।"

°মেনকা সে কৃতৃহল করিয়া বির**ল স্থল** নারীর আচারে দিলা মন ॥°

১-১ দেয়ড় (मौ)

২-২ চেলা করে ঝড় বরিসন। (ক) চালায় ঝড় ববিসন। (খ)

৩-৩ বিরল স্থান করি মেনকা স্থল্পরী করিল বরের বরণ। (গ)

> বিরল স্থল করি মেনক। স্থল্পরি করেন বেদের বিধানে। (খ)

9-৪ করিয়া নানা ছন্দ **ঔষধ প্রবন্ধ** করিল লয়া স্থীগণ। (বঞ্চ) ^বীর মাধবের স্থৃত রূপেগুণে অন্ত্ত রায় বাঁকুড়া ভাগ্যবান। তার স্থৃত রঘুনাথ রাজগুণে অবদাত শ্রীকবিকঙ্কণ রস গান॥১*

শীরঘুনাথ নাম অশেষ গুণধাম ব্রাহ্মণ-ভূমিব পুবন্দর। তাঁথার সভাসদ বচিয়া চারুপদ গান মুকুন্দ কবিবর॥ (বঙ্গ)

অতিবিক্ত-

নাগরীদিগের বর-দর্শনে গমন

কোন নাগরীর আধ দীমন্তে দিন্দুর। কারো ভ্রমে পদে হার করেতে নেপুর॥ কারো এক নয়নে ভালে দিয়াছে কজ্জলে। পত্রাবলী এক কুচে নহিল সকলে। আঙ্লা বিমলা চাপা কমলা ভারতী। পদাবতী **স্বর্গ**েখা রতি কলাবতী ॥ বল্লভা তুর্লভা রম্ভা স্থভদ্রা যমুনা। চরিত্রা তুলসী রাণী শচী স্থলোচনা। হীরা তারা সরস্বতী মদনমঙ্গরী। কৌশলা বিজয়া গোপী স্থমিতা স্থন্দরী॥ যশোদা রোহিনী রাধা কৃত্মিনী শঙ্কী। চিত্রলেখা স্থামুখী গোপী মন্দোদরী॥ ত্বরা হেতু সভাকার বিপর্য্যয় বেশ। আল্য করি ধায় কেহ নাহি বান্ধে কেশ। এক পদে কোন আইয়ো দিয়াছে নেপুর। কপালে সিন্দুর নাই সীমন্তে সিন্দুর ॥

মেনকার খেদ ও শিবের মদনমোহন বেশ ধারণ

মেনকা ঢালিল দধি বরের চরণে।

>অঙ্গের ভূষণ দেখে বিষধরগণে।।

>অস্থি-ভশ্ম-বিভূষণ দেখি কলেবর।

হইয়া বিরসমুখী চিন্তেন অস্তর।।

এক চক্ষে কোন আইয়ো দিয়াছে অঞ্চন।
এক কর্ণে কর্ণপুর স্বরায় গমন॥
শিশু কান্দে হুগ্ধ দিতে নাহি করে মো!
কোন আইয়ো আইসে তার হাতে কাথে পো॥
চঢ়িয়া জাঙ্গালে আইয়ো দিল বাহু নাড়া।
আঁথির কটাক্ষে ভাঙ্গিয়া আইল পাড়া॥
বরণ করিতে আইয়ো করিল প্রাণ।
অভ্যা-মঙ্গল কবিকঙ্কণে গান॥ (বঙ্গ)

অমলা বিমলা চাপা কমলা ভারথি।

সন্তবেথা পদ্মবেথা কমলা অরক্তি ॥

হরা তারা সরস্থতি মদনমঞ্জরি।
কৌসল্যা বিজয়া গোরি স্থমিত্রা স্থন্দরি॥

জনোদা রোহিনি রাধা রূপি কাদস্থিনি।

চিত্রলেথা স্থধাম্থি মন্দোদরি রানি॥

বিবাহেতু সভাকার বিপ্রজয় বেস।
এলন কবরিভার নাহি বান্দে কেস॥ (গ)

>-> অক্রি বসন লৈল বিষধরগণে॥ (খ)

অপের ভূষণ দেখি বিশায় ভাবে মনে॥ (বঙ্গ)

২-২ অহিগন বিভূদন দেখি কলেবর। (খ)

কান্দয়ে মেনকা সে গৌরীর মায়ামোহে।
ঝলকে ঝলকে বহে লোচনের লোহে॥
চরণে নৃপুর সর্প সাপ কটিবন্ধ।
পরিধান বাঘছাল দেখি লাগে ধন্ধ॥
অঙ্গদ-বলয়া সাপ সাপের পইতা।
চক্ষু খায়া৷ হেন বরে দিলাম ছহিতা॥
গৌরীর কপালে ছিল বাদিয়ার পো।
কপালে চন্দন দিতে সাপে মারে ছো॥
ভীষধ সাধিয়া ঘৃত দিলেন কপালে।
ঘৃত দিতে শিবের ললাটে বহ্নি জ্বলে॥
দেখিয়া শিবের রূপ মনে লাগে ধান্ধা।
ুক্ত ভাগো কপালের মাঝে উদয় করে চন্দা॥

**

হেন বরে বিবাহ দিল কি দেখি সম্পদ্। বাপ হয়া মচমতি কন্সা করে বধ।।

এক পায় কোন নাবি প্রত নপুব।
কপালে সিন্ধ নাহি সীমস্তে সিন্ধ ॥
এক চক্ষে কোন নাবি লঞাছে অঞ্চন।
এক কলে কিন্তুপুর করেছে গমন॥
সিস্থ কান্দে ছুয় দিতে নাহি করে মন।
কোন আইও জাইসে জার হাতে কাথে পো॥
বর দেখিতে সবে করেছে গমন।
জভয়া মঙ্গল কবিক্ষণে গান॥ (গ)

১-১ কোন ভাগ্য উদয় কৈলা দাপের মাথান চাব্দা। (দী ও ক)

শ্বতিরিক্ত—
 হের আর জটার জলের কলকলী।
 শ্বলাছরণ ছত করে কোলাছলী॥ (দী)

অঙ্গুরী জড়িত মোর গরুড়ের মণি। এই হেতু হাতে মোর নাহি খায় ফণী॥ বর দেখি এয়ো সব করে কানাকানি। 'চক্ষু খাউক কন্সার বাপ চক্ষে পড়ুক ছানি॥' প্রবাদেশন নড়ে হেন বুড়া বর। দেখিয়া মেনকা দেবীর জ্বলিছে অন্তর ॥ মেনকার দাসী আনে ঔষধের ভালি। আছিল ঈষের মূল তথি কতগুলি॥ ঈষের মূলের গন্ধে পালায় ভূজক। অঙ্গনার মধ্যে হর হইল উলঙ্গ 🛚 🕆 লাজ পায়া মেনকা পালায় গুড়ি গুড়ি নন্দী সে বুঝিয়া কাজ নিবায় ২দেউটি ।। ুসভাতে উলঙ্গ দেখি দেব ত্রিলোচন। জোড করে সবিনয়ে বলেন বচন।। নন্দী বলে শুন প্রভু দেব শূলপাণি। মনোহর বেশ প্রভু ধরহ আপনি।। এমন নন্দীর বাকা শুনি ত্রিলোচন। হেনকালে হইলা প্রভু মদনমোহন॥*

১-১ অধোগতি যাউক গিরি চক্ষে পড়ু ছান। (খ)

২-২ দেয়জ়ি।(দী)

৩-৩ শুনিয়া শিথবিস্থতা পরিহাস-বচন।
শ্বেত মাছিরূপে কৈল শিবে নিবেদন।
তেজহ বিকটমূর্ত্তি মোরে করি দয়া।
মোর মাতাপিতায় প্রভূদেহ পদছায়া।
এমন শুনিয়া হর গৌরীয় বচন।
দেইখানে হৈলা প্রভূমদনমোহন। (বঙ্গ)

⁷⁻²³⁰³ B.T.

যোগবলে ধরে হর মনোহর বেশ।
জটাভার হইল কুঞ্চিত চারুকেশ॥
আছিল বাঘের ছাল হইল বসন।
হইল অঙ্গের ভস্ম স্থান্ধি চন্দন॥
হাড়মাল। হইল কনক রত্নমাল।
হরিতাল তিলক শোভিত কৈল ভাল
বাস্থিকি হইল তার কিরীট-ভূষণ।
অঙ্গদ বলয়। হইল ভূজঙ্গমগণ॥
মুকুট উপরে শোভে সুধাকর-কলা।
বিরলা মদনরিপু মদনের লীলা॥
কনক-পদক গলে দোলে সিংহনাদ।
দেখিয়া মেনকা বরে তেজিল বিষাদ॥
বিদেখিয়া বরের রূপ যতেক যুবতী।
মনে মনে নিন্দা করে আপনার পতি॥
অভ্যার চরণে ইত্যাদি॥

নারীগণের পতিনিন্দা

সবে বলে গৌরীর বর মিল্যাছে ভাল।
মদনমোহন রূপে ঘর কর্যাছে আলো॥
এক ষুবতী বলে সই মোর গোদা পতি
কোয়া-জ্বরের ঔষধ সদা পাব কতি॥

১-১ ধরিলা মনোহর রূপ মনোহর লীলা ॥ (क) ধরিল মদন প্রোম যুভাকর ছলা॥ (খ)

২-২ মদনমোহন রূপ হৈলা ত্রিপুরারি। মনে মনে পতিনিন্দা করে সব নারী। (বঞ্চ)

ভাজ মাসের পাঁকুই বড়ই তুর্বার। গোদে তৈল দিতে কত তুলিব গ্রাকার॥ আর যুবতী বলে পতির ব্রজ্জিত দশন । শাক-স্থপ-ঘণ্ট বিনে না করে ভোজন॥ দ্ভ বেঞ্জন আমি যেই দিনে রান্ধি। মারয়ে পিডির বাডি কোণে বস্থা কান্দি॥ আর যুবতী বলে সই মোর কর্ম মন্দ। অভাগিয়া পতি মোর তুই চক্ষু অন্ধ।। কোন দেশে তুখিনী নাহিক মোর পারা। কোলের কাছে থাকিতে সদাই করে হারা॥ অন্ধমুনির মত মোর গেল সর্বকাল। জলপাত্র বল্যা কানা তুল্যাছে বিড়াল। আর যুবতী বলে সখি মোর পতি কালা। আনের ২ইলা ঘরকরা নোরে হইলা জালা॥ দিনে ঠারে-ঠোরে কহি কথা পতির সনে। রাত্রি হইলে নিজা যাই গরুড-শয়নে ॥ রন্ধনের তরে আমি যদি চাহি জল। দিডি ধর্যা এক্সে দেয় কালা মোবে ছাগল।। আর যুবতী বলে সখি মোর কথা বুঝ। অভাগিয়। পতি মোর পিঠে বড় কুজ।। চিৎ হয়্যা শুতে নারে কুজের প্রকারে। খুঁডিয়া রেখ্যাছি খন্দ মেঝের ভিতরে॥

শনি মঞ্চল বাবে যথন মেঘের আর্বি।
 তথন জানিবে গোদের পরিপাটি॥ (খ)
 ১-১ পীড়ার সদন (বক্ব)

আর সথী বলে মোর বাঘুড়িয়া স্বামী।
তার পেট পানে চেয়া মর্যা থাকি আমি।
'পোরের পো হইয়াছে নাতির হইয়াছে ঝি।
প্রায়োগ তেলে চুল পাকিছে বয়স বটে কি॥'
রূপে-গুণে স্থুন্দরী নাতিনী ঘরে আছে।
হেন বরে বিহা দিয়া রাখি আপন কাছে।
নগরে নাগরীগণ খায় মনকল।।
হরগৌরীর বিয়া হব শুভক্ষণ বেল।॥
নিবিষ্ট হইয়া ভজ চণ্ডীর চরণে।
মধুর সঙ্গীত কবিকস্কণ ভণে॥

হরগৌরীর বিবাহ

বুষে আরোহণ কৈল দেব পঞ্চানন।
মধ্যেতে কাণ্ডার-বস্ত্র ধরে কোন জন॥
শিবে প্রদক্ষিণ গৌরী কৈল সাতবার।
নিছিয়া ফেলিল পান কৈল নমস্কার॥
মহেশের গলে গৌরী দিলা রত্নমাল।
দেখি দেবগণে সুখ বাড়িল বিশাল॥

১-১ আইয়োর মিশালে বুড়ী নানা কাচ কাছে। পাক্চু ভেলে ল পেকেছে বয়স কোথা গ্যাছে ॥ (বঞ্চ)

ेহরিষে পুলক তনু তুজনে ছাওনি। তলাতলি দিল যত ২ ঋষির রমণী ।।। ুব্রস্কাপুরোহিত কৈলা বাক্যের বিধান। হিমালয় আনন্দে করিলা ক্যাদান॥ হরগোরী তুই জনে বসিলা একাসনে। ° গ্রন্থছড়া পিতামহ করিলা বন্ধনে ॥° গন্ধপুষ্প দিয়া মহী পুজিলা দম্পতি। হরগৌরী তুই জনে দেখে অরুদ্ধতী॥ ঝারি থালা ধেন্তু শ্যা দিল। নানা দান। উত্তম আসন বরে দিলা হিমবান।। জয়া বিজয়া স্থা দিল। পদাবতী। সমূপিল গিরিরাজ মহেশে পার্বতী।। কুস্থম-শয্যাতে দোহে বঞ্চিলা রজনী॥° •বিভা করি মহাদেব রহিলা নিলয়। নানা লীলারক্তে গেল। অনেক সময়॥

ইন্দ্র আদি দেব কৈলা পুষ্প বরিষণ। মন্দ মন্দ নিনাদ করিলা মেঘগণ॥ (থ এবং দী)

১-১ হরিষে পুলকতমু ত্হেতে ছামনি। (ক ও দী)

২-২ পুর-নিত ছিনী (বঙ্গ)

^{*} অতিরিক্ত-

৩-৩ ব্রাহ্মণ পুরোহিত (খ)

৪-৪ হইল পরম শোভা নাহিক তোলনে। (খ)

কীরদণ্ড ছুইজনে করিল ভোজন।
 কর্পুর ভাস্থলে কৈল মুথের শোধন। (বঙ্গ)

৬-৬ বিবাহ করিঞা হর রহিলা হিমালয়।

নানা খেলা রঙ্গে গেল রনেক সময়। (গ)

প্রভাতে ভিক্ষায় অনুদিন শিব যান অভয়ামঙ্গল কবি শ্রীমুকুন্দ গান॥

মহাদেবের ভিক্ষায় গমন

প্রভাতে উঠিয়া হর ভিক্ষা মাণে মহেশ্বর ত্রিদশভূবন অধিকারী। ভূনিয়া শিবের শিকা ধায় যত ডিঙ্গা চিঙ্গা সাথে ফিরে আওয়ারি আওয়ারি॥ মধুর সঙ্গীত গায় ছই হাতে ঝুলি বায় মাগে ভিক্ষা থাকিয়া অঙ্গনে। পুণাবতী ঘত নারী চা'ল কড়ি দেই দালী শিবথালে দেহ ভাগ্যবানে ॥ গোপনারী দেয় দধি স্থত্তধর চিড়া। থদি মদক সন্দেশ থগু চিনী। ্ৰাম্বলিনী গুয়াপান তিল সন্দেশ আন তৈল দিল কলুর রমণী। শিবের হৃদয় জেনে নোন আনি দিল বেনে কুঁচিলা সর্থ হরীতকী। যুয়ান জীরা তেজপাত যোয়ান সিদ্ধির পাত इद्ध इहेन इद प्रिश প্রভুর ত্রিশূল নন্দী বাণ্যা-ঘরে থুয়া বন্দী कुँ िना गाँषारे निना धात। ফ্লিবাজ পাটা গলে **হৃদি বল কুতৃহলে** যান হর কুঁচনীর ছার॥

গণেশের জন্ম

জয়া-বিজয়া মিলি গৌরীর তুলিলা মিলি
কুঙ্কুম চন্দন দিয়া অঙ্গে।
একত্র করিয়া মলি মনোহর পুত্তলি
গৌরী স্তজিলা খেলারঙ্গে॥

একেত কোঁচের মেয়া হরের বারতা পেয়া ভিক্ষা দিতে আইল তথন। কাঁচলী অসম্বৰে পুরাতন দেখি হবে কুচযুগে না দেই বসন। দশ পাঁচ স্থী মেলি শিবের বসন ধরি কেহ বা টানয়ে পরিহাসে ৷ বসি কুঁচনীর পাশে শিব নিবানন্দে ভাসে যুবতী বুঢ়াবে নাঞি বাসে॥ হাদেলো কুঁচনী বামা গোৱী ভাল জানে আমা কিবা যুবা নহলী যৌবন। জানিঞা না জানে যে কি কাজে না আনে ভজে জানি যদি দেহ আলিঙ্গন ॥ কুঁচনী রমণী হাদে শঙ্কবের হাস্মভাবে বিভা কৈলে যুবতী রমণী। কালি মোরা যাব তথা তোমার বিক্রমের কথা জ্ঞাত হব তার মুখে শুনি। **সঙ্গীতকলা**য় **র**ত গুণিরাজ-মিশ্রস্থত বিচারিলা অনেক পুরাণ। সঙ্গীত অভিলাষী দাম্ভা-নগ্রবাসী শ্রীকবিকঙ্কণ রস গান। (বঙ্গ)

১গণেশের শুনহ জনম।

শুনিলে হরয়ে ত্থ . যেই হেতু গজমুখ শুনিলে কলুষ-বিনাশন ॥

বরণে প্রভাত-ভান্ন থর্বে সুপীবর তন্ত্র চারি ভুজ আজান্মলম্বিত। নথপাতি জিনি কুন্দু ইজিনিয়া শারদ ইন্দুই যোগপাটা হৃদয়ে শোভিত।

পরিধান বাঘছাল গলাতে হাড়ের মাল চারি ভুজে নানা আভরণ।

বিকশিত কোকনদ জিনিয়া যুগল পদ তাহে চারু মঞ্জীর শোভন॥

°স্থবলিত চারি কর শূলপাশ মনোহর° নিশ্মাণ করিয়া দিল হাথে।

যে অঙ্গে যে অলস্কার নিশ্মাণ করিল তার নাহি মলি শির নির্মিতে॥

এমন সময়ে হর ভিক্ষা মাগি আল্যা ঘর লাজে ঘরে প্রবেশে পার্বকী। জিজ্ঞাসিলা শূলপাণি কহ জয়া সত্য বাণী "এই মূর্ত্তি" কাহার নিশ্মিত॥

১১ গণেশেরে শুনহ উৎপত্তি। স্থ নীতে বাড়য়ে স্থথ কোই পাকে গজ্মুথ দূর হয় অসেস হুর্গতি॥ (দী)

২-২ চাক পরমান ওন্দ (দী)

৩-৩ দ**ন্ধ অভি**মত বর শুলী **পাব মনোহর (গ**)

৪-৪ শাল্ভঞ্জী (বন্ধ ও দী)

জয়া দিলা উত্তর শুন প্রভু মহেশ্বর
গোরী কৈল পুত্তলি নির্মাণ।
দামুন্যা-নগর-বাসী সঙ্গীতের অভিলাষী
শ্রীকবিকস্কণে রস গান।

গণেশের দেহে জীবন-সঞ্চার

জয়ার শুনিয়া কথা বলেন শঙ্কর।

>অভিপ্রায় জানিয়া দিলেন উত্তর ॥

পুত্র-আশ জানিলাম পুত্তলি নির্মাণে।

ংখলাবার তরে শিশু নাহিক ভবনে ॥

ইহা বলি নন্দীকে দিলেন আঁখিঠার।

*নন্দী চলিলেন অসি লৈয়া খরধার ॥

*

কতদূর গিয়া নন্দী দেখিল। কুঞ্জরে ॥ লীলায় শুভিয়া গজ উত্তর শিয়রে ॥

১-১ অভিপ্রায় জানি প্রভূ দিলান উত্তর ॥ (দী)
অভিপ্রায় করি তারে দিলেন উত্তর ॥ (বন্ধ)
২-২ সঙ্গে শিশু নাহি তার থেলাবার সদনে ॥ (ক)
শিশুগণ নাহি তাঁর থেলার বিধান ॥ (দী)
৬-৬ নন্দী ব্ব্যা নিল সে কাটারী ক্রধার ॥ (দী)
* অভিবিক্ত---

সহস্রাক্ষ দেশে নন্দী দিল দরশন। একে একে খুদ্ধে নন্দী সভার ভূবন। তদ্ধাস করিল নন্দী নগরে নগরে। কোন জীবে নাহী দেখে উত্তর শিয়রে॥ (খ

এক চোটে গজমুও করিল ছেদন। মাথা আনি দিল যথা দেব পঞ্চানন।। পুত্তলি-স্কল্ফে মাথা জোডাইল শিব। শিবের কুপায় তথি প্রবেশিল জীব॥ ইকরিয়া শিশুর শব্দ উঠিল পুত্তলী। দেখিয়া মদনরিপু হইল কুতৃহলী॥ শিবের আদেশে জয়া পুত্র লইয়া চলে। পুত্রবর লয়। দিল পার্ব্বতীর কোলে। পুত্রের দেখিয়া গৌরী কুঞ্জর বদন। কপালে আঘাত হানি করেন রোদন।। এই পুত্রে আমার নাহিক কিছু কাজ। কেমনে বসিবে পত্র দেবতা-সমাজ।। ুসুবেশ সুরূপ যত দেবত।-নন্দন। তাব পাশে কেমনে বসিবে গজানন।। পার্বতী ভাবয়ে তঃখ গঞ্জিয়া শঙ্করে। বিষাদ শুনিয়া প্রভু আইলা সহরে ॥৩ গৌরীকে কহেন প্রভু না ভাবিহ তুঃখ। পাইলৈ অনেক ভাগ্যে পুত্ৰ গ্ৰুম্থ।

১-১ অঙ্গনোডা দিয়া উঠি বিদিল পুক্লি। (বঙ্গ)
চিরকাল কোলে করি পালিল পুক্লি। (গ)
২-২ জাতি মোনহর দব দেবের নন্দন। (গ)
৩-৩ এতেক বচন জয়া কহিল দহরে।
স্থানি পস্পতি কাইল দত্তরে॥ (গ)
গোরীর বিনয়ে জইয়া কহিলা শহরে।
স্থানী লঘুগতি প্রভু আইলা দত্তরে॥ (দী)

এই পুত্র তোমার ভুবনে বিল্পরাজ।
ইংগাকে পুজিবে সব দেবতা-সমাজ।
সকল দেবতা-মাঝে আগে পাবে পূজা।
ইংগারে পূজিবে পুরন্দর আদি রাজা॥
সকল দেবের মাঝে হইবে প্রধান।
এই হেতু ইংগার গনেশ অভিধান॥

এতেক বচন যদি বলে পশুপতি। পুত্রবৃদ্ধি গণেশেরে করিলা পার্ব্বতী॥ অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

কাতিকেয়ের জন্ম

ইকুসুম-রচিত ঘর পার্ববতী সহিত হর কুসুম-শয্যায় নিয়োজিত। তুঃসহ মদন-শর তুই অঙ্গ জর জর তুই তন্তু পুলকে পূরিত॥ কার্ত্তিকের শুনহ জনম। শুনহ তাহার কথা যেই হেতু ছয় মাথা শুনিলে কলুষ বিনাশন॥

শ্বতিরিক্ত

নহিব যেখানে আগে গনেদের মান।

সকলি বিফল তার পুজার বিধান।। (খ)

১-১ রতন মন্দির ঘরে পার্কতি সম্বরে

কুসুম সয়নে নিযোজিত। (গ)

কৃষ্ম-রচিত ঘরে গিরিস্থতা গলাধরে

কুষুম-শয়নে নিজোজিত। (দী)

রতি-রঙ্গ কুভূহলে মহেশের বীর্ঘ্য টলে গৌরী তারে ধরিতে না পারে।

অনলে ফেলিল গোরী অনল সহিতে নারি ফেলাইল স্থরধুনী-নীরে॥

>প্রবল চণল-ভঙ্গা সহিতে না পারে গঙ্গা রাখে শরমূলের সমীপ।>

অমোঘ শিবের বিন্দু তথি হইল গুণসিন্ধু ছয়মুখ কুমার কার্ত্তিক ॥

কাঞ্চন-বরণ তন্তু শ্রভিন মদন জন্তুই শরমূলে হইল প্রকাশিত।

কৃত্তিকা ত আদি করি চল্রের যে ছয় নারী কুমারে দেখিল আচস্থিত॥

কুত্তিকা ধরিয়া তোলে রোহিণী করিল কোলে মৃগশিরা করিলা চুম্বন।

আর্দ্রা আর পুনর্বস্থ দেখিল। "স্থলর শিশু"
পুয়া কৈল অনেক পালন॥

° স্মরিয়া পূর্বের কথা হৈল ছয় উপমাতা ছয় মুখে দিলা স্তনপান।°

সকল ভূষণযুত পুষিয়া পালিলা স্কৃত গৌরী কোলে করিলা আধান দ

১-১ মোহাতেজ কলেবরে গন্ধা সহিবারে নারে শব্দুলে পেলে বলাধীক। (দী)

২-২ যেন দেখি হিমভার (দী, থ এবং গ)

৩-৩ মানিলা পরম অস্ব (দী ও খ)

⁸⁻⁸ শ্বরিয়া পূর্ব্বের কথা ভথি হইল ছয় মাথা ছয় মূথে করে স্তন পান। (খ)

তুই পুত্র তিন দাসী দেখি হর অভিলাষী
গৌরী সঙ্গে রহিলা নিবাসে।
'গৌরী দৈব নিয়োজনে কলি কৈল মার সনে'
শ্রীকবিকশ্বণ রস ভাষে॥*

১-১ হুই ভাই মাএর কোলে খেলা খেলে কুতুহলে (গ)

* অতিরিক্ত-

হরগোরীর পাশাক্রীড়া

ত্রিপুরা রঙ্গে হরের সঞ্জে इर्टर वित क् कूरल । এমন সময় জয়া পাশা দেয় रत वल भोती थल। পদ্মা বলে বাণী শুন শূলপাণি যদি বা থেলিবা রঙ্গে। यिन वा थिनिद्य शांत्रिल कि मिद्य বলি তবে থেল সঙ্গে। বলে ত্রিনয়ণী যদি হারি আমি গায়ের ভূষণ দিব। যন্তপি থেলিব কহ সদাশিব ভোমার কি ধন পাব। বলে ত্রিপুরারী ভন তুমি গৌরী থেলহ আগে ত পাশা। হারি পরাজ্ঞয় দৈবে যদি হয় তবে করিছ লৈতে আশা॥

শুন মোর বাণী. প্রভু শূলপাণি ইহাত না বুঝি আমি। থেলিয়া হারিবে কিবা ধন দিবে তাহা রাথ আগে তুমি॥ কখায় না যায় গৌরী ধন চায় হাসিয়া বলেন শূলী। শুন মোব পুণ আছে যেবা ধন নিবে ত সিদ্ধির ঝুলি॥ মহেশ শঙ্করী থেলে পাশা সারি রচিয়া হীরার ঢাল। বসিয়া খেলিতে লাগিল কহিতে সাক্ষী হইও মহাকাল। দশ দশ দশে তাকে ভুবনেশে · · · গতি থেলে। দেখি অভিমূথে পাষ্টি ঘষি বুকে পার্বতী চৌরঙ্গ ফেলে। হাতে করি বলে প্রা কুতুহরে এক দানে হুই কাট। দাতা দাতা বলি ভাকে ত্রিপুরারী দোয়া চারি হৈল বাট॥ ত্রিপুরা ফেলিল চুরী। পড়িল তু-তিয়া স্থথ হৈল হিয়া হারিল মদন-অরি। বৃদ্ধি পাইল লোপ শিবের বাড়ে কোপ বলে পাত আর চ'লে। ভিক্ষার কারণে যাইবা বিহানে জিনি লেই বাঘচাল।

গৌরীর সহিত মেনকার কলহ

কালী রাঙ্গী পাসাসারি আনিলা পার্ব্বতী।
আপনি লইলা কালী রাঙ্গী পদ্মাবতী॥
হাতে পাষ্টি করি গৌরী ডাকে দশ দশ।
'হেনকালে মেনকা আসি বলেন কর্কশ॥'
তোমা ঝিয়ে হৈতে গৌরী মজিল 'গিরিয়াল।'
ঘরে জামাই রাখিয়া পুষিব কতকাল॥
তথ্য উথলিতে গৌরী নাহি দেহ পানি।
সখী সঙ্গে খেল পাশা দিবসরজনী॥

পাশা কর দূর শুনহ ঠাকুর সভার আছয়ে কাজ। তুমি ভূতনাথ থেল মোর সাথ হারিলে পাইবে লাজ। পুন থেলে গৌরী দশ হই চারি থেলিল করিয়া শলী। ছ-ভিয়া ফেলিয়া হারিল খেলিয়া হরিণ লাঞ্ছন মৌলি । কহে সদাশিব আছে মোর দৈব সন্মুখে নিবসে কাল। হারিল শহর 'দেব দিগম্ব ছাড়ি দিল বাঘছাল। পাশা ছাড়ি যান করিল ভোজন ত্ত্বে কভু ভিন্ন নহে। শীকবি মৃকুনদ রচি পরিবন্ধ দেবের চরণে কহে। (বঙ্গ) ১-১ হেনকালে মেনকা কোপের হৈল্য বশ 🛚 (ক े २-२ गत्रवान (मी)

দরিদ্র তোমার পতি পরে বাঘছাল।
সবে ধন বুড়া বৃষ গলে হাড়মাল॥
প্রেত ভূত পিশাচ মিলিল তার সঙ্গ।
অন্তদিন কত নাকি কিনা দিব ভাঙ্গ॥
ইরান্ধি বাড়ি আমার কাঁকাল্যে হইল বাত।
ঘরে জামাই রাখিয়া জোগাব কত ভাত॥
লোক-লাজে স্বামী মোর কিছু নাহি কয়।
জামাতার পাকে ঘরে হইল সর্পভয়॥

#

তুই পুত্র তিন দাসী স্বামী শূলপাণি।

ভূত প্রেত পিশাচের লেখা নাহি জানি।।

এমন শুনিয়া গৌরী মায়ের বচন।
ক্রোধে কম্পমান তন্তু বলেন তখন।।
জামাতারে পিতা মোর দিল ভূমিদান।
তাহে ফলে মাস মুগ তিল সর্যা ধান।।
রান্ধিয়া বাড়িয়া মাতা কত দেহ খোঁটা।

ব্যাজি হইতে তোমার ছুয়ারে দিন্ধু কাঁটা।।

১-১ সদাই কতেক সহিব উৎপাত। বান্ধিয়া বাড়িয়া কাঁকালে হইল বাত॥ (খ) অভ্যাগত সদাই দাকণ উৎপাত। বান্ধ্যা বাড়্যা দিয়া গ কাকালে বেলে বাত॥ (দী)

শ্বতিরিক্ত—
 রুপা কাজে ফিরে সামী নাহি চাসবাস।
 উড়িতে কাপড় নাহি গাএ নাহি মাস। (গ)
 তোমার বাড়ি আসিতে পুতিয়া যাব কাঁটা। (খ)

২-২ তোমার বাড়ি আসিতে পুতিয়া যাব কাঁটা। (থ) আসিতে তোমার ঘরে পথে দিল কাঁটা। (দী)

মৈনাক তনয়া লয়া সুখে কর ঘর।
কত না সহিব খোঁটা যাব দেশান্তর॥
এত বলি যান দেবী ছাড়ি মায়ামোহ।
ঝলকে ঝলকে বহে লোচনের লোহ॥
শঙ্করে কহিলা গৌরী সব বিবরণ।
অস্থিকা-মঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ॥

শঙ্করের ভিক্ষা

গৌরী সঙ্গে যুক্তি করি চলিলেন ত্রিপুরারি
শৃশুরের ছাড়িয়া বসতি।

ভৈবনে সম্বল নাহি চিস্তিলেন গোঁসাই
ভিক্ষা অনুসারে কৈল মতি॥

তিদশের ঈশ্বর ভিক্ষা মাগে ঘরে ঘর
আরোহণ করি ব্যবরে।

বিভূতি-ভূষিত অঙ্গ বাজান ভম্বরু শিঙ্গ
ফরিয়া বুলেন ঘরে ঘরে॥

কপালে চাঁদের কোঁটা বাস্থুকি গলাতে পাটা
অঙ্গ শোভে বিভূতি-ভূষণে।

মাথাতে বেড়িত ফণী অমূল্য যাহার মণি
সর্পের কুণ্ডল দোলে কানে॥

১-১ রাখি ওথা পার্কতি কান্তিক গনপতি ভিক্ষা করিলা পস্থপতি ॥ (গ) ২-২ ' প্রেড ভূতগণ সঙ্গে নাচেন পরম রঙ্গে শিঙ্গা ভূম্ব লৈয়া করে ॥ (বঙ্গ) ৪—2803 B. T.

কানে ধুতুরার ফুল অমূল্য যাহার মূল বাস্থ্রকি. কিরীট-বিভূষণ। হাতে শোভে লাউ-থাল গলেতে হাডের মাল আনন্দে ভ্রময়ে পঞ্চানন॥ ফিরয়ে উজান-ভাটি চৌদিকে কোচের পটী কোচ-বধু ভিক্ষা দেয় থালে। থাল। হইতে চালগুলি পুরিয়া রাখেন ঝুলি 'কান্ধেতে' লম্বিত ঝুলি দোলে॥ কেহ দেয় চাল কড়ি কেহ দেয় ভাল বড়ি কুপী ভরি তৈল দেয় তেলী। লবণিয়া দেয় লোণ স্বত-দধি গোপগণ বেন্সা দেয় ২ভাঙ্গের২ পুটুলী॥ ময়রা মোদক দেই তস্ত্রধর স্ত্র দেই ৩ তামুলীতে দেয় গুয়া-পান। বেলা হৈলা তুই প্রহর মহাদেব আইলা ঘর °কার্ত্তিক-গণেশ° আগুয়ান॥ মহেশ ঝাড়েন ঝুলি চাল পাইল কভগুলি নানা দ্রব্য রাখে নানা ঠাইয়ে। দেখিয়া মোদক খই 'তুজনে আইলা ধাই' কন্দল লাগিল তুই ভাইয়ে॥

১-১ দাদশ (ক, থ এবং দী)

২-২ **নাগ্যের (দী**)

৩-৩ স্ত্রেধরে দেয় থই (ক এবং দী) স্ত্রেধার দেয় থেই (গ)

৪-৪ কার্ত্তিক আইলা আগুরান (ক এবং দী)

৫-৫ দোঁহে আল্যা ধাতা ধাই (খ)

ইজ্জনে প্রবাধ করি বাটিয়া দিলেন গৌরী রান্ধিলেন আপনি ভবানী। ইভোজন করিলা হর গৌরী গুহ লম্বোদর স্থাথে সবে বঞ্চিলা রজনী॥ মহামিশ্র ইত্যাদি॥

হরগৌরীর কলহারস্ত

রাম রাম সোঙরণে পোহাল্য রজনী।
শয্যা হইতে প্রভাতে উঠিলা শূলপাণি॥
৺নিত্য নিয়মিত করি কর্ম সমাপনে।৺
বসিলেন মহাদেব শার্দ্দ্ল-আসনে॥
ডানি বামে বসিলেন কার্ত্তিক লম্বোদর।
গৃহিণী বলিয়া ডাক দিলেন শঙ্কর॥
সমুখে রহিলা গৌরী করিয়া অঞ্জলি।
কহিলা শঙ্কর তারে কিছু কুতৃহলী॥
অবধানে শুন প্রিয়া আমার বচন।
সকালে রন্ধন কর করিব ভোজন॥
কালি ভিক্ষা কৈলু আমি ভ্রম বহু ধামে।
শসকালে ভুঞ্জিয়া আজি রহিব বিশ্রামে॥
শসকালে ভুঞ্জিয়া আজি রহিব বিশ্রামে॥
শ

১১ দুই ভাগ সম করি বাটীঞা দিলেন গৌরী কন্দলি ভান্দিল ততথনে ॥ (গ)

২-২ গৌরী রান্দি ভাত ত ভূঞ্জিল ত্রিদসনাথ লম্বোদর কাত্তিক ভবানি॥ (গ)

৩-৩ তুর্গা নিত্ত গিহকম করিল মার্চ্চনে। (গ) ৪-৪ শকলে ভোজন করি থাকীব আশ্রমে। (দী)

>আজি গণেশের মাতা রান্ধ মোর মত।> নিমে সিমে বেগুনে রান্ধিয়া দিবে তিত। স্থুকুতা শীতের কালে বড়ই মধুর। কুমড়া 'বার্ত্তাকু' দিয়া রান্ধিবে প্রচুর ॥ ন্টীয়া কাঁটাল-বিচি সার গোটা দশ। ফুলবডি দিবে তাহে আর আদা-রস।। কটু তৈল দিয়া রান্ধ সরিষার শাক। বাথুয়া ভাজিয়া তৈলে কর দৃঢ় পাক॥ বান্ধিবে মুসরি ডাল দিবে টাবা-জল। খণ্ড মিশাইয়া রান্ধ করঞ্জার ফল।। ঘুতে ভাজি হুগ্ধেতে ফেলিবে ফুলবড়ি। °চডিচডি করিয়া রান্ধ পলতার কড়ি॥° রান্ধিবে ছোলার ডালি তাহে দিবে খণ্ড। আলস্থ তেজিয়া জ্বাল দিবে তুই দণ্ড।। মানের বেসারে দিবে কুমড়ার বড়ি। ভাঙ্গিয়া কাঁটাল-বিচি দিবে চারি কুড়ি॥ ঘুত জিরা সম্ভলনে রান্ধিবে পালঙ্গ। ঝাট স্নান কর গৌরী না কর বিলম্ব॥ আপনে উল্ভোগ যদি কর তুমি গৌরী। অবশেষে রন্ধন করিবে কিছু ক্ষীরি॥

এমন শুনিয়া গৌরী শিবের বচন। কুতাঞ্জলি হইয়া করেন নিবেদন॥

১-১ সাবধান হঞা স্থন গনেসের মাতা। (গ)

২-২ বাগ্যন (দী)

৩-৩ চোঙা চোঙা করিয়া ভান্ধিবে পলা কড়ি॥ (क)

কালিকার ভিক্ষা নাথ উধার শুধিমু। অবশেষে যেবা ছিল রন্ধন করিমু ॥ রন্ধন করিতে ভাল বলিলে গোঁসাই। প্রথমে যে দিব পাত্রে তাই ঘরে নাই॥

আজিকার মত যদি বান্ধা দেহ শূল।
তবে সে আনিতে পারি প্রভু হে তভুল॥
এমন শুনিয়া শৈলস্থতার ভারতী।
রোধযুত হইয়া বলেন পশুপতি॥

আমি ছাড়ি ঘর যাব দেশান্তর

কি মোর ঘর-করণে।

হয়ে স্বতন্তর সুখে কর ঘর

লইয়া গোহা-গজাননে॥

কত ঘরে আনি লেখা নাহি জানি

দেড়ি অন্ধ নাহি থাকে।

কতেক ইন্দুর ধায় দূর দূর

গণার মুধার পাকে॥

কারণ করিয়া বাঘা বুলে ধায়া।

দেখিয়া তাহার চাহনি।

বলদ তুর্বল করে টল বল

নাহি খায় ঘাস-পানি॥

শ অতিরিক্ত:

 শাছিলা ভিক্ষের বাকী পালী দশ ধান।
 গণেশের মুধা তাহা কৈল জলপান। (দী)

 ১-১ করুণা করিয়া (গ এবং বঙ্গ)

গুহার ময়ূর ধায় অতি শূ্র
সর্প ধরি ধরি খায়।
হেন মন করে এই পাপ ঘরে
রহিতে না জুয়ায়।

আন বাঘছাল সৈঙ্গ। হাড়মাল

ডম্বুব ভিক্ষার ঝুলি।
শুনরে নন্দী হও মোর সঙ্গী
ঘরে না রহিবে শূলী।
এত বলি ঘর ছাড়িল। শঙ্কর
চলিলা ব্যবাহনে।
ইকরিয়া বিনতি কহেন পার্ববতী
শ্রীকবিকশ্বণ ভণে॥ই

গৌরীর খেদ

কি জানি তপের ফলে বর মিলেছে হর। ব্পাট-পড়শী নাহি আসে দেখি দিগম্বর॥ই

শ সতিরিক্ত :-- দেশে দেশে ফিরি
 ক্রায় আয় নাহি মিলে।
 গৃহিণী তুর্জন
 বাস করি তরুতলে॥ (গ এবং দী)
 ১-> করি আত্মঘাতী
 কান্দে ভগবতী
 শীক্রিকয়ণে ভনে॥ (ক)
 ২-২ সই সালাতি নাহি আত্মে দেখা দিগম্ব॥ (খ, গ এবং

বাপের সাপে পোয়ের ময়ুর সদা করে কেলি। গণার মুষায় কাটে ঝুলি আমি খাই গালি॥ বাঘ বলদে দ্বন্দ্ব সদা নিবারিব কত। অভাগীর কপাল দারুণ দৈবহত॥ ময়ুর-মুষায় দ্বাদ্বন্দ্বি সদাই কন্দল। ওই নিমিতে সদা গালি মোর কর্মফল। দারুণ দৈবের ফলে হইমু তুঃখিনী। ভিক্ষার তাতে দারুণ বিধি করিল গৃহিণী॥ উন্মত্ত ল্যাংটা হর চিতাধূলি গায়। দাগুইতে শিবের জটা অবনী লোটায়॥ একত্রে শুইতে নারি সাপের নিশ্বাসে। তার অধিক প্রাণ পোডে বাঘ-ছালের বাসে।। পায়ে ধরি ধার করি শুধিতে কোন্দল। পুনর্বার উধার করিতে নাহি স্থল। উচিত কহিতে আমি সবাকার অরি। °তুঃখ-যৌতুক দিয়া বাপ বিভা দিল গৌরী ॥ উরে ফণিপতি শোভে ললাটে দহন। জটায় জাহ্নবীদেবী ধরেন পঞ্চানন॥ কি কহিব সহচরি মনের বিরল কথা। মিখ্যা নারী করিয়া মোরে স্থজিল বিধাতা॥ দোষ-ঘাট নাহি কিছু পাপ-প্রমাদ। কি কারণে পদ্মা এত পাই অবসাদ 🛚 দোষ বিনে প্রভু মোরে বলে কট্তর। একা বসি থাক শিব ছাডি যাব ঘর॥

১-১ ছঃথযুত জনে বাবা বিভা দিল গৌরী॥ (ক) নানা যৌতুক দিয়া বাপা বিভা দিল গৌরী॥ (খ)

এমন শুনিয়া পদ্মা দেবীরে বুঝান। অস্থিকামঙ্গল কবিকঙ্কণে গান॥

পদ্মার উপদেশ

শুন গো শিখরিস্থতা কহি ভবিষ্যুৎ কথা তোমার পূজার ইতিহাস। সপ্তদ্বীপে যুগে যুগে তোমার অর্চনা আগে আপনে করহ পরকাশ। দ্বাপর-যুগের শেষে কলিঙ্গরাজার দেশে বিশ্বকর্মা রচিবে দেহারা। মঙ্গলচণ্ডিকা-রূপে স্বাসন করিয়া ভূপে পূজা নিবে দৈন্ত-ছঃখ-হর।॥ পশুর লইবে পূজা সিংহেরে করিবে রাজা निज घन्छ। पिरव निपर्भरन । দিবে গো সম্পদ-ভূমি বদারিজ্য নাশিয়া তুমি **ং** কাননে স্থাপিবে পশুগণে ॥ প্রথম কলির অংশে জন্মাবে তথাখেটী বংশেত मर्ख्य-नन्त्र गोलाश्वरत । ছলিয়া অবনী আনি নিবে তার পুষ্প-পানী অবশেষে নিবে °সুরপুরে • ॥

১-১ नित्रीभन (१)

২-২ দার তুর্বাকর ভূমি (ক)

৩-৩ ব্যাধের (বন্ধ)

৪-৪ নিজ পুরে (ক এবং বঙ্গ)

^১তালভঙ্গ করি ছলা দেব-ক্তারত্বমালা ছলিয়া আনিবে বস্ত্রমতী। গন্ধবণিকের জাতি খুল্লনা হইবে খ্যাতি বিবাহ করিবে ধনপতি ॥১ পতি যাবে দেশান্তর বরে সতা স্বতন্তর বহুবিধ তারে দিব ছঃখ। কাননে পূজিয়া তোমা হবে পতি-প্রাণসমা তুমি তারে হইবে সন্মুখ। ^২ছলিয়া আনিয়ে পূর্বেক জন্মাইবে তার গভে মহেন্দ্র-নন্দ্র মালাধরে। জ্ঞাতি-বন্ধু ধরি ছল পরীক্ষাতে অনুবল **ুসঙ্কটে** রাখিবে তুমি তারে ॥° রাজ-আজা শিরে ধরি সঙ্গে লইয়। সাত তরী ধন শতি চলিবে সিংহলে। লজ্বিরা তোমার ঘট ছয় ডিঙ্গা হবে নট বন্দী হবে রাজ-বন্দীশালে ॥ ঞীপতি হইবে স্বৃত সঙ্গে সাত তরী যুত চলিবেন পিতার উদ্দেশে। আপনি করিবে দয়া রাজকন্সা বিভা দিয়। সাধুরে আনিবে নিজ বাসে॥

১-১ রত্মালা রপবতি তালভঙ্গে আনী কীতি
জন্মাইবে বণীকের ঘরে।
সদাগর ধনপতি হইবে তাহার পতি
নিবসতি উজানী নগরে॥ (দী)
২-২ আসিবেন পতিবাদে পতিসঙ্গে লিলারসে
স্তগর্ভে হব মালাধর। (দী)
৩-৬ বিশহটে হবে শুভকর॥ (দী)

দেবীর আজ্ঞায় পুরী-নির্ম্মাণ

শুনিয়া পার্বেতী পদ্মার উপদেশ।

যুক্তি কৈল সখা সঙ্গে উপায় বিশেষ।

বিশ্বকর্মে ভগবতী করিল স্মরণ।

স্মৃতিমাত্রে বিশ্বকর্মা দিল দরশন॥

অষ্টাঙ্গ লোটায়া বিশাই হৈল নতিমান

আশ্বাসিয়া ভগবতী তারে দিলা পান।

বিনয় করিয়া বলে দৈল্য-ছঃখহরা।

কলিঙ্গ নগরে বাছা নির্মাহ দেহারা।

১-১ পৃজিবেন সকল মকলে॥ (ক)

২-২ ভার দি তোমারে বাপা নিজ পূজামূল।
কলিঙ্গ নগরে মোর তুলিবে দেউল॥ (খ)
তোরে ভার দিএ বিসাই নিজ পূজামূল।
কংস নদি তিরে তুমি নির্মাহ দেউল॥ (গ)

এত শুনি বিশ্বকর্মা দেবীর বচন। কুতাঞ্জলি করিয়া করেন নিবেদন ॥ সঙ্গে মোর দেহ যদি বীর হতুমান। তবে দে দেউল মাতা করিগে নির্মাণ 🖪 স্মরণ করিতে মাত্র আইলা মারুতি। হাতে পান দিয়া চণ্ডী দিলেন আরতি ম উপনীত বিশ্বকর্মা কংসনদী-কুলে। শুভক্ষণে আরম্ভ তমালতক্মূলে। সংভান্ন বন্ধে বিশাই ধরিলেন সূতা। ইন্দ্রনাল পাষাণে রচিত কৈল পোতা ॥ ু উপাড়িয়া শৈলে আনি দেয় হনুমান। °চারি প্রহর রাত্রে° করে দেউল নির্মাণ n হারা নীলা পাষাণে রচিত কৈল 'চুড়া'। রসাল দর্পন দিল চারিদিকে বেড়া n ধবল চামর শিরে নেতের পতাক।। সুধাকর বেডি যেন ফিরয়ে বলাক।। °নানা চিত্রে চিত্রিত করিল জগতি। হেমম্য তথি নির্মিল। ভগবতী ।।

১-১ পোতা বন্দিতে বিদাই চালাইল স্থতা। (গ)

২-২ লুটিয়া বোছন গিবি আনে হত্যান। (দী)
মুণ্ডে আরোপিয়া গিরি আনে হত্যান। (থ এবং বল)

৩-৬ নিশির ভিতরে (থ) শিশির ভিতরে (বঙ্গ)

⁸⁻⁸ ছড়া (দী)

৫-৫ নানা চিত্র করিল যে করিয়া যুগতি। (বঙ্গ)

কাঞ্চনের তুই ঝারি রুধভে মহেশ। ময়ুরে কার্ত্তিক লেখে মৃষিকে গণেশ 🖪 হন্তুমান অভয়ার নিয়া অন্তুমতি। ^১পাথরে নথরে লেখে পূজার পদ্ধতি॥^১ নখে কোঁড়ে হন্তুমান দীর্ঘ সরোবর। চারিখানা পাড় যেন দেখি মহীধর॥ পাষাণে বান্ধিল তার চারিখানি ঘাট। নানা বর্ণ পাষাণের রচিত কৈল বাট ॥ শৃন্য দেখি সরোবর হন্তু মহাবল। পাতাল ভেদিয়া তোলে ভোগবতীর জল॥ সরোবর বেড়ি কৈল বিচিত্র উন্থান। অশ্বর্থ প্রস রম্ভা রোপে হনুমান।। তাল নারিকেল আম্র দালিম্ব খেজুর। ংকরঞ্জাং কমলা টাবা রোপেণ্বীজপুরং॥ নেহালী বান্ধুলী জবা টগর তুলসী। রঙ্গণ মালতী জাতি শিউলি অত্সী॥ মল্লিকা মাধুরী লতা আর কুরুবক। কেতকী ধাতকী কুন্দ আর কুরন্টক॥ ° অভয়ার আদেশে বীর প্রননন্দন।° মলয় হইতে আনি রোপিল চন্দন।।

১-১ পাধাণে রচিত কৈল পূজার পদ্ধতি । (বঙ্গ এবং ক)

२-२ कक्ना (मी, थ छ क)

৩-৩ জামির (খ)

⁸⁻⁸ রজনী সময় গেলা প্রন্নশ্বন। (বঙ্গ রাতী দিনা যাগরন প্রন্নশ্বন। (দী

নির্মাণ করিতে হইল নিশি অবসান। বিদায় করিল চণ্ডী করিয়া সন্মান ॥ স্বপ্ন দিতে যান চণ্ডী নূপতি-সকাশ। শ্রীকবিকঙ্কণ গান অস্থিকার দাস॥

কলিঙ্গরাজের প্রতি শ্বপ্নাদেশ

যামিনীর অবশেষে রাজার শিয়র-দেশে স্থপন কহেন ভগবতী।

সজল উভয় নেত্র লোমাঞ্চিত হইল গাত্র শ্রুবণ করেন মহীপতি। শুনুরে কলিঙ্গ মহীপাল।

ছাড়ি দক্ষজনি-অঙ্গ করি তার মথ ভঙ্গ অবনী না আসি বছকাল ॥

করি বহু পরামর্শ আইলাম ভারতবর্ষ লইতে তোমার পূজা আগে।

^১করাব রিপুর ধ্বংস বাড়াব তোমার বংশ নুপতি করাব নর-আগে ॥^১

হইয়া তোরে কুপাময়ী সমরে করাব জয়ী একচ্ছত্রা পালিবে অবনী।

বাড়াব তোমার যশ ভুবন করাব বশ করিব নূপতি-চূড়ামণি॥

১-১ করিব নূপের শেষ বাড়াব তোমার যশ লইব তোমার পূজা আগে॥ (থ) এই কংসনদী-তীরে ইচ্ছিয়া কুস্থম-নীরে নিরমিলু দেহারা আপনি।

প্রজা পাত্র পুরোহিত সঙ্গে লৈয়া সাবহিত আপনে পৃজিবে নৃপমণি॥

প্রয়াগে ললিত। নামে বিমলা পুরুষোত্তমে কামবতী যে গন্ধমাদনে ॥

ংগামন্তে^২ গোমতী-নাম। তামলুকে বর্গভীম। উত্তরে বিদিত বিশ্বকায়া।

জয়ন্তী হস্তিনাপুরে বিজয়া নন্দের ঘরে হরি-সল্লিধানে মহামায়া॥

তুষিতে অমর সর্কে দৈবকী সপ্তম-গর্ভে হৈলা প্রভু ক্ষিতি-ভার-নাশে।

হরিতে কংসের ভীতি যোগ-নিজা ভগবতী
থুইলু রোহিণী-গর্ভবাসে॥

ভোজরাজ-মহাতক্ষে শ্রীহরি করিয়া অক্ষে বস্থুদেব গেলা নন্দাগারে।

অগাধ যমুনা-জল মায়া পাতি কৈলুঁ স্থল শিবারূপে নদী কৈলুঁ পারে॥

১-১ গৌরী নাম মহেষ ভুবনে। (খ)

২-২ গোকুলে (গ ও বঞ্চ)

পরিচয় পেয়া রায় ধরিল চণ্ডীর পায়
কোকিল পঞ্চম স্বরে গায়।
'প্রভাত হইলা নিশা শুনি কোকিলের ভাষা
শযা তেজি উঠে দণ্ডরায়।'
মহামিশ্র ইত্যাদি।

চণ্ডীপুজা

শুভ স্বপন দেখি নুণতি হইলা সুখী দিলেন হুন্দুভি-ঘোষণা। **২প্রতি ঘ**রে ঘরে ২ কলিঙ্গনগরে পূজিবে দেবী ত্রিনয়ন। । প্রভাতে করিয়া স্নান ব্ৰাহ্মণে দিলেন নান ভট্টেরে দিলেন গজ-ঘোড়া। রুদ্রাক্ষ কঠে মাল পাইয়া শুভকাল পূজেন শুভ ঝারি জোড়া॥ পুজেন নরপতি আনন্দ হইয়া মতি ব্রাহ্মণে করেন বেদগান। খনক গজবাস্প শঙ্খ ঘণ্টা ডম্ফ ুবাজয়ে ভমক বিষাণ ॥°

>-> হইলে প্রভাতকাল পরস্ব ফুকারে ভাল আনন্দ বাধাই রাজপুরে। (বঙ্গ এবং দী) ২-২ বিভব-অন্থুসারে (দী এবং বঙ্গ)

৩-৩ বাজয়ে বিবিধ বিধান ॥ (ক)

দেউল আকস্মিত কাঞ্চন-বিরচিত দেখিয়া সবিস্ময় মতি। যতেক শিশু যুব। বিহঙ্গ পশু কিবা দেখিতে ধায় লঘুগতি ৷ **'**নিকট উদভট[়] কংসনদীর তট পুরট-রচিত দেহার।। ২পৌর-নিত্রস্বিনী ২ বদনে জয়ধ্বনি দেখিতে ধায় স্বতন্তরা ৷ জ্ঞাতি বন্ধু যত অমাত্য পুরোহিত বন্দয়ে নুপ বারে বারে। অমূল্য নানাবিধি ক্ষীর খণ্ড মধু দধি নৈবেছ দিয়া ভারে ভারে॥ মৃদঙ্গ শঙ্খ পড়া দোখণ্ডি বাজে যোডা মাতঙ্গ-পিঠে জোড়া দাম।। ছাডিয়া নিজালয় বদনে জয় জয় দেখিতে আইসে যত রাম। n

১-১ উভতট নিকট (বৃদ্ধ)
উভয় উদ্ভেট (দী)
নিকট উদয় ভট (ক)
২-২ কুলের অন্ততনী (দী)

হইয়া নিত্যতনী (ক)

* অতিরিক্ত—

পূজার অবদানে মহিষ ছাগল আনে
উচ্ছগি দিলা বলিদান।
দেউল চারিভিতে শোণিত বহে শ্রোতে
চামুগুা করে বক্তপান। (বঙ্গ)

অন্তমী ভৌমবারে ধাড়শ উপচারে

পুজেন রুশ পুলাবান।

মহিষ ছাগ মেষ রোহিত রাজহংস

শতেক দিয়া বলিদান ॥

তণ্গুল অন্ত ছুর্ববা জাহ্নবী জলগর্ভা
কাঞ্চন-বিরচিত ঝারি।

অঞ্জলি সরসিজে চণ্ডিকা রাজা পূজে

নাচে গায়াবভাধরী ॥

পূজিবারে অভ্যারে প্রণতি বারে বারে
রুশতি করিয়া অঞ্জলি।

প্রদক্ষিণ নাত রূপতি করে স্কৃতি

শুলকে অঙ্গ কুত্হলা ॥

শ্রীরঘুনাথ ইত্যাদি॥

ক**লিঙ্গ**রাজের স্তব

তুর্গ। তুর্গা পরা তুমি তুর্গতিনাশিনী।
গোকুলরক্ষিণী জয়া যশোদা-নন্দিনী॥
নিদ্রারূপা হৈয়া তুমি ভাণ্ডিলে প্রহরী।
যে কালে দৈবকী-গর্ভে জন্মিলা ঞীহরি।

১-১ ভূপতি পুজেন সাবধান। (গ)

২-২ আনন্দে পুলকপটলী ॥ (বৃদ্ধ) অহৃতে পুলকপত্তলী ॥ (দী) অহৃদ্ধে পুলকপুটাঞ্চলি ॥ (গ) সৃদ্ধিতে পুলক পুটলি ॥ (খ)

^{9 -2303} B. T.

নানা অবতারে তুমি বিষ্ণু-সহায়িনা।
তুর্গতিনাশিনী তুমি তুঃখ-বিনাশিনী ॥
যমুনা আবর্ত্তশালী বিষম করালী।
তথি পার কৈলে মাতা হইয়া শৃগালী ॥
ভূ-ভার খণ্ডিতে কৈলে আপনে প্রকার।
কংস-ভয়ে কুষে কৈলে কালিন্দীর পার

বিপদনাশিনী তোমা গায় হরিবংশে।
কুষ্ণের করিলে কার্য্য ভাণ্ডাইয়া কংসে।
নন্দগোপ-স্থতা শুস্ত-নিশুস্ত-নাশিনী।
ভূবন-বন্দিতা বিদ্ধ্য-শিখরবাসিনী।
নানা-অস্ত্র-বিভূষিতা অস্তমহাভূজা।
বলি দিয়া অস্তলোকপাল কৈল পূজা॥
ইরাবণের বধহেতু জন্মাইলে সীতা।ই
তোমার বোধন কৈলা অকালে বিধাতা॥
বোড়শ-উপচারে তোমা পূজিল রঘুনাথ।
তবে রাবণের হইল সবংশে নিসাত॥
হৈল মধুকৈটভ হরির কর্ণমূলে।
ব্রহ্মারে হানিতে যায় নিজ বাহুবলে॥
নাভিপদ্মে বিধাতা স্থজিলা ভগবতী।
তুই অস্থুরের বধ নারায়ণে মতি॥

* অতিরিক্ত—

কোতুকে শুইয়াছিলা দৈবকীর কোলে। করে পদ ধরি কংস বধিবারে তোলে। (বৃদ, খ) কংশ করে থাকী মাতা উঠিলা গগনে। জুইয়াকারে পূজন করিলা শুরগণে। (দী)

১-১ রাবণের বধ হেতু মিলিয়া দেবতা। (বঙ্গ)

যেই জন না করে তোমারে সহায়।
মূল ছাড়ি সেই মৃঢ় ডাল পানে চায় ॥
যেই জন নাহি করে তোমার পূজন।
সেই নর কিবা জানে কুষ্ণের ভজন ॥
কাত্যায়নী পূজা করি পাইল বরদান।
নিদ্যোপ ব্রজক্তা তাহাতে প্রমাণ॥
**

এত স্থাতি কৈল যদি কলিঙ্গ-নূপতি। বর দিয়া কৈলাসে উরিলা ভগবতী॥ অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

পশুদিগের প্রতি দেবীর বরদান

পূজার দক্ষিণা দিল হেম শততোলা।
শিরে লৈলা রাজা ব্রাহ্মণের পদধূলা।
দিজে নিয়োজিল নিত্য পূজাতে রূপতি।
শতেক ব্রাহ্মণে নিত্য পদ্ডে সপ্তশতী ।
শহর-সদনে চণ্ডী যান নিজবেশে।
অংশরূপে পূজা নিয়া কলিক্সের দেশে।

১-১ নন্দগোপ জাল নাই ইহাতে প্রমান । (দী) নন্দগোপ স্থত দেবি তাহার প্রমাণ । (বল)

শতবিজ্ঞ
মনীর কারণে প্রভূ নিরুদ্দেশ হৈলা।

দৈবকী রক্তিণী তোমা পৃজি তাঁরে পাল্যা। (দী)
 ২-২ পৃজে শপ্তশতি। (দী)

'বিজ্বন' নিকটে ছিল যত পশুগণ। পথে যাইতে চণ্ডীর পাইল দর্শন। কেশরী শার্দ্দূল গণ্ডা তুরঙ্গ বারণ। শরভ করভ গজ মহিষ তুর্জন 🛭 একে একে পশুর কতেক নিব নাম। অভ্যাব পদে আসি করিলা প্রণাম। উদ্ধার্থ পশুগণ করয়ে 'গোহারি'। কুপা করি মোর পূজা নেহ মহেশ্বরী॥ অপরাধ বিনে পশু সদাই সশস্ক। বর দিয়া ভগবতী কর নিরাতক্ষ।। °শুনিয়া পশুর বাণী দেবী ভগবতী।° পূজা করিবারে সবে দিলা অনুমতি॥ ° মাজা পাইয়। পশুগণ আনন্দে আকুল বনে বনে খুঁজিয়া আনিল। নানা ফুল।। আম জাম শেয়কুল বকুলের ফল। নৈবেছ দিলেন পাছ কংসনদীর জল।। প্রদক্ষিণ নমস্কার করে বারে বারে। নিরাতক্ষ আশীর্কাদ দিল। সবাকারে॥ বাঘে না খাইবে মুগে, কেশরী বারণে ৷ তুরঙ্গ মহিষ দোহে থাক এক বনে॥

১-১ বিপিন (গ ⁾ বিষেৱ (বঞ্চ)

২-২ **জোহারি** (খ)

৩-৩ প্রসংন দ্য়াময় হৈলা ভগবতি। (গ) পশুগণে সদয় হইলা ভগবতী। (বন্ধ)

৪-৪ আ**জ্ঞা পা**য়্যা প**হু**গণ হরিদ অতুল। (খ এবং দী)

অবিরোধে দোহে থাক শশারু খটাশ।
স্মরণ করিলে ছঃখ করিব বিনাশ।।
যেজন যাহার শত্রু থাক মিত্রভাবে।
থাকিবে আনন্দে সবে কেহো না হিংসিবে॥
অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

পশুরাজ-সভা

পশুৰ লইয়া পূজা সিংহেরে করিয়া রাজা
নিজ ঘণ্টা দিলা মহামায়া।

যারে যে উচিত হয় তাবে দিলা সে বিষয়
কৈলা চণ্ডী পশুগণে দয়া॥

সিংহ তুমি মহাতেজা পশুর হইবে রাজা
টিকা দিল ভবানী ললাটে।
তরক্ষু শুনহ কথা ধরিয়া ধবল ছাতা
থাক তুমি রাজার নিকটে॥

শৈরভ কুলীন তুমি সকল পশুর স্বামী
ব্রাহ্মণ যেমন নর-মাঝে।
হইয়া থাক পুরোহিত সকল চিন্তিবে নিতং
এই কার্য্য অন্তো নাহি সাকো!

১-১ শরভঙ্গ নিল তুমি (দী)

২-২ চিন্তহ সভার হিত (গ)

দূর করাইব শোক শার্দ্দুল ভল্লুক কোক বনবরা গণ্ডা মহাবীর। ^২গুরু সঙ্গে যেন ছাত্র হৈয়া পঞ্চ মহাপাত্র প্রতিদিন দিবে ফুলনীর ॥১ সত্য করি মুগরাজে অভয় করিল গজে করি দিল সিংহের বাহন। আনি তথা জোড়া জোড়া বাহন করিল ঘোড়া ুবাজন করিল কপিগণ॥ নিযোজিলু তোমা আমি শুনহ চামরী তুমি চামর ঢুলাবে রাজ-অঙ্গে। আমি তোরে দিমু ভার ফেরু হও রায়বার আপনি থাকিবে তার সঙ্গে॥ বৈগ্য নকুল তুমি °খাইবে বর্ত্তন ভূমি° চিকিৎস। করিবে রাজপুরে। ভুজঙ্গে না জিনিবে তোমারে॥

১-১ ভজিয়া রাজার পায় এই পঞ্চ মহাকায় প্রতিদিন দিবে ফলফুল॥ (খ)

২-২ জোগান (ক) বারান লইয়া (দী)

৩-৩ ইনাম ভূমি (বঙ্গ) বি**ৰ্জ** ভূমি (খ)

৪-৪ পিতরদে দিয়া দীকা (ক)
পথোর সঞ্চয় দীকা (দী)
বত্তের সঞ্চয় দীকা (খ)

পশুর হাজরা মন্ত্র রাখিবে প্রজার ইশস্তুই হবে তুমি রাজার গুয়ারী।

নিশায় জাগিয়া থাক প্রহরে প্রহরে ডাক কোটাল হয়া শৃগাল প্রহরী ॥

নীলকণ্ঠ বলবান বারসিঙ্গা ঢোল কাণ ইপাঁজা মিতা কারফরমা।ই

আমার পূজার ফলে বনে থাক কুতূহলে বাঘে আর না খাইবে তোমা॥

উঠ গাধা ইক্ষতিই খাবে রাজার নফর হবে সম্পদে বিপদে তোর ভার।

আর যত পশুগণ প্রজা হবে সর্বজন মণ্ডল হইবে কালসার ॥

মহামিশ্র ইত্যাদি॥

শিবপূজা-প্রচার

যেকালে অভয়া গেলা কলিঙ্গের দেশ।
সেকালে মহীতে পূজা লইলা মহেশ।
পাতালে পূজয়ে শিবে যত নাগলোক
বর দিয়া হর তার দূর কৈল শোক।

১-১ পূজার (দী)

২-২ পাঁজামৃদাকারশেকর্মা। (দী)

৩-৩ কেম (দী)

৪-৪ সপ্ত পাতালে (দী, বন্ধ, খ)

অবনীমগুলে পূজে ধর্মশীল নর।

১জীবস্তাস করি পূজে মৃত্তিকা-শঙ্কর ॥
ঐহিকে পরম স্থা পরকালে স্বর্গ।
ধর্ম অর্থ কাম মোক্ষ পায় চতুবর্গ।।
পূর মধ্যে দেয় যেবা শিবের মন্দির।
১অভিমত বর পায় রণে হয় স্থির॥১

চৈত্রমাসে পূজে শিবে নানা উপচারে।
ঢাক ঢোল বাত্ত বাজে শিবের মন্দিরে॥
জিব কাটে জিব ফোড়ে করয়ে চড়ক।
১অভিমত স্বর্গ যায় না যায় নরক॥
১৯৯০ মরতেতে পূজয়ে স্বর্জন॥
পিশাচ দান্রে শিবে পূজে প্রতিদিন।
যে জন শঙ্কর পূজে নহে ধনহীন॥

*

অমরাবতীতে শিবে পূজে পুরন্দর। তার পুত্র কুস্তম যোগায় নিলাম্বর॥

১-১ জীবন অবধি (বল্ধ) জীবন-সময়াবধি (দী) জীবন ময়ে (ক)

২-২ বর ত পাইয়া লোক হয় ত স্থান্থির ॥ (গ) ৩-৩ অবিরত বর পায় না যায় নরক ॥ (গ)

* অতিরিক্তঃ---

প্রথমে পূজার যুক্তি করে দৈত্যগণ। শুস্ত জন্ত নিশুস্ত পূজ্য়ে য়েকমন॥ মহীয চিকুর পূক্ত বাতাপী ইল্লোল। পূজিয়া শঙ্করে তারা পাল্যা নানা ফল॥ (দী) পূজা নিয়া শূলপাণি আইলা কৈলাস। হেন কালে দেবী আলা শিবের সকাশ 🖪 করজোড় করি তুর্গা করিল প্রণতি। আশীষ করিয়া জিজাসিলা পশুপতি দ কহ না ভবানী তব পূজার বারতা। চরণে ধরিয়া তারে কহে গিরিস্থতা॥ অষ্ট দিন পূজা মোর অবনী ভিতর। ^১তিন দিনের কথা তার নিয়া নীলাম্বর ॥১ নীলাম্বরে শাপ দিয়ে যদি লহ কিতি। তবে সে প্রচার মোর পূজার পদ্ধতি॥ প্রভু বলেন নীলাম্বরে নাহি দেখি পাপ। কেমন প্রকারে তারে দিব অভিশাপ॥ ংযদি মহি ইচ্ছা করে ইন্দ্রে কুমাব। তবে শাপ দিবে প্রভু কি দোষ তোমার।। অঙ্গীকার কৈল। শিব তুর্গা নিলা পান। পান লয়। ভগবতী নারদে পাঠান। ৺ইন্দ্রস্থানে বার্তা দিতে চলিলা নারদ । প্রীক্বিকঙ্কণ গান মনোহর পদ n

১১ তিন দিন পূজা মোর লইয়া নীলাম্বর। (খ) এবে পূজা বঞা গেল লঞা নিলাম্বরে॥ (গ)

২-২ **আপনে ইচ্ছ**য়ে যদি ই**ল্ডে**র কুমার। (ক

৩-৩ রাজসভা(দীএবংখ)

শক্তিপূজা-প্রচারের সূচনা

স্থর্শ্ম স্থসভায় বিসলা দেবরায় বিচিত্র হেম-সিংহাসনে।

লইয়া নানা পুথি সমুখে বৃহস্পতি বসিলা রাজ-সন্নিধানে দ

वामला वाज-मान्नधारमा

১জয়ন্থ নীলাম্ব১ তুই ভাই সহোদর চৌদিকে শতেক কুমার।

ংসবক-প্রধান ২ যোগায় গুয়া পান

কর্প্র মেলি স্থসার **।**

ুবাসয়ে শ্রীখণ্ড হেমময় দণ্ড চামর ঢুলায় মাতলি।

মাগধ বন্দী ভাট করয়ে স্তুতিপাঠ
সমুখে ধরিয়া অঞ্জলি ॥

পাবক আদি করি দিকের অধিকারী

শেমন নৈঋঁত বরুণ।

•

কুবের প্রভঞ্জন আদি দেবগণ আইলা ইল্রের সদন ॥

आञ्जा २८०५ गरम

১-১ জয়ন্ত প্রবর (ক)

জয়ন্তি পুরন্দর (খ)

২-২ সেবক সাধান (দী)

৩-৩ বামেতে শ্রীথণ্ড ধরয়ে হেদণ্ড (খ)

৪-৪ সমুখে করি অবস্তৃতি॥ (ক)

e-e বৰুণ লোহিত শমন। (দী) প্ৰন নৈশ্বতি বৰুণ। (বৃদ্ধ) তুর্বাসা জৈমিনি অক্সিরা আদি মুনি

ত্বাইলা ইল্ফের ভবন।

এমন সময় আইল মহাশ্য

নারদ বিরিঞ্চি-নন্দন॥

উঠিয়া প্রণিপাত করিলা সুরনাথ

বসাল্যা 'হেম-সিংহাসনে'।

করিয়া পূজন বার্ত্তা জিজ্ঞাসন

শ্রীকবিকশ্বণ ভণে॥

নারদের প্রতি ইন্দ্রবাক্য

°কহ না নারদ মুনি দেশের বারতা।°
°কহ না সকল তথ্য ছিলে যথা তথা॥°
ত্রিভূবনে কেহ নাহি তোমার সমান।
ভূত ভবিষ্যুৎ তুমি জান বর্ত্তমান॥
ভাগ্যে তব পদরেণু আমার সদনে।
হইন্ন পবিত্র আমি তোমা দরশনে॥
°দেখিয়া তোমার ক্বানা হেন লয় মনে।
চিরকাল লক্ষ্মী মোর রহিবে ভবনে॥°
নিজ সৃষ্টি রাখিতে স্বজিল ধর্ম্মসেতু।
তোমারে করিলা বিধি পালনের হেতু॥

>-> जाहेनाहे ज्या मघवन। (नौ) २-२ विक्रिंग मानत (भ)

৩-৩ ইন্দ্র বলে কহ নারদ কুসল বারতা। (গ)

৪-৪ কহনা সকল তত্ত্ত্মি ছিলে কুথা। (থ)

৫-৫ চির দিন থাক তুমি আমার ভবনে। তোমারে দেখিঞা কুপা বড় ভাগ্য মনে॥ (গ)

সেই জন 'ভাগ্যবান এ তিন ভুবনে'। যেই জন তোমার বীণার গান শুনে। ইন্দ্রের বচন শুনি বলেন নারদ। যুকুন্দ রচিল গীত মনোহর পদ।

ইন্দ্রের প্রতি নারদের উক্তি

কি আর জিজ্ঞাস কথা কহিতে লাগয়ে ব্যথা নিবেদিতে বড় ভয় করি।

নিবাতকবচ জম্ভ আর সে নিশুস্ত শুস্ত ব্যতিল তোমার বড অরি ॥ ২

সর্ব্ব উপভোগহীন শৃত ফুলে প্রতিদিন দশদণ্ডে মহাদেব পুজে।

°অবধান কর রায় অশুভে পালয় তায় শুস্ত নিশুন্ত রণে যুবো ॥°

সেই শুস্ত মহাজস্ত কি কব তাহার দন্ত ভুজবলে পর্বতে উপাড়ে।

সেই সব ভূজবলে মহেশ-পূজার ফলে *দস্ত কৰি ভূলিয়া আছাড়ে॥

৩-৩ শিব দনে বর পায় স্থর মূনি দিদ্ধ আয়
দেখি ভয় করয়ে দহজে ॥ (দী এবং ক)
পূর্বের কর্মের ফলে মহাদেব পূজাবলে (গ)
সেই দব ভূজবলে মহাদেব পূজাফলে (বঙ্গ)

৪-৪ ধীক ক্লবি (দী এবং ক)

১-১ রণে জয়ী সকল ভুবনে (ক)

২-২ বাতাপী তোমার বড় অরি॥ (বঙ্গ) বাড়িল তোমার তুই অরি॥ (গ)

ন'না ফুল পরবন্ধে কুস্তুম কস্তুরী গন্ধে নৈবেছাদি কি কহিব আর। পুজা কি কহিব তার 'দেয় ষোড়শোপচার' ু দক্ষিণা ক\ঞ্চন শতভার ॥ প্রভুর করিতে প্রীত প্রতিদিন নৃত্যগীত ' পূজাকালে ব্যাল্লিশ বাজন। যদি পায় চতুর্দ্দশী থাকে বার উপবাস। নিশাকালে করে জাগরণ। কিবা সে সঙ্কল্প করি পুজে দৈতা ত্রিপুরারি এ বড সন্দেহ লাগে মনে। বুঝিল দৈত্যের কাঠ্য লবেক তোমার রাজ্য হেন আমি লখি অনুমানে॥ ভোগ কর লীলারক্ষে থাকহ কামিনী সঙ্গে রাজভোগে হইয়াছ ভোল। শাইয়া শিবের বব দৈত্য হৈলা খরতর কোন দিন করে গগুগোল॥ ^২ছাড়িয়া সকল কাজ একচিত্তে দেবর জ মহেশের করহ পূজন। রচিয়া ত্রিশদী ছন্দ পাঁচালি করিয়া বন্ধ বির্চিল জীকবিকস্কণ ॥

১-১ জথি শোল উপহার (দী) ২-২ নারদের কথা শুনি বাসব মনেতে শুণি শিবের পূজাতে দিল মন। (ক) ৬

ইন্দ্রের শিবপূজার উত্যোগ

উপদেশ কহিয়া চলিলা মহামুনি। ইক্রকে বিদায় করি চলিলা অবনী। স্থুরসভা সহিতে উঠিলা স্থুরপতি। চরণ ধরিয়া তার করেন প্রণতি॥ পুনর্কার সভাতে বসিলা স্থররায়। নিবিষ্ট কবিলা মন শিবের পূজায়॥ বৃহস্পতি বসিলেন লয়্যা পাঁজিপুথি। বিচার করিল ১শুভবার ১ শুভতিথি॥ ংশুভযোগ করিল নক্ষত্র শুভদিন। ত্যাছয়ে অনেকগুণ দোষমাত্রহীন॥° মহেশ পূজিতে ইন্দ্ৰ হইলা ভক্তিমান। জয়ন্তে ডাকিয়া তার হাতে দিল পান। প্রভাতে উঠিয়া পুত্র কর গঙ্গাস্বান। °মহেশের আয়োজন কর সাবধান॥° শচীরে দিলেন 'ভার' চন্দনের তরে। পুষ্প তুলিবারে পান দিলা নী**লাম্ব**রে॥ পান লইতে নীলাম্বর জোড কৈল কর। **"ডাকিলা মুশলী তার মস্তক উপর ॥"**

১-১ গুরুবার (দী এবং থ)

২-২ বিচারে বলেন গুরু কালি ভাল দিন। (গ)

৩-৩ আছয়ে অনেক গুন দোসন-বিহীন।। (দী)

৪-৪ উপহার শিবের করিহ সাবধান।। (ক এবং দ

৫-৫ পান (ক এবং দী)

৬-৬ বাধা পড়িল তার মস্তক উপর ॥ (গ) ভাকিনি স্থকিনি তার মস্তক উপর ॥ (খ)

জিঠি-রব নীলাম্বর করিল শ্রবণ।
দৈবযোগে অন্য নাহি শুনে কোন জন॥
নিবেদয়ে নীলাম্বর বুকে দিয়া কর।
ইইল বিষম বাধা মস্তক-উপর॥
পুষ্প তোলায় অন্য জনে করহ আরতি।
শুনি রোষযুক্ত হইয়া বলে স্করপতি॥
অভ্যার চরণে ইত্যাদি॥

নীলাম্বরের প্রতি ইন্দ্রের আদেশ

নীলাম্বর ! পুষ্প তুলিবারে লহ পান ।

*ছিধা ঘুচাইয়া মনে প্রবেশ নন্দনবনে
মোর বাক্যে না করিহ আন ॥

না পাঠাব তোরে রণে ত্রন্ত অসুর সনে
না পাঠাব দূর্তর দেশ।

*সবে চারিদণ্ড যাবে * কুসুম আনিয়া দিবে
ইহাতে ভাবহ কেনে ক্লেশ ॥

>-> বাধক পড়িল মোর মন্তক উপর ॥ (থ) বাধক হৈল মোর মাথার উপর ॥ (দী)

২-২ পুশ তোলনের বিনে করিয় আড়তি। (দী) পুশ তোলা বিনে অক্ত করহ আরতি। (বঙ্গ)

৩-৩ হরিষ হইয়ামন প্রবেশ নন্দনবন মোর বাঞ্ছা কর অবধান।। (ক)

⁸⁻⁸ আপন কাননে যাবে (বঙ্গ)

যযাতির পুত্র পুরু

জরা নিল বাপের বচনে।
শান্তিরসে দিয়া মন দিল নিজ যৌবন
তার যশ ঘোষে ত্রিভুবনে॥
আদেশ করিলা তাত বনে গেলা রঘুনাথ
ভাড়িয়া কনক-সিংহাসন।
জানকা লক্ষণ সাথে চিললা কানন-পথে
যশে পূর্ণ হইলা ত্রিভুবন ।

*

বিশ্ব আজ্ঞাতে স্কুত্র কার্য্য করে অনুচিত
নদর্শন ইথে ভ্গুণ্ডি।
শুনিয়া বাপের কথা কাটিল মায়ের মাথা
তার যশে পূর্ণ হইল ক্ষিতি॥
বিশ্বম আরতি নয় যাবে মাত্র দণ্ডছয়
নন্দন কানন ভিতর।
নিকটে কুমুম আছে উঠিতে না হবে গাছে

ানকটে কুসুম আছে ভাঠতে না হবে সাছে আরাধনা করিব শঙ্কর ॥

 রোষযুত পুরন্দর দেখিয়া তা নীলাম্বর .

অঞ্জলি করিয়া নিল পান।

সাজি ও আঁকড়ি হাতে চলিলা কানন-পথে

শ্রীকবিকশ্বণ রস গান॥

নীলাম্বরের পুষ্পচয়ন

শুক্লধুতি পরিধান গঙ্গাজলে করি স্থান প্রভাতে চলিলা নীলাম্বর ॥ শাজিদণ্ড করি হাতে চলিলা কানন-পথে সোঙরণ করিয়া শঙ্কর॥ গুণিয়া তোলেন শত ফুল। প্রবেশি নন্দনবনে কুমার হরিষ মনে ছয় ঋতু দেখিল সঙ্কুল। তোলয়ে কহলার কলা পানীশিয়লী পানীকলা কমল কুমুদ ইন্দীবর। অশোক কিংশুক ঝাটী জাতি যুখী দূৰ্বাসাটী রঙ্গণ তুলয়ে নাগেশ্ব ॥ তোলে পুষ্পা কুরুবক কুন্দ আর কুরুগুক কদম্ব কনক-করবীর। লবঙ্গ অত্সী দোনা গলঘসী বাক্সনা ১জবা তোলে চিত্ত করি স্থির॥১

১-১ প্রত্যন্ধিরা তোলে মহাবীর ॥ (বঙ্গ) প্রত্যন্ধিরা তুলিলা করির ॥ (দী) 10--2303 B. T.

^১কুমার সকুতৃহলে ধুলীকদম্বাদি তোলে আর তোলে চাঁপা নাগেশ্বর। শ্বেত রক্ত তোলে ওড় তুলিলা মল্লিকা জ্বোড় নানা রক্ষ তুলিল টগর॥^১

নেয়ালী বান্ধুলী দূর্ববা শ্বেত করবীর মূর্ববা অতসা কুস্থম পারিজাত।

অপামার্গ বাঘ/সানা সাঁইতেনে নাকদানা রক্ত সে উৎপল অবদাত॥

বিশালাঙ্গ দীর্ঘজ্জটা বৃহতী ঘুচায়্য। কাটা ভূমিচম্পা তুলিলা সপ্তনা।

অমলা কুড়চি কেয়। মদন বাসক জয়া কোবিদার তুলিল পাটন।॥

সাল তোলে ঘাটুফুল কাল্যাকড়া তোলে মূল বাসন্থিক আখণ্ড শ্রীফল।

নোয়াইয়া ধরে ডালে তমাল পিয়াল তোলে তুই হাতে তুলিল হিজল।

আকন্দ পলাশ ক ট। কণিকার শ্বেতজটা সুধ্যমণি তুলিল গুলাল।

বিরসনা ভরদ্বাজ্ঞা তুলিয়া পুরিল সাজি কোকিলাক্ষী বকুল তুলাল ॥

১-১ কুমার হরিদ মনে নানা ফুল তুলে বনে চাঁপা তুলে কাঞ্চন কেদর। নামে দরোবর জলে জল কুস্থম তুলে দেত রক্ত তুলে উত্তপ্ত ॥ (গ্)

শেউতি কর্কটি যুথী ইন্দ্রকুল তোলে যাতি গুনচি তুলিলা শতাবরী।

করত যুগল সোনা দালিম্ব মুদিত-মনা নারিকলি তুলিল বিদারী n

হইলা পূজার বেলা গাঁথিয়া শতেক মালা নীলাম্বর আইল ধাতা ধাই।

আচ্ছাদিয়া পদ্মদলে রাখিল পূজার স্থলে শ্রীকবিকঙ্কণ রস গাই॥

ইন্দ্রের শিবপূজা

চৌদিকে জয় জয়

পুজেন হরিহয়

অনম্ভারে ভূতনাথে।

তুন্দুভি শঙ্খজোড়া মৃদঙ্গ বাজে কাড়া শতেক পুত্ৰ বৈংস সাথে॥

ু করিয়া স্থভান রাগিণী মেলি গান

শঙ্কর-গুণের গরিমা।

নারদ বীণাপাণি গায়েন মহামুনি

ংহরের অতুল মহিমা ॥^২

১-১ দিবস পূর্ববিষাম রাগিণীগণ গান ক্লব্রের অধ্যায় মহিমা। (বঙ্গ)

> দিবস পূর্বব্যাম বাগীণ গান খ্রাম কল্ডের অধ্যায় মহিমা। (দী)

দিবস পূর্ববায় রাগিস স্থাম গায় রুদ্রের অধ্যায় মহিমা। (থ)

দিবস পূর্বজাম বাসিতে শুন গান

ক্লব্রের য়সেস মহিমা। (গ)

২-২ - শঙ্কর-প্রণের গরিমা। (দী এবং গ)

শঙ্করে প্রেমদিঠে বসাল্য হেমপীঠে পাখালে শিবের চরণ। বসনে পদ মৃছি নিছনি করে শচী বসন অমূল্য রতন 🛭 শিবের মহাস্নান করাল্য মঘবান শতেক ভার গঙ্গাজলে। মুগান্ধ জিনি ভাস পরাল্য দিব্য বাস কস্তরী-ফোটা দিল ভালে॥ করিয়া বিলেপন কৃষ্ণম চন্দ্ৰ বাসব দিল হর-অক্সে। পূজিল দেব হবে ষোডশ উপচারে সকল প্রিজন সংস্থা ডম্বুর ডিমিডিমি বাজান দেবস্বামী >সুশন্থ। ঘন ঘন শিঙ্গ। প্রমথপতি কাছে প্রমথগণ নাচে মৃদঙ্গ বাজে ধিধি ধিঙ্গা॥ আপন ব্ৰত্কথা সাধিতে সাবহিতা কান/ন উরিলা ভবানী। শ্রীকবিকঙ্কণ পাঁচালী বিরচন

* অভিরিক্ত—

নৈবেছ নানাবিধি মোদক মধু দধি
শর্করা পুরি হেমথালা !
স্থান্ধি ধুণ-ধুমে মঞ্জুল কৈলা ধামে
জালীলা রত্দীপমালা ॥ (দী)
১-১ স্থদঞ্চ (দী এবং গ)

বদনে নাচে যার বাণী॥

ভগবতীর মৃগীরূপ-ধারণ

***পূজা লব পদাবিতী অবনী-মণ্ডলে।** কোন উপদেশে পূজা লব স্বৰ্গতলে 🖪 আপনার যদি পদ্ম। প্রভাব দেখাই। দেবতা-সমাজেতে তবে সে পূজা পাই॥ ছলিয়া লইব মহী ইক্সের কুমারে। আপনার প্রভাব দেখাব স্থরপুরে॥ পদাবতী বলে যুক্তি মনে নাহি লয়। মহাদেবে নীলাম্বর কুস্থম যোগায়॥ এমন বিচারি ছুহে চলিল। সত্তরে। চরণে ধরিয়া নিবেদিল। মহেশ্বরে॥ জিজ্ঞাসিল। শিব তারে শত বিবরণ । চরণে ধরিয়া গৌরী করে নিবেদন ॥ নীলাম্বরে শাপ দিয়া যদি লহ ক্ষিতি। তবে সে প্রচার মোর পুজার পদ্ধতি॥ মহাদেব বলেন শুনহ শশিমুখা। তবে অভিশাপ দিব যদি দোষ দেখি॥ তিলমাত্র নীলাম্বর নাহি করে পাপ। কেমন কারণে তারে দিব অভিশাপ॥ যদি মহী ইচ্ছা করে ইত্রের কুমার। তবে আর শাপ দিবে কি দোষ তোমার॥ অঙ্গীকার কৈল। শিব নিল। চণ্ডী-পান। বিদায় করিয়া চণ্ডী করিলা পয়ান ॥*

দীনেশবাবুর সংস্করণ হইতে।

পদ্মাবতী সঙ্গে যুক্তি করিয়া অভয়া।
নন্দন-কাননে আসি পাতিলেন মায়া॥
ফুলহীন কৈল মাতা নন্দন-কানন।
ফুলহীন হৈল যতেক উপবন॥
বাম করে আঁকুড়ি করণ্ড ডানি করে।
প্রবেশিলা নীলাম্বর কানন ভিতরে॥
ফুলহীন বন দেখি ভাবে নীলাম্বর।
কোথা পাব শত ফুল প্রহর ভিতর॥
ফুলের অভাব-চিস্তা নীলাম্বরে পায়।
বথ চড়ি নীলাম্বর মহীতলে ধায়॥
বার্বার সময়ে ডোমচিল উড়ে মাথে।
কাঠুরিয়া কাষ্ঠভার লইয়া যায় পথে॥
**

উপনীত নীলাম্বর হইলা বিজুবনে।
হোথা ধর্মকেতু তাড়া দিয়াছে হরিণে॥
রূপসী হরিণী হইয়া আপনে অভয়া।
ুকানন ভিতর আসি পাতিলেন মায়া॥
আগে যান ভগবতী দীঘল তরঙ্গ।
ভারে পাছে বাধি যেন উড়িছে পতঞ্গ॥

- ১-১ সিবের ফুলের চিন্তা নিলাম্বরে পায়। (গ)
- ২-২ জাত্রার সময়ে প্রতিকুল হৈলা বায়ু। বাম ছাড়ি শব্য দিকে চলিলা গোমায়ু ॥ (দী)
- * অতিরিক্ত---

জাত্রা করি জায় বালা মনে কুতুহলি। বামে ভূজক জায় দক্ষিনে দিগালি॥ (গ)

৩-৩ ধর্মকেতৃ শম্থে উরিলা মোহামায়া। (দী)

আকর্ণ পুরিয়া ব্যাধ ছাড়ি দিল শর।
শর ছাড়ি দিতে দেবী উঠিলা অম্বর॥
অনিমিখ লোচনে দেখেন নীলাম্বর।
ফুল চিন্তা দূরে গেল 'ভাবেন অন্তর'
অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

নীলাম্বরের খেদ

বসিয়া তরুর তলে ভাসিয়া নয়ন-জলে
বিষাদ ভাবেন নীলাম্বর।
ফ্রন্মে রহিল শাল বেয়াধ জনম ভাল
কেনে হইন্থ ইন্দ্রের কোঙর।।
এই ব্যাধ ভাল জীয়ে তৃষাকালে পানি পিয়ে
ক্ষুধাকালে করয়ে ভোজন।
পুরমথনের পূজা যাবত না করে রাজা
ততক্ষণ উদর-দহন।।

* অতিরিক্ত-

চক্রাকার করিয় লুঠয়ে বীরবর। দেখিয়া বিস্থাদ মনে ভাবে নিলামর॥ (দী

১-১ কাঁদেন কোত্তর (গ)

২-২ প্রমথনাথের (ক)

এই ব্যাধ রূপধাম বনবাসী যেন রাম মৃগ দেখি মারীচ সমান। ^১সিংহ জিনি মধ্যদেশ লতায় বেষ্টিত কেশ অভিনব যেন পঞ্চবাণ॥১ না করিলা কোন কর্ম বিফল দেবতা-জন্ম বিছার না করি অম্বেষণ। ন। করিলা ধনু-শিক্ষা রুণে কিংস পাব রক্ষা यि इय प्रतास्त्र तथ ॥ শাজি-দণ্ড হাতে করি কাননে কাননে ফিরি অনুদিন যেন মালাকার। চরণে কণ্টক 'ভুকে' শতেক আঁচড় বুকে নিদারুণ দৈব সে আমার॥ **ুহই**য়া বড ব্যাকুল সম্ভ্রমে তুলিলা ফুল শ্রীফল-কণ্টক রহে ভথি। ভাবি ভবানীর পায় শ্রীকবিকশ্বণ গায় বেগে রথ চালায় সারথি।

১-১ শ্রীরামে বি**ড়মি**তে য়াইলা কানন পথে মারিচ জেমন মায়াবান ॥ (গ)

২-২ ফুটে (খ)

৩-৩ হঃথ ভাবে ইব্রুবালা হুই পর হৈন বেলা সাবধান কররে সারথি। হৈয়া অতি সমাকুল সম্রমে তোলয়ে ফুল মুকুন্দ গাইল স্বন্ধযিতি। (দী)

নীলাম্বরকে মহাদেবের অভিশাপ

>হইল পূজার বেলা চিস্তিত কোঙর।> ত্বই হাতে ভোলে ফুল কানন ভিতর॥ ষন বেলা পানে চাহে তৃষাতে আকুল। যত পায় তত তুলে না ছাড়ে মুকুল। কুস্থম ভিতরে চণ্ডী পাতিলেন মায়া। পলাশে রহিলা দারুপিপীলিকা হৈয়।॥ ব্যোম্যানে ক্রতগতি যান নীলাম্বর। স্থতের বিলম্বে ত্বংখ ভাবে পুবন্দর॥ খেলাতে উন্মন্ত শিশু কিবা কৈল পাপ। আজি তারে মহেশ অবশ্য দিবে শাপ। ধূপ দীপ নৈবেগ্ন রচিয়া অবিলম্ব। নীলাম্বর আইল পূজা করিল আরম্ভ। কুসুম-অঞ্জলি ইন্দ্র দিল হরশিরে। কণ্টক ভূকিল হুঃখ পাইল অন্তরে॥ ২দারুপিপীলিকা তার প্রবেশে কুন্তলে।* মরমে দংশিলে হর হইল আকুলে॥ অনল-সমান পোড়ে পিপীড়ার বিষ। কোপেতে বলেন হর হৈয়া বিমরিষ।। শুন ইন্দ্র শুনহে ত্রিদশ-অধিকারী। কিসের কারণে পূজ জনম-ভিখারী॥

১-১ , দেখিল ছুপের বেলা শচীর কোঙর। (বন্ধ)

২-২ দারুপিপীলিকা দংশে প্রবেশি চিকুরে। (দী)
দারুন পিপিলিকারুপে প্রবেদে চিকুরে। (গ)

করহ আমারে ইন্দ্র কপট অর্চনা। কপট ভক্তি করি কর বিভম্বনা n পাট-নেত বাস পর গলে রত্বমাল। হাডমালা গলে মোর পরি বাঘছাল॥ অচলা কমলা তোর সম্পদ বিশাল। উপহাস কর মোরে দেখিয়া কাঙ্গাল।। ংক্রোধযুক্ত মহেশ ভ্রুকুটী ভীমমুখে। নয়নে নিকলে বহ্নি ঝলকে ঝলকে॥ °দেখিয়া হরের কোপ বলে পুরন্দর।° মোব দোষ নাহি পুষ্প তোলে নীলাম্বর॥ নীলাম্বরে জিজ্ঞাসা করেন শুলপাণি। ভয় তেজি নীলাম্বর কহ সতাবাণী॥ কহিল কুমার সত্য যে দেখিল বনে। • চণ্ডিকার সত্য কথা হর কৈল মনে॥ মোর সেবা ছাড়ি তুমি অক্স কর সাধ। বস্ত্রনাতা চল ঝাট হও গিয়া ব্যাধ ॥

শ্বিকিল

কাসারে তোমার যদি নাহি অবধান।

কি কারণে কর তুমি অক্তায় গেয়ান॥ (দী)

১-১ কপট উপহাস কর গলে র**ত্ন**মাল। (গ)

২-২ স্মরহর নিষ্ঠুর জ্রকৃটি ভীমমূথে। (বঙ্গ এবং থ)

৩-৩ অঞ্চলি করিয়া কিছু বলে পুরন্দর। (গ)
অঞ্চলী জুড়িয়া বলে পুরন্দর। (দী)

৪-৪ ব্যাধ ধর্মকেতু তাড়া দিয়াছে হরিণে। (খ)

৫-৫ তুরিতে চলহ মোহি দিল য়ভিদাদ ॥ (থ)

হেন বাক্য হইল যদি মহেশের ভুণ্ডে। পর্বত ভাঙ্গিয়া পড়ে কুমারের মুণ্ডে॥ ধরিয়া হরের পায় করেন ক্রন্দন। অম্বিকা-মঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ।

নীলাম্বরকর্তৃ ক শিবের স্তব

চরণে ধরিয়া হরে কুমার বিনয় করে অপরাধ ক্ষেম কুপাময়।

অতি লঘু মোর পাপ দিলে গুরুতর শাপ ব্যাধ-কুলে জনম নিশ্চয় ॥

অরহেলে পাণিপুটে পান কৈলে কালকুটে ত্রিভূবন কৈলে পরিত্রাণ।

তুমি সত্ত্তগুণধাম সেবকে হইলে বাম মোর দৈব ইহাতে নিদান॥

স্থর নাগ নরে যেবা করয়ে ভোমার সেব। কেহ নাহি অধোগতি হয়।

'না দেখি এমন সৃষ্টি চাঁদে হলাহল-বৃষ্টি চন্দন প্রসবে ধনঞ্জয় ॥'

অভিমত ইচ্ছা করি সেবিলাম ংকাম-অরি শফল তাহে হৈল প্রতিকৃল।

দৈবের নির্ববন্ধ বশে ভরা দিল লাভ আশে হরি হরি নাশ গেল মূল ॥ •

১-১ তোমার রোপিত তরু আপনে হানহ দারু দেখিয়া লাগয়ে.বড় ভয়॥ (দী)

२-२ कांग्रमग्रदी (मी)

৩-৩ ফল যোগে করিলা নৈরাগ। (দী)
ফুল জোগা পাইল প্রতিকুল। (গ)

বেচিল তোমার পায় নীলাম্বর নিজ কায় যেন ইচ্ছা করহ তেমন। কুপ। কর দেব ভর্গ না চাই নরক স্বর্গ তোমার চরণে রক্ত মন n এই নিবেদন করি ত্থন প্রভু কাম-সরি সেবকেরে না হইবে বাম। স্বনী-মণ্ডলে যাব চণ্ডীর কিন্ধর হব এই বর দিয়া পূর কাম n ১দেখিয়। তাহার ত্থ লাজে হর হেঁটমুখ১ আজ্ঞা দিলা দেব পঞ্চানন। হইবে চণ্ডীর ভক্ত বংশতি বংশকে মুক্ত আসিবে আপন নিকেতন ॥ নিবেদিল নীলাম্বর
 কুপা করিলেন হর° নীলাম্বরে কৈল আলিক্ষন। চৌদিকে বান্ধব-মেলা গলে তুলসীর মালা গঙ্গাজলে করিলা শয়ন ॥ মহামিশ্র ইত্যাদি।

১-১ ইহা হ্নী ভূতনাথে লাজে প্রভূ হেট মাথে (দী)

২-২ চারি মালে হৈয়া মুক্ত (দী এবং বঙ্গ)

৩-৩ এতেক বলিতে হর জ্বর আল্যা মাহেশ্বর (দী)
এমত বলিতে হর আইল মহেশ্বর জ্বর (বৃদ্ধ)

ইন্দ্রকর্তৃ ক শিবের স্তব

মন্দাকিনী জলে শয্য। কৈলা নীলাম্বর।
পূজা সাঙ্গ করি স্তুতি করে পুরন্দর॥
প্রদক্ষিণ নমস্কার করে বারে বার।
তোমার চরণ বিনে গতি নাহি আর ॥
ক্ষেমা কর মহাপ্রভু বালকের দোষ।
শিশুমতি নীলাম্বরে না করিহ রোষ॥

水

অভক্তি তোমার পদে বিপদ-নিদান।
ব্রহ্মার তনয় দক্ষ তাহাতে প্রমাণ
কালকৃট পান করি মৃত্যু কৈলে জয়।
যে জন শঙ্কর ভজে তাব কোথা ভয়॥
তোমার চরণে যার আছায়ে ভক্তি।
বৈভূবন জিনে সেহ অন্তেতে মুক্তি॥
জন্ম-জরা-মৃত্যু-শোক-দৈক্যরূপী দোষ।
ভাবত যাবত নহে তোমার সস্তোষ॥

- * অভিরিক্ত—
 - পুত্র মিত্র পরিজন শোকের নিদান। তুমি সত্য ভোমা বিনে নাহি ভাবি আন॥ ('দী) পাত্র মিত্র পরিবার সোকে নিদাকন। তুমি সত্য তোমা বিহু ভাবিনাহি আন॥ (গ)
- ১-১ ত্রিভ্বন জিনে তার কি করে হুর্গতি। (খ)

 শকল মঙ্গল তার নাহিক হুর্গতি। (বঙ্গ)

 ত্রিভ্বনে জিনে সেই অস্তকালে গতি। (গ)

মোর নিবেদন প্রভু কর অবধান।

পুষ্প ভূলিবারে দেহ প্রবরেরে পান॥

ইল্ফের বচনে অনুমতি দিলা হর।

অঞ্চলি প্রিয়া পান নিলেন প্রবর॥

হরপদ-কমলে মজুক নিজ চিত।

হায়ার প্রসঙ্গে নাচাড়ি গাব গীত॥

*

ছায়ার সহমরণ

হৈল জলশায়ী পতি

লোকমুখে শুনিল বারত।।
চৌদিকে বেষ্টিত সথী বিষাদে মলিন-মুখী
হরি হরি সোঙরে বিধাতা॥
আকুল কুন্তল-ভার তেজে নানা অলঙ্কার
সঘনে নাড়য়ে আমুডাল।
*সুরপুরে লোক যত সবে হইলা জ্ঞানহত
শচীর হৃদয়ে বাজে শাল॥

*ইন্দ্রবধৃ ছায়াবতা কান্দে শোকাকুল-মতি
প্রভু মৈল প্রথম যৌবনে।
নীলাম্বরে করি কোলে বসিয়া গঙ্গার জলে
হৃদয়ে যুগল মুষ্টি হানে॥

১-১ পুশা হৈতু নীলাম্বরে পুন দেহ পান॥ (ক)
কুমম তুলিতে প্রবরে দেহ পান॥ (দী ও থ)
২-২ ছায়ার প্রসন্ধ না ছাড়িয়া গাব গীত॥ (বঙ্গ)
৩-৩ স্থরপুরে কোলাহল সন্ভার লোচনে জল (গ)
৪-৪ কান্দে বামা ইক্সবধু মান হৈল মুখ-বিধু (বঙ্গ)

পড়িয়া চরণতলে ছায়া সকরুণে বলে প্রাণনাথ কর অবধান। তিলেক দারণ হইয়া পাশরিলে নিজ জায়া দূর কৈলে সোহাগ-সম্মান॥ চিয়ায়্যা উত্তর দেহ ছায়ারে সংহতি নেহ পাশরিলে পূরব পিরীত। তুমি প্রভু যাহ যথা আগে আমি যাই তথা ইবে কৈলে কেন বিপরীত॥ মোর পরমাহ লয়্যা চিরকাল থাক জীয়া আমি মরি তোমার বদলে। পাইবে যে গতি তুমি ইচছেব সে গতি আমিই থাকিব তোমার পদত্যল।। হৈলা বিধি প্রতিকৃল আর কি ভূলিবে ফুল জাবন ভৈজিলে হরশাপে। খণ্ড-কপালিনী ছায়া শঙ্কর না কৈল দয়া ডুবিল পরম পরিতাপে॥ দেহযোগ নহে নিত্য মরণ কেবল সত্য সর্বালে এই কথা জানে। যৌবনে মরণ-কাল হাদয়ে রহিল শাল নাহি মানে প্রবোধ পরাণে॥

১-১ সেই গতি পাব আমি (খ এবং গ)

* অতিথিক্ত-

কুল শীল রূপ গুণে

বিধবার সকলি বিফল।

বসম্ভ স্থামীর স্থা

কুণ্ড খুলি জালহ অনল ।

মানি বহু ঘৃত-ভাগু জ্বালিল অনলকুণ্ড সুরনদী-তৃটে সুরপতি। হুই কুলে দিয়া বাতি পরাণ ত্যজিল সতী পতির অনলে ছায়াবতী॥ বিদায় করিয়া শিবে নিয়া হুজনার জীবে গেলা চণ্ডী ব্যাধের নিবাসে। বচিয়া ত্রিপদী ছন্দ গান কবি শ্রীমুকুন্দ রঘুনাথ নুপতি প্রকাশে॥

নিদয়াকে ভগবতীর ঔষধ-দান

সুপ্রভাত দ্বাদশী অভয়া উপবাসী
হইলা জরতী ব্রাহ্মণী।
ধর্মকেতৃর বাসে আইলেন ভিক্ষা-আশে
নিদয়া দিলেন পিড়ি-পানি॥
কল্যাণ করেন ভগবতী।
পারণার হেতু ভিক্ষা দেহ গো প্রাণের রক্ষা
অচিরাতে হবে পুত্রবতী॥

সুরাজ সিশ্র ভালে চিকণী কুস্তল জালে

শঘনে নাড়য়ে আন্ডাল।

ঢাক ঢোল বাতা বাজে ছায়া চতুদিলে দাজে

ইল্রের হৃদয়ে বাজে শোল॥ (খ)

শ অতিরিক্ত—
 হৈয়াছে পাঁচ কয়া অয়ে দে স্বামী ধয়া
 ঘটক ভ্রমে স্থানে স্থানে।
 দেখিল পুণা-ফলে নিদ্ইয়া যেই স্থলে
 কেবল কলাগণ-নিদানে॥ (দী)

এতেক শুনিয়া বাণী ব্যাধের নিতম্বিনী পুলকে পুরিল দেহে।

করিয়া প্রণিপাত হইয়া জোড়হাত সমুখে দাণ্ডাইয়া রহে॥

ঠাকুরাণি! সফল করহ মোর আশ।

পাইয়া তোমার বর যে হইবে বংশধর ভোমার করিয়া দিব দাস।

হইবে পুত্র বরে মোর।

শুনিয়া এত কথা ব্যাধের বনিতা আনন্দে চিত্ত হৈল ভোর॥

নিদয়া পুত্র-আশে সিনান করি আইদে বসিলা হইয়া উর্দ্ধুথে।

মক্ষিকা-রূপ-ধর প্রাবেশে নীলাম্বর ও্র্যধ দিল দেবী নাকে।

নিদয়া পায়ে পড়ি দিলেক চালু বড়ী নগদ কড়ি চারিপণ।

দিয়া পুত্র-বর চণ্ডিকা গেলেন ঘর निष्यात यूथो देश भन॥

১-১ কহি গ হিতবা**ণী ঔ**ষধ আমী **জা**নি কুমার জনম-কারণ। দিব গ নাশাপুটে শোহাগ নাহি টুটে হইব পুত্তের জনম। (দী এবং গ)

11-2303 B. T.

চণ্ডীর আদেশে

হীরার গর্ভবাদে

ছায়াবতী লভিল জনম।

রচিয়া স্তছন্দ

পাঁচালী প্রবন্ধ

भुकुन्म किन वित्रहम ॥

নিদয়ার গর্ভ*

সেই দিন ধর্মকেতু রতি-রঙ্গ মনে। আনন্দে ভুঞ্জিল রতি নিদয়ার সনে॥ দেবীর মুখের বাক্য মিথ্যা নহে আর। সেই দিন হৈতে হইল গর্ভের সঞ্চার॥

* পাঠান্তর-

আন বেদ ব্যাধের নন্দীনী।

ইন্দ্রেব নন্দন পূর্বের জেমন আছিলা গর্ম্ভে

পুলমজা ইন্দ্রের রমণী ।

মাস তুই তিন জায় তুৰ্বল হইল গায়

পাতৃবর্ণে কপোল প্রকাশ।

জাত্যে পদ নাহি চলে শয়ন ধরণী-তলে

অন্তের না লইতে পারে বাস ।

চারি পাচ জায় মাস পর্ত্ত হৈল পরকাশ

ভাম মুথ হৈলা পয়োধর।

স্থান্ধ মৃত্তিকা পায় কত অভিলাষ তায়

দিনে দিনে **স্থা**য় অধর॥

ছয় শাত জায় মান

স্থতে বড় অভিলাস

নববাস দিলা ধর্মকেতু।

যদি বা দৈবক্ত পায়

মুগ্নাংশ দেই তায়

পুত্র কল্ঠা গণনের হেডু।

প্রথম মাদের গর্ভ জানি বা না জানি।
ছই মাদে যত লোক করে কানাকানি॥
তিন মাদে করে রামা ভূতলে শয়ন।
চারি মাদে করে রামা মৃত্তিকা ভক্ষণ॥
পাঁচ মাদে নিদয়ার না কচে ওদন।
ছয় মাদে নাহি চলে অবশ চরণ॥
সাত মাদে নব বস্ত্র দিল ধর্মকেতু
গণকে জিজ্ঞাদে পুত্র-জনমের হেতু॥

আই নয় জায় মাস কিসে তোর অভিলাস জিজ্ঞাসেন ব্যাধের নন্দন। নিদাইয়া রমণী তারে নিজ নিবেদন করে বিরচিলা শ্রীকবিকস্কণ ॥ (দী)

অতিরিজ---

নিনয়ার মনের কথা

শুন প্রাণনাথ! কথিয়ে তোমারে
এবে মোর প্রাণ কেমন করে ॥ জ্ঞ ॥
কৈতে নিজ সাধ বড় লাজ বাসি।
পাস্ত ওদনে বাঞ্চন বাসী ॥
বাণ্য়া ঠনঠনি তেলের পাক।
ডগি ভগি লাউ ছোলার শাক ॥
মীন চড়চড়ি কুম্ম বড়ী।
সরল সফরী ভাজা চিড়ৌ ॥
ঘদি ভাল পাই মহিষা দই।
চিনি কেলি কিছু মিশায়ে ধই ॥
পাকা চাপাকলা করিয়া জড়।
ধাহতে মনের সাধ বে বড় ॥

অন্ত মাসে নিদয়ার বেড়ে যায় পেট।
চলিতে না পারে চাহিবারে নারে হেঁট
নয় মাসে নিদয়ার সাধ দেয় ব্যাধ।
নিদয়া ভাবিয়া কহে প্রভুরে বিষাদ॥
অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

কনকের থালে ওদন শালি। কাঞ্জিকা সহিত করিয়া মেলি॥ কাঞ্জি ভুঞ্জি কিছু মনেতে ভায়। চাকা চাকা মূলা বাগ্যণ তায়॥ আমভা নোয়াডি পাকা চালতা। আমদী কাদদী কুল করঞা। থোড় উড়ম্বর ইচলি মাচে। থাইলে মুথের অরুচি ঘুচে ! হিয়ে দগদগী অস্তবে ভোক। মুখে নাঞি চলে এ বড় শোক। মনে করি দাধ থাইতে মিঠা। ক্ষীর নারিকেল তিলের পিটা। বসিতে উঠিতে ঘুরয়ে মাথা। মুথে উঠে হাই কহিতে কথা। সথী সাথে যদি বাডাই পা। আলাইয়া পডে সকল গা। হুগ্ধে গুড়ে তিলে মিশায়ে লাউ। দধির সহিতে খুদের জাউ। শুন প্রভু কিছু কহি অপর। চি ড়া চাপাকলা ছুধের সর। আর কহি কিছু যে উঠে মনে। শ্ৰীকবিকশ্বণ মুকুন্দ ভণে 🛭 (বন্ধ)

সাধ-ভক্ষণ

প্রাণনাথ! কাল গর্ভ হৈল কোন ফলে। অরুচি করিল বল ১না রুচে ওদন জল ১ পেটে ক্ষুধা মুখে নাহি চলে॥ নিকটে নাহিক মাত। কারে কব তুঃখকথা পিসী-মাসী-বহিনী-মাতৃলী। ^২জাতিবন্ধু নাহি আর যে বহে ঘরের ভার নিয়তি আমার প্রতিকূলী॥ দেখিয়া গর্ভের ভর মনে বড লাগে ডর ক্ষুধাতৃষা নাহি দিন দশ। আপনার মত পাই তবে গ্রাস কত খাই পোড়া মাছে জামিরের রস ॥ নিধানী করিয়া এই তাহাতে মহিষা দুই কুল করঞ্জা প্রাণ হেন বাসি। যদি পাই মিঠা ঘোল পাক। চালিতার ঝোল প্রাণ পাই পাইলে আমসি॥ আমার সাধের সীমা হেলঞ্চি কলমী গিমা °বোয়ালী° কুটিয়া কর পাক। ঘন কাটি থর জালে সাঁতলিবে কট তেলে দিবে ভাতে পলতার শাক॥

১-> থাইতে নারি য়গ্য জল (গ)

২-২ জেবা পড়িসি জন লাগে না পাই য়হকন সেহ মোরে অতি প্রতিকুলি। (গ)

৩-৩ বোদালি (বন্ধ এবং থ)

'পুঁই-ডগা মুখী-ক**চু'** তাহে ফুলবড়ি কিছু

*হরিদ্রা-রঞ্জিত কাঞ্জী উদর ভরিয়া ভূঞ্জি প্রাণ পাই পাইলে পাকা তা**ল**॥*

লবণ কিছু দিয়া বাড়া সকুল গোধিকা পোড়া হংস-ডিমে কিছু ভোল বড়া।

কিছু ভাজ রাই-খড়। চিঙ্গুড়ির তোল বড়া শসজারু করহ শিক-পোড়া॥°

সদাই নাকার উঠে দিনে দিনে বল টোটে বদনে সদাই উঠে জল।

মূলাতে বেগুন সীম তাহে কিছু দিহ নিম আর দেহ উড়ুম্বর ফল॥

নিদয়ার সাধ হেতু ঘরে ঘরে ধর্মকেতু চাহিয়া অানিল আয়োজন।

১-১ থুপি ঝিকা য়ান কিছু (গ)

२-२ काछात्मत्र विकि श्राम्य । (भी)

৩-৩ রান্ধিবে চিঙ্গুড়ি মিনে শাতুলিবে কটু তেলে অবশেসে দিবে আদারস 🛭 (গ)

৪-৪ স্পার সেজার কব পোড়া। (গ

৫-৫ নিদয়া থাইল সাধ (গ)

কালকেতুর জন্ম

পূর্ণ হৈল দশ মাস ইভুঞ্জন আপন কর্মফলে। প্রস্থৃতি-মারুতি নড়ে অমুক্ষণ ব্যথা বাড়ে নিদয়া লোটায় ভূমিতলে॥ সখী-স্কন্ধে দিয়া ভর আইসে বাহির ঘর কেই অঙ্গে দেয় তৈলপানী। আসি কেহ প্রিয় সই মুখে তুল্যা দেয় দই নিদয়া প্রভুরে বলে বাণী ॥ প্রাণনাথ! হেঁট হইতে বড় পাই ক্লেশ। কেশ-মূলে পড়ে টান কি জানি করয়ে প্রাণ করিবে কেমন উপদেশ n শুইলে ফিরাতে নারি পাশ। চাহিতে না পারি হেঁট স্থূ চৈ যেন বিশ্বে পেট দূর হইল জীবনের আশ 🛭 সংশয় প্রাণের আশা হইল মরণ-দশা বুকে পেটে বিদ্ধে যেন বাণ। *সশঙ্ক আমি জায়া⁸ কেবল তোমার দ্য়া জাউ মোর হইল নিদান n

- ১-১ নিদয়ার বাড়িল তাস (গ) ২-২ আছিল আপন কর্মফলে। (গ)
- ৩-৩ পুন নাথ যদি বিদি 💎 উঠিতে শক্ষট বাদী (দী) 🕟
- 8-3 সত সহা আমি জায়া (ক)
 শত শহা আমী জাইয়া (দী)
 শত সংখ্যা আমি জায়া (বছ)

আমার বচন.শুন পাশ-পড়সীকে আন জানে যেই প্রসব-সন্ধান। খুঁজিয়া নগরে জ্ঞানী আনহ ঔষধপানী নিদ্যার রাখহ পরাণ॥ শুনি বনিতার কথা স্থানয়ে ভাবিয়া ব্যথা চলে ব্যাধ কলিঙ্গ-নগরে। সেবক-সন্তাপ-খণ্ডী ব্রাহ্মণীর বেশে চণ্ডী উরিলেন ব্যাধের মন্দিরে n ^১কি কব পুণ্যের লেখা ব্যাধ সনে পথে দেখা^১ ধর্মকেতু পড়িলা চরণে। ^২কুপা কর ঠাকুরাণী জান কি ঔষধ পানী^২ নিদয়ারে রাখহ পরাণে ॥ শুনিয়া প্রসব-ব্যথা জানি জিজাসেন মাতা কপটে মন্ত্ৰিত কৈলা জলে। কেবল পুণ্যের বল নিদয়া খাইল জল কুমার পড়িল মহীতলে॥ উঙা উঙা ডাকে স্থত 🔻 শোহে প্রেমানন্দযুত খ পূর্ণ হইল সকল মানস। স্থতের কল্যাণহেতু স্নান করি ধর্মকেতু দ্বিজে দিল মূগ গোটাদশ।। মহামিশ্র ইত্যাদি॥

১-১ কেবল প্রের পুণ্যে পথে দেখা ব্যাধ শনে (দী)
২-২ পর্ত্তের কারণ জত নিবেদয়ে ব্যাধস্থত (দী)
৬-৩ ফুইে হৈল মৃদ-জুত (দী)
ফুজনে পুলক-যুত (বঙ্গ)

ব্যাধ-নন্দনের নামকরণ ও কর্ণবেধ

পুত্র হৈল ধশাকেতু হর্ষত মনে। চাল ফাড়ি অগ্নি জালে সৃতিকা-ভবনে॥

সঘনে হুলই পড়ে নাভির ছেদনে। ব্যোম্যানে ভগবতী উঠিলা গগনে॥ গোমুও স্থাপিল ষষ্ঠী দার-ডানি-ভাগে। পূজা করি ধর্মকেতু তারে বর মাগে॥ তিন দিনে নিদয়ার স্থপথ্যি পাচন। ু ছয় দিনে যাটিয়ারা কৈল জাগরণ ॥ অষ্টদিনে অষ্টকলাই কৈল ধৰ্মকেতু। নয়দিনে 'নবনতা' কৈল শুভ হেতু॥ আনরূপ ব্যাধস্থত দিবসে দিবসে। ষষ্ঠী-পূজা কৈল তার একত্রিশ দিবসে।। পূজিল সোনাই ওঝা দিয়া বলিদান। দক্ষিণে ঘোড়ারু দিল বামে ঢোলকাণ। ক্ষণে নিজা যায় বালা করয়ে দেহালা। ক্ষণে কান্দে ক্ষণে হাসে "অক্ষ্টীর বালা"॥ নিরাতক্ষে যায় তার তুই তিন মাস। কিরাত-নন্দন দেয় উল্টিয়া পাশ ॥

🔹 অতিরিক্ত—

মঞ্জলিয়া অগ্নি স্থাপয়ে ব্যাধ-স্বত। আরাধিয়া ষশ্মীরে পৃজিলা বিধিমত। (দী)

- ১-১ ছয়দিনে করে তার স্থী জগরন 🛚 (গ)
- २-२ नखी (भी)
- ৩-৩ গলে রকামালা (দী ও থ)

চারি পাঁচ মাস গেল ছয়ে পরবেশ।
ওদন করাল্য বলি দিয়া ছাগ মেষ॥
দৈবজ্ঞ আনিয়া নাম থুইল কালকেতু।
গণকে দক্ষিণা দিল কল্যাণের হেতু॥
সাত আট মাস গেল হৈল নয় মাস।
মুকুতা জিনিয়া তুই দশন প্রকাশ॥
দশনাসে ধায় বালা দিয়া হামাগুড়ি।
বিরতি ধরিতে যায় বাঁকুড়ি বাঁকুড়ি॥
বিনাদশ মাস গেল হইল বংসর।
বারে ঘরে ফিরে শিশু মনে নাহি ভর॥
তুই তিন সমা গেলে শিশুগণ মেলে।
ভল্লুক শরভ ধরি কালকেতু খেলে॥
পঞ্চন বরিষে কৈল কর্পের বেধন।
অধিকামঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ॥

কালকেতৃর বাল্যক্রীড়া

দিনে দিনে বাড়ে কালকেতু। মাতঙ্গ জিনিয়া গতি ক্রপে জিনি রতিপতি সবার লোচন-স্থুখ-হেতু ॥

১-১ দেখিতে দেখিতে ধার বাড়ির পাছড়ি। (খ)
ধীরে ধীরে যায় শিশু বাঁকুড়ি বাঁকুড়ি। (দী)
ধরিতে ধরিতে জায় দদ বিদ বাড়ি। (গ)
২-২ বাড়িতে লাগিল বালা মনে নাহি ডর। (গ)
৩৩ দর ধন্ত করে ধরি দিস্তগন খেলে। (গ)

নাক মুখ চক্ষু কান কুন্দে যেন নিরমাণ
তুই বাল লোহাব সাবল।

রূপে গুণে শীলে বাড়া বাড়ে হেন হাতী-কড়াই
ইঘন জিনি স্চারু কুন্তল।
বৈচিত্র কপালতটি গলায় জালের কাঁঠী
ইকরযুগে লোহার শিকলী।
বুকে দোলে বাঘনখে রাক্ষা ধূলা গায়ে মাথে
তুরুমাঝে শোভয়ে ত্রিবলী।।
কপাট-বিশাল বুক নিন্দি ইন্দীবর মুখ
আকর্ণ দীঘল বিলোচন।
গতি জিনি গজরাজ কেশরী জিনিয়া মাঝ
মোতিপাঁতি জিনিয়া দশন।।
তুই চক্ষু যেন নাটা ঘুরে যেন ইকুচ ভাটাই
কানে শোভে ক্ষটিক-কুণ্ডল।

পরিধান বীর-ধড়ী মাথাতে জালের দিড়ি শিশুমাঝে যেমন মণ্ডল ॥*

শ্লইয়া পাবড়া ঢেলা শ্লার সঙ্গে করে থেলা তার হয জীবন সংশয়।

যেজনে আঁকাড়ি ধরে তুলিয়া আছাড়ে তারে ভায় কেহ নিকটে না রয়॥

২-১ যেন দে শালের কোড়া (বন্ধ)

২-২ জিনি ভাষ-চামর কুন্তল। (বন)

৩-৩ অব জিনি লোহার সাবলি! (ক) ৪-৪ কড়ি ভাটা (বঙ্গ ৫-৫ রাকা ধূলা মাথি গায় প্রন-গমনে জায় শিশুমধ্যে যেমন মণ্ডল I (দী)

৬-৬ লইয়া ফাউড়া ডেলা (বঙ্গ)
নানা লিলা গডি চেলা (দী)
লইয়া পংথর ডেলা (গ)

শিশুগণ সঙ্গে ফিরে শশারু তাডায়্যা ধরে ^১দূরে পশু পালাইতে নারে। বিহঙ্গ বাট্যলে বধে শলভাতে জড়ায়ে বান্ধেশ কান্ধে ভার বীর আস্থে ঘরে॥ গণকে আনিয়া ঘরে শুভদিন শুভবারে ধন্ত দিল ব্যাধস্থত-করে। কোঁটা দিয়। বিশ্বে রেজা ছাড়িতে শিখয়ে নেজা চামের °টোপর° শোভে শিরে॥ ইচ্ছা **হ**য় যেই দিনে যায় বীর পিতা সনে আগে ধায় জিনিয়া প্রনে। তাড়ায়্য। হরিণ ধরে কি কাজ ধন্নক শরে বিভা হেতু ব্যাধ চিন্তে মনে॥ দৈবযোগে নিয়া ভার পিতাপুত্রে একবার হাটে গেল নিদয়ার সনে। হীরা নিদয়াব কাছে সাংসের পশরা বেচে ফুল্লর। তাহার সন্নিধানে॥ হীরা নিদয়ারে বলে 🏻 কি স্থত হইয়াছে কোলে ইহা শুনি বলেন নিদয়।। দেবীর প্রসাদহেতু
 এই পুত্র কালকেতৃ

আশীষ করহ হ'ক বিয়া॥

১-১ **দূ**রে গেলে ছুবায় কুকুরে। (বঙ্গ)

২-২ লতায়ে সাঁজুড়ি পদে (দী)

৩-৩ চতনা(দী)

s-s স্থৃত জিয়া থাকু সই হউক বহু পর্মাই বব দেহ ঝাট হোউক বিয়া। (খ)

দৈবের নির্বন্ধ বড় একত্রে হুজনে জড়
ননে মনে ভাবে হীরাবতী।

'ফুল্লরা সেবিলা হর তবে মিলে এই বর
রূপ যেন মদন-মূরতি॥

'হেনকালে আল্য ওঝা কান্ধে কুশ পুথি বোঝা
গেলা ধর্মকেতু সন্নিধান।

'শরট কমট ভেট' দিয়া কৈল মাথা হেঁট
ভঝা তারে করিলা কল্যাণ
মহামিশ্র ইত্যাদি।

কালকেতুর বিবাহের অন্থবন্ধ

সোনাই পণ্ডিত সনে বসিয়া বিরলে।
চরণে ধরিয়া ধর্মাকেতু কিছু বলে॥
সপ্তম পুরুষে মোর তুমি পুরোহিত।
দেবতা সমান বুঝি তোমার •চরিতে ॥

১-১ মোর জ্লারার তরে বিভা দিব এই বরে
কামসম মদন-মর্কতি॥ (গ)

ফুল্লরা পৃজিছে হর তার হব হেন বর
কামশম মোহন-মুরতি॥ (দী)

২-২ কুলেতে কুযুম্খুলী হাতে কুষ কান্ধে বালী
গেলা বিজ ধর্মকেতু স্থান। (দী)

কুল-ওঝা ফুল তুলি হাতে কুশ কান্ধে ঝুলি
ভাইলা ধর্মকেতু-সন্ধিনান। (বজ)

৬০০ মিগ পদ্ধ দিল ভেট (গ)

৪-৪ ইন্ধিত (দী ও থ)

পুত্রের বিবাহহেতু করি অভিলাষ।
কিরাত-নগরে কর কন্সার ১০ল্লাস১॥
এত যদি বলে ব্যাধ দ্বিজের চরণে।
ফুল্লরা সঞ্জয়-স্থতা পড়ে তার মনে॥
অঙ্গীকার করি দ্বিজ চলি গেলা ২ঝাট১।
সবে গেলা নিজ ঘরে সমাপিয়া হাট॥
সঞ্জয়কেতুর ঘরে গেলা সোম দ্বিজ।
বিশিল সঞ্জয় তার পদসরসিজ॥

#

কহেন সঞ্জয়কেতু দিব এক ভার।
ফুল্লরার বরহেতু উল্যোগ ভোমার।।
এমন শুনরা দ্বিজ তাহার বচন।
অঙ্গাকার কার তারে বলেন তখন।।
চক্রকেতু শিতামহ শিতা ধর্মকেতু।
তার পুত্র কালকেতু কুল-যশ-হেতু॥
"একাদশ বৎসরের যেন মত্ত হাতী।"
অর্জুন সমান তার ধন্মকে থেয়াতি॥

এমত সময়ে আসি ফুলরা স্থন্দরী।
পুরোহিত কৈল নতি পাণি জোড় করি।
এই কলা রূপে শুণে নামেতে ফুলরা।
কিনিতে বেচিতে ভাল জানয়ে পদরা।
বন্ধন করিতে ভাল এই কলা জানে।
যত বন্ধু আইনে তারা কলাকে বাধানে। (বঙ্গ ও বী)
দৌড়িয়ে বর্ষে বাঘ রণে মাতাহাথী। (বঙ্গ)

১-১ তাপদ (দৃী)

২-২ ৷বরাট (দী ওথ)

^{*} অভিনিক্ত-

³সেই বরযোগ্য। কন্সা তোমার ফুল্লরা। খুঁজিয়া পাইল যেন হাঁড়ির নত সরা॥১ একে চায় আরে পায় জায়া হীরাবতী। সঞ্জয়কেতুর সনে ^২নিরালে^২ যুক্তি॥ পণের নির্ণয় কৈল ভাদশ কাহন। **°ঘটকালী পাবে ওঝা তুমি চারিপণ॥°** পাঁচগণ্ডা গুয়া দিব গুড় পাঁচংসর। ইহ। দিলে আর কিছু না করিবে ফের॥ ত্বরা করি গেলা দ্বিজ যথা ধর্মকেতু। কহিল নির্ণয় যত বিবাহের হেতু॥ •ভক্ষ্যদ্রব্য করি কৈল বান্ধবের সেলা।• সঞ্জয় আনিয়া বরে দিল বরমালা॥ তিনটা পোতনকাড দিল জামাতারে। ছ-বেহাই কোলাকুলি করি গেলা ঘরে। গোলাহাটে শোধ দিলা দ্বাদশ ক।হন। ক্লা- "দুর্শনী " দিয়া করিল। লগন ॥ ত্রেদেশী গুরুবারে নক্ষত্র রেবতী। বিবাহে সঞ্জয়কেতু দিল। অমুমতি। অভ্যার চরণে ইত্যাদি॥

১-১ শেই ত বধের যোগ্য ভোমার ছহিতা। ছুহে শম রূপগুণ শৃদ্ধীলা বিধাতা ॥ (দী)

২-২ নিবাভ (দী)

৩-৩ বিজের দক্ষিণা ফুরাইলা পাচপণ॥ (দী)

৪-৪ ভক্ষ ভোজা কৈল ব্যাধ বান্ধবের মেলা। (দী)

ৰ-৫ পাটনকাঞ্চ (গ এবং দী)

৬-৬ অলম্বার (গ)

কালকেতুর বিবাহ-উত্যোগ

নান। বস্তু কেনে হাটে হরিণ মহিষ কাটে

নিমস্ত্রিয়া আনে বন্ধুজন।

নিয়া অধিবাস-ভাল। কিরাত নগরে গোলা
বন্ধু মেলি সোমাই ব্রাহ্মণ॥

বৈন্দি পদ-সবসিজ আসনে বসাল্য দ্বিজ্
শুভক্ষণে বান্ধিল ভান্দলা।
গোময়ে লেপিয়া মাটি আলিপনা পরিপাটি

ভারিদিকে বন্ধুগণ মেলাই
ফুল্লরার গন্ধ-অধিবাস।

ছায়। মণ্ডপের মানো চেমচা দগ্ড বাজে হারাবতী ফদয়ে উল্লাস।।

°পরিয়া হরিদ্রা-বাসে ফুল্লবা বাহিরে আইসে দেখি সুথী সব বন্ধুজনে।°

স্বেশ। ফুল্লর। নারী সঙ্গে স্থা জন। চারি বসিল। পিতার স্লিধানে॥

১-> হাস্ত মুখ সরসিজ (গ)

२२ को मिरक वांग्यित वनगाना ॥ (११)

৩-৩ নৃত্য গীত স্থবাদন কোলাহল বন্ধুজন (দী)

৪-৪ **পরিয়া হ**রিছা-বাদে কটাক নয়নে হাজা য**ত ছিল পরি**হাস জনে। (খণ্ড বন্ধু)

ব্রাহ্মণ বসিয়া পীঠে বেদমন্ত্র পড়ি ঘটে গণেশেরে কৈল আবাহন। দিয়া পঞ্চ উপচারে 'পূজা কৈলে দিবাকরে' শুভক্ষণে গন্ধাধিবাসন ॥ মহী আর গন্ধ শিল। দূর্ববা ধান্ত পুষ্পমাল। দ্ধি ঘৃত স্বস্তিক সিন্দুর। চামর দর্পণ কর্ণপূর॥ আয়া দেয় জয় চারিভিতে। ষোড়শ মাতৃকা-পূজা ঘুত ঢালি চেদিরাজ। পূজা তথি কৈলা পুরোহিতে। সমাধিল পুরোহিত কৰ্মাকাও ছিল যেত দেখি ধর্মকেতুর কৌতুক। হানন্দে করিল। নান্দীমুখ॥ ১-১ পুজে নানা দেবতারে (খ) পুজে অন্ত দেবতারে (বঙ্গ ও দী) ২-২ মহী গন্ধ ধান্ত শিলা শত ত্কা পুস্পমাল। (খ ও দী) ८-८ मूखला। (मी) ৩-৩ অন্ত্ৰ (দী) অতিরিক্ত— শুত আয়্যাগণ মিলে বাছ গীত কুতুহলে জল শয়ে নিশাভাগরাতি। (দী) ব্যাধের রমণী মলি সভে দেই হুলাহুলি. জল সহি বুলে ঘরে ঘরে॥ (খ) ৫-৫ শাস্ত্রমত যত ছিল একে একে নিবড়িল পশ্চাৎ করিল নান্দীমূথে ॥ (বঙ্গ)

12-2303 B. T.

একে একে কৈল কর্ম যে ছিল কুলের ধর্ম্ম
ধর্মকেতু কৈলা সমাপন।
মুকুট-মণ্ডিত শির কালকেতু মহাবীর
বন্দে গুরু দিজের চরণ।।
মহামিশ্র ইত্যাদি।।

কালকেতুর বিবাহ

গমনের শুভ বেল। বাউরী যোগায় দোলা
তথি বীর কৈল আরোহণ।
বর যাত্রা পড়ে সাড়া বাজয়ে চেমচা কাড়া
চারিদিকে বাজয়ে বাজন ॥
কালকেতুর বিবাহ-মঙ্গল।
চৌদিকে হুলুই ধ্বনি দেই ব্যাধ-নিতাম্বনী
নিদ্যার মানস সফল ॥

সমুখে দেউটি জ্বলে হাস্তক্থা কুতৃহলে

কহে যত বর্যাত্রিগণ।

জামাতা-গৌরব-হেতু আসিয়া সঞ্জয়কেতু স্বারে করিলা সম্ভাষণ ॥

ছায়ামগুপের তলে বস!ল্য কুঞ্জরছালে বন্ধুগণ মেলি কুতৃহলে।

স্বস্থিবাক্য দ্বিজে করে বরণ করিলা বরে বাড়-ধরা স্ফটিক-কুণ্ডলে ॥

করিয়া বিরল স্থান জামাতারে করে মান প্রেমবতী ব্যাধের অবলা।

শিরে দিয়া দূর্বাধান নিছিয়া ফেলিলা পান গলে দিল বন-ফুল-মালা॥

চারিদিকে গীত-নাটে ফুল্লরা বসিলা পাটে কুঞ্জরের চর্ম্ম মধ্যে ধরে।

চৌদিকে ব্যাধের নারী উচ্চস্বরে বলে হরি ছাউনী হইল ক্সাবরে॥

বাপের পুণ্যের হেতু আনন্দে সঞ্জয়কেতু কুশ্হস্তে করে ক্তাদান।

যৌতুক ধন্ধকথান দিল খর তিন বাণ ভামাতারে করিল বহুমান ॥°

১-১ যায় সবে এড়ি নানা বন। (বঞ্চ)
বরজাত পাল্যা মোহাজন। (দী)
বরজাত্তি করিল সাজন। (শ)
বরজাত্তি পাইল মহাধন। (গ)

२-२ शल मिन शांठी शूल्भव याना। (१)

৩-৩ মুর্ববা গুণ অন্থূলীর আগ । (দী) গণ্ডকের মন্থুরি দিল মান । (গ) বাজায়্যা ঢেমচা পড়া দিজে বান্ধে গাঁটিছড়া বরকন্মা দেখে অকন্ধতী।

বন্দিয়া রোহিণী সোম লাজাহুতি কৈল হোম দোহে কৈলা অনলে প্রণতি ॥

^২দোঁহে প্রবেশিয়া ঘরে মীন মাংস ভোগ করে রাত্রি গেল কুসুমশ্যায়।

^২ চিন্তাযুক্ত ধর্মকেতু কুটুম্ব-ভোজন হেতু বেহাইরে মাগিলা বিদায়॥^২

বেহাইর পায়ে পড়ি ব্যবহার কৈল °কড়ি° °সাত্রনলা আঠাজাল ফালে ।°

পোথরে আমানী ভরি দিল। সঞ্জয়ের নারী ফুল্লরা করিয়া কোলে কান্দে॥

ইপ্ট কুটুম্ব আদি সঞ্জয়ের যত জ্ঞাতি অভিলাষ পূরিলা "যৌতুকে"।

রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ গান করে শ্রীমুকুন্দ রাজা রঘুনাথের কৌতুকে॥

১-১ অস্তবেদ্ধ অক্ষাতি দেখিবিদে নিশাপতি অগ্নিপুজা গৃহহেতু হৈ জায়। (দী)

২-২ ভোজন শয়ন রসে ধর্মকে তুনি সি সেশে বিহাইরে মাগীলা বিদায় ॥ (দী)

৩-৩ বড়ি(দীওবন্ধ)

৪-৪ দেখিআ মোলিন মুখচানদ। (খ)

৫-৫ মাট্যা শিলা চালু পুরি (দী)

৬-৬ কৌতুকে (দী)

কালকেতুর স্বদেশে গমন

খণ্ডরে বিদায় করি আলা বার নিজ-পুরী ফুল্লর। সহিত কুতৃহলী।

^১শিরে দিয়া দূর্ব্বাধান নিছিয়া ফেলিল পান^১ নিদয়া দিলেন হুলাহুলি॥

ছায়ামগুপের মাঝে চেমচা দগড়ি বাজে বন্ধুজন দিলেন যৌতুকে।

অন্নপানে করি সুখী পঞ্চদিন ঘরে রাখি বিদায় দিলেন সকৌতুকে॥

'সম্পদ-অর্জনে ধীর' হৈলা কালকেতু বীর দেখি সুখী হইল ধর্মকেতু।

নিদয়ার স্থে বড় বধ্ গৃহকর্মে দঢ় কুলযশ-রক্ষণের হেতু ॥

যেদিনে যতেক পায় সেদিনে তাহাই খায় দেড়ি অন্ন নাহি থাকে ঘরে।

তিন বাণ শরাসন বিনা আর নাহি ধন °বান্ধা দিতে পারে না উধারে ॥°

১-১ পুত্রেরে আশীস দিয়া , পান নিছে পেলাইয়া (দৃী)

২-২ সম্বল উজ্জোগে বীর (দী) সম্বল অর্জ্জনে বীর (বঙ্গ) যেমত অর্জ্জন বীর (গ)

৩-৩. বান্ধা দিতে ধারেতে উধারে 🛚 (দী)

>প্রভাতে সম্বল তরে মৃগ খগ বরা ধরে> প্রতিদিন করয়ে মৃগয়া।

পুত্রহেতু ধর্মকেতু নিশ্চিন্ত সম্বল হেতু আনন্দিত হৃদয়ে নিদয়া।।

নিদয়া বইসে খাটে মাংস নিয়া গিয়া হাটে অনুদিন বেচয়ে ফ্লুরা।

শাশুড়ী যেমন ভণে তেমন বেচেন কেনে শিরে কাঁখে মাংসের পসরা॥

মাংস বেচি নিয়া কড়ি কিনে চালু ডালি বড়ি তৈল লোণ কেনয়ে বেসাতি।

ংয়ে দিনে যে জব্য হয় তাহা রামা কিনি লয় চলে রামা পূর্ণ করি পাথি॥ ং

ফুল্লরা আইলে ঘরে নিদয়া জিজ্ঞাসা কৰে কহে রামা হাট-বিবরণ।

আজা নিদয়ার ধরে ফুল্লরা রন্ধন করে আগে ধর্মকেতুর ভোজন॥

মৎস্ত মাংস আদি করি পরশে ফুল্লরা নারী স্থুপ্থে ভুঞ্জে কিরাত-নন্দন।

যোগান ফুল্লর। বধূ ক্লীর খণ্ড দধি মধু নিদয়ার সফল জীবন।।

১-১ মহাবির প্রতিদিন করয়ে মৃগয়া চিন (গ)

২-২ শাক বেশুন কচুমূলা এট্যা থোড় কাচকলা নানা বস্তু পুরি লয়ে পাথি॥ (ক)

৩-৩ তনয়ে বাগুরা জাল সমর্পিয়া বহুকাল স্থা ভূঞে কিরাত নক্ষন। (বঙ্গ) নানা বিধি বেঞ্চনে ফুল্লরার রন্ধনে স্থাে ভূঞে কিরাত-নক্ষন। (খ)

ইব্যাধের উত্তম দৈব যেমন আছিল শৈব
তেঞি ইইল হেন বংশধর।ই

চিরদিন সাধু-সঙ্গ বিপথ করয়ে ভঙ্গ
ধর্মকেতু চিন্তে পুরহর ॥

মুক্তিপথে দিয়া মন শিবে ভক্তি অনুক্ষণ
ইশুনেন পুরাণ-উপাখ্যান।ই
জায়া-সঙ্গে ধর্মকেতু ভাবিয়া মুক্তির হেতু
বারাণসী করিলা প্যাণ ॥

*পুত্রবধৃ পড়ি কান্দে কেশবাস নাহি বান্ধেঃ
মাসে মাসে পাঠান সন্ধল।

সুধন্য আরড়া স্থান শ্রীকবিকঙ্কণে গান
অভ্যার নৃতন মঙ্গল ॥

কালকৈতুর মৃগয়া*

অনুদিন পশু বধে বীর মহাবল।
কুরুরাজ-সেনা যেন বধে বৃহন্নল ।
শুণেও ধরি আছাড়িয়া মারে মাতকেরে।
দমু উপাড়িয়া বীর আনে ভারে ভারে ॥

- ১-১ ব্যাধের উত্তম দৈব জেজন আছিলা শৈব শেজন কুলের বংশধর। (দী)
- ২-২ গুরুগৃহে গুনেন পুরাণ। (ক এবং দী) গুনে হরগৌরী উপাখ্যান। (খ)
- ৩-৩ নিশ্চিম্ভ সম্বল হেতু (গ)
- ৪-৪ দম্পতি লোটায়া তথা কান্দে বহু ভাবি বেথা (দী)

চুবড়ি মেলয়ে দন্ত বেচেন ফুল্লর।। কুষাণে যেমন দৃেই মূলার পসরা॥ স।জুড়িয়া পালে পালে আনয়ে চামরী। লেজ কাটি 'গছায়ে' ফুল্লরা বরাবরি n ফুল্লরা পসার করে নগর-চাতরে। হাড়িয়া চামর বেচে চারিপণ দরে॥ ভল্লক বসন্ধায় গতে ভয়ে কম্পবান্। তাড়ায়্যা মহিষ ধরে উপাড়ে বিষাণ 🛭 শুঙ্গের পসরা দেয় ফুল্লুরা বাজারে। প্রণদরে বেচে শিঙ্গা দেয় শিঙ্গাদারে n ৺যন্ত্র পাতি ব্যাভ্র মারে আনে বাঘছাল।৩ বিষ-নখ ঃখুদ দিয়াঃ কেনয়ে ছাওয়াল।। হাটে বাঘছাল বেচে ফুল্লরা রূপসী। যতন করি কিনে নেয় 'কাপালী' সন্ন্যাসী। শরতে শরতে মারে চুসাইয়। মুগ্তে। গণ্ডার বান্ধিয়া কাণ্ডে খড়ন দিয়া ছিতে। ফুল্লরা বেচয়ে খড়া দরে এক পণ। ব্রাহ্মণ সজ্জন নেয় করিতে তর্পণ॥ বন বেডি এড়ে জাল ঝোপে মারে বাডি। জালে পড়ে ছোট পশু পায়্যা তাড়াতাড়ি॥

১-১ জোগায় (খ)

২-২ সম্ভায় গাড়ে (বঙ্গ)

৩-৩ বাছ ধরি উপাড়ি নেয় যে নথ-ছাল। (क)

⁸⁻⁶ গণ্ডা-দরে (খ)

৫-৫ কপড়ি (খ)কাপড়্যা (বন্ধ)

#

ইশশার ধরিয়া বার লতাপাশে বাংক।ই ঘর আইসে মহাবীর ভার করি কাজে॥ ফুল্লরা বীরের ভরে কর্যাছে রন্ধন।
চণ্ডিকামঞ্চল গান শ্রীক্রিকিঞ্কণ॥

১-১ শশাক হরিণ বরা তুল পালে বালে। (খ)

পাঠান্তর --

স্থাদিন মৃগন্নায় বীর কালকেতু জায়

মোহামার করমে কাননে।

জাহারে শম্থে দেগে মারে বীর জাকে তাকে
ফুল্লরার হরশীত মনে॥

বধে পশু বীর মোহাবল।

যেন কুরু দৈল্লগণে যুদ্ধ কার দিনে দিনে

নিধন করিলা বৃহন্নল॥

জেই দিকে বীর ধায় স্পীতি কাপে পদ ঘায়

বেগবাতে কাপে তরুগণ।

স্থানীর রব জিনি বোর শিল্পীনীর ধ্বনী

বন ছাড়ি পলায় বারণ।

কাণ্ডেতে গণ্ডার মারে থড়া চারীপণ দরে

বিচে লৈয়া ব্রাহ্মণ সজ্জনে।

মাতঙ্গ ধরিয়া বলে বিচে লৈয়া নানান্ধলে
পুজি মুলে বেচমে দশনে।

জন্ম পাতি ব্যাদ্র মারে নথ বিচে ঘরে ঘরে কাপড়ি শন্তাশী লয় ছাল। তাডিয়া মন্ত্রীর ধরে সিংহ বিচে সিকাদারে

তাড়িয়া মহীৰ ধরে সিংহ বিচে সিকাদারে চর্মে বিচে নিরমীত ঢাল ॥ চামরী সাঁজুড়ি ধরে লেঞ্চ কাটী আনে ঘরে विक्त मृद्ध हांबी शाह भग। কপি বিচে ঠুঠারেরে ঘোড়া-শালে রাথিবারে কিনী তাহা লয় কোন জন। বরাহ মারয়ে বানে লোম তার কেহ কিনে দেব-অঙ্গ মার্জ্জনা কারণ। পুঞ্জে পুঞ্জে শিবা মারে শিবা-ন্বত করিবারে কিনী তাহা লয় বৈগজন ॥ নকুল গউলা ধরে তাহা প্রয়োগের তরে কোন কোন জন কিনী লয়। শরভ করভ ধরে চাবি পাঁচ পণ দরে কোন জনে করয়ে বিক্রয়। ভল্লক কিনীঞা লয় কোন জন তাকি লয় লোম তরে বিচে কোন স্থানে। মুগ-মদকার লয় মারয়ে করকচয় বেচে বীর করিয়া জতনে॥ পক্ষ পশুকরে ক্ষয় জার হে ভক্ষক হয় বিচে মাংস জতনে দম্পতি। কহে অভয়ার দাসে শ্রবণে অধর্ম নাশে অন্তে তার হবে শুভগতি ॥ (দী সং)

শ্বতিরিক্ত
 লৈবজোগে এক স্থানে দেখে বির তৃইজ্বনে
 ভল্পকি বাখিনি তৃই স্থি।
 তৃই জ্বনে নিয়া ছা হিনিকিনি করে গা
 তৃজ্বনে রুসিলা বির দেখি।

কালকেতুর ভোজন

দ্র হৈতে ফুল্লরা বীরের পাল্য সাড়া।
সম্রমে বসিতে দিল হরিণের ছড়া h

'বোঁচা' নারিকেলেতে প্রিয়া দিল জল।

'করিল ফুল্লরা তবে ভোজনের স্থল h'
চরণ পাখালি বার জল দিল মুখে।
ভোজন করিতে বৈসে মনের কৌতুকে॥
সম্রমে ফুল্লরা পাতে মাটিয়া পাথরা।
বেঞ্জন খাইতে দিল নৃতন খাপরা॥

ভন্ন ক্ষিন নথ বাদিন সারিঞা মুখ

ত্ত্বনে ধাইল ত্ই দিগে।

অকর্ণ পুরিয়া সর মারে তারে বিরবর

ভন্নকিকে পাড়ে বির য়াগে॥
বাদিনি পালায়া জায় য়াইসে রাজার ঠাঞ

রাজস্থানে চলেন বাদিনি।
ভূমে য়াছাড়িয়া গায় পুত্র পুত্র ভাকে রায়

মহারাজা জিজ্ঞাসে আপনি॥
বেলা হৈল ত্থাহর মহাবির আইল ঘর

করিঞাছে ফুল্লরা রন্ধন।
ভোজন করিঞা বিবে স্থথে নিলা জায় ঘরে
বিরচিল শ্রীকবিকঙ্কণ। (গ)

১-১ মোচা (দী ও বছ) ২-২ কাটা দিয়া কৈল বামা ভোজনের স্থল ॥ (খ) 'মোচড়িয়া' গোঁফ হুটা বান্ধিলেন ঘাড়ে। এক শ্বাসে সাত হাঁড়ি আমানি উজাড়ে ॥ চারি হাড়ি মহাবার খায় খুদ-জাউ। ছয় হাণ্ডি মুসুরী-সুপ মিশ্রা তথি লাউ॥ ঝুড়ি হুই তিন খায় আলু ওল পোড়া। বক্রুর সহিত খায় করঞ্জা আমড়া ॥

*

অম্বল খাইয়া বীর বনিতারে পুছে।
বন্ধন কর্যাছ ভাল আর কিছু আছে।
এক্যাছি হরিণী দিয়া দধি এক হাড়ি।
তাহা দিয়া অন্ধ বীর খায় তিন হাড়ি॥
শয়ন কুৎসিত বীরের °ভোজন বিট্কাল।
ছোট গ্রাস তোলে যেন তেয়াটিয়া তাল॥
ভোজন করিতে গলা করে ঘড় ঘড়।
বসন খসায় যেন মরাইর বড়॥
*

১-> সাজুড়িয়া (দী) সাঞ্জড়িয়া (খ)

২-২ বনপুঁই ভার হুই কলসী কাঁচড়া। (খ) সাক কচু থায় বীর মিশাঞা আমড়া। (গ)

^{*} অতিরিক্ত--

ফুলবা রন্ধন করে জ্বালে গোটা বাঁশ। বোল বান্ধি দেয় গোটা হরিণের মাস। দশ গণ্ডা মহাবীর থায় নেউল পোড়া। দার কচুর ঘণ্ট থায় মিশ্মায়া আমড়া। (বঙ্গ এবং থ)

৩-৩ ভোজন করিয়া বির মোচড়ায় দাড়ি॥ (গ)

৪-৪ ভোজন বিশাল (খ)

e-e কাপড় উসাস করে যেন মরায়ের বড়। (গ)

ভোজন করিয়। সাঙ্গ কৈল আচমন।
হরীতকী খায়াা কৈল মুখের শোধন।
নিশাকাল হইল বীর করিলা শয়নে।
নিবেদিল পশুগণ রাজার চরণে॥
অভয়ার চরণে মজুক নিজ চিত।
শ্রীকবিকঙ্কণ গান মধুর সঙ্গীত॥

সিংহের নিকট পশুগণের নিবেদন

বার দিয়া বৈদে গিরিশিখরে কেশরী।
ছোট বড় পশু আইল করিতে গোহারি।
যাইয়া সিংহের কাছে যত পশুগণ।
ভবানী সোঙরি সবে করয়ে ক্রন্দন।
কান্দে গজঘটা সিংহে নিবেদিয়া ছঃখ।
তোমা সেবি দশনবজ্জিত হইল মুখ।
মহিষ আইল মুণ্ডে গলয়ে ক্ষরি।
কহয়ে যতেক ছঃখ দেয় মহাবীর।
আদাশ করয়ে আসি চমরীর ঘটা।
'দেখহ পশুর রাজা সবার লেজ কাটা।
গণ্ডার কহয়ে আমি বড় ছঃখ পাই।
খড়েগর কারণে মোর মরে ছই ভাই।

১-১ ভাবেন বিষাদ সবে গেল লেজ কাটা। (ক ও থ)

ইকপি বলে রায় মুই হইন্থ নির্বাংশ।
কালকেত্ব বান্ধিয়া বেচিল মোর বংশ।
বারশিঙ্গা তুলারু ঘোড়ারু ঢোলকাণ।
অবনী লোটায়া কান্দে করি অভিমান।
করিল নিধন কালকেতু পরিবার।
বিফল জনম হৈল মৈল স্থত-দার।।
ইপতিহীনা হরিণীই কান্দে উভরায়।
ইবভি-স্থ-হীন হৈল প্রাণ নাহি যায়॥
ইপশুর গোহারি শুনি রাজা পঞ্চানন।
লোহিত লোচনে কোটালেরে জিজ্ঞাসন।।
সম্ভ্রমে কোটাল রূপে করে নিবেদন।
অভ্যা-মঙ্গল গান শ্রীকবিকস্কণ।।

১-১ কপি বলে শুন সিংহ কর্ম বিপরীত:
কালকেতু ঠুটারে বেচিল মোর হত ॥ (ক)
কোপি বলে রায় মোরে কর নিরাতম্ব।
কালকেতু ছুতারে বেচিল মোর বংশ ॥ (খ)

২-২ রাজী হয়্যা হরিণী (বঙ্গ ও খ)

৩-৩ পতি-স্বত-হীন হৈল প্রাণ নাহি যায় ॥ (বঙ্গ ও থ)

⁸⁻⁸ পশুর ক্রন্দনে লক্ষা পাল্য পঞ্চানন।
ক্রক্টি করিয়া কোপে কোটালে গর্জন । (বঙ্গ)
পশুর ক্রন্দন শুনি রাজা পঞ্চানন।
ক্রক্টী করিয়া কোপে আদেশে রাজন । (থ)

সিংহের নিকট বাঘিনীর আবেদন

'শুন শুন রায়' মাঙ্গিয়ে বিদায় ছাড়িব তোমার বন। পাত্র অধিকারী না শুনে গোহারি বিপাকে তেজি জীবন n ^২নারীগণ^২ সঙ্গে থাক লীলা রক্তে °না কর দোষ বিচার।° একা কালকেতু পশুবধ হেতু নিত্য পাড়ে মহামার n একা মহাবীর নিয়া তিন তীর কুলিতা কাঠের ধন্ম। পশুগণে কাল বনে এড়ে জাল °ধায় যেন নব ভানু॥° ভুবনে বিখ্যাত মোর প্রাণনাথ কালকৈতু মারে বাণে। 'দেখি স্থত-মুখ তেজি পতিত্বখ না গেন্থ পতির সনে ॥

২-১ আমি তব পায় (দী)

२-२ ज्ञानीत्रव (मी)

৩-৩ না করে দেশের বিচার। (ব**ল**)

⁸⁻⁸ ধায়ে বায়ে যেন রেণু # (বঙ্গু.) ধায় বির পবন জহু॥ (গ)

^{৫-৫} ছিল **ঘূটা পো** তারে করি মো মা গেলাম পতি সরনে।। (গ)

রূপ গুণে যুত মোর ছই স্থৃত কালকেতু কৈল বধ। হাট নিরমিল বৈসাতি না পাল্য হরিল বিধি সম্পদ ॥

*

১-১ দেব (গ)

রাজা রঘুনাথ গুণে অবদাত রসিক মাঝে স্থজন। তার সভাসদ রচি চারুপদ অস্থিকামঞ্চল গান॥

সিংহের সমর-সজ্জা 🕇

পশুর ক্রন্দন শুনি 'রাজ।' পঞ্চানন।
কোটাল কোটাল ডাক পাড়ে ঘনে ঘন।
আসিয়া কোটাল নুপে দিল দরশন।
ভয়ে কম্পবান তন্তু মুদিতলোচন॥

শ অতিরিজ—
 তোমার কিংকরে ছার নরে মারে
 ইথে নাহি বাস লাজ।
 যদি পশুগণ না কৈলা পালন
 কেনে হৈলা মুগরাজ।।
 বহু পশুগণ আসীয়া তথন
 রাজারে করে গোহারী।
 তিনপদি ছন্দ গাহিলা মুকুন্দ
 চপ্তিরে প্রণাস করি।। (দী)
 পা খ পুথি হইতে।

পশুমধ্যে তোমায় দেখিয়ে বড়লোক। রায়বার তোমারে করিয়ে আমি কোক॥ পশু মারে এক নর মনে দেই বাথা। ভালমন্দ নাহি দেহ দেশের বারতা ম আজিকালি যদি না দেখাও মহাবীর। ^১তোর বুক নখেতে করিব তুই চির॥১ বাঘ কলে রায় তুমি আজি হও স্থির। কালি প্রাতে আমি দেখাব মহাবীর 🛚 সেই নিশা গেল তবে হইল প্রভাত। ^২পাত্রমিত্র **সংঙ্গ** যুক্তি করে পশুনাথ॥^২ কোক শাৰ্দ্ধ্যল আগে তুই সেনাপতি। ত্দক্ষিণে ধাইল তারা যেন বায়ুগতি॥৩ গণ্ডক বারণ মহিষ সেনাপতি। পশ্চিমে ধাইল তারা যেন মেঘগতি !! এমন সময়ে গণ্ডা দিলেন উত্তর। তোমার উচিত নতে নরের সমর॥ নরসনে রণ রায় বড পাবে লাজ। •মাছিকে মারিতে কর এতবড় সাজ ॥* এতেক শুনিয়া সিংহ গণ্ডার ভারতী। চন্দন গাছের তলে করিল বসতি॥ চন্দ্র গাছেতে রাজা চালিলেন গা। বামেতে চামরী দেই চামরের বা॥

১-১ তোর বুক চিরি পান করিব ক্ষির। (বঙ্গ)

২-২ পঞ্চপাত্র লঞা জুক্তি করে পস্থনাথ। (গ)

৩-৩ পুর্বাদিগে জায় তুরা রাজাব আরতি॥ (গ)

৪-৪ মাছিকে হানিতে কেন ফেল তুমি বাজ । (বক্স)
13 —2303 B.T.

চারিদিকে চর পাঠাইল সাবধানে।
১শুভক্ষণে মৃগরাজ রহিলা শয়নে॥১
অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

কালকেতুর প্রথম যুদ্ধযাত্রা*

প্রভাতে উঠিয়া বীর পরে ইবীরধড়া।ই

ত্বুলিভার বাঁশেই দিল মুক্রগার চড়া॥
রাঙ্গা ধূলি মাখিয়া অঙ্গের কৈল বেশ।
জাল-দড়ি বান্ধিয়া রঞ্জিত কৈল কেশ।
প্রণাম করিয়া বার চণ্ডীর চরণে।
শুভক্ষণে প্রবেশ করিল গিয়া বনে॥
কাননে থাকিয়া বাঘা দেখিলেক বীরে।
সাড়া মারিয়া বাঘা গোকাকুল তন্তু।
লাফ দিয়া বীরের ধরিলেক ধন্তু॥
বজ্র মুটাক বীর মারে তার মুণ্ডে।
ঝলকে ঝলকে রক্ত উঠে তার তুণ্ডে॥
বজ্র মুষ্টি শিরে মারে মহাবীর।

"এক ঘায়ে বাঘার ভাঙ্গিয়া পড়ে শির॥

১-১ শুভক্ষণে কালকেতু করিল পয়াণে । (বন)

^{*} খপুথি হইতে।

২-২ রাজাধরা(বজা)

৩-৩ যৌতুকের বাঁশে (বন্ধ)

৪-৪ একখায়ে বাঘা তবে ভাজিল শরীর 🛚 (বন্ধ)

বাঘা পড়িল রণে বড় পাল্য শোক। রাজা-স্থানে বার্ত্তা দিতে চলিলেক কোক॥ অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

পশুরাজের যুদ্ধে গমন*

শুনিয়া 'কোকের' মুখে বাঘের মরণ।
কোপে সিংহ বীর যায় করিবারে রণ॥
লেঙ্গুড় বাড়ায় সিংহ মাথার উপর।
'কলার বাগুড়ি যেন কাঁপে কলেবর॥'
পশুরাজ সনে বীর যুঝে কালকেতু।
দেবাস্থরে রণ যেন হৈল সুধা হেতু॥
ধাইল কুঞ্জরবর বড়ই ত্রস্ত।
মহাবীরের গায়ে আসি ঠেকাইল দন্ত॥
খরটাঙ্গি দিয়া বীর কাটে তার শুণ্ড।
'গৃহস্তে খেমন কাটে ক্ষেতে ইক্ষুদণ্ড॥'
পড়িল সকল সেনা দেখি পশুপতি।
ধাইল সমরে সিংহ সমীরণ-গতি॥
দশ নথে আঁচড়ে বীরের কলেবর।
শোণিত বীরের অঙ্গে বহে ঝর ঝর॥

^{*} থ পুথি **হ**ইতে।

১-১ লোকের (বছ)

২-২ কলার বাগুলা যেন কম্পিত কেশর। (গ)

৩-৩ বালকেতে যেমন কাটয়ে ইক্দণ্ড 🛚 (বঙ্গ)

বজ্র মুটকি বীর মারে তার মুণ্ডে। ঝলকে ঝলকে রক্ত নিকলয়ে তুণ্ডে॥

রণ ছাড়ি সিংহ পালায় রড়ারড়ি। পাছে মহাবীর মারে ধন্তকের বাড়ি॥ ধন্তকের বাড়ি খায়্যা সিংহ নাহি ফিরে লেক্বড লুটায় তার অবনী-উপরে॥

সেই দিন মহাবীর করিল গমন। হরিষে চলিল বীর আপন ভবন॥ অভযার চরণে ইত্যাদি॥

পশুরাজের সহিত কালকেতুর যুদ্ধ

প্রভাতে পরিয়া ধড়া শরাসনে দিয়া চড়৷
খরতীক্ষ বাছিল তিন বাণ ৷

>মাথাতে জালের দড়ি কানে ফটিকের কড়ি
মহাবনে করিলা প্যাণ ॥

- শ্বিক্ত-
 হ্ইজনে যুদ্ধ করে হুই মহাবল।

 দ্বিহাকার পদভরে ক্ষিতি টলমল॥ (বঙ্গ)
- * অতিরিক্ত

 দেবীর বাহন বল্যে নাহি মারে বীর।
 তৃষায় আকুল হয়্যা পান করে নীর। (বঙ্গ)

 >-> শিরে বায়ে জালদড়ি (খ এবং বঙ্গ)

দুরে থাকি দেখে চর ক্রে সিংহ-বরাবর কালকেতু ওই আসে বন। ১৩নি কোপে জলে অঙ্গ পথে আগুলিল সিংহ তুই জনে করে মহারণ॥ সিংহে বীরে মহারণ সচকিত পশুগণ অবিরত দোহার গর্জনে। সিংহ বলে নাহি টুটে সম্ভ্র নাহি গায়ে ফুটে ঝড বহে নিশ্বাস-প্রবান ॥ মুখ মেলে গিরিদরী নথ যেন চোখা ছুরি গোঁফ ছুটা লেগেছে এবংগ। দশনের কডমডি তাকে যেন পড়ে বাডি কেতৃতার। উদিত লোচনে॥ কাঁপায় উন্মত্ত ঝোঁটা ংঝোপঝাড়ে মেঘঘটাং লেজ ফিরে বিজুরি সঞ্চারে। ধায় অতি শীঘ্ৰগতি নথে আঁচড়িয়া কিতি ক্ষেণে ভূমে ক্ষেণেক সম্বরে॥

বীর পাক দিয়া গোঁকে "দশনে অধর চাপে"
আগলয়ে সিংহের সরণি।

ধায় বীর বীরদাপে বেগে বস্থমতী কাঁপে ধূলায় লুকায় দিনমণি॥

১-১ তুই পাশে বীর সন্ধ (বন্ধ এবং থ)

২-২ ব্যোম ছাড়ি মেঘঘটা (বঙ্গ)

৩-৩ ফেলিয়া পট্টিশ লোফে (ক, দী এবং বন্ধ)

মার মাব বলি ভাকে বাণ এড়ে ঝাঁকে ঝাঁকে সঘনে বাজায় জয়-শঙ্খ।

সঘনে পড়য়ে গুলি • ভাঙ্গয়ে মাথার খুলি • ত্রিভূবনে লাগয়ে আতঙ্ক॥

গগনে উঠিয়া লাফে বীরেরে কেশরী ঝাঁপে হানিতে চাপড চাহে বকে।

উঠিয়া মহিষা 'চালে' সিংহেরে হানিল ভালে দারুণ মুটকি মারে মুখে॥

সিংহ তেজে বড় দড় বীরকে মারিল চড় লাফ দিয়া উঠিল গগনে।

পড়িতে বীরের গায় চালে লুকাইল কায় সিংহ রহে চাপিয়া চরণে ॥

পরাক্রমে নাহি টুটে কশরী ঠেলিয়া উঠে যেন ক্ষিতি হইতে তপন।

*বীর অতি কোপে যুঝে * ধরিল সিংহের লেজে বিষধরে গরুড় যেমন ॥

লেজে ধরি দেয় পাক সিংহ যেন ঘোরে চাক তথাপি সিংহের বড বল।

' তুলিয়া আছাড়ে ভূঞে শোণিত নিকলে মঞে তুই অক্লে বহে ঘৰ্মাজল॥ '

১-১ প্রবণে লাগয়ে তালী (দী এবং বন্ধ)

২-২ টালে (খ)

७-७ भून वीत त्यांश श्टर्भ (मी)

৪-৪ ধাইয়া কানন মাঝে (দী. বঙ্গ এবং খ)

৫-৫ ৠনি বড় পরমাদ সিংহ পেঞা য়বসাদ

মুখে তার দোনিত নিকলে।। (গ)

পিঠে মারে ধন্থ বাড়ি ভাহা দেখি তাড়াতাড়ি ভল্লুক প্রবেশ করে গাডে।

শরভ পালায়্যা যায় বীর পদে ধরে তায় পাক দিয়া তুলিয়া আছাড়ে॥

মাথাতে লাঙ্গুড় তুলি বাঘা আইসে মুখ মেলি বাকসনা ফুল হেন দাড়া।

ফেলিয়া মারিল টাক্সী >বাঘের দশন ভাক্সি> লেজে ধরি দেয় পাক নাড়া॥

ভঙ্গ দিল সেনাগণে সিংহ প্রবেশিলা রণে লাজে মনে হইয়া ব্যাকুলা।

^২কবাট^২-বিশাল পাটা গগনে লাগিল ছটা মূলার সমান দম্ভগুলা॥

পুন সিংহ কোপ-দৃষ্টে আঁচড়ে বীরের পৃষ্ঠে কবচ করিল ছার্থার।

বিষ-নথ যমধাবে "জর্জ্জন করিল বীরে" **অঙ্গে বহে** রুধিরের ধার॥

দোহে বাহু-কশাকশি যেন ফিরে রাহু শশী প্রথর নথর যমধার।

ঠেকিয়া বীরের অঙ্গে সিংহের নথর ভাঙ্গে অঙ্গ যেন জ'তিয়ে কিন্ধর ॥

- ১-১ বীর বড় রণে-রঙ্গি (খ)
- ২-২ করাল (থ)
- ৩-৩ যুদ্ধ করে ছুই বীরে (বঙ্গ এবং ক) কোপে বৈদাইল কোরে (গ)

কবিকস্কণ-চণ্ডী

ইসিংহেরে ধরিয়া বলেই পাঁজর ভাঙ্গিল কিলে কুপা করি ছাড়ি দিল বীর।
সিংহ পালাইয়া যায় ঘন পাছুপানে চায়
কালে সিংহ পান করে নীর॥
কালকেতু রণ জিতে আনন্দে সরস চিতে
গাইল আপন নিকেতন।
রণে হারি পশুগণ সিংহের নিল শরণ
বিরচিল শ্রীকবিকস্কণ।

পশুগণের রণে ভঙ্গ

দেবীর বাহন বলি নাহি বধে বীর।

ত্যায় আকুল সিংহ পান কৈল নীর॥

ত্রাসেতে পালায় গণ্ডা শার্দ্দুল তুরঙ্গ।

শরভ ভল্লুক কোক রণে দিল ভঙ্গ॥

গবয় পালায় পিছে নাহি পড়ে পা।

তবড় বড় হুদে হাতী লুকাইল গ।॥

বায়ে ভর করি ধায় তুলাক ঘোড়াক।

উভকান করি ধায় তুলাক শশাক।॥

১-১ আকাড়ি করিয়া তোলে (বঙ্গ এবং থ)

* অতিরিক্ত—

ধহুকের বাড়ি থেএ সিংহ নাহি ফিরে।
লেশ্বড় লোটায় ভার অবনি উপরে ॥ (গ)
২-২ পালাইঞা সিংহ গিঞা পান কৈল নির ॥ (গ)
৩-৬ ঝোড়ঝাড়ে মহা হ্রদে লুকাইল গা॥ (গ)
৪-৪ আহত (বঙ্গ)

ভূমে লেজ লোটাইয়া ধায় বনগরু।

>কীচক>-কন্টক-বনে লুকায় সজারু॥
নেউল লুকায় গাড়ে লুকায় জম্বুকী।

*গাছে থাকি কপিগণ মারয়ে ভাবকী॥
উপনীত হৈল পশু তমাল-তরুমূলে।
প্রদক্ষিণ নমস্কার করিল দেউলে॥
দেউলের চারিদিকে করয়ে রোদন।
অধিকা-মঙ্গল গান শ্রীক্বিক্ষণ॥

পশুগণের ক্রন্দন

কান্দে সিংহ আদি পশু সোঙরি অভয়। অপরাধ বিনে কেনে দূর কৈলে দয়। । ভালে টীকা দিয়া মাগো করিলে মৃগরাজ করিব ভোমার সেবা রাজ্যে নাহি কাজ।

১-১ বিকট (বঞ্চ)

২-২ আহনে বিহনে কপি মারয়ে ভাবকী। (দী) আছড়ে বিছড়ে কপি মারয়ে ভাবকী। (বঙ্গ)

শ্বভিরিক্ত:
 স্থথে রাজ্য করিতে আথেটি হৈল কাল i
 কেন হেন দিলে মাতা বিষম জ্ঞাল । (থ এবং বঙ্গ)
 স্থথে রাজ্য করিতে অকটি হৈলা কাল ।
 কেন হেন দিলা মাতা বিষয় জ্ঞাল ।
 শর্ভ কর্জ কান্দে করি অভিমান ।
 আমার জ্ঞেন কুল তোমাতে প্রমাণ ।

প্রাণের দোসর ভাই গেল পরলোক। উদরের জ্বালা আর সোদরের শোক॥ হাতে পদে দড়ি দিয়া বান্ধে তুই তোক। গড়াগড়ি দিয়া কান্দে রায়বার কোক॥ দয়াসিন্ধু পার কর অপার সংসার। তোমার স্মরণে মাতা আপন 'উদ্ধার' ॥ উই চারা খাই আমি নামেতে ভালুক। নেউগী চৌধুরী নই না করি তালুক॥ সাতপুত্র নিলা বীর বান্ধিয়া জাল-পাশে। সবংশে `মজিকু মাতা তোমার আশ্বাসে।। প্রতিদিন মহাভয় বীরের তরাসে। ংমাপ্ত নৈল পো মৈল ছটি নাতি শেষে॥॰ কান্দয়ে ভল্লুক শিরে °মারে করাঘাতি°। জরাকালে হইল মোর এতেক তুর্গতি।। ^৫বরাহ বলেন মুথা আমার ভক্ষণ। কার হিংসা নাহি করি নাহি প্রয়োজন।।

আন ধায়ে পদ চাব্যে আমি পদ আঠে।
শকল বিক্রম টুটে বীরের নিকটে॥
আপনি পস্থর মোরে কৈলা পুরোহীত।
বিপদ উদ্ধার হেতু তোমার ইঙ্গীত॥ (দী)

১-১ প্রতিকার (খ)

২-২ মরিল পিতা (খ)

৩-৩ নারী পুত্র মৈল নাতি মৈল অবশেষে। (क)

⁸⁻⁸ করি অত্যাহতি (দী) করি আত্মধাতী (বঙ্গ)

৫-৫ বরাটিয়া চ্যাকা মৃথা আমার ভক্ষণ। (বক্ষ)
 বরাট্যা চুচুড়া মৃথা আমার ভক্ষণ (দী এবং খ)

ধরণী লোটায়ে কান্দে ১বীর আছা বরা ।। অরুণ লোচন-যুগে বহে জলধারা। শ্বাশুড়ী ননদ মরে দেওর ভাস্থর। পতি গেল রতিস্থথ বিধি কৈল দূর॥ *ছিল মাত্র অভাগীর কোলে এক পো।° পাশরিতে নারিগো তাহার মায়া মো॥ थृलार्य थुमद रुग्रा कान्नरय रुखिनी। সোঙরে ভৈরবী ভীমা ভবানী ভাবিনী॥ শ্রামল স্থন্দর পুত্র কমললোচন। জ্রযুগল কামধন্ত মদন-গঞ্জন।। কানন করিত আলা কপালের ছান্দে। ভাবিতে ভাবিতে রূপ প্রাণ মোর কান্দে॥ বড নাম বড় গ্রাম বড ক**লেব**র। °লুকাইতে স্থল নাহি অরণ্য-ভিতর॥° কি করিব কোথা যাব কোথা গেলে তরি। •আপনার দন্ত হৈল আপনার বৈরী॥• শুতে ধরি মহাবীর উপাড়ে দশন। এত অপমান মাতা সহে কোন জন॥

১-১ মহাআর্ড বরা (বঙ্গ)

২-২ ছিল অভাগীর পেটে রণ্ডা এক পো। (বৃষ্চ) ছল অভাগীরে মোর পে-রাণ্ড পোএ। (দী) আছিল অভাগীর এক পেটে রাণ্ড পো। (খ)

৩-৩ লুকাইতে নাহি ঠাই বীরের গোচর । (বঙ্গ এবং থ) লুকাইতে স্থল নাহি" বীয়-অগোচর । (দী)

৪-৪ আপনার মাংশ আপনার হৈলা অরী। (দী)

ছক ছক করি কান্দে বানর মর্কটে।
মিরাসে নাহিক কাজ বার সনে হটে॥
বৃদ্ধ পিতামহ ছিল রাম সেনাপতি।
>সাগর বান্ধিয়া কৈল শ্রীরামের হিতি॥
কি মোর দারুণ বিধি লিখিল কপালে।

সাত পুত্র মহাবার বান্ধি নিল জালে॥
বারশিঙ্গা তুলারু ঘোড়ারু ঢোলকান।
ধরণী লোটায়্যা কান্দে করি অভিমান॥
কন হেন জন্ম বিধি কৈল পাপবংশে।
হরিণ ভুবনে বৈরী আপনার মাংসে॥
ভুমে গড়াগড়ি কান্দে শশারু শজারু।
ছুংখ না ঘুচিল মোর সেবি কল্পতরু ॥
গাড়ের ভিতরে থাকি লুকি ভালে জানি।
কি করি উপায় বার তথি দেয় পানী॥

∗ অতিরিক্তঃ–

পূর্ব্বে আছীলাঙ আমি গৃহস্থের ঘরে।
শত পুত্র কাটা পেল ভোমার কর্পনে।
চারিটি তনয় হৈলা বাস করি বনে।
পতি পুত্র বধু মাল্যা কালকেতু-বালে॥
স্বামীর মরণ মোর হৃদে গুরু কাণ্ড।
শংশারে সম্ভতি নাহি আরে তথি রাণ্ড।। (দী)

- ১-১ সাগর ল।ভ্যয়া হৈল গগনে পদাতি ॥ (থ) সাগর লভ্যিতে হৈলা গগনে পদাতি ॥ (দী) সাগর লভ্যিয়া হৈল সে গণে পদাতি ॥ (বঙ্গ)
- ২-২ সাত পুত্র বীর মোর বাজে ঘোড়াশালে ।। (দী)
- ৩-৩ হেকটী পাড়িয়া কান্দে শশারু শজারু। (থ)

চারি পুত্র মৈল মোর মৈল চারি ঝি।
মাণ্ড মৈল বুড়া কালে জীয়া কাজ কি ॥
কাল্যয়ে নকুল স্তু-দারার হাব্যাসে।
সবংশে মজিত্ব আমি তোমার আশ্বাসে॥
শশুগণ সোঙরে সবে চণ্ডীর চরণ।
ধ্য়োনে জানিল মাতা পশুর রোদন॥
১পদ্মাবতী সঙ্গে মাতা করেন যুক্তি।১
পশুগণে রাখিতে উরিলা ভগবতী॥
পদ্মাবতী বলে মাতা চলহ ছরিত।
বিজুবনে যাইয়া পশুর কর হিত॥
উত্তরিলা ভগবতী পশুর সমাজ।
লক্জাতে মলিন হয়া বলে ম্গরাজ॥
অল্যের সেবক হয়া সবংশেতে মরি॥
ভাত্যার সেবক হয়া সবংশেতে মরি॥
ভাত্যার চরণে ইত্যাদি॥

চণ্ডীর নিকটে পশুগণের ছঃখ-নিবেদন

চণ্ডী জিজ্ঞাসেন পশুগণে। একা বীর কালকেতু সবার বধের হৈতু শশুনিতে কৌতুক বড় মনে শ

১-১ পদ্মারে জিজ্ঞাদে দেবী যাবার অন্ত্যতি। (খ)

২-২ নিত্য করে বান বরিদন। (গ) প্রতিদিন বরিষরে বাণে। (খ)

কহে বীর মুগরাজ
কালকেতু ভাঙ্গিল দশন।
কুপা কর কৃপাময়ি তোমার বাহন হই
জীবনে নাহিক প্রয়োজন ॥

বাঘিনীর শুন কথা কালকেতু দিল ব্যথা
স্বামীরে বহিল একবাণে।

তুইটি আছিল পো তারে বড় মায়া মো

কালকেতু বহিল পরাণে॥

কালকেতু লাগিল বিবাদে।

হইগো তোমার দাস বনে খাই পানী-ঘাসং
বধ করে বিনি অপরাধে॥

ভুমে লোটাইয়া মাথা কহে গজ তুঃখকথা
দন্ত তুটা হইল নাশ-হেতু।

এক বাণে কবে অন্ত টাঙ্গী দিয়া কাটে দন্ত

হাটে লয়্যা বেচে কালকেতু॥

১-১ রাজ্যে মোর নাহি কাজ (দী)

২-২ বাঘিনীর শুন আর সামী হুই পুত্র তার মাল্য বীর কহি তুয়া পদে। (দী)

৩-৩ নাহি গেলাম নিজ পতি সনে॥ (গ)

৪-৪ কহেন মহীষ দাস বনে খাই জল খাস (দী)

e-e ভ্মিপড়ি গজ কয় দস্ত মোর উপাড়য় হাটে হাটে বিচে মোহাবীর। (দী)

^১নিবেদন করে গণ্ডা কারে নাহি করি খাণ্ডা - বনমাঝে করিগো নিবাস। কার হিংসা নাহি করি কালকেতু হৈল অরি অফুদিন পাইগো তরাস॥ ^২কপি বলে শুন মা আমার যতেক ছা সবারে বেচিল মহাবীর। হেন মোর করে মন •হারায়ে জীবন-ধন॰ প্রাণ দিব প্রবেশিয়া নীর॥ মূগ আদি পশুগণ সবে কৈল নিবেদন অভয় দিলেন মহামায়। ব্রাহ্মণ-ভূমের পতি রঘুনাথ নরপতি জয় চণ্ডী তারে কর দয়া॥

১-১ গণ্ডক বলেন মাতা মাল্য নারী হত হতা শোঙরীতে প্রাণ নহে স্থীর। (দী) ২-২ কপি বলে শুন মাতা 🏸 ঠুঠারে বিচিলা মাতা প্রাণ তেজি হেন মনে করে। (দী)

৩-৩ তেজি আমি বাদ বন (খ) ত্যজিয়া নিবাসবন (বঙ্গ)

চণ্ডীর প্রশ্ন ও পশুগণের উত্তর

[>]লাজে হয়া হেঁট মুখ নিবেদন কৈল ছখ একে একে চণ্ডীর চরণে। শুনিয়া সবার কথা স্থাব্যথা চণ্ডিকা বলেন পশুগণে॥ সিংহ তুমি মহাতেজ। সকল পশুর রাজা তোর নখে পাষাণ বিদরে। শুনিলে তোমার রা কাঁপয়ে সবার গা কি কারণে ভয় কর মরে॥ ^২বার খ্যাতি অদ্ভূত দোসর যমের দূত^২ ুসমরে রহায় রবির্থ। দেখিলে তাহার বাণ ভয়ে তন্তু কম্পামান পালাইতে নাহি পাই পথ।। মাদি ক্ষত্রি তুমি বাঘ কে পায় তোমার লাগ *তোরে কেবা ধরিবারে পারে। নখ তোর হীরাধার দশন বজ্জরসার কেন ভয় কর মহাবীরে।।

১-১ হেট মূথে পশুগণ করিলান নিবেদন য়েকে য়েকে সভে অভয়ারে। (দী) ২-২ ক্ষেত্রী বড় বীরবর শমন শমান শর (দী)

৩-৩ সমবে হানয়ে রবিরথ। (क) সমরে হানয়ে বীরবত। (বঙ্গ)

৪-৪ পবন জিনিতে পার জোরে। (বজ) পবন জিনিতে পার বেগে। (খ)

যদি গো নিকটে পাই 'ঘাড় ভাঙ্গা রক্ত খাই' কি করিতে পারি আমি দূরে।

*

নরে ভয় কর কি কারণে॥

°কালকেভু মহাবীর দূরে থাকি মারে তীর খড়েগ আমি কি করিতে পারি।°

°মোর খড়া সর্বজনে তর্পণের তরে কেনে এই হেতু আমি হইন্থ অরি ॥°

* অতিরিক্ত—

নিবেদন করি মাতা শুন গো বীরেব কথা পশু মারে বিবিধ প্রকারে।

জানএ অনেক তপ্ত আয়ড়ে বড়িস জন্ত জিয়স্ত বেচয়ে ঘরে ঘরে ॥ (খ)

২-২ বীর হৈতে হৈল ভয় পশুগণ কবে ক্ষয় ভারে দেখি প্রাণ কাঁপে ছরে। (্থ)

৩-৩ বিরোধ না কর কার সনে। (থ, গ এবং দী)

8-8 না জিনিতে পারি বীরে মারে বাণ থাকি দ্বে কি করিব থড়গ থরশান। (দী)

৫-৫ তর্পনের তরে কিনে থ্রুগ শে অনেক জনে
 বড় পুণ্যে আমি পাই প্রাণ। (দী)

১-১ হাড় মাদ রক্ত থাই (গ)

¹⁴⁻²³⁰³ B.T.

তুমি হস্তী মহাশয় তোমার কিসের ভয়
বজ্ঞসম তোমার দশন।
তোর ক্রোধে যেই পড়ে যমের সদনে নড়ে
'কেবা ইচ্ছে তোর সনে রণ॥'
পৃষ্ঠেতে মারিয়া বাড়ি নিয়া যায় তাড়াতাড়ি
'ফিরিতে মাথায় মোর খোঁচে।'
ছই চারি ক্রোশ ধায় তবে মোর লাগ পায়
ছাগল-বদলে লয়া বেচে॥
"শুন রে মহিষ বাণী মানুষ কিসেতে গুণি
তুমি বট যমের বাহন।
তুমি যদি মনে কর পর্বত পাড়িতে পার
নরে ভয় কর কি কারণ॥"

তর্পনের তরে মারে কিনয়ে সকল নরে এই হে**তৃ** হৈল বিপরিত॥ (গ) অভয়ার পদতলে গণ্ডা সকরুণে বলে তোমার পুণ্যের ফলে জি॥ (খ)

১-১ কেবা ইচ্ছে তোর দরশন॥ (দী)
কেবা ইচ্ছে ভোমার দশন॥ (বঙ্গ)
নরে ভয় কর কি কারণ॥ (গ)

২-২ তুরে লঞা **স্থতে** মোর খুচে। (গ)

৩-৩ হুন মোর সভাবাণী মাহুশ ভোমার প্রাণী
তুমি মশ্র যমের বাহন।
বাড় বড় বলবাণ সিংহে কর ছুই থান
কি করিব নর য়েক জন ॥ (দী)

^১কালকেত্ব বড় রাড় নিত্য কোঁড়ে ভোবা গাড়১ পড়িলে উঠিতে আর নারি। ^২জানে কত সন্ধান দূর হইতে মারে বাণ^২ নরমধ্যে তারে আমি ভরি॥ খসয়ে যেমন তারা তেন মতে ধাও বরা তোর দন্তে ক্ষিতি জর-জর। কালকেতু একা নর সবে ধরে এক শ্র কি কারণে তারে কর ডর॥ নিবেদন করি মাতা 👋 ভেন হে বীরের কথা পশু বধে বিবিধ প্রকারে। জানয়ে অনেক তন্ত্র °কাননে এডিয়ে যন্ত্র° বিনি অপরাধে পশু মারে ॥ তুমি ধাও দিবানিশ প্রন জিনিয়া শুশ কালকেতু কি করিতে পারে। মহাবীর বড় কাল •কাননে এড়য়ে জাল• **की**ग्रास्थ तंत्रस्य चरत घरत ॥ সভে জানে তুমি শিবা ভক্ষণ তাহার কিবা কালকেতু হৈতে কিবা ভয়। °ধরে শিবা-ঘৃত হেতু নিত্য বধে কালকেতু° বৈছজনে করয়ে বিক্রয় ।

১-১ কালকেতু মহাবিরে নিতা পাড়ে মহা গাড়ে (গ)
২-২ জানে য়নেক সন্ধান গাছে উঠে বিন্দে বান (গ)
জানেক সন্ধান জানে . গাছে উঠি য়েড়ে বাণে (দী)
৩-৩ এড়িয়ে বড়শী যন্ত্ৰ (খ এবং বন্ধ)

⁸⁻⁸ বনে এড়ে বেড়াজাল (গ)

e-e কালকেতু বধে নিত্য করিবারে শিবা ছত (গ)

তুলারু ঘোড়ারু মৃগ পবন জিনিয়া বেগ
কালসার বীর মহাশয়।
তোরা যদি মনে কর পবন জিনিতে পার
কি কারণে তারে কর ভয় ॥
কেশরী যাহারে হারে তাড়ায়া কুঞ্জর ধরে
আমরা তাহাব আগে মশা।
কুপা কর কুপাময়ি তোমার কিন্ধর হই
চিরদিন চরণ ভরসা ॥
মহামিশ্র ইত্যাদি॥

পশুগণকে ভগবতীর অভয়-দান ও গোধিকা-রূপ-ধারণ*

পশুর গোহারি শুনি সকল-মঙ্গলা। আশ্বাসিয়া সিংহেরে দিলেন কণ্ঠমালা॥ আজি হইতে মনে কিছু না করিহ ভয়। না বধিবে মহাবীর কহিন্তু নিশ্চয়॥

* অতিরিক্ত—

চল মৃগরাজ মনে না করিহ ক্ষেমা।
কালকেতু পুনরূপি না হিংসিব তোমা॥
বর পায়া এক ভিত হৈলা মৃগরাজ।
উপনিত হৈল আসি কুঞ্জর সমাঝ॥
সত সত হাথি মোরা একালা আক্টি
সভাবে ধরিআ বীর থেলে খণ্ড কাটী॥

দামান্ত হাথির মুড় অতি ভয়বরী। ছোট বনে বড়গো লুকাইতে নারি। হাথিরে সদয় হৈতা বলেন য়ভয়া। নিরাতকে অরণ্যে বসতি কর গিয়া। বর পায়া। হাথি সব হইল হরিস। উদ্ধ্যুথ করি তবে বলেন মহিস॥ দেবির চরনে আসি মুঞাইল মাথা। কান্দিতে কান্দিতে কয় আপনার কথা। সর্বকোক বলে মোরে জমের বাহন। বড বড জন্ম জিনি সিঙ্গের কারন। হেন সিঙ্গ উপাড়িয়া নিল কালকেতু। ভাগ্যে পুত্ত তার হাথে এড়াইল মৃত্ত্র॥ প্রাণ লেউক কালকেতু তার নাঞি ব্যথা। সুঙ্গ উপাড়িল নাণ্ডা হইলাম মাথ!॥ মহিদে সদয় হৈ আ বলেন পাৰ্বতি। মোর বরে আর ফঙ্গ হইব উৎপতি। হরিদ মোহিদ সব অভয়ার বরে। সত সত বাঘ আসি প্রনাম করে। নানা রক্ষ চিত্র গায় শোভে রেখা রেখা। দেখিতে স্থন্দর গায় চিত্রদম লেখা। করাল বদনে জুভা নাড়ে ঘনে ঘন। অবনে লাগ্যাছে গোফ ঘুন্নিত লোচন। কালকেতু আমারে হইআ আল্য কাল। জিয়ন্ত বাঘের বির ছাড়ি লয় ছাল। বাছেরে সদয় হৈআ বলেন মুভয়া। নিরাতকে মরতো বসতি কর গিয়া । চলিল বাঘের মূটী বড় পায়াা মুথ। দেবিরে প্রনাম করে জতেক ভল্পক।

কালিআ ভন্নক মৃড় দেখি অন্ধকার। আদ্বাস করিল আসি লৈআ পরিবার ॥ কেমনে পাইব প্রাণ কহগো বিসেষ। জেমনে আক্ষাটি না জানে উপদেস। ভল্লকেরে বর দিয়া কহিলা মৃভয়া। নিরাতক্ষে অরক্ষে বসতি কর গিআ। বর পাইআ গণ্ডক হইল একভিত। কাল্সার হরিন আসিআ উপনিত। অরন্তেতে থাকি কার হিংদা নাহি করি। কোন দোদে কালকেতু মোরে হৈল বৈরি। প্রসার কর্ত্র হাটে হরিনের মাংসে। আমারে পাইলে অন্ত পষু নাহি হিংদে॥ কালসার হরিনে অভরা দিল বর। ষুথে বাজা কর গিআ অরন্থ ভিতর॥ বর পাআা হরিণ ফিদয়ে উল্লাস। দেবিরে প্রনাম করে নকুল কটাস॥ নকুল কটাস বলে অভয়ার পায়। পরিকর লৈআ বির আমারে বিয়ায়॥ মোৰ বন্ধুজন পুড়িআ খায় কালকৈতু। তার দোকে জিয়ন্তে পুড়িয়া মরি নিতা। নকুল কটাদে য়ভয়া দিল বর। মোর বরে পুনরূপি হইব পরিকর॥ বর পায়া। নকুল কটাষ গেল বনে। ষুকর প্রণাম করে দেবির চরনে। দেবির চরনে যুকর করিল আতাষ। অস্তব জাতোরে বেচে আমা সভার মাংস। ষুকরেরে বর দিয়া কহিলা য়ভয়া। নিরাতকে যুরুন্মে বস্তি কর গিয়া 🛊

বর পায়া যুকর গেল নিজ স্থানে। সসক সমার তথা আল্য তুই জনে। সদক দদার তারা করে পরিহার। মোর মাংস কালকেতু করএ পদার॥ দ্স বিস মহাবির লয়ত ধরিআ। জতেক বেচিতে নারে খায় পোড়াইআ। সদক দ্রদারকে য়ভয়া দিল বর। সুথে রাজ্য কর গিয়া অরুক্য ভিতর ॥ সদক দদাক গেলা হৈছা এক মেলা। পড়ামুঞা হতুমান আইল বহুগুলা ॥ বির মহাবল মোরে ভাল নাঞি দেখে। সর বিন্ধা মহাবির মারে হাথের ষুথে। তারে বর দিয়া দেবী দিলেন মেলানি। হুলু হুলু কবিমা চাহে গদরান্ধা মনি। দেবির চরনে মানি লুকাইল মাথা। ঠুটারে বিটায়া করে এপঞ্চ আবস্তা। সিথাই আ পড়াই আ তুলি আ লয় কা**লে** ঘরে ঘরে কডি থায় প্রকার প্রবন্দে। টুটা জে গুতায় আমি বড় ভয় পাই। একখানি যুক জে টুটার কান্দে জাই। আর জত পযু আল দেবির সমুখে। সভাকারে বর মাতা দিল একে একে। বর পায়্যা পষ্গন আনন্দিত মন। পুনরূপি পাছে বধে করি নিবেদন। তোমার বচনে চলি জাত্যে করি ভয়। পাছে কালকেতু সভা সাজুড়িয়া লয়। পত হস্ত বুলাইল পষ্গনের গায়। অজয় অমর হৈল দেবির ক্রপায়।

পশুগণে বর দিয়া উপায় চিস্তিলা।
সেইখানে স্বর্গ-গোধিকা-রূপ-হইলা॥
কাঞ্চন জিনিয়া তন্তু দেখিতে স্থলর।
হইলা গোধিকা-রূপ অতি মনোহর॥
পথে রহে চণ্ডী হইয়া সুবর্গ-গোধিকা।
কালকেতু কাননে থাইতে পাব দেখা॥
হৈথো বীর উঠি নিত্য-নিয়মিত করি।
বিপিন করিলা যাত্রা সোঙরি শ্রীহরি॥
প্রভাতে উঠিয়া বীর চলিলা কানন।
অম্বিকামঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ॥

অধিক হইল পষু আনন্দিত মন। দেবিকে প্রনাম করি করিল গমন॥ অভয়ার চরনে ইত্যাদি॥ (থ)

- ১-১ পশুগণে বর দিয়া সর্ব্যক্ষলা।
 নিজ্জপ তেজি দর্গ গোধিকা হইলা ॥ (খ)
 পশুরে অভয় দিয়া শঙ্কর-গৃহিনী।
 স্থবর্ণ-গোধিকা পথে হৈলা আপনী ॥ (দী)
- ২-২ কালকেতু দেখা পাব অরণ্য জাইতে। গোধিকা হইয়া মাতা ব্বহিলেন পথে। (থ)
- ৩-৩ স্থবর্ণ-গোধিকা হয়া। রহিল। অরণ্যে। মহাবীর যাতা করে পূর্বজন্ম-পুণ্যে॥ (বঙ্গ)

কালকেতুর বনযাত্রা

কালকেতু দেখে সুমঙ্গল। দক্ষিণে গো-মৃগ-দ্বিজ বিকশিত সরসিজ বামে শিবা পূর্ণঘটজল।।

চৌদিকে হুলুই ধ্বনি 'কেহ জ্বালে গৃহমণি'
দিধি ডাকে গোয়ালিনী।
'দেখিল স্থচারু তন্তু বংসের সহিত ধেরু
পুরাঙ্গনা দেয় জয়ধ্বনি॥'

১-১ থরকুর কাছে তিন বাণ। (বঙ্গ)

২-২ কেছ জানে গৃহম্নি (খ) কেহ করে জয়ধানি (বঙ্গ) কেহ জালে মৃতমুনি (গ)

৩-৩ দক্ষিণে উদিত ভান্ন বৰ্চ্ছক সহিত ধেষ্ণ ব্ৰহ্মনা দেই জয়ৰ্ছনি॥ (থ) দক্ষিণে উদিত ভান্ন শব্য সম্মুখে ধেষ্ণ পুরাদনা দেয় জয়ধনী॥ (দী)

'দূর্ব্বাধান্ত পুষ্পমালা হীরা নীলা মোতি পলা বামভাগে বার-নিতম্বিনী।' মূদক্ষ মন্দিরা বায় কেহ নাচে কেহ গায় শুনে বীর হরি হরি ধ্বনি ॥

*

দেখি বীর স্থললিত আনন্দে সরস চিত প্রাবেশ করিল বন-ভাগে। দেখিল রুচির তন্তু রূপে জিনি হেমভানু স্থবর্ণ-গোধিকা সর্বব আগে॥

স্থবর্গ-গোধিকা দেখি চিত্তে বীর হৈল তুখী
অযাত্রিক পাপ দরশনে।
দেখিন্ত মঙ্গল যত সকলি হইল হত

দৈব তুঃখ বিধির লিখনে॥

১-১ তুৰ্কা ধান্ত ঘত মোধু কলদে পুরিত্বা মোধু
বাম ভাগে দিল নিতম্বিনী। (গ)
হিরা নিলা মতি পলা কলধোত কণ্ঠমালা
বাম ভাগে বামা নিতম্বিনি (গ)

শ্বতিরিক্ত
 বামে শব শিবা দেখি অন্তরে হইলা স্থাথি
 হয় গজে
 তর্ম কলন ।
 আাদী বৃষ কথ ছবে ক্ষিতি আঁচরায় খুরে
 ধোরতর করয়ে তর্জন (দী)

২-২ দৈতা দোসে জেন সর্ববিশুণে॥ (দী)
দৈব তৃঃথ দেয় সব গুণে। (বঙ্গ)
দৈব দেখি যেন সব গুণে॥ (ক)

গোধিকা যাত্রিক নয় সকল পুরাণে কয়
কুর্ম্ম গণ্ডা শশক শল্লক।

কুপা কর গুণধাম কমল-লোচন রাম তব নাম শোক-নিবারক॥

যদি বা মারিয়ে বাণ গোধিকার লই প্রাণ শনা ছুইব দিনমুখ-কালে।

যদি মৃগ পাই আমি জানিব দেবতা তুমি নহে তোমা পোড়াব অনলে॥

কাননে প্রবেশি বীর পাশে বান্ধে তিন তীর ঘনে ঘনে গোঁফে দেই তার।

পাতিয়া আঁকড়া দড়া আগুড়ি বনের স্বড়া কাননে করিল মহামার॥

হাতে গাণ্ডি ফিরে কালকেতু।

জাল ফাঁদ বনে এড়ি ঝোপে ঝাপে মারে বাড়ি মূগবধ জীবিকার হেতু॥

উঠিয়া পর্বত-পাড়ে নেহালয়ে ঝোপ ঝাড়ে °দরী গিরি-শিখরী কানন।°

ধায় মৃগ-অমুপদী ঘামে অক্সে বহে নদী
বেগবাতে কাঁপে তরুগণ।।

১-১ নাহি হয় ছঃথ কোন কালে। (থ) নাহি ছাড়ি দিব মুথজালে। (বঙ্গ)

২-২ পরিঞা বাউড়া দড়া সরানলে দিয়া চড়া কাননে পাতিল মহামার ॥ (গ)

৩-৩ কাড়ে দড়ি শিখরি কানন। (খ)

নিকুঞ্জ ভাঙ্গিয়া দণ্ডে আহড় বিহড় চুণ্ডে
ঝাটি ঝাটি গহন কানন।
চৌদিকে নেহালে আঁখি বাসা আছে নাহি পাখী
সন্তাপে বীরের পোড়ে মন॥

ম্যুগ-খুর-চিহ্ন দেখি দূরগতি নহে আঁখি
আছে মৃগ দেখিতে না পায়।

পশুর ছুর্গতি খণ্ডি কুপাদৃষ্টি দিলা চণ্ডী
মৃগ পাখী হৈলা লুকিকায়॥

*

নিশি দিশি তুয়া সেবি রচিল মুকুন্দ কবি
নূতন মঙ্গল অভিলাষে।
উরগো কবির কামে কুপা কর শিবরামে
চিত্রলেখা যশোদা মহেশে।

১-১ দেখি বির অফুক্ষ্যন নাহি চলে লোচন
পক্ষ্য আছে দেখিতে না পায়। (খ)
২-২ দৈব তুঃখ দোস খণ্ডি কুপাদিষ্ট দিল চণ্ডি
পর্গন হৈল শুকিকায়॥ (খ)
দৈন্য তুঃখ শোক খণ্ডী কুপাদৃষ্টি দিল চণ্ডী
মুগ পাখী হৈল লুকীকায়॥ (বঙ্গ)
দন্য তুখ দোস খণ্ডি কুপামই হৈলা চণ্ডি
পশু বাঘে ধুলাএ লোটায়॥ (গ)

* অতিরিক্ত—

স্থান কানন দেখি কাঠে কাঠে পুড়ে শিখী
পুড়ে উলু কাসি বেনাবন।
পুন দেখা দিল চণ্ডী বিবের বিপদ খণ্ডি
মায়ামৃগ রূপে ততক্ষন॥ (খ)

ভগবতীর মৃগীরূপ-ধারণ

>বীরের পাকাল্যা> দেখি চিস্তিত ঈশ্বরী। যুগে যুগে দৈত্যগণ সহ যুদ্ধ করি॥ মহিষ চিকুর জম্ভ শুম্ভ নিশুম্ভ। বীরের সমান কেহ নাহি করে দম্ভ 🛚 মায়ামুগ হয়া দেখি বীরের পাকাল্যা। মৃগরূপ হৈলা বনে সকলমঙ্গলা। উত্তরিলা বীর কালকেতু-সন্নিধানে। দেখি বীর আকর্ণ পূরিয়া ধন্ম টানে॥ ্মুগ অনুপদী বীর ধায় লঘুগতি। ক্ষেণে ক্ষেণে ধূলায় লুকান ভগবতী।। রহিয়া রহিয়া যান দীঘল তরঙ্গ। তার পাছে ধায় ব্যাধ যেমন পতঙ্গ।। •আকর্ণ পূরিয়া বীর ছাড়ে ধন্নশর। শর ছাড়ি দিতে বীর উঠিলা অম্বর ॥° অভয়ার চরণে মজুক নিজ চিত। শ্রীকবিকশ্বণ গান মধুর সঙ্গীত॥

১-১ বিক্রম।(থ)

২-২ মুগ অমুসারে (খ)

৩-৩ যদি শরাসনে বীর জুড়িলান শর। য়েডি দিলা শর চণ্ডী উঠিলা অম্বর

মায়ামূগ উপাখ্যান

এই পাপ মায়ামৃগ . পবন জিনিয়া বেগ

মোরে বিড়ম্বিতে কৈল বিধি।

যেন রামে বিড়ম্বিতে আইল কানন-পথে

শারীচ যেমন মায়ানিধি॥

গায়ে রত্ন প্রচুর রজতের চারি খুর

হেমময় উভয় বিষাণ।

ইহার বেগের কথা উপমা দিব যে কোথা

শ্লাগ নিতে নারে হন্তমান॥

বদরী ফলের তুল্য নাসা-অত্যে অমূল্য

গজমুক্তা শোভে লম্ববান।

কপ্তেতে কনক হার হীরার গাঁথুনি যার

হেন মোর লয় মনে পুষিয়াছে কোন জনে
এই ত হরিণ অভিলাষে।
নিয়া তার নানাধন শ্রপ্রবেশ করিলা বন°
অঃমার তুঃখের অবশেষে।।

কার সঙ্গে কি দিব উপাম॥

অতিসিম্ম বর্ণ প্রবাল রচিত কর্ণ নিল কমল ছটি য়াঁথি। আমি ত বংসর সাত মিগ মারি থাই ভাত এমন কোথাও নাহি দেখি॥ (গ্) ৩-৩ বিপাকে আইল বন (খ এবং বঙ্গ)

১-১ মারিচ সহায় ময়নিধি॥ (ক)

২-২ প্রবন্ধেমন বেঘরান ॥ (খ)

^{*} অতিবিক্ত-

এই মৃগ যদি ধরি বেচিয়া সম্বল করি ফুল্লরা পরিবে মৃগ-ছাল।

^১মণি সে মাণিক যত হেমময় মরকত ১ পাইলে ঘুচিবে ছঃখজাল ॥

হেমময় মৃগ দেখি হেন মনে আমি লখি ধন মোরে মিলিব প্রচুর।

আমি যদি মনে করি প্রন ধরিতে পারি হরিণ পালাবে কতদূর॥

পুলকে দ্বিগুণ তন্ত্ব ফেলিয়া লোফয়ে ধনু

ব্যান ঘনে গোঁকে দেয় তোলা।

দিয়া ধনু-টঙ্কার ছাড়ে বীর হুহুঙ্কার শ্রীরে মাখয়ে রাঙ্গা ধূলা॥

°ক্ষেণে ক্ষেণে মৃগ উড়ে° ক্ষেণে ক্ষেণে ভূমে পড়ে মৃগ দেখি নাহি দেখি ছায়া।

ক্ষেণেক তাণ্ডব করে °ক্ষেণে চক্র যেন ফিরে° মৃগ নহে দেবতার মায়া॥

মূগের দেখিয়া মুখ কালকেতু ভাবে তুখ না করিতে পারিল সন্ধান॥

আকর্ণ পূরিল শর কোথা গেল মূগবর দূরে গেল বীর-অভিমান॥

১-১ গাএ আছে রত্ব যত হেম হিরা মরকত (গ)

২-২ ধূলা মাথে গোকে দেই তোলা। (খ)

৬-৩ ক্ষেণে উঠে ক্ষেণে দৌড়ে (ক)
ক্ষণেকে ক্ষণেকে উড়ে (দী)
থেনে থেনে ভাকা ছাড়ে (গ)

৪-৪ খেনেকে চরকে ফিরে (গ)ক্ষণে চক্রাবর্ডে ফিরে (বছ)

আমারে না করে ভয় ক্ষেণে ক্ষেণে আগে রয়
যদি বাণ না করি সন্ধান।
রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ - পাঁচালী করিয়া বন্ধ
শ্রীকবিকঙ্কণ রস গান ।

কাননে কালকেতুর খেদ

অপরপ মায়ামৃগ দেখি মহাবীর।
গুণহীন কৈল ধনু সম্বরিলা তীর॥
কংসনদীর জলে বীর কৈল স্নান।
তৃষ্ণাতে আকুল বীর করে জল পান॥
পথে যাত্যে মহাবীর খায় বনফল।
মলিন বদন চিন্তে ঘরের সম্বল॥
তৃথিনী ফুল্লরা মোর আছে 'প্রতি-আশে'।
'কি বলিয়া দাণ্ডাইব যেয়া তার পাশে॥
*
তৈল লবণের কড়ি ধারি ছয় বুড়ি।
শ্বশুর-ঘরের ধাত্য ধারি দেড় আড়ি॥
কিরাত-পাড়াতে বসি না মেলে উধার।
হেন বন্ধুজন নাহি কেহ সহে ভার॥
বিষম সম্বল-চিন্তা মহাবীরে লাগে।

১-১ मञ्चल ब्लास (मी)

২-২ কি বোল বলিব গিয়া ফুলবার পাশে । (খ)

^{*} অতিরিক্ত-

পড়স্থা-ঘরের আ**ষ্ট পন ধারী ঋণ।** শর ধহু বা**দ্ধা লৈতে আস্তে অন্তদিন। (দী**)

এথাই নরক স্বর্গ বলে ভাগবতে।
নরক ভূঞ্জিতে কালু আইল মরতে॥
স্কৃতি-পুরুষ জীয়ে স্থ-ভোগ-হেতু।
নরক ভূঞ্জিতে ক্ষিতি-তলে কালকেতু॥
ধড়ার আঁচলে মোছে লোচনের নীর।
স্বর্গ-গোধিকা পুন দেখে মহাবীর॥

পাঠান্তর---

15-2303 B. T.

বিষয়া তরুর তলে ভাসিয়া লোচন জলে বিষাদ ভাবেন কালকেতু: কোন দেবে দিল শাপ কিবা হইল গুৰু পাপ এই হুথ পাই তার হেতু। হৈল ব্যাধকুলে জন্ম পশুবধ নিত্য কর্ম বেচিয়া সম্বল চিস্তা করি। তুৰ্জ্য কাননে ভ্ৰমি মুগ না পাইন্থ আমি ক্ধাসিদ্ধ কোন বুদ্ধে তরি॥ নংসারে যতেক লোক কার নাহি **ছ**ংথশোক স্থথে সবে নিবসে ভবনে। পাপভোগ ভুঞ্জিবারে বিধি জন্মাইল মোরে পত ধরি বিবিধ বিধানে॥ প্রতিদিন বনে ফিরি ঝোপ ঝাপ দরি গিরি গায়ে ছড় কাঁটা ফুটে পায়। কত নিত্য বধ করি নানাবর্ণ পশু ধরি তথাপি পরাণ নাহি যায়। অহুদিন বনে ফিরি অধর্ম সঞ্যু করি ধিক যাউ আমার জীবনে। কাহারে চাহিব ধার কে মোর সহিবে ভার প্রাণ পোড়ে সম্বল বিহনে॥

কালকে তু মহাবীর করিছে ভজ্জন।
তোমাকে পোড়ায়্য। আজি করিব ভক্ষন।
যাত্রার সময়ে দেখি গেন্তু তোর মুখ।
বনে বনে বেড়ায়্যা পাইন্তু বড় ছুঃখ।
যত ছুঃখ পাইন্তু অরণ্যে বেড়াইয়া।
নকুল বদলে তোম। খাব পোড়াইয়া।

যে দিনে যতেক পাই সে দিনে তাহাই খাই দেডি অন্ন নাহি থাকে ঘরে। তির বাণ শ্রাসন ইহা বিনে নাহি ধন বান্ধা দিতে ধারে বা উধারে॥ রহিলা ক্ষেণেক নিদ্রা ভোলে। অনেক বিলাপ করি টঠে পান করে বারি মুথ মোছে ধড়ার আঁচলে ॥ হাতে করি ধন্থ শরে যান বীর ধীরে ধীরে স্থবৰ্ণ গোধিকা পুন দেখে। ভজ্জন গজ্জন করি গোধিকা বান্ধিল ধরি ধক্ষকে গ্রাথিল হেট মুখে। যাত্রাকালে তোমা দেখি বনে ফিবি হৈয়া তুখী নকুল বদলে তোমা থাব। পড়িলে আমার হাথে এড়াবে কেমন মতে জীয়ন্তে তোমারে পোড়াইব॥ এমন বীরের কথা শুনিয়া ভুবনমাতা মনে ভাবে কি বুদ্ধি করিব। মহিধ রাক্ষস জ্ঞ স্বার হরিল দম্ভ ব্যাধ হাতে কেমনে এডাব॥

মহামিশ ইত্যাদি ॥ (ক)

এমন বিচার বীর মনেতে ভাবিয়া।
বান্ধিল গোধিকা বীর জাল-দড়ি দিয়া॥
চারি পদে বান্ধি বীর ফেলিল ধনুকে।
অভয়া লম্বিত উর্দ্ধ-পুচ্ছ হেট-মুখে॥
ধন্তকের জলে হেম-গোধিকা বান্ধিয়া।
ঘরকে চলিলা বীর বিষাদ ভাবিয়া॥
মহামিশ্র ইত্যাদি॥

গোধিকারূপিণী দেবীর চিন্তা

ইবন্ধকে চিন্তেন চণ্ডী হৈয়া লম্বমান। ব্যাধকে আইলাম ভাল দিতে বরদান। বেইকালে জন্মিলাম যশোদা-উদরে। বৃষ্ণহৈতু পড়িলাম পাপ কংস-করে॥ সারিলুঁ অনেক যত্নে শিলার নিপাত। এড়াইতে নারিলাম আক্ষটার হাথ॥ ওড়াইতে নারিলাম আক্ষটার হাথ॥ বিজ্ঞাকে করিল দৃঢ় দাকণ বন্ধন। নিজা ভয়হেতু কৈন্তু গগনে নিবাস। জালের বন্ধনে বড় পাইলুঁ তরাস॥ কিন্তু এক হাদয়ে লাগয়ে বড় ভর। অপমান-কথা পাছে শুনেন শঙ্কর॥

১--১ বন্ধনে চিস্তিয়া মাতা হঞা কম্পবান। (গ)

২-২ কৃঞ্ হেতু ছলিলাম পাপ কংসাযু্রে । (থ)

৩-৩ কেমনে এড়াব পাপ আক্ষটির হাত 🛙 (थ)

ইরপতি যারে নিতি পুজে বিধিমতে। হেন জন বন্দী ইইল আক্ষটীর হাতে॥ই আইলাম দিবারে ধন ব্যাধের নন্দনে। বন্ধন আছিল মোর দৈব-নিয়োজনে॥ গোধিকা ইইয়া আমি কৈন্তু কোন কাজ হুংখের উপরে হুংখ বড় পাই লাজ॥ গোধিকা লইয়া বীর চলে নিজ বাসা। চণ্ডিকার না ঘুচিল বন্ধনের দশা॥ গোধিকা চুবড়ি দিয়া চাপিল পাষাণে। অম্বিকা-মঙ্গল কবিকঙ্কণে ভণে॥

ফুল্লরার খেদ

ফুল্লরা নাহিক বাসে 'আক্ষটী অন্নের আশে' পড়সীরে জিজ্ঞাসে বারতা। পড়সী বারতা বলে গোলাহাটে বীর চলে দূরে হইতে দেখয়ে বনিতা॥

* অতিরিক্ত-

ছাড়িয়া য়মরাবতি ইক্সের কোত্তর। য়াক্টি হইঞা থেতি আইলা নিলাম্ব ॥ আমার কপট দোসে য়রতো নিবাসে। দাধিল দকল ছুঃখ প্রকার বিদেসে॥ (গ)

- ১-১ ব্রহ্মা আদি দেবগণ যাঁরে ছতি করে। সেই চণ্ডী বন্দী হৈলা আংখটীর করে॥ (বন্ধ)
- ২-২ বির আইল আর আনে (গ)

বীরে দেখি শৃ্ত্যপাণি কপালে আঘাত হানি করে রামা দৈব সোঙ্রণ।

বিধাতা আমারে দণ্ডী জীয়স্ত >স্বামীতে > রাণ্ডী কৈল দৈব ছঃখের ভাজন ॥

^২ভালে করাঘাত হানি^২ কান্দে ব্যাধ-নিত্সিনী নিশ্বাসে মলিন মুখ চান্দে।

দারুণ দৈবের গতি •কপালে দরিত্র পতি• ঠেকিমু সম্বল-চিম্ভা-ফান্দে॥

অন্নবস্ত্র নাহি ঘরে বিভা দিলা হেন বরে

• কর্ণবেধ জাতি-ব্যবহারে।
•

হরিজা চন্দন চুয়া কুমকুম কল্পরী গুয়া পায়্যাছিলাম বিবাহ-বাসরে ॥

ফুল্লরা করুণ ভাষে বীর আইলা তার পাশে প্রিয়ভাষে বলেন বচন।

রচিয়া ত্রিপদী-ছন্দ পাঁচালী করিয়া বন্ধ বিরচিল শ্রীকবিকস্কণ।

১-১ ভাতারে (ক এবং খ)

२-२ क्लाल चार्तानि भागि (यक्र)

৩-৩ স্থন্দরীর দরিত্র পতি (গ)

• অতিরিক্ত--

বান্দা দিতে নাহি তীন্ত (?) উপায় করয়ে নিত্য অভাগীরে পাষরিলা মাতা।

ঘটক সমাঞি ওঝা দিলেক তৃ:থের বোঝা তুই চকু খাল্যা মোর। (দী)

৪-৪ প্রতিকুল বিধাতা আমারে। (গ)

ফুল্লরা ও কালকেতুর কথোপকথন

ফুল্লরা বলেন বাসি.মাংস না বিকায়। ু আজি বল মহাবীর সম্বল-উপায়॥ আছুয়ে তোমার সই বিমলার মাতা। ংসঙাতিয়া ভেট লয়্যা তুমি যাহ তথা॥ ক্ষদ কিছু ধার নিবে সইয়ের ভবনে। কাঁচড়া ক্ষুদের জাউ রান্ধিবে যতনে। রান্ধিবে "বনাতি-শাক" হাড়ি ছুই তিন। লবণের তরে চারি কডা কর ঋণ।। সয়ারে দেহগা তুমি সম্বলের ভার। তোমার বদলে আমি করিব পসার॥ গোধিকা বান্ধিয়া আছি দিয়া জালদভা। ছাল ঘুচাইয়া তাহা কর শিক-পোড়া॥ সম্রুমে ফুল্লরা গেল। সখীর তুয়ার। সেঙাতিয়া ভেট দিয়া কৈল নমস্কার॥ • আস্থ্য আস্থ্য বলিয়া ডাকেন তারে সই।• °এত দিন দেখা নাই গিয়াছিলে কই॥° বিধাতা করিল মোরে দরিদ্রের কান্তা। চারি প্রহর করি সই উদরের চিন্তা॥

১-১ সম্বলের তরে নাথ কহনা উপায়। (গ এবং দী)

২-২ লইয়া বেঙাচি ফল ঝাট যাহ তথা।(দী)

৩-৩ নালিতা শাক (দী) পুডভি শাক (বন্ধ)

⁸⁻⁸ আশাসিযা আইস আইস বলে তায় সই। (বঙ্গ) বিমলার মাতা বলে শুন আগো নোই। (খ)

৫-৫ দেখিতে সন্দেহ হৈল ইবে দেখা কই। (क)

শিরে তৈল দিয়া তার বান্ধিল কবরী।
সরস সিন্দুর ভালে দিল সহচরী॥
আঁচল ভরিয়া তারে দিল খই-মুড়ি।
বিসিবারে দিল তারে চৌখণ্ডিয়া পীড়ি॥
ফুল্লরা ছ-কাঠা ক্ষুদ মাগিল উধার।
কালি দিব বলি সই কৈলা অঙ্গীকার॥
আভ্যা গো প্রাণের সই বস্তা গো বৃহিনী।
মোর মাথায় গোটা কতক দেখহ উকুনী॥
ছই স্থীর কথাতে মজিয়া গেল চিত।
অভ্যা লইয়া কিছু শুনহ সঙ্গীত॥
মহামিশ্র ইত্যাদি॥

ভগবতীর নিজমৃত্তি-ধারণ

হুস্কারে ছিণ্ডিয়া দড়ি পরিয়া পাটের শাড়ী ষোল বংসরের হৈল রামা। ° খঞ্জন-গঞ্জন আঁখি অকলক্ষ শশিমুখী° কেবা দিতে পারে রূপ-সীমা॥

১-১ চাপিয়া বসিত দোইে চোথপ্তিয়া পিড়ি॥(ক)
চাপিয়া বসিতে দিল গান্তারের পিড়ি॥(গ)

२-२ आश्रह প্রানের সই ধরগ চিরুণী॥ (দী)

৩-৩ তুই সথি কথায় মজিয়া গেলামন। অভয়ালইয়া কিছু করিব রচন॥ (গ)

৪-৪ ত্রিভুবন মোহে ভাতি চঞ্চল নয়ন অতি (দী)

কঠে মণিহার সাজে চরণ পঙ্কজে রাজে মণিময় কাঞ্চন-নূপুর। বিমল অঙ্গের আভা নানা অলঙ্কার-শোভা রবির কিরণ করে দুর ॥ ^১ত্রিবলি-বলিত মাঝে^১ কনক-কিন্ধিণী-সাজে উরুযুগ রম্ভার সমান। জিনিয়। **কুঞ্জ**র-কুম্ভ কুচযুগ ধরে দম্ভ ^২কি কহব রূপের ্বাখান॥* চঞ্চল নয়ন-কোণে মদন এডিল গুংণ কাজর-গর**ল-**যুত শর। °বিউনী° কেশের অস্ত শোভয়ে মদন-কুম্ভ কবরীতে শোভিছে কেশঃ॥ সর্ববাঙ্গে চন্দ্র-পঙ্ক অঙ্গদ বলয়া শৃঙ্খ °বাহু-বিভূষণ স্থাশাভন। সকল অঙ্গুলি ভরি মাণিকের অঞ্গুরী

* অতিরিক্ত—

সেবকে শদয় মোহামাইয়া।
জেন নিজ কপে হরি প্রহলাদেরে রূপা করি
উদ্ধারিলা মোক্ষ বর দিয়া॥ (দী)

•তন্ত্রুক্তি ভুবন-মোহন॥•

- ১-১ ত্রিভঙ্গ নিতম্ব মাঝে (খ)
- ২-২ নেতের বসন পরিধান ॥ (বঙ্গ)
 কিবা দিব কপ উপমান ॥ (খ)
- ৩-৩ বউলী (খ এবং দী)
- ৪-৪ বাছ্যুগ করে স্থােভন (খ)
- ৫-৫ পদাব্লে পাষ্দী রতন। (খ)

মুখচন্দ্র অনুসাম বিন্দু বিন্দু শোভে ঘাম

সিন্দুর-তিলক তিমিরারি।

স্থার বিক্রমন্ত্যতি তামুল রঞ্জিত তথি

নাসাতে মাণিক মনোহারী॥
পরি নানা আভরণে অবশেষে প্রদেষ্

পরি নানা আভরণে অবশেষে পড়ে মনে হৃদয়ে কাঁচুলী-আচ্ছাদন।

মনে করি ভগবতী কাঁচলী-নিশ্মাণে তথি বিশ্বকর্ম্মে করিলা সোঙ্বন ॥

ংসোঙরণে বিশাই আল্য দেবী তারে আদেশ দিল কাচলি-নিশ্মাণে দিল মন।

°রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিল বন্ধ চক্রবন্ধী শ্রীকবিকঙ্কণ॥°

বিশ্বকর্মার দশাবতার-লিখন

বিশাই কাঁচলি লিখে ভারত পুরাণ দেখে লিখে নানা পুরাণের সার।
করিয়া চণ্ডিকা-ধ্যান তুলি ধরে সাবধান আগে • লিখে দশ অবতার॥•

১-১ নাভিদেশ যেন কৃপ গতি অতি অপরপ (দী .

২-২ বিশাই সাক্ষাতে আসি প্রণিপাত করে হাসি কেন মাতা করিলে শরন ॥ (খ)

৩-৩ শুন পুত্র মোর বানি . কাঁচলি নির্মাহ জানি বিরেরে করিব বিড়ম্বন । (খ)

8-8 লিখে নিরঞ্জন অবতার । (দী)
আগে লিখে রুফ অবতার । (খ)

প্রালয়-সাগরে লীন প্রথমে লিখিল মীন বেদ-উদ্ধারণ-অবতার।

^১ধরিয়া রোহিত-লীলা^১ জলচর-মধ্যে খেলা কৈল ^১সত্য বেদের ^১উদ্ধার ॥

লিখে কৃষ্ম অবতার পাঠে ফিরে গিরি যার পীঠ কৈল লক্ষেক বোজনে।

নিজ বলে পীঠে করি ধরিল। মন্দার গিরি স্থা হেতু জলধি-মন্থনে॥

লিখিল বরাহমূত্তি উদ্ধার করিল ক্ষিতি প্রাবেশিয়া পাতাল ভিতরে।

আদি দানবেরে মারি তদশনে ধরণী ধরি • আবোপিলা জলের উপরে॥

লিখিল নুসিংহ-তিমু ° অভিন প্রচণ্ড ভামু° ফটিকের স্তন্তে অবতার।

লিখিল বামন-মৃত্তি ভুবন-পাবন-কীর্ত্তি অপুর-কু:লের হৈলা কাল।

হইয়া ভুবন-স্বামী মাগিয়া ত্রিপদ ভূমি দৈত্যরাজে লইল পাতাল ॥

- ১-১ ধরিঞা য়সেদ লিলা (গ)
- ২-২ সত্যব্রতের (গওদী) ·
- ৩-৩ ধর্ণী উদ্ধার করি (খ)
- ৪-৪ সভিনব চক্র ভার (খ ও দী)
- ৫-৫ নিজ ভাসে খণ্ডে অন্ধকার। (খ) লিখে চতুর্দশের আকার। (দী) তেজে দূর কৈল অন্ধকার।) বঙ্গ)

ক্ষত্রিয় কুলের যমে লিখিল পরশুরামে ক্ষত্রিয় দলন যার বাণে। বার এক বিংশতি নিঃক্ষত্রিয় কৈলা ক্ষিতি দান কৈল মরীচি-নন্দনে॥ >লিখে দ্ৰ্কাদল-শ্যাম জানকী-সহিত রাম শিরে ছত্র ধরেন লক্ষ্মণ। ্জায়ার উদ্ধার-হেতু সমুদ্রে বাদ্ধিয়া সেতু ভুজবলে বধিল রাবণ॥ °রূপে অভিনব কাম **হল**ধর বল্রামণ ⁸ প্রলম্ব-ধেনুক-বিনাশন। ⁸ মৃষ্টিক মারিয়। বীর হলাত্রে-যমুনা-নীর প্রবেশ করিলা বুন্দাবন।। ধরিয়া পাষণ্ড-মত বনন্দা করে বেদ-পথ বৌদ্ধরূপী লিখে ভগবান। দেখিয়া কলির শেষ হৈল। প্রভু কল্কি-বেশ তাহা লিখে হয়ে সাবধান॥

১-১ অষ্টাদশে ঘনশ্রাম সঙ্গে সিতা লিখে রাম শিরে ছত্র ধরাণ লক্ষণ। (দী)

২-২ জাইয়া হরণের কাম সেতু বান্ধি প্রভু রাম ত্ই মারি সিতা উদ্ধারণ॥ (দী)

৬৬ রূপে গুণে অফুপাম হলধরী লিখি রাম (দী)

^{৪-৪} কে তিয় দহন জার বলে। (গ)

৫-৫ অতিশয় নীচ পথ (ক) নিন্দা করে দেব-পথ (বছ)

হরিতে অবনী-ভার যত্নকুলে অবতার মধ্যে লেখে যশোদা-নন্দন। অতি শিশুকালে রঙ্গ করিলা শক্ট-ভঙ্গ পুতনার করিলা নিধন।। হয়্যা পিরিসন ভারী তুণাবর্ত্ত বীরে মারি বিশ্বরূপ দেখাল্য বদনে। যশোদা-নন্দন রঙ্গে যমল-অর্জুন ভাঙ্গে বকাস্থরে করিলা বিনাশনে॥ লিখিল যমুনা হ্রদে কালি-মাথে দিয়া পদে তাণ্ডব করেন বনমালী। গোপগণে করে বল বনমধ্যে দাবানল পান কৈলা করিয়া অঞ্জলি॥ ইন্দ্রমথ-ভঙ্গকারী লিখে গোবর্দ্ধনধারী গোকুলের করিল রক্ষণ। ইক্রের পরম গর্কা আপনি করিয়া থকা নিবারিল ঝড বরিষণ।। লিখিল পরম ধক্তা রাধা আদি গোপকক্তা लिए वृन्ना-विशिनविशांती। যতেক গোপের নারী সবাকার মনোহারী নানা ছান্দে লিখিল মুরারি।।

* অতিরিক্ত---

লিথে বংস রূপধারী বংশুকে য়মুরে মারি
আঘায়ুর কৈলা বিনাসন।
বংশু সিযুগণ নিয়া ব্রহ্মায়ে করিল মায়া
হৈলা প্রভূ বংশু শিশুগণ। (থ)

আসিয়া মথুরাপুরী কুবলয় গজে মারি
রক্ষেতে চাণুর-বিনাশন।
ভোজরাজ-অবতংসে মঞ্চ হইতে পাড়ি কংসে
কুষ্ণ তার করিল নিধন॥
জনক জননী লোক সবার হরিল শোক
মথুরার করিল পালন।

কাঁচলি নির্মাণ হৈল অঙ্গেতে অভয়া দিল বিরচিল শ্রীকবিকশ্বণ।

বিশ্বকর্মার অন্যান্য বিবিধ লিখন

ভানিভাগে বিশ্বকর্ম। লিখে মুনিগণ।
কপালে 'চন্দন-ফোঁটা' লোহিত বসন।
দেবঋষি-শ্রেষ্ঠ লিখে সনংকুমার।
নীললোহিত লিখে অনুজ তাহার।।
দীঘল ধবল দাড়ি তপ-জপ-শীল।
পিতাপুত্র তুই জন কর্দ্দম কপিল।
তুর্বোসা জৈমিনি গর্গ ভৃগু মুনিগণ।
বিশিষ্ঠ অঙ্কিরা 'অত্রি' ব্যাস তপোধন॥

* অতিরি**ক্ত**---

পাতালের নাগগণে লিখে হৈজা সাবধানে
নানা ছন্দে লিখিল তখন।
মধ্যে বিন্দাবন লিখি বাধা আদি জভ স্থি
রাস ক্রিড়া করিল লিখন ॥ (খ)

১-১ চড়ক ফোঁটা (ক)

२-२ जानि(थ)

'পুলস্ত্য কশাপ কৰ্ণ পুলহ অসিত।' নারদ পর্বত ধৌম্য শঙ্খ লিখিত।। দণ্ড-কমণ্ডলু-জটা-শোভিত বিচিত্র। বামদেব জমদগ্নি । লিখে বিশ্বামিত্র ॥ লিখিল চাবন শৃঙ্গ মুনি মহাশয়। পরাশর লিখে ব্যাস যাহার তনয়।। বাহ্লিক কৌশিক ভরদ্বাজ মহাগুণী। শুকদেব তুমুরু যাজ্বল্ক্য মহামুনি॥ তারপর বিশ্বকর্মা লিখে খগগণে। প্রথমে বিষ্ণুর মান প্রগ-অশনে॥ উডিয়া পড়িয়া মৎস্ত ধরে মৎস্তারস্ক। ভূজঙ্গ ধরিয়া খায় ধকুড়িয়া কন্ধ।। ংখেনে উঠে খেনে পড়ে খঞ্জনী-খঞ্জন। চাতক-চাতকী জল মাগে অনুক্ষণ।। চটক কর্কট টিয়া বায়স পেচক। যুগা শারী-শুয়া লিখে গাঙ-চিল বক ॥

১-১ পৌ**লভ পু**লহ ক্তু ক্সাপ জ্সিত।(খ*)* ২-২ রাম ভাগি (খ*)*

* অতিরি**জ**—–

ষুভন্তা বলাই সাথে লিখে জগন্নাথ। গন্ধা প্রয়াগ লিখে মারিকা হস্তিনাথ॥ (খ)

* অতিরিক্ত—

সারঙ্গ সারজি হংস লিথে চক্রবাক। দৈবকি বিহঙ্গম লেখে সেতকাক। (খ)

৩-৩ উড়িয়া কমলে বৈদে খঞ্জনি খঞ্জন। (খ এবং বন্ধ)

ডাহুক ভাটাই টিয়া লিখিল কোকিল। গুপুর ভারই লিখে আর গোদা চিল ম জটায়ু সম্পাতি লিখে গরুডের বংশ। টাকসেনা সারস লিখিল রাজহংস॥ >ময়ব-ময়ুরী লিখে চক্র ধরে পুচেছ। কাক আদি করি লিখে যত পক্ষী আছে ॥১ বন-পশু লিখে বিশাই হৈয়। সাবধান। তুলাক ঘোড়াক কৃষ্ণসার ঢোলকান॥ কেশরী শাদ্দ্রল গণ্ড। তুরঙ্গ বারণ। একে একে লিখিল প্রধান কপিগণ॥ অঙ্গদ সুগ্রীব নল নীল হনুমান। ২পনস কুমুদ বালী আর জামুবান ॥২ চামরী মহিষ লিখে বিষাণ বিশাল। শশক শল্লকী আর নকুল শিয়াল !৷ জলচর মকর লিখিল সাব্ধানে। চারিপাশে নানা চিত্র করিল নির্মাণে॥ লিখিল কালিয় হ্রুদে ভুজঙ্গমগণ। °গরল-শেখর কালী লেখে ততক্ষণ॥° নয় বোড়া লিখিল আর ষোল চিতি। পাতালে বাস্ত্ৰকি লিখে শেষ নাগণতি॥ কাঁচলির মধ্যভাগে লিখে বৃন্দাবন। তার মধ্যে দোলপিঁডি কদম্বকানন।।

১-১ জলচর লিখে চকর চোকরি।
পেথম ধরিআ নাচে মোউর মোউরি॥ (থ)
২-২ ভন্নক লিখিল দেবরূপি জম্বান॥ (থ)
৩-৩ গোখরা থরিদ কেন্সা উভজার ফন॥ (থ)

লিখিল আবর্ত্তশালী যমুনার তট।
তালের কানন লিখে ভাগুরিক বট॥
অশোক কিংশুক শাল রসাল পিয়াল।
শিংশপা আসন ধব খেজুর তমাল॥
অশ্বথ পাকুড় জাম পিপলি পনস।
টগর তুলসী দোনা রঙ্গণ বেতস॥
মাল্লকা চম্পক পারিজাত কুরুবক।
নিহালী বান্ধলী করবী কুরুল্টক॥
কেতকী ধাতকা আর লিখে নাগেশ্বর।
জাতী যথি পুষ্প লেখে গন্ধে মনোহর॥
বিচিত্র কাঁচুলী বিশাই দিল চণ্ডিকারে।
আশীর্বাদ পাইয়া বিশাই গেলা নিজ ঘরে॥
বঁচাচলী পরিয়া মাতা বসিলা হুয়ারে।
শ্রীকবিকঙ্কণে গান ফুল্লরা আল্য ঘরে॥
বীক্রিকিক্ষণে গান ফুল্লরা আল্য ঘরে॥
বী

চণ্ডীর সহিত ফুল্লরার সাক্ষাৎ

সথী-গৃহে ক্ষুদ সের করিয়া উধার।
সম্ভ্রমে ফুল্লরা চলে কুড়্যার ছয়ার॥
বাম বাহু ক্ষুরে তার নাচে বাম আঁখি।
কুড়্যার ছয়ারে দেখে রামা চন্দ্রমূখী॥
প্রণাম করিয়া তারে করেন জিজ্ঞাসা।
কোন জাতি কার কন্তা কহ সত্য ভাষা॥

১-১ শ্রীকবিকস্কন গান কাঁচলি লিখিত।
চারিদাতে লিখিল আঠাইদ পদ গিত। (খ)

ইংশ্রেম্থী ই অভয়ার হৃদয়ে উল্লাস
ফুল্লরারে অভয়া করেন উপহাস॥
ইলাব্রত দেশে ঘর জাতি গো ব্রাহ্মণী।
শিশুকাল হৈতে আমি ভ্রমি একাকিনী॥
বন্দ্যবংশে জন্ম স্বামী বাপেরা ঘোষাল।
সাত সতা গৃহে মোর বিষম জঞ্জাল॥
ইত্রমি গো ফুল্লরা যদি দেহ অন্তমতি।
এই স্থানে কতক দিন করিব বসতি॥
হেন বাক্য হইল যদি অভয়ার তুণ্ডে।
আকাশ ভাঙ্গিয়া পড়ে ফুল্লরার মুণ্ডে॥
হাদে বিষ মুখে মধু জিজ্ঞাসে ফুল্লরা।
দূরে গেল ক্ষ্ধা-তৃষ। রন্ধনের হুর।॥
অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

চণ্ডীকে ফুল্লরার প্রশ্ন

এ নব যৌবনে ছাড়িয়া ভবরে
কেনে আইলে পরবাস।
শুন গো স্থন্দরি কেনে একেশ্বরী
ভুমিতে না বাস ত্রাস॥

১-১ হাস্তরদে (গ)

২-২ সথি হইয়া জদি রামা দেই মুহুমতি। একত্রে কথোক দিন করিএ বসতি॥ (গ) ৩-৩ পর্বত (ক)

¹⁶⁻²³⁰³ B.T.

জিনি নীলগিরি তোমার কবরী

মণ্ডিত মল্লিক।-মালে।

প্ৰকাশিল কেশজালে ॥^১

কপোল-মণ্ডল

চঞ্চল কুণ্ডল

বদন-বিধুমগুলে।

তব রূপ-সীম। কি দিব উপম।

নাহি তিনলোক-তলে॥

কপালে সিন্দুর তম করে দূর

যেন প্রভাতের ভারু।

চন্দনের বিন্দু কিবা তাহে ইন্দু

হৈল। কলস্কতনু ॥°

অতিরিক্ত:—

বড় সন্দেহ লাগয়ে মনে।

তুমি রূপবতি ছাড়িয়া স্থক্কতি

আমার মন্দিরে কেনে ॥

চম্পক মুকুল জিনি পাদালুল

তাহাতে পাণ্ডলি সাজে।

রাতা উৎপল জিনি পদতল

রতন মঞ্জির বাজে।

যুত হেমমণি স্থনাদ কিছিনী

চার কটিদেশে শোহে।

দিব্য নিরিমাণ বস্ত্র পরিধান

হেরিতে অথিল মোহে।। (मी)

১-১ বিধু-দম্ভশেশভা সৌদামিনী কিবা (ক)

२-२ व्यवका ऋठांक्र ल्लाल्य ॥ मी)

৩ ৩ চন্দনের বিন্দু

ত্থি গোভে ইন্দু

ছুই অলখিত তকু।। (গ)

ছাড়ি মকরকে

তোর মুখগন্ধে

কতশত ধায় অলি।

তোর মুখশশী

মুত্বমন্দ হাসি

সঘনে পড়ে বিজুলি॥

জিনি গজমতি তোর দম্বপাতি

হাসিতে বিজ্লী থেলে।

পক্ক-বিশ্ববর

জিনিয়া অধ্র

নাসাতে মাণিক দোলে॥

হেমলতা তনু

তোর ভুক্ত-ধন্তু

অপাঙ্গ মদন-তুণে।

ধরসি কিবা কারণে॥

শোভে অনুপাম কণ্ঠে মণিদাম

২িমার কত রত্ন ভায়।

ব'ক্ষর কাঁচুলী করে ঝিলিমিলি

শোভিছে অঙ্গ-ছটায।

তবহুরত্বা দেখি

তবহুরত্বা দেখি

তবহুরত্বা দেখি

তবহুরত্বা দিখি

তবহুরত্বা দেখি

তবুর্বা দেখি

তবুর্বা দেখি

তবুর্বা দেখি

তব্ব দেখি

তবুর্বা দেখি

তবুর্বা দেখি

তবুর্বা

উৰ্বশী আল্য আপনি।

কিবা আল্য রমা রম্ভা তিলে ত্তমা

সাবিত্রী কিবা ইন্দ্রাণী n

১-১ বাস্থকি প্রবল (খ) বিষাইতে প্রবল (ক)

২-২ তাড় মরকত কায়। (ক)

তার মরকত তায়। (দী)

রত্বময় কত তার। (খ)

৩-৩ করে স্থা দেখি (খ এবং বঙ্গ)

জিনি মুগরাজ তোর ক্ষীণ মাঝ হেলয়ে বস্ম্ভবায়। ওরূপ-মাধুরী তোর কুচগিরি ভারে পাছে ভাঙ্গি যায় n নাহি লখি তোম। কার বোলে রামা কি হেতু ছাড়িলে পতি। ^১কিসের কারণ একাকী ভ্রমণ কেন কৈলে হেন মতি ॥১ শ্বাশুড়ী ননদ কিবা কৈল মন্দ স্বরূপে বল না বাণী। তোর বিরহ-জ্বরে স্বামী যদি মরে কোন ঘাটে খাবে পানি॥ ফুল্লরার বাণী 'শুনিয়া আপনি উত্তর দিলা পার্বতী। গীত বিরচন শ্রীকবিকঙ্কণ বদনে যার ভারতী॥

১-১ সত্য কহ মোরে কে আনিল তোরে ঔষধে ছাড়িয়া বসতি। (খ) সত্য কহ মোরে কে য়ানীলা তোরে ঔষধে করি বিছাতি। (দী)

२-२ इनी अन्नभानी (ही)

চণ্ডীর পরিচয়-দান

*

কি আর জিজ্ঞাস কর আইন্স তোমার ঘর বীরের দেখিতে নারি হুখ। দিয়া আপনার ধন 'তুষিব বীরের মন' আজি হৈতে পাবে বড সুখ।

* অতিরিক্ত—

কি আর জিজ্ঞাস জাতি বান্ধণ কুলেতে স্থিতি ঘর মোর কাঞ্ননগরে। মনে না করিহ বাথা বিবাহ দিলেন পিতা সাত জনা সতীনের ঘরে॥ (ক) ব্রাহ্মণ কুলের স্থিতি নাম মোর পার্ব্বতি ঘর মোর কাঞ্চননগরে। হিমালয় মাতা পিতা কারে কব হৃংথ কথা বিভা দিশ সতীনের ঘরে॥ প্রভুর সম্পদ বড় সাত সতিন জড় य्रूथन एक कक्ला। মোর বড় য়ভাগ্য প্রভু মোর থাইল নাগ্য য়াচম্বিতে হৈলা পাগল। বিভূতি মাথেন গায় বিমি বিমি চায় ভাগ্যে য়াছে পরি বাঘছাল। বাজান ডম্বুর সিম্ব ভুজন্ব বেষ্টিত অক গলাএ পরেন হাড়মাল ॥

দৰে ভাৱে বলে কাময়রি।

শাভ শভিনে মারে বুঝিয়া না শান্তি করে

শাভ শভা প্রাণের বউরি।

১-১ বাড়াব বীরের ধন (খ)

এতক্ষণে পরিচয় করি।

^১আমার করম তৃষী^১ বসি গুপ্ত বারাণসী স্বামী মোর জনমভিখারী ॥

^২কি কব তুঃখের কথা^২ গঙ্গা নামে মোর সতা স্থামী তারে বন্দয়ে মস্তকে।

বরঞ্চ গরল থায় আমা পানে নাহি চায় ভবন তেজিন্ধ এই পাকে॥

গঙ্গা বড় °সোহাগলী° সদাই পাড়য়ে গালি স্বামীর সোহাগ-দরপে।

°দেখিয়া পতির দোষ উঠিল পরম রোষ° লাজে জলাঞ্জলি দিন্ত তাপে॥

যে যরে সতিনি রহে কামানলে প্রান দহে যেমন লাগত বিসন্ধালা।

বিধি মোরে ভেল বাম করিল দারুন কাম বনবাসি হইলাম য়বলা॥

এবে বিধি হৈল সথা বির সঙ্গে পথে দেখা জত্ব কবি য়ানিল য়ামারে।

স্থন লো ব্যাধের ঝি তুমারে বুজাব কি এবে য়ামি জাব কোথাকারে॥ (গ)

১-১ আমি সে জনম ত্থি (খ) হইলাম কুলনাদি (গ)

२-२ ञन मञ्चारात च्राचा (मी)

৩-৩ আয়াঞ্চলী (খ) আঞ্জীয়লী (দী) মায়াঞ্চলি (গ)

8-8 কেবল ভাহার দোদে নানাস্থানে ভ্রমি রোদে (দী)

ইবিষকণ্ঠ মোর স্থামী সহিতে না পারি আমি
পঞ্চমুখে মোরে দেয় গালি।ই

একে সতীনের জ্বালা কত সহে অবল।
পরিতাপে হয়া গেলু কালী॥

ইসতীনের সম্মান দেখি বাড়ে অভিমান
লোক-লাজে নাহি মেলি আঁখি।ই
দেখিয়া দারুণ সতা বিবাহ দিলেন পিত।
শিতৃকুলে হইলাম বিমুখী ॥
খাও পর যত তুমি সকল যোগাব আমি
মোরে তুমি না বাসিহ ভিন্।
সমরে কানন-ভাগে থাকিব বারের আগে
আজি হৈতে সম্পদের চিন্॥

ইসম্পদ অনেক দিব ভকতি কেবল নিব।

ইসম্পদ অনেক দিব

্ শ্রীকবিকঙ্কণ রস ভণে॥

১-১ দারুন কম্মের গতি উগ্র আমার পতি
পাঁচ মুথে পাড়ে মোরে গালি।(থ ·)
২-২ পতিনের রসমান হত বড় কম্পবান
রাজিলাসে নাহি মিলি রাখি।(গ)
সতিনের সমান দেখি আমি কম্পবান
অভিমানে নাহি মেলি আখি।(খ)
৩-৩ কতেক (দা)
৪-৪ সম্পদ বিস্তর দিব ভকতি কেবল সব (দী)

চণ্ডীর প্রতি ফুল্লরার উপদেশ

তোরে আমি বলি ভাল স্বামীর বসতি চল পরিণামে পাবে বড় >সুখ ।। জনলে। বিমৃঢ়মতি যদি ছাড় নিজ পতি ংকেমনে চাহিবে লোকমুখ॥ ।। স্বামী বনিতার পতি "স্বামী বনিতার পতি" স্বামী বনিতার সে •বিধাতা । স্বামী যে প্রমধন স্বামী বিনে অক্স জন কেহ নহে স্থ-মোক্ষ-দাতা॥ সম্ভোষে বসায় খাটে দোষ দেখি নাক কাটে দণ্ডে রাজা বনিতার পতি। শুন গো শুন গো সই
 হিত উপদেশ কই ইতিহাস কর অবগতি॥॰ রাবণে বধিয়া রাম সীতারে আনিয়া ধাম করাইল পরীক্ষা দহনে। লোক-বাদ খণ্ডিবারে বনবাস দিলা তারে •আদেশিয়া স্থমিত্রানন্দনে॥•

১-১ সুখ (গ এবং বছ)

২-২ কেমনে দেখাবে লোকে মুখ। (খ)

৩-৩ স্বামী বিনে নাহি গতি (খ)

8-8 দেবতা (গ)

৫-৫ পণ্ডীতের মৃথে যত স্বক্তাছি পুরাণ মত
 ইতিহাদে কর অবগতি। (দী)

৬৬ সঙ্গেলাজানকি লক্ষণ॥ (গ)

পঞ্মাস গর্ভকালে সাধ খাওয়াবার ছলে লয়া গেল লক্ষ্ণ কাননে।

শুন গো দারুণ কথা কাননে এডিয়া সীতা আল্যা বীর আপন ভবনে॥

ভৃগু নামে মহামুনি সকল পুরাণে জানি ব্রহ্মার কুলের নন্দন।

রেণুকা রমণী তার স্থুত ভূবনের সার ক্ষত্রকুল-বিনাশ-কারণ n

রেণুকার দেখি দোষ উঠিল পরম রোষ স্থাতে আজ্ঞা দিল মহামুনি।

শুনিয়া বাপের কথা কাটিল মায়ের মাথা ত্রিভুবনে কৈল্য ধরি ধরি ॥

্তারে) দেখি গো উত্তম জাতি দেবতা-সমান ভাতি কোপ কর নীচের সমান।

> ছাড়িয়া পতির পাশ কেন আল্য। পরবাস আপনার কি সাধিলে মান ॥

> স্তিনী কোন্দল করে' দ্বিগুণ বলিবে তারে অভিমানে ঘর ছাড় কেনি।

> কোপে কৈলে বিষপান আপনি তেজিবে প্রাণ সভিনের কিবা হবে হানি॥

^{*} অতিরিক্ত— কৌশল্যা রামের মাতা ককরী তাহার সতা তুহাঁর কোন্দলে সর্বনাশ। না গণিয়া হিতাহিত কৈল সেই অন্তচিত রামচন্দ্র গেলা বনবাস 🛚 (বঙ্গ)

সধম অবলা জাতি যদি থাকে এক রাতি
পরের ভবনৈ কদাচিত।

'ছল ধরে বন্ধুজন লোকে করে গঞ্জন
অবিচারে কৈলে অমুচিত॥
ফুল্লরার কথা শুনি ভগবতী মনে গুণি
উত্তর না দেয় মহামায়া।
পুন ব্যাধ-নিত্যিনী নিবেদয়ে ষাড় পাণি
কর চণ্ডি রঘুনাথে দয়া॥

ফুল্লরার পুনর্কার উপদেশ

যুড়িয়া উভয় পাণি বলে ব্যাধ-নিত্সিনী শুন রামা দ্বিজের বনিতা। 'কুবুদ্ধি লাগিল তোকেং ঠেকিলি বিষম পাকে 'কি কারণে আইলে তুমি হেথা।''

কুলবতি জেই হয় রোস করি মরে রয়
অভিমানে থাকে উপশীত।
বন্ধুজন আশী ঘরে উচিত বিচার করে
স্বামী হয় আপনে লক্ষিত ॥ (দী)
১-১ প্রভাত হৈলে নিসা লোকে গাইব য়ভূসা
কেনে হেন কৈলে য়ন্থচিত ॥ (গ)
২-২ সকপে কহি গো তোকে (গ)

ত্ত একাকিনি কি কারণে হেতা ॥ (গ)

অতি পীন পয়োধর গুরুয়া নিতম্ব-ভর তোর রূপে উজ্জ্বল কুটীর।

নৌতুন যৌবনরাশি কিবা প্রিয়া পরবাসী তেঞি ঘরে নাহি বাস স্থির ॥

^১ভারত-পুবাণ-ক্রমে^১ শুনেছি ^২পণ্ডিত-ধামে^২ অবনীতে দারা বেদবতী।

মাণ্ডব্য নামেতে মূনি সকল পুরাণে শুনি শুন তার দৈবের লিখন।

শিশুকালে কুতৃহলী পতক্ষেরে দিয়া শূলী ব্যোমপথে করাল্য গমন॥

মুনির দৈবের পাকে অধিপতি সেই লোকে আচস্থিতে হারাইল হয়।

ঘোড়া-চোরা পেয়া। ত্রাস অশ্ব বান্ধি মুনি-পাশ পালাইল পাইয়া প্রাণে ভয়॥

ংঘোড়। খুঁজিবারে ধাই পাইল মুনির ঠাঁই বান্ধিয়া আনিল হাতে-গলে।

নুপাজ্ঞায় নিশাপতি
 মুনিরে লইয়া তথি
 আরোহণ করাল্য ত্রিশৃলে॥

১-১ ভারত-বিধান ক্রমে (বঙ্গ)

২-২ নিপের ধামে (গ)

৩-৩ ঝিবা বলিতে পার (ক) .
জানিবা জানিতে নার (বঙ্গ)

⁸⁻⁸ রাজ আজা লোক লক্ষ পৃথিবি করিল পক্ষ আনি মুনি ধরি ছেন কালে। (গ)

৫-৫ আজ্ঞাদিল মহিপতি (গ)

বেদবতী নামে দারা পতি যার শতশির। অবিরাম শ্রীর গলিত।

ংপতিব্রতা হয় যেবাং তেন মতি করে সেবা স্বামীর পালন করে নিত।।

একদিন বেদবতী কান্দে করি নিজ পতি গঙ্গাস্থান করিবারে যায়।

গঙ্গরে ওকুল-ধারে অঙ্গ মার্জন করে বারবধু দেখিবারে পায়॥

দৈবযোগে এক দিনে দেখাদেখি ছুই জনে °হাস্তরসে তুজনে কথনে।°

বেদবতী বলে বাণী °হর্ষ বার নিতম্বিনী° ভাগ্য করি সে মানিল মনে॥

মুনি বলে শুন সতি যদি বা ভুঞ্জাহ রতি বারবধূ লক্ষহীরা সনে।

সতী নিতি দারীঘরে অঙ্গ মার্জ্জন করে বেশ্যা বিস্ময় ভাবে মনে॥

^৫ মানিল মানসপূর্ণ নিজাগারে যায় ভূর্ণ কান্ধে করি স্বামী লয়্যা যায়।

ত্রিশৃলে মাণ্ডব্য মুনি তমো ঘোরে নাহি জানি মাথা ঠেকে সে মুনির পায়॥

১-১ বেদশিরা (ক) ২-২ সতি নিতি হয় ঘেবা (ক)

৩-৩ দেখাদেখি হৈল সেইখানে। (ক)
দেখাদেখি ছহার নন্ননে। (গ)

⁸⁻⁸ বেখা বিশ্বয় গুণি (বন্ধ) করুণ বচন জানি (গ)

 ^{«- ে} মনের মানদ পূর্ণ নিজাগারে আশু পুন
 কান্দে দতি পতি লঞা জায়। (গ)

ধ্যানযোগে হরি-সঙ্গ যে মোর করিল ভঙ্গ দেবতা অস্থ্র কিবা নর। যদি হয় দেবঋষি মরিবেক গেলে নিশি বাগ্বজ্ঞ দিল মুনিবর 🐧 শুনি বলে বেদবতী আমি যদি হই সতী এ যামিনী না পোহাবে আর। মুনি-সতী-বিসন্থাদ হৈল বড় প্রমাদ অলজ্যা বচন দোহাকার 🛚 পতির পুরিতে আশ বার-বনিতার পাশ পতিব্ৰতা লয়া। যায় স্বামী। ইনা কৈল প্রশ তায় হইল। অব্যাধি-কায় নিজাগারে আইলা মহামুনি॥> অনিবার বিভাবরী যথা বেদবতী নারী সেবে দেবে যুড়ি ছই কর। সতীর আদেশ ধরি উঠিলা তিমির-আরি মরে মুনি জিয়াল অমর 🛭 দেখ পতিব্রতা-ধর্ম বরপতি পানে মর্মাই আপন ছুকুল কৈলে নাশ। ভালে ভালে গৃহে লড় ভুলিয়া ভবন ছাড় °পতি লয়া কর গিয়া বাস ॥°

৩-৩ ভারি হয়া থাক গিয়া বাদে। (ক)

১-১ দেথিয়াত ব্যাধি কায় বেখা না পরশে তায় আইলা মুনি না পোহায় যামী। (বঞ্চ) ২-২ পরপতি সনে কম্ম (গ)

হীন হয়া হেন ভাষে শুনি হৈমবতী হাসে
শুনিয়া হরিষ হইলা মনে।
মকুন্দ বলেন বাণী কুপা করি ঠাকুরাণী
চিরদিন রাখিহ চরণে।

অতিরিজ্ঞ---

শুন শুন ঠাকুরাণী কহি আমি হিতবাণী ইতিহাসে কর অবধান।

ভারত বিধান-ক্রমে ভনেছি পণ্ডিত-ধামে সতী সাবিত্রীর উপাথান॥

মন্ত্র-দেশ-নরপতি নাম তার অশ্বপতি অপুত্রক দেই নুপবর।

পুত্র জনমের হেতু বিজ আনি করে ক্রেতু অগ্নি তারে দিল কন্যাবর ॥

কন্তা হৈল রূপবতী দেখি বলে নরপতি মনে ভাবি করহ বরণে।

পিতা দিল অহমতি অবিলম্বে রূপবতী মনে বরি আইলা সত্যবানে ৷

কন্তা আদি কহে বাণী হর্ষিত নূপমণি সেইকালে আইলা নার্দ।

নারদ **শুনিয়া** কথা বলে রা**জা** পাও ব্যথা সত্যবানের নিকট আপদ ॥

সাবিত্রী শুনিল কথা বলেন শুনহ মাতা যে হৌক সে হৌক মোর পতি।

আর না ভাবিহ আন তার পাছে মোব প্রাণ ইথে তুমি কর অহমতি #

শুনি নরপতি কয় যে জন আমার হয় কর সবে সেই আয়োজন। রাজার বচন মাথে কার সব চলে সাথে চলে রাণী কুতুহল মন। জনক-জননী কাছে যথা সভাবান্ আছে তথা রাজা দিল দরশন। সত্যবানে আদেশিল সাবিত্রীকে সমর্পিল পুন রাজা দেশেতে গমন। ভাবিয়া সাবিত্রী মনে দেব পূচ্ছে দিনে দিনে স্বামীর পালন করে নিত। বাভড়ী বভর অন্ধ দেখে বধুর প্রেমতরঙ্গ ছ'হে বুঝি হন হর্ষিত॥ সভ্যবান্ চলে বনে সাবিত্রী ভাবিল মনে যেবা কথা নারদ কহিল। শুভুরে বিদায় হয় পতিত্রতা দঙ্গে ধায় গহন কাননে রামা গেল । কুতুহলে ছুই জনে ভ্ৰমিয়া গহন বনে তরুমুলে বৈদে সত্যবান্। ত্যজ্ঞিল কুমার বোল কাল আসি দিল কোল তারে বিধি করিল নিদান॥ সবে না করিয়া ভয় প্রণতি করিয়া কয় তুমি দান দেহ মোর পতি। আর যেবা চাহ বর দিব আমি যাও ঘর পতি-কথা না কহিও সতি। ভনিয়া ধর্মের বাণী করিয়া যুগল পাণি যদি বর দিবে মহাশয়। খন্তর পাইবে দৃষ্টি লভিবে আপন স্বষ্ট

পিতৃকুলে শতেক তনয়।

ফুলরার প্রতি চণ্ডী

ফুল্লরা স্থন্দরি শুন ফুল্লর। স্থন্দরি।
আইন্থু বীরের তুঃখ দেখিতে না পারি॥
যে বল সে বল আমি বীরে না ছাড়িব।
দিয়া আপনার ধন তুঃখ ঘুচাইব॥
কুলের বহুরি আমি কুলের নন্দিনী।
আপনার ভালমন্দ আপনি সে জানি॥
মোর উপদেশে গো তোর কিবা কাজ।
আপনি সে রক্ষা করি আপনার লাজ॥

বর দিয়া ধর্মরায় আপন ভবন যায় অন্তপতি যায় রূপবতী। পুনরপি দেখি তারে কুপা করি দিল বরে যাও তুমি হবে পুণ্যবতী। জোড় হাথে কহে সতী তুমি লয়্যা যাও পতি কেমতে হইবে পুত্র মোর। বুঝি বলে ধর্মবায় ক্ষিল স্কল দায় পতির জীবন দিলু তোর। সাধিল আপন কাৰ্য্য পতি লক্ষ্যা আইল রাজ্য এই কথা ভনেছি পুরাণে। ত্যজিয়া আপন পতি তুমি অতি মৃঢ়মতি একা ফির গহন কাননে 🛚 শুনিয়া এমত বাণী কহে মাতা নারায়ণী না ছাড়িব ভোমার ভবন। রচিয়া নৌ**তু**ন গীত অভয়া-চরণে চিত বির্চিল ঐকবিক্ষণ । (বঙ্গ)

আছিলাম একাকিনী বসিয়া কাননে।
আনিয়াছে তোর স্বামী বান্ধি নিজগুণে।

*

হয় নয় জিজ্ঞাসা করহ যায়া। বীরে।
যদি বীর বলে তবে যাব স্থানাস্তরে।
আইন্থ তোমার বাড়ী হিত করিবারে।
কতনা বিরূপ বাণী বল বারে বারে॥
মোরে এত জিজ্ঞাসায় তোর কিবা কাজ।
থাকিব ছঙ্গনে যদি না বাসহ লাজ।
ব্যক্তিক বচন যদি বলিলা ভবানী।
না বুঝিয়া ছঃখ ভাবে ব্যাধের নন্দিনী॥
বারমাসের ছঃখ রামা করে নিবেদন।
অস্থিকামঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ॥

ফুল্লরার বারমাসের তুঃখ

পাশেতে বসিয়া রামা কহে ছঃখবাণী।
ভাঙ্গা কুড়্যা ঘরখানি পত্রের ছাওনী॥
ভেরাণ্ডার খাম তার আছে মধ্য ঘরে।
প্রথম বৈশাখ মাসে নিত্য ভাঙ্গে ঝড়ে॥

* অতিরিক্ত:—

সতেক রাজার ধন য়ঙ্গে য়ঙ্গরন।
একাকিনি য়রজে বেড়াই য়ুক্কন॥
য়াস্থাস করিল বির স্থন তার কথা।
কহিল তুমার দাসি আপন বনিতা॥ (গ)

১-১ এমন স্থানিল জদি য়ভয়ার তুওে। য়াকান ভাকিয়া পড়ে ফুল্লরার মুণ্ডে ॥ (গ)

ইঅনল সমান পোডে বৈশাথের খরা। তরুতল নাহি মোর করিতে পসরা॥ পদ পোডে খরতর রবির কিরণ। শিরে দিতে নাহি আঁটে খুঞার বসন।। বৈশাখ হৈল আগো মোরে বড় বিষ। মাংস নাহি খায় সর্ব্ব লোক নিরামিষ॥ পাপিষ্ঠ জ্যৈষ্ঠ মাসে প্রচণ্ড তপন। খরতর পোডে অঙ্গ রবির কিরণ।।° পসরা এডিয়া জল খাত্যে যাত্যে নারি। দেখিতে দেখিতে চিলে লয় "আধা সারি"।। •পাপিষ্ঠ জ্যৈষ্ঠ মাস পাপিষ্ঠ জ্যৈষ্ঠ মাস। বেঙ্চের ফল খায়াা করি উপবাস ॥° ° আষাঢ়ে পূরিল মহী নবমেঘে জল। বড় বড় গৃহস্থের টুটয়ে সম্বল ॥ १ মাংদের পদরা লয়্যা বুলি ঘরে ঘরে। কিছু খুদ-কুড়া মিলে উদর না পূরে॥ কি কহিব ত্বংখ মোর কহনে না যায়। কাহারে বলিব কি দূষিব বাপ মায়॥

১-১ বৈশাথে বদস্ত ঋতু থরতর থরা। (থ এবং গ)
পুণাকর্মা বৈশাথেতে থরতর থরা। (দী)

২-২ জহটের রবির তাপে কেহ নহে স্থির। তুশাকুল হইগ নিকটে নাহি নীর॥ (দী)

৩-৩ একশারী (গ এবং দী)

৪-৪ রক্ত নাহি মিলে এই পাপ জন্তী মাসে। বেওছির ফল থেঞা থাকি উপবাদে॥ (গ)

৫-৫ ভূবন পূর্ণিত হৈল নবমেঘজন। হেন কালে মৃগ মারে পাপ কর্মফল।। (খ এবং দী)

শ্রাবণে বরিয়ে মেঘ দিবস রজনী।

সিতাসিত ছই পক্ষ একই না জানি ॥

*

আচ্ছাদন নাহি অক্ষে পড়ে মাংস-জল।
কত মাছি খায় অক্ষে করমের ফল ॥
অভাগ্য মনে গুণি আভাগ্য মনে গুণি।
কত শত খায় জে কৈ নাহি খায় ফণী॥
ভাদ্রপদ মাসে বড় ছরস্ত বাদল।

নদনদী একাকার আটদিকে জল॥

*

*

ফরাত পাড়াতে বসি না মেলে উধার।
হেন বন্ধুজন নাহি যেবা সহে ভার॥
ছংখ কর অবধান ছংখ কর অবধান।
লঘুর্ষ্টি কুড়াতে সদাই বহে বান॥

আখিনে অম্বিকা পূজা করে জনে জনে।
ছাগল মহিষ মেষ দিয়া বলিদানে॥

*

* অতিরি**ক**—

চারি মাদে বস্ত্রথানি হইঞা গেল তৃত্য। পালটিতে নাহি মোর একথানি মুণ্ডা। (গ)

- ১-১ সকলে দরিজ বীর সম্বলে বিরল । (বঙ্গ) সকলে দরিজ বীর সম্বলে নিকল। (থ)
- * * অতিরিক্ত—
 পদরা করিয়া দিরে ফিরে ঘরে ঘরে।
 য়নলে পুড়এ অঙ্গ ভিতরে বাহিরে॥ (গ)
- ২-২ আখিনে অখিকা পূজা লোকের হরিসে। সোল উপচারে পূজে ছাগ মহিসে॥ (থ-এবং গ-)
 আখীনে অখিকা-পূজা করে যগজনবা এই জি।
 মহীস ছাগল মেস করে নিজোজন ॥ (गो) ।

উত্তম বসনে বেশ করয়ে বনিতা।
অভাগী ফুল্লরা করে উদরের চিন্তা।।

*কেহ না আদরে মাংস কেহ না আদরে।
দবীর প্রসাদ-মাংস সবাকার ঘরে।।
কার্ত্তিক মাসেতে হৈল হিমের জনম।

*করয়ে সকল লোক শীত নিবারণ।।
নিযোজিত কৈল বিধি সবার কাপড়।
অভাগী ফুল্লরা পরে হরিণের ছড়।।
মাস মধ্যে "মাইশর" আপনি ভগবান।
হাটে মাঠে গৃহে গোঠে সবাকার ধান।।

উদর ভরিয়া অন্ন দৈবে দিল যদি। যম সম শীত তথি নিরমিল বিধি॥

* *

বড় হুঃখ মনে গুণি বড় হুঃখ মনে গুণি।
পুরাণ খোসলা গায় দিতে করে পানি॥
কত নিবেদিব হুঃখ কত নিবেদিব হুঃখ।
বিপাক পাইল স্বামী বিধাতা বৈমুখ॥

১-১ ব্যাধের হরিণ মাংস কে নিব মন্দিরে। (গ) ২-২ তুলি পাটী কাছড় নাহি সিভ নিবারণ I (গ)

৩-৩ মার্ঘসিম্ব (গ)

শতিরিক্ত
 কত হৃঃথ শহে গায়।
 নিরামিশ্য করে লোক মাংশ না বিকায়। (দী)

* * অতিরিক্ত

 হথ স্থন ঠাকুরানি।

 ফ্ররা সমান য়ার নাহি য়ভাগিনি॥ (গ)

পৌষে সকল ভোগ সুখী সর্বজন।

'তুলি পাড়ি পাছুড়ি শীতের নিবারণ॥

'তৈল তুলা তন্নপাৎ তাস্থল তপন।
করয়ে সকল লোক শীত নিবারণ॥

'হরিণী বদলে পাইন্থ পুরাণ খোসলা।

উড়িতে সকল অঙ্গে বরিষয়ে ধূলা॥
রথা বনিতা-জনম রথা বনিতা-জনম।
ধূলি ভয়ে নাহি মেলি শয়নে নয়ন॥
তঃখ কর অবধান তঃখ কর অবধান।
জান্থ ভান্থ কুশান্থ শীতের পরিত্রাণ॥

'মাঘ মাসে অনিবার সদাই কুজ্ঞাটী।
আন্ধারে লুকায় মৃগ না পায় আক্ষটী॥
ফুল্লবার কত আছে কর্শের বিপাক।
মাঘ মাসে কাননে তুলিতে নাহি শাক॥

শুন মোর বাণী রামা শুন মোর বাণী।
কোন সুখে মোর সাথে হইবে ব্যাধিনী॥
সহজে শীতল ঋতু ফাগুন যে মাসে।
পোড়ায়ে রমণীগণ বসন্ত-বাতাসে॥

১-১ সর্বজন কৈল সিতনিবারন বসন॥ (গ)

२-२ পড় नि প্রসাদ কৈল পুরান মেথলা। (গ)

৩-৩ মাদে কুল্পটিকা প্রভু মৃগয়াতে জায়। আন্ধারে লুকায় মৃগ দেখিতে না পায়। (দী)

 ^{*} অতিরিক্ত—
 ছুন্থে কর য়বগতি ছুন্থে কর য়বগতি।
 জুনম য়বধি য়ামি ক্লেনে করি মতি। (গ)

১মধুমাসে মলয়-মারুত বহে মন্দ। মালতীর মধুকর পিয়ে মকরন্দ ॥> বনিতা-পুরুষ যত পীড়য়ে মদনে। ফুল্লরার অঙ্গ পুড়ে উদর-দহনে॥ দারুণ দৈব-দোষে গো দারুণ দৈব-দোষে। একত্র শয়নে স্বামী যেন ষোল ক্রোশে॥ ু অনল সমান পোড়ে চইতের খরা। চালুসেরে বান্ধা দিন্ত মাটিয়া পাথরা। ফল্লরার কত আছে করমের ফল। মাটিয়া পাথরা বিনে অগ্য নাহি স্থল।। তুঃখ কর অবধান তুঃখ কর অবধান। আমানি খাবার গর্ত্ত দেখ বিভাষান।। ংফুল্লরার অভিলাষ বুঝিয়া পার্ববতী। আশ্বাস করিয়া তারে বলেন ভারতী ॥? আজি হইতে মোর ধনে আছে তোর অংশ শ্ৰীকবিকশ্বণ গীত গান ভৃগুবংশ।।

১-১ মলয় পবন মধুপান নানা ফুল। হরশীতে মধুপান করে অলিকুল। (দী)

২-২ ফলেগুনে দ্বিশুণ শীত থরতর থরা। খুদ সেরে বান্ধা দিল মাটীয়া পাথরা । (দী)

৩-৩ ফুলরার তৃঃথ কথা স্থনি নারায়নি। হেট মাথা করি কিছু কহিছেন বানি॥ (গ)

কালকেতুর প্রতি ফুল্লরা

ইকান্দিতে কান্দিতে রামা গোলা হাট চলে।
তিতিল সকল অঙ্গ লোচনের জলে॥
বিষাদ ভাবিয়া কান্দে ফুল্লরা রূপসী।
নযনের কজ্জলে মলিন মুখ-শশী॥
ইয়া-কান্দ কান্দনে কান্দে চক্ষে বহে নীর।
সবিশ্বয় হইয়া জিজ্ঞাসে মহাবীর॥
শাশুড়ী ননদী নাহি নাহি ভোর সভা।
কার সঙ্গে দ্বন্দ করি চক্ষু কৈলি রাভা॥
সভা সভী নাহি প্রভু তুমি মোর সভা।
আজি হইতে ফুল্লরারে বিমুখ বিধাতা॥
*
কি লাগিয়া প্রভু তুমি পাপে দিলে মন।
ইয়েই পাপে নষ্ট হৈলা লঙ্কার রাবণ॥
*

- ১-১ কান্দিতে কান্দিতে রামা করিল গমন। হুই চক্ষে পড়ে জল ধারার আধ্বন। (থ)
- ২-২ গদ গদ বচন রাঙ্গা চক্ষে বহে নির। স্বিনয় জিজ্ঞাসা করেন মহাবির॥ (গ)
- ৩-৩ আজি হৈতে হৈলা তুমি লন্ধার রাবণ। (ক এবং খ)
- ** অতিরিক্ত—
 ইড্ছীয়া পরের নারী মঞ্চিলা রাবণ।
 ড্রোপদী হিংশীয়া কুকু কিচক নিধন।
 সতিতা নাশীয়া হবি হইলা পাশাণ।
 আমি শে অবলা কি বুঝাব তোমা স্থান। (দী)

পিপীড়ার পাখা উঠে মরিবার তরে।
কাহার ষোড়শী কন্সা আনিয়াছ ঘরে।
বামন হইয়া হাত বাড়াইলে শশী।
আখেটীর ঘরে শোভা পাইবে উর্বলী।
শিয়রে কলিঙ্গ-রাজা বড় হুরবার।
তোমারে বিদ্য়া জাতি লইবে আমার।।
এ বোল শুনিয়া ক্রোধে বীর বলে বাণী।
পরস্ত্রী দেখিয়ে যেন নিদয়া জননী।।
ব্যক্ত করি রামা মোর কহ সত্য ভাষা।
মিথ্যা হইলে চিয়াড়ে কাটির তোর নাসা
সত্য মিথ্যা বাক্যে ধর্ম্ম আপনে প্রমাণ।
তিন দিবসের চাঁদ দেখি বিভ্যমান।।
ফ্রাঞ্জলি ফুল্লরা করেন নিবেদন।
অস্বিকামঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ।।

ছদ্মবেশিনী চণ্ডীর রূপবর্ণনা

'শুন প্রভু আমার ভারতী। ত্রিভুবনে এক ধক্ষা অতি ববতন্ত্র কন্সা রতি-পতি জিনিয়া মুরতি॥'

সত্য মিথ্য বচনে আপনি ধর্ম সাক্ষী।
 তিন দিবসের চাঁদ ছয়ারে বসি দেখি॥ (ক এবং বদ)
 ২-২ য়হে বির বচনে করহ য়বগতি।
 হবর্ণবরন ম্নি কিবা ৸াইলা য়াপনি
 ব্ছিতে পারি না তার মক্তি॥ (গ)

কুন্তলে কুন্থম শোভে ষ্ট-পদ মধু-লোভে সীমন্তে সিন্দুর দিবাকর। নাস জিনি খগপতি স্মরধন্ম ভাঙ-ভাতি ^১মুখচারু জিনি শশধর ॥^১ ওষ্ঠ জিনি পক্ষ বিশ্বফল। স্থুরঙ্গ পাটের জাদে বিচিত্র কবরী বান্ধে তথি বেডি মালতীর মাল 🛚 খঞ্জন-গঞ্জন আঁখি অনুমানে হেন লখি °কেশ জিমি নব জলধর।° স্থচার সে ক্ষীণ মাঝ। জিনিয়। মূগের রাজা হেমকান্তি জিনি কলেবর॥ গজকুম্ভ পয়োধর • কিবা হেম গিরিধর• বিচিত্ৰ কাঁচলি শোভে তায়। কটিতে কিঙ্কিণী সাজে অতি সুললিত বাজে রতন মঞ্জীর শোভে পায়॥ কর জিনি করি-কর নাসা-ভূষা মনে হের ভুবনমোহন শঙ্খধারী। বুঝি আল্যা দেবী মহেশ্বরী ॥

১-১ মুখ দেখি জেন হংগাকর॥ (গ)

২-২ মুকুতা সদৃস কচি (গ)

^{*-}৩ ভুর নথ চাম সোহদর। ('গ)

৪-৪ উপমা নাহিক তার (ক)

৫-৫ বিসেস বলিব কত বিচিত্র বসন জত য়াপনে মাইলে মাহেশ্বরি ॥ (গ)

শুনি ফুল্লরার বাণী সবিশ্বয় বীরমণি বলে রামা কর অবধান।
আমি কিছু নাহি জানি কেবল গোধিকা আনি
রাখিয়াছি চাপিয়া পাষাণ॥
মহামিশ্র ইত্যাদি॥

কালকেতুর প্রতি ফুল্লরার উপদেশ

শুন শুন বীরবর নতু কৈলে গারী-ঘর পরের রমণী ঘরে আনি।

কাননে আছিল রাম দেখি অতি "অনুপাম" রাক্ষসী আইলা সন্নিধান।

মনে অনুমান করে কেমনে জানকী মরে তবে রামে করি আত্মদান n

°মনে রাম জানি তারে আদেশিল লক্ষ্ণেরে নাসা-শ্রুতি কাটিতে তাহরে।°

°পরিত্রাহি ডাক ছাড়ে প্রবেশে লঙ্কার গড়ে**°** স্বগোচর করিল রাজার॥

১-১ মহাবির মনে গুনি (গ)

২-২ ধন্মে তার নাহি গ্যান (গ)

৩-৩ নব কাম (গ)

⁸⁻⁹ জানি রাম তার মন **য়াদেনিল লক্ষন** নাসা **শ্রুতি কাটিল তাথার। (গ**)

e-e রিপরিত ব**র ক**রে প্রবেদে রা**জার** পুরে (গ)

শূর্পণখার শুনি কথা ছদয়ে 'লাগিল ব্যথা' মারীচেরে করিয়া সহায়।

আছে রাম বীরাসনে নিশাচর দশাননে উপনীত হইল তথায়॥

ংস্তবর্ণ মূগের বেশেং আইল রামের পাশে দেখি সুখী হইলা জানকী।

*রামেরে বলেন বাণী দেহ হেম-মূগ আনি রাম গেল লক্ষ্ণােরে রাখি॥৩

হাতে লয়্যা গাণ্ডী-বাণ ধরিবারে যান রাম মারিচ ধাইল বেগবানে।

^{*} অনুসদী হৈয়া তারে রঘুপতি বাণ এড়ে * পড়ে বীর ভাকিয়া লক্ষণে॥

বিপরীত শব্দ শুনি কহে সীতা কট্বাণী লক্ষ্মণ চলিলা অম্বেষ্ণে।

সন্ন্যাসীর বেশ ধরি বাক্ষসের অধিকারী ভিক্ষা মাগে পদীতা-সন্নিধানে ॥

শত্ম নিকেতন দেখি হরি সীতা চন্দ্রমুখী সাথে লয়্যা যায় দিব্য যানে।

সমরে জটায়ু মারি রাক্ষসের অধিকারী রাখে সীতা অশোক কাননে।

১-১ ভাবিয়া তথা (ক)

২-২ কনক হরিন বেলে (গ)

৩-৩ জনকত্বহিতা সিতা স্থনিয়া তাহার কথা ব্ব্বুবির লক্ষনেরে রাখি। (গ)

৪-৪ গিয়ারাম কথো দূরে মারীচে বধিল শরে (ক)

^{2-¢} সিতার ভবনে (গ)

ঘরে আসি তুই বীরে অনেক বিলাপ করে 'ফিরে তারা দণ্ডক কানন। স্থা করি কপিরাজে বালি বধি ধডি-সাজে কৈল রাম সাগর-বন্ধন n স্থ ত্রীব অঙ্গদ সাথ পার হৈয়া রঘুনাথ বহুবিধ কৈলা বহু রণ। কুন্তকর্ণ আদি যত বধে বীর শত শত রাবণেরে করিল। নিধন ॥ ংহরিয়া রামের নারী রাক্ষসের অধিকারী**ং** সবংশে মজিল দশানন। রাম বিনাশিল তারে উদ্ধারিল জানকীরে বিভীষণে করিল স্থাপন ম বিভাষণে রাজা করি উদ্ধারিলা নিজ নারী পরীক্ষাতে সাঁতা শুদ্ধমতি। হৈয়া আনন্দিতমনা সঙ্গেতে সকল সেনা গেলা রাম অযোধ্যা-বসতি ম

১-১ ভ্রমে তারা গহন কানন। (গ)

২-২ হরিয়া পরের নাবি নিসাচর য়াধকারি (গ)

* অতিশ্বিক--

ছিল রাজা যুধিষ্ঠীর পঞ্চ ভাই মহাবির
পাসায় হারিয়া গেলা বন।
বিরাট রাজার দেসে আছিলান গুপ্ত বেসে
তার শুন বলি বিবরণ॥
কোপদি রাজার নারি তারে দেখি কামাচারি
কিচক রাজার বড় সালা।
সেই পাপে যুধগতি সতেক ভেয়ের সাধি
যমের সদন চলি গেলা। (গ)

শুন বীর বাণী মোর দেবরাজ পুরন্দর গৌতমের হরিল ব্নিতা। দেবতা সমাজে হেঁট মাথা॥ শুনহ বিধির কথা সন্ধ্যা নামে যার স্থৃতা পরিবাদ দেবতা সমাজে। কি কহিব তার কথা লাজে বিধি হেঁট মাথা উদ্ধিমুখ নাহি করে লাজে।। 'ফুল্লরা বীরেরে বলে আগে তুমি ভাল ছিলে ইবে প্রভু নষ্ট কৈলে মতি।

আনিলে পরের নারী অতিশয় মনোহারী শুনিলে বধিবে নরপতি॥

এতেক বচন বলি বীরে পাড়ে গালাগালি অভিমানে কর্যে রোদন। কপালে আঘাত হানি বলে ব্যাধ-নিত্মিনী মোরে হইল দৈব-বিডম্বন ॥

১-১ সেই অপবাধ হেতু ভগান্ব হইলা নিতু (গ) ২-২ স্থন বির প্রাননাথ কক্সা য়াইল তোর সাথ এবে **ভাল ন**য় তোর মতি। (গ)

^{*} অতিরিক্ত— না য়ার বসিব সঙ্গে না য়ার করিব রঙ্গে - না য়ার বহিব তুয়া কাছে। য়বোধ ব্যাধের পো মাস বেচা ছবে থো কোটাল স্থনিয়া থাকে পাছে । (গ)

ফুল্লরার বাণী শুনি মহাবীর মনে গুণি সবিশ্বয় হইলা অন্তরে। শুন প্রিয়ে মোর বাণী আমি কিছু নাহি জানি পরিরাদ কেন দেহ মোরে॥ ভাল-মন্দ যত মোর তোরে রামা স্থগোচর ইদোষ মোরে দেহ অকারণ। রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিয়া বন্ধ চক্রবর্ত্তী জ্রীকবিকস্কণ।।

ফুল্লরার প্রতি কালকেতু

শুন শুন আল প্রিয়ে বচন আমার। আমার যেমন মতি গোচর তোমার॥ ২অতি শিশুকালে বিভা করিত্ন তোমারে। মোর ভাল-মন্দ তুমি জানহ অন্তরে॥ পরের রমণা দেখি হেঁট করি মাথা। তবে কেনে এত মোরে বল কটুকথা।! কোথা না দেখিলে কন্সা পরম রূপসী। নিশ্বাদে মলিন কেনে কৈলে মুখশশী॥ সেই ক্তা দেখাবারে পার যদি মোরে। ৺পরাণে মারিব তারে যুড়ি একশরে॥৺

মিছা বাদ বল অকারন। (গ)

কৈসর সমএ বিভা করিল তুমারে। ভাল মন্দ জত মোর তুমার গোচরে ॥ (গ্)

৩-৩ জিবন বধিব তার মুড়ি এক সরে 🛭 (গ)

চণ্ডীর প্রতি কালকেতুর উপদেশ

যদি দেখাইতে নার পরম স্থলরী।
তোমার উচিত শাস্তি করিব বিচারী॥
পসরা চুবড়ী পাথি লইল ফুল্লরা।
ছাড়িলেন গোলাহাট তুলিয়া পসরা॥
আগে আগে চলিলেন ফুল্লরা নারী।
পশ্চাতে চলিলা কালু হাতে শরাসন॥
শৈক্তি নিকেতনে আসি দিল দরশন।
দেখিতে পাইল বীর অভ্যা-চরণ॥
ভাঙ্গা কুড়া। ঘরখানি করে ঝলমল।
কোটি ভারু প্রকাশিত আকাশ-মণ্ডল॥
গোণ্ডীবাণ এড়ি বীর হৈল নতিমান।
অম্বিকামঙ্গল কবিকঙ্কণে গান॥
*

চণ্ডীর প্রতি কালকেতুর উপদেশ

আমি ব্যাধ নীচ জাতি "তুমি রামা কুলবতী"
পরিচয় মাগে কালকেতু।
ক্রিভুবনে এক ধন্তা কিবা দেব-দ্বিজকন্তা
ব্যাধের মন্দিরে কিবা হেতু॥
.

১-১ ⁽অবিলম্বে গেল ব্যাধ আপন ভবন।
পুর্বে পুণ্য ফলে সেই স্বন্ড দর্মন।। (গ)

২-২ প্রণতি হইল বিশ্ব চণ্ডির চরনে। য়ভশ্বা মঙ্গল কবিকন্ধনে ভনে॥ (গ)

৩-৩ তুমি গোপরম সতী(খ)

#

ব্যাধ গো হিংসক রাড় চৌদিকে পশুর হাড় শ্মশান সমান যেই স্থান। কহি হামি সভাবাণী

কহি আমি সত্যবাণী এই ঘবে ঠাকুরাণী প্রবেশে উচিত হয় স্নান ম

তেজিয়া ব্যাধের বাস চল বন্ধুজন-পাশ থাকিতে থাকিতে দিননাথে।

যদি আইসে কাল নিশা লোকে গাবে অপ্যশা রজনী বঞ্চিলে কার সাথে॥

কিবা পথ-পরিশ্রমে আইলে দিকের ভ্রমে আওয়াস ছাড়িয়া এই স্থান।

চল বন্ধুগণ-পথে ফুল্লরা চলুক সাথে পিছে লয়্যা যাব ধন্ধুর্ববিণি ম

* *

সীতা যে পরম সতী তার শুন তুর্গতি দৈবে ছিল রাবণ ভবনে। ইউদ্ধারিয়া সীতা আনি লোকবাদে রঘুমণি পুনর্কার পাঠাল্য কাননে॥

শ্বিক :—
 স্বন স্থন জিজ্ঞাসি তোমারে।
 ব্যরুপ যৌবন তুমি তেজি নিজ বয়ু স্বামী
 কি কারণে অক্ষটের ঘরে॥ (দী)

যেমন তিলক-পানি তেমতি অসত্যবাণী সত্যবাণী তিলক-চন্দন। অভয়াচরণে চিত রচিল নৌতন গীত চক্রবর্তী শ্রীকবিকস্কণ।

দেবীর প্রতি কালকেতুর ক্রোধ

মৌনব্রত করি যদি রহিলা ভবানী।
ঈষৎ কুপিত বীর যোড়ে ছই পাণি।
বুঝিতে না পারি গো তোমার ব্যবহার।
যে হও সে হও গো আমার নমস্কাব।
ছাড় এই স্থান মাগো ছাড় এই স্থান।
'আপনি রাখিলে রহে আপনার মান।'
একেলা যুবতী তুমি ছাড় নিজ ঘর।
উচিত বলিতে কেন না দেহ উত্তর।

পুরাণ-বদন-ভাতি অবলা জনার জাতি
রক্ষা পায় অনেক যতনে।
 যথা তথা অবস্থিতি দোঁহাকার এক গতি
হিত বিচারিয়া দেখ মনে।। (বঙ্গ)
পূর্বেরেক ছিল সতি অতি ব্যাধি তার পতি
ভামীর আদেশে জাত্যে পথে।
তিহলে মুনির সানে বাদে স্থরমুনি স্থানে
স্থামী উদ্ধারিলা ব্যাধি হৈতে।। (দী)
১-১ আপনে দে বক্ষা করি আপনার মান।। (দী)
18-2303 B.T.

বড়র বহুরী তুমি বড়লোকের ঝি।

ব্ঝিয়া ব্যাধের ভাব তোমার লাভ কি ॥

শতেক রাজার ধন আভরণ অঙ্গে।
ভয়হীনা হৈয়া ভ্রম কেহ নাহি সঙ্গে॥
চোর-খণ্ড হৈতে মাতা নাহি কর ভয়।
চরণে ধরিয়া বলি ছাড়হ নিলয়॥

ইতি উপদেশ বলি শুন গো বিচার।

শিয়রে কলিঙ্গ রাজা বড়ই হুর্বার॥

*

এতেক বচনে যদি না দিলা উত্তর।
ভান্থ সাক্ষী করি বীর যুড়িলেক শর।
ছাড়িতে ছাড়িতে বাণ নাহি ছাড়ে বীর।
পুলকে পূরিত তমু চক্ষে বহে নীর।
শরাসনে আকর্ণ পূর্ণিত কৈল বাণ।
হাতে শর রহে যেন চিত্রের নির্মাণ॥
নিবেদিতে মুখে নাহি নিঃসরে বচন।
বলবুদ্ধিত হৈল আক্ষণী-নন্দন।

১-১ তোমা বুঝাইঞা গো আমার লভ্য কি ॥ (গ) রহিয়া ব্যাধের আগে তোর ভাল কি ॥ (বঙ্গ)

২-২ আমার বচন রাথ কর প্রতিকার। (ক) অতি নতি মানি ধনি শুন বারেবার। (গ)

শৃত্যিক্ত —

 মোর বাকো চল ঘরে পাবে বড় সুখ।
 রাজার গোচর হৈলা পাবে বড় হুঃখ।
 দী)

নিতে চাহে ফুল্লরা হাতের ধনুশর।

>ছাড়াইতে নারে শর হইল ফাঁপর।।

অভয়ার চরণে ইত্যাদি।।

১-১ ছাড়িতে না পারে বির **হই**ল ফাঁপর ॥ (ক)

* অতিরিক্ত—

উত্তর না পেঞা বির সরাসনে যুড়ে তির কোপদিষ্টে হঞা কম্পবান।

স্থনেছি পুরান কথা সেইরূপ হৈল হেথা

দেখি স্থপনিথার সন্দান ।

জ্মেত স্থূর্পন্থা আসি রামে দিল দেখা

হঞা অতি রূপনিতম্বিনি।

দেখিয়া রাক্ষসিঠাম কেটেছিল নাককান

লক্ষন বিবের চূড়ামনি॥

দেখি তোরে ভিন্ত ছান্দ যেমত সারদ চান্দ

এতরূপে নহ গো মানসি।

অকারনে জেতে থুজে ছটা গো দেথিয়া মজে মায়া বেদে ভ্রমিদি রাক্ষদি॥

মায়া বেদে এতকাল ভুবনে ভ্রমিলে ভাল ঠেকিলে বিরেশ্ব কোপানলে।

দরে বিদারিঞা বুক ঘুচাব মনের ছথ কেবল বিরের কোপ ফলে।

এতকাল নাহি দেখি . হেন রূপে সিমূখি

ভয়হিন ভ্রমিশি কাননে।

মায়ারূপে এতকাল ভুবনে ভ্রমিলে ভাল থেঞা বিনিদ দেবতা বান্ধণে #

দেবীর পরিচয় প্রদান

শরধন্ন স্কন্তিত দৈখিয়া মহাবীরে।

বলেন করুণাময়ী মৃত্মনদ স্বরে॥

শুন শুন মোর বাক্য বীর কালকেতু।

খণ্ডাব তোমাব তুঃখ আইন্তু তার হেতু॥

আইন্তু পার্ববতী আমি তোরে দিতে বর।

বর মাগ কালকেতু ত্যুজ ধন্নুশর॥

মাণিক অঙ্গুরী লহ সপ্ত রাজার ধন।

ভাঙ্গায়া বসাহ রাজ্য গুজরাট-বন॥

বসাইতে জনে তুমি দিবে গরু ধান।

পালিবে সকল প্রজা পুত্রের সমান॥

হুর্জন লোকের বধ কেবল কল্যানপদ ভোমাকে বধিলে নাহি পাপ। তাড়কা বধিল থাম লোকে কৈল পুক্তবান ঘুচাইল মুনির মনস্তাপ। কত না পাতিয়া মায়া জ্পাইলে নন্দ্রায়া বিদ মাথাইয়া যুক্তে ! তার লাগে ভগবান ভয়ে হৈলা কম্পবান প্রান পেল হুগ্ধের সহিতে। থর দার্রন সরে সত্তরে মারিব তোরে করিব লোকের উপগার। উমাপদ হিত চিত রচিল নৌতন গিত য়াজা পাঞা ব্রাহ্মণ রাজার। (গ) ১-১ করুণা করিয়া মাতা বলে ধীরে ধীরে । (বন্ধ) বশা শত দিবে জনে চালু কাড় ধান। (দী) প্রজাগণে বাদা দেহ গরু কড়ি ধান। (খ)

পুজিবে মঙ্গলবারে পাতাইবে জাত। প্রজ্ঞান নগরেতে তুমি হবে নাথ।
এনন শুনিয়া বার চণ্ডার বচন।
জোড় হাত করিয়া করেন নিবেদন।।
হিংসামতি আমি ব্যাধ অতি নীচ জাতি।
মোর ঘরে কি কারণে আসিব পার্ববতী।।
আভাশক্তি বট যদি নগেন্দ্রনন্দিনী।
তোমার চরণ বন্দি জোড় করি পাণি।।
আভাশক্তি বই মনে না যাই পাত্যারা।
শর-শুস্ত-বিভা জান হেন বুঝি পারা।।
আপনার শত নাম কহ দেখি শুনি।
শ্রীকবিকঙ্কণ গান ভাবিয়া ভবানী।।

১-১ পৃত্তিহ মঙ্গলবারে দিয়া দ্রব্যজাত। (বঞ্চ)

* অতিরিক্ত—

দেবার চোত্রিশ অক্ষরে নাম কথন

করালবদনি কালি কপালকুগুলা।
কপামই মহামায়া কপোলের মালা॥
কলাবতি কাত্যানি কুম্দা ধরি নাম।
কৈলাস করিব বাসি পুরি তব কাম॥
থগেস্বরি থজাধারি থঞ্চননয়নি।
থরতর বেস ধরি থল-বিনাসিনি॥
থপ্পরিধারিনি য়ামি হন কালকেতৃ।
থাইল য়ুসুরুকুল য়ুমরের হেতুঃ
গড়ের নাদিনি য়ামি গনেসের মাতা।
গ্যা গঙ্গা গোদাবরী য়ামি গোপস্থতা॥

গোকুলে কবিল পূজা গোপাল সকলে। গহনে থাকিল য়ামি তোমার অন্তকুলে॥ বোররপা ঘর্মমুখা ঘর্ষরনাদিনি। ঘোরতর কারাগারে য়ামি দহাইনি। যোরঘণ্টানিনাদিনি য়ামি মহারণে। বুর্ণিত য়ামার মাখা জানে জগজনে । চণ্ডবতি চণ্ডরপা য়ামি মহাতেজা। চরাচরগতি য়ামি রণে চণ্ডভু**জা।** চণ্ড চামুণ্ড য়ামি চাপ ধরি করে। চঞ্চল না হবে বির রাখিব তোমারে ॥ ছত্রধারি ইচ্ছাবতি য়ামি মহামায়া। ছত্র ধরাঞা য়ামি ভোরে কৈল দয়া। জয়া বিজয়া য়ামি জগতজননি। জয়ত্ববি জন্মজবা নাঞি যামি জানি॥ জবাসিরু মহাবাজা পুজিল আমারে। জিনিল য়নেক বার নন্দের কুমারে । ঝোড ঝকারে বাছ গামি ঝগডাই। ঝোড ঝঙ্কারে য়ামি সেবক রাখাই ॥ ঝগভা করএ জদি কলিঙ্গের রাজা। ঝাণিয়া মারিব য়ামি সন মহাতেজা। ইনাম করিল য়ামি কলিক য়বনি। ইন্দবাসিনি থামি জগতজননি ॥ এই কলিঙ্গ রায জদি করে বল। ইহাকে দিব য়ামি সমূচিত ফল। টকারিনি স্বরূপিনি য়ামি তুয়া হেতু। ট্টিকাছিল গুজুরাটে স্থকালকৈতু॥ ট্টাব রাজার বল বলি জাব কাট। কাটিঞা দণ্ডক বন বেসাই গুজুরাট।

ঠেকাকালি নাম মোব স্থন ব্যাধস্থত। ঠাকুর করিব তুরে বহু ধন যুত। ঠাট দিব বছ সেনা ঠকের কারনে। ঠাই দিব মুম্ভকালে মাপন চরনে ॥ ভাথিনি ভাহিনি জয়া ভম্বুরবাদিনি। ডিপিমবাদিনি থামি যুক্তরমদিনি ॥ ডাক দিঞা নিব তুবে কলিঙ্গের রাজা। দও ধরাইব তুরে করি বহু পূজা। চঙ্কারপিনি য়ামি রাবনের ঘরে। ঢাকাতি ছে জন করে নাগিএ তাহারে॥ চল চল করে ক্ষিতি মৃষ্ণরের ভরে। ঢাল খুসি ধরি বহু করিল সমরে॥ যবাণা ঘকুণা য়ামি জগতের প্রাণ। য়ক্তগত জনে য়ামি বড় দ্যাবান ৷ তরি হঞা তারি য়ামি ত্রিদস সাগরে। ত্র তথ্য থণ্ডাইব স্থন বিরবরে 🛭 থির কয়ি নাম ধরি থাকিয়া য়য়রে। স্থিতিপ্রলয়হেতু য়ামি সভাকারে॥ স্থাপিয়া করিব রাজা গুজরাটপুরে। থাকিব সদাই য়ামি তুমার সমরে । তুর্গা তুর্গা পরায়নি দক্ষের তুহিতা। দক্তজ্বলী যামি বেদব্তি মাতা ॥ তুৰ্জ্জয় দক্ষিনাকালি তুৰ্গতিনাসিনি। তুরে দয়াবতি য়ামি হৃ:থবিনাদিনি॥ ধিক্লাব না বৃতি য়ামি ধরনি ধারনে। ধর্ম মূর্য কাম মোক্ষ মামি সে কারনে । ধরনি পালন হেতু ধরি নব দও। ধবিষা সমরে মারি বৈরি প্রচও

নিজা নারায়নি য়ামি নগেন্দ্রনন্দিনি। নাসিতে সম্বাস্থ্র য়ামি সহাইনি 🛭 নিদ্রারপিনি য়ামি জগতমগুলে। নরসিংহরপা য়ামি পৃথিবির তলে। পর্বতনন্দিনি য়ামি নাম সে পার্বতি। পরম বেদের য়ামি পরায়ন-গতি । প্রণত জনের য়ামি পরিত্রান হেতু। পদ্ধায়া দিব তোরে স্থন কালকেতু॥ ফনা ধরি মহাবাজা ভজএ আমারে। পার করিব তোরে স্থন মহাবিরে॥ বৈষ্ণবি বিষ্ণুমায়া বিসমকারিনি। বিসম য়াপদে পার করাইতে জানি॥ বিন্দুবাসিনি য়ামি বুসে য়ারহনি। বলবুদ্ধি-প্রদাইনি য়ামি সহাইনি । ভাবিনি ভবানি য়ামি ভৈরবন দিনি। ভক্ত জনাব ভয় ভাঙ্গাই ভবানি ॥ ভয় না করিহ বির ভারতভূবনে। ভয় তেজি রাজা কর গুল্পরাট বনে । মহামায়া মহাতেজা মহস্তায়নি १। মোহিল জগত লোক মহিসমর্দিনি। মারিল মুম্বরুল দেবতা কারণে। মধু পান কৈলু সভূ নিসভূ নিধনে। জমের নন্দিনি য়ামি জমের জন্ন। জমুনায় পার কৈল দেবচক্রপাণি। জতুকুলে শ্রীহরি করিল অবতারে ! জেঞা বস্থদেব সঙ্গে ভাগুলা রাজারে # রনের কি কিণী য়ামি বস্তুদেব ঘরে। রণ হেতু রঘুনাথ পুজিল গ্রামারে।

রনে জই হইলাে রাম যামাব সেবনে। রাবনে করিলা রাম সবংশে নিধনে।। লব্দ্যা ৰূপবতি আমি লক্ষী হইলাম তুরে। লক্ষ নিপধন নেহ আমারে প্রুরে॥ লকায় হইল নাম নিজ বাছবলে ! লক্ষি সরেম্বতি সব হইল এককালে ॥ বলবুদ্ধি-প্রদাইনি বলিএ তুমারে। বিনয় করিয়া বলি না মার পহাবে।। বস্থদেব য়াপনার বদাহ নগর। বল সঞ্চি বাজা কর স্থন বিরবর ।। দৈলস্থতা দিবা য়ামি দিবের ঘরনি। স্থান্তিরপা হই আমি সিথরবাসিনি।। সয়নে স্পান তুমি সোঙ্গিহ য়ামা। সিবস্থত অনুক্ষন রক্ষা করে তোমা ॥ সান্ধি সভাবতি আমি সাকন্তরি। স্থহা স্বধাবতি বিপদে আমি ভারি।। সংসারের সার আমি জন মহাবির। সকল সমএ আমি করাইএ স্থির।। হৈমবতি হরপ্রিয়া হরের ঘরণি। হরিল অস্তর্কুল হঞা একাকিনি।। হবিবংশে দাতা আমি হবিবংশে গায়। তের নেহ মোর ধন হইলাঙ সহায়।। ক্ষেম্বর স্থামূখি আমি ধরি নাম। ক্ষেমা করি মহাবির আইলাঙ তোর ধাম।। ক্ষেমিব সকল দেখি স্থনহ বচন। ক্ষেমা নেহ রাজ্য কর গুজুরাট বন !! এত বাকা বলিল জদি হেমস্থনদিনি। প্রণাম করিল বির জোড় করি পানি।।

দেবীর শতনাম কথন*

আন্তাশক্তি মহামায়া প্রম বিষ্ণুর ছায়া দক্ষের তুহিতা আমি সতী। তথা নাম দাক্ষায়ণী দক্ষ-মখ-বিনাশিনী

হেমন্তনন্দিনী হৈমবতী॥

চণ্ডা চণ্ডাবতী চণ্ডী প্রচণ্ডী দানবখণ্ডী

অপর্ণ। অম্বিকা নারায়ণী।

তুর্গ। তুর্গ। পরাবলী তুর্জ্জয়। দক্ষিণাকালী মহেশুরী শিখরবাসিনী ॥

তোমার শতেক নাম স্থনিতে মধুর।
স্থনিতে স্থনিতে সব পাপ জায় ত্র।।
স্থমধুর বচন স্থনে কালকেতু।
সত নাম কহে মাতা নিজ পূজাহেতু।। (গ)

পাঠান্তব----

ব্যাধেব নন্দন শুন হে বচন

এহ মোর শত নাম।

এ তিন ভুবনে কেবা নাহি জানে

সব ঠাঞি মোর ধাম॥

চাম্খা চর্চিকা চক্রিণী চণ্ডিকা

চণ্ডবতী মহামায়া।

ণ্ডভা শুভঙ্করী শুভ আমি কবি

তোমারে কবিলু দয়া।।

ইক্রাণী নরসিংহ-বাহিনী

কুমারী শক্তিরূপিণী।

জ্যকরী জয়া শহরী অভয়া

বেদবতী নারায়ণী ॥

ভবানী ভাবিনী ভীমা ভৈরবী তারিণী উমা ভয়ঙ্করী ভকত-বংসলা।

ভবপ্রিয় ভগবতী স্বাহা স্বধা সদাগতি

আমি শিবা সর্ব্ব যে মঙ্গলা।

সর্বাণী শঙ্করজায়া বিশ্বরূপা বিশ্বকায়া

विविविनाभिनौ वित्ववदी।

কান্তি কীর্ত্তি কপালিনী কলাবতী কমলিনী কুণ্ডলিনী লীলা কামেশ্বরী॥

কালী-কপালিনী কৌশিকী মালিনী

বৈষ্ণবী শিব-বনিতা।

গৌরী শাকভারী গঙ্গা স্থরেশ্বরী

আমি আছা-দেবী-**স্তা**॥

গোকুলে গোমতী দক্ষগৃহে সতী

জয়ন্তী হস্তিনাপুরে।

ভয়ৰী ভীমা উগ্ৰচণ্ডা বামা

মহাতেজা কংসাগারে॥

যম্না যোগিনী যশোদা নন্দিনী যোগনিতা জয়প্রদা।

মৃড়ানী অম্বিকা প্রচণ্ড-বালিকা

ধরি খড়গ চর্ম গদা॥

কালিকা কল্যাণী মোরে সবে জানি কার্ত্তিকী কামরূপণী।

গৌরী থগেশ্বরী চণ্ডী জলেশ্বরী জ্যুধৃতি ভপশ্বিনী॥

যক্ষী নিভাপুটা জিনেতা জিপুটা

ত্রিপুরা **খা**রবাসিনী।

গদিনী চক্রিণী পিকলা মোহিনী সাবিত্রী ঘোর-রূপিণী ॥ কমলা কমলমালী কুমুদকণিকা কালী
কৈলাসবাসিনী শাকস্তরী।
ইন্দ্রাণী রুদ্রাণী সৃষ্টি সর্ব্বাণী মৃড়ান তুষ্টি
ডম্বুরবাদিনী ভরঙ্করী॥
ডাকিনী হাকিনা সীমা গোপস্থতা বর্গভীমা
কুপাময়ী আমি কাত্যায়নী।
শঙ্করী শিবানী নিত্যা বরাহী নৃসিংহী সত্যা
আমি সৃষ্টি-স্থিতি-বিনাশিনী॥

ক্ষমা সরস্বতী কামাথ্যা কিরাতি চওমুতা চতুভুজা। ত্রপা স্বষ্টিকর্ত্রী শর্কাণী সাবিত্রী मरखाकी ममञ्जा। অপর্ণা নাগাঙ্গী প্রত্যন্ধী নীলান্ধী ঘণ্টেশ্বরী জগন্মাতা। শান্তি মোর নাম ভবনে উপাম শুনং নামের কথা।। ত্গাবিনাশিনী ভৈরব-ভামিনী नशिक निमनी हुछी। মুকজা মন্দিরা বেণু সপ্তস্থ বা**জা**য় হৃন্দুভি চণ্ডী॥ স্থল-নল-দল চরণ-যুগল ত্থি শোভে নথচন্দ। বাজ্জে মঞ্জীর চরণে চণ্ডীর গতি গজপতি-মন্দ।। নয়ানের কোণে আছে কত তুণে অহর নাশের ইয়। নাভি **স**রোবর তথির উপর ভ্ৰময়ে ভ্ৰমর শিভা। (বঙ্গ এবং গ) শৈলস্থতা আমি তেজ। ক্ষেমশ্বরী দশভুজা মহিষমৰ্দিনী বিশ্বত্যুতি। ত্রিপুরা অন্তর্য্যামী যশোদা-নন্দিনী আমি ভৈরবী ভাবিনী ভদ্রবতী॥ জগজননী সিদ্ধা নিদ্রাস্বরূপিণী বিছা যমের জননী পদ্মাবতী। ষোগাভা যোগিনী আমি শত নাম শুন তুমি মুগেলুবাহিনী মোর খ্যাতি॥ শত নাম শুনি বীর ক্রেমন করি স্থির "চক্ষে কর্ণে ঘুচাহ বিবাদ। আশ্বিনে যেমন বেশে পূজা নিলা সর্বদেশে দেখাইয়া পুর মোর সাধ।" কালুর বচন শুনি ভগবতী মনে ঞ্ণি নিজ রূপ ধরেন তথনি। উমাপদ-হিত-চিত রচিল নৌতন গীত পরিতৃষ্ট যাহারে ভবানী॥

মহিষমদিনী-রূপধারণ

মহিষমদিনী রূপ ধরেন চণ্ডিকা।
অষ্ট দিকে শোভা করে অষ্ট যে নায়িকা।
সিংহ-পৃষ্ঠে আরোপিলা দক্ষিণ চরণ।
মহিষের পৃষ্ঠে বাম পদ আরোপণ॥
বাম করে মহিষাস্থরের ধরি চুল।
১ডানি করে বুকে তার আরোপিলা শূল॥১

১-১ য়ারপিলা মহামায়া বুকে ত ভিস্তল । (গ)
ভানি করে তার বুকে আঘাতিল শূল । (বন্ধ)

চারিদিকে লম্বমান শোভে জটাজুট।
গগনমগুলে লাগে মাথার মুক্ট।।
বামে শিথিবাহন দক্ষিণে লম্বোদর।
বৃষ-আরোহণে শিব মাথার উপর।।
দক্ষিণে জলধি-সূতা বামে সরস্বতী।
ভালন্দে পূরিত দেবগণে করে স্তুতি।।
অঙ্গদ-কঙ্কণষুতা হইলা দশভুজা।
যেইরূপে অবনীমগুলে নিলা পূজা।।

٠

পাশাস্কৃশ খট্বাঙ্গ খেটক শরাসন।
বাম পাঁচ হস্তে শোভে পাঁচ প্রহরণ॥
অসি চন্ম শূল শক্তি শেল কত শর।
পাঁচ অন্ত্র শোভিত দক্ষিণ পাঁচ কর॥
তপ্ত-কলধোত জিনি বরণের আভা।
ইন্দীবর জিনি তুই লোচনের শোভা॥
শশিকলা শোভে তার মুকুটভূষণ।
সম্পূর্ণ শারদ শশী জিনিয়া বদন॥
দেখিয়া চণ্ডীর রূপ ব্যাধের নন্দন।
শসম্ভ্রমে পড়িল বীর হরিল চেতন॥
*সম্ভ্রমে পড়িল বীর হরিল চেতন॥
*সম্ভ্রমে পড়িল বীর হরিল চেতন॥
**

১-১ অনম কন্দরে দেবগণে করে শুতি । (দী)

২-২ শশিকলা শোভে তার মস্তক উপর। বিষফল জিনি তার হ্বক অধর॥ (থ)

০-৩ ভয়ে কম্পবান তম্ব মৃত্রিত লোচন॥ (দী)

কালু কালু বলিয়া ডাকেন মহামায়া শ্রীকবিকঙ্কণ গান মোরে কর দয়া।

কালকেতুর ধনপ্রাপ্তি

মূর্চ্ছিত দেখিয়া বীরে বলেন ভবানী। মূৰ্চ্ছ। তেজি উঠ পুত্ৰ তেজিয়া ধরণী॥ উঠ উঠ ফুল্লরা বলেন মহামায়।। বিনাশ করিব ছঃখ তোরে করি দয়।। দেবীর বচনে উঠে ব্যাধের কোঙর। সমুখে রহিল বীর যুড়ি তুই কর॥ ১প্রদক্ষিণ করি বীর করে নমস্কার। ফুল্লর। স্থন্দরী দেয় জয়জয়কার॥ কতাঞ্জলি করিয়া বলেন বীর বাণা। ত্যজ ভয়ঙ্কর মূর্ত্তি নগেব্দ্রনন্দিনী। এতেক বচন যদি বলে মহাবীর। দেখিতে দেখিতে হইল পূর্বের শরীর।। অভয়া দিলেন তারে মাণিক অঙ্গুরী। লইতে নিষেধ করে ফুল্লরা স্বন্দরী॥ ^২একটি অঙ্গুরী নিলে হবে কোন কাম। সারিতে নারিবে প্রভূ ধনের ছ্র্নাম ॥ र

১-১ য়বনি লোটায়া বির করে স্থতি বানি। ফুলরা রমনি দেয় জয় জয় ধ্বনি 🛭 (খ)

<-২ একটা অঙ্কুরি হইতে থাব কতকাল। ধন পরিবাদ বির বিষম জঞ্জাল॥ (গ /

কুল্লরার অ**ভিলাষ বুঝিয়া পার্বেতী।** আর কিছু ধন দিতে কৈল অনুমতি॥ গ্রভয়া বলেন কালু নেহ শিকাভার। নেহ ঝুড়ি কোদালী খন্তা ক্ষুরধার॥ কোদালী খন্তা মাতা নাইক নিয়ড়ে। তুমি আজা দিলে ধন খুড়িব চিয়াড়ে॥ আগে আগে ভগবতী করিল গমন। শশ্চাতে চলিল। কালু ইংতে শ্রাসন ।। দালিম্ব তরুর মূলে দিলা দরশন। শ্বান দেখাইরা মাতা দিল। ততক্ষণ।।* **७७** मঙ्तिया वीत नित्नक **रिया**ष्ट्र। চেলা কাটি ফেলে যেন পুখড়ীর পাড়॥ খুড়িতে খুড়িতে বার ধনের লাগ পাইল। লোহার শিকল ধরি টানিয়া তুলিল॥ তুলিয়া বাদ্ধিল বীর সপ্ত ঘড়া ধন। চণ্ডীর সমৃথে রাখে ব্যাধের নন্দন।। একবার নিয়া যায় তুই ঘড়া ধন। ফুল্লরা ভাবেব সঙ্গে করিলা গমন।। ধন-রক্ষা-হেতু মাতা বৈদে তরুতলে। ফুল্লরা রহিলা ঘরে ধন করি কোলে॥

শ্বতিরিক্ত—

এই য়ঙ্গুরির মূল্য সাত কোটী তন্ধা। ফুল্লরা যুনিঞা মূল্য মুখ কৈল বাকা॥ (খ)

- ১-১ ব্যাধের নন্দন (গ)
- ২-২ এইখানে কুড়হ এখনি পাবে ধন। (গ)
- ৩-৩ নীল মেঘেতে যেন বি**জ্**ৱী পড়িল ॥ (ক, খ এবং বঙ্গ)

ু আরবার নিল বীর ছুই ঘড়া ধন। দেখি হরষিত হইলা ফুল্লরার মন ॥^১ পুনরপি মহাবীর ক্রতগতি যায়। ত্বই দিকে তুই ঘড়া ধন যে বসায়। এক ঘড়া অবশেষ দেখি মহাবীর। নিতে নারে ডেডিভার হইলা অস্থির॥ মহাবীর বলে মাত। করি নিবেদন। চাহিয়া চিন্তিয়া দেহ এক ঘড়া ধন ॥ ংযদি গো অভয়া ধন নাহি দিতে পার। ং এক ঘড়। ধন মাতা নিজ কাথে কর।। এমন কালুর বাক্য শুনি মহামায়।। धन-घड़ा काँरिश कति वीरत किल म्या॥ পশ্চাতে চণ্ডিকা যান আগে কালু যায। ফিরি ফিরি কালকেতু পাছুপানে চায়॥ মনে মনে কালকেতু করেন যুক্তি। ধন-ঘড়া নিয়া পাছে পালায় পার্বতী।। হাসেন জগৎ-মাতা বুঝি তার মন। না পালাইব লয়া। তোর বাপ-কালি ধন। কালুর কুড়েতে আসি দিলা দরশন। চিয়াড়ে খুঁড়িয়া রাখে সপ্ত ঘড়া ধন।। সম্বরিয়া সর্ববধন রাখিলেন খুন্তে। বায় করিবার তরে কথে। রাখে গুণো॥

>-> আগেত আনিল বির তুই ঘড়া ধন।
হরসিত হইলা ফুল্লরা নারিজন । (গ)

২-২ ঘদি নাহি দিবে মাতা স্থনহ উত্তর। (গ)

19 -2303 B.T.

চণ্ডিকা বলেন কালু ব্যাধের নন্দন। ১নগরের মধ্যে দিবে আমার ভবন ॥১ পৃ।জবে মঙ্গলবারে পাতাইবে জাত। গুজরাট নগরের তুমি হবে নাথ।। স্থাপিয়া আমার বারি করিও পূজন। নিযুক্ত করিও তাহে উত্তম ব্রাহ্মণ॥ এত শুনি মহাবীর চণ্ডীর ভারতী। কুভাঞ্জলি হৈয়া বলে শুন গো পাৰ্ববতী॥ মতি নীচ-কুলে জন্ম জাতি গো চোয়াড়। কেহো না পরশে জল লোকে বলে রাড়॥ পুরোধা আমার হবে কেমনে ব্রাহ্মণ। ংনীচ কি উত্তম হবে পাইলে বহু ধন॥ ১ অম্বিকা বলেন কিছু ব্যাধের নন্দনে। পবিত্র হইলে মোর পদ-দরশনে॥ লইবে তোমার ধন উত্তম ব্রাহ্মণ। এতেক বলিয়া চণ্ডী করিলা গমন।।

ধন পাঞা মহাবির আইলা নিকেতন
আনন্দিত হৈলা ফুল্লরা নারিজন ॥
কুতুহলে বহে বির আপনার মনে।
হাসপরিহাস করে ব্যাধের নন্দনে ॥
ফুল্লরা বলেন নাথ শুনহ বচন।
আ।সিঞা দিলেন চণ্ডি বহুমূল্য ধন ॥

১-১ মধ্য বাজারে দেহ গ্রামার ভবন ॥ (গ)

২-২ নিচ কি পবিত হয় পাল্যে বহুধন ॥ (গ)

^{*} মতিরিজ—

অঙ্গুরী ভাঙ্গাতে হৈল বীরের পয়ান। অভয়ামঙ্গল শ্রীকবিকঙ্কণে গান।

বণিক্কে স্বপ্ন-প্রদান

দশ দণ্ডে হেমথালে করিয়া ভোজন।
থাটে নিদা যায় বাণ্যা বিনোদ-শয়ন॥
বিণিক্-শিয়রে মাতা কহেন স্থপন।
প্রভাতে আসিবে বীর ব্যাধের নন্দন॥
১উচিত করিয়া দিবে অস্থরীর ধন।
এতেক বলিয়া দেবী করিলা গমন॥
শয্যা হৈতে উঠে বীর প্রত্যুষ বিহান।
অস্থরী লইয়া বীর করিল প্রান॥
মহাবীর আইলা যথা বণিকের ঘর।
গাইলেন পাঁচালি মুকুন্দ কবিবর॥

ভাঙ্গাঞা কাটাহ রাজ্য গুজরাট বন।
নগেল্র-নন্দিনি দিল অঙ্গুরিতে ধন
অঙ্গুরী ভাঙ্গাঞা তুমি আনহ এখন।
অঙ্গুরী লইঞা বির করিল গমন। (গ)
সমুল্য করিয়া দিহ বদলিয়া ধন। (থ)

বণিক্সহ কালকেতুর কথোপকথন

বাণ্যা বড় ইংশীলই নামেতে মুরারি শীল
ইংলখা-জোখাই করে টাকাকড়ি।
পাইয়া বীরের সাড়া প্রবেশে ইভতর-বেড়াই
শাংসের ধারয়ে দেড় বুড়ি ॥ই
খুড়া খুড়া ডাকে কালকেতু।
কোথা হে বণিক্রাজ আছে কিছু গুপ্তকাজই
আমি আইলাম তার হেতু॥
বীরের শুনিয়া বাণী আসি বলে বাণ্যানী
ঘরেতে নাহিক পোত্দার।
প্রভাতে তোমার খুড়া গিয়াছে খাতক-পাড়া
কালি দিব মাংসের উধার॥
ভ্যাজি কালকেতু যাহ ঘর।ই
কাষ্ঠ আন্ত একভার একতা শুধিব ধারই
মিঠা কিছু আনিহ বদর ॥

- ১-১ হ্রমীল (मी)
- २-२ (लनाएना (१)
- ৩-৩ ভিতর পাড়া (ক)
- ৪-৪ মাংদের ধারিয়াছিল কড়ি ॥ (গ)
- ৫-৫ আছয়ে বিশেষ কাজ (খ, গ এবং দী)
- ৬-৬ আজিকার মত যাহ ধর। (গ)
- १-१ शन वाकि मिव धांत (१ जवर में)

শুনগো শুনগো খুড়ি কার্য্যে কিছু আছে দেডি 'অঙ্গুরী ভাঙ্গায়্যা নিব কড়ি। ^২আমার জোহার খুড়ি^২ কালি দিবে বাকী কডি যাই অন্থ বণিকের বাড়ী॥ কালু, দণ্ড তুই করহ বিলম্বন। সরস করিয়া বাণী হাসি কয় বাণ্যানী দেখি বাপা অঙ্গুরী কেমন॥ ধনের পাইয়া আশ আসিতে বীরের পাশ ধায় বাণ্যা থিড়কীর পথে। মনে বড় কুতৃহলী কান্ধেতে তঙ্কার থলি **ুহড়পী তরাজু** করি হাতে॥ করে বীর বাণ্যাকে জোহার। বাণ্যা বলে ভাইপো ইবে নাহি দেখি তো এ তোর কেমন ব্যবহার॥ উঠিয়া প্রভাতকালে • কাননে এড়িয়া জালে • হাতে শর চারিপ্রহর ভ্রমি। ফুল্লরা পসরা করে সন্ধ্যাকালে আসি ঘরে এই হেতু নাহি আসি আমি॥ খুড়া, ভাঙ্গাইব একটি অঙ্গুরী। হয়্যা মোরে অনুকৃল উচিত করিবে মূল

°বিপদ-সাগরে যেন ভরি॥

১-১ ভাঙ্গাইব একটি অঙ্গুরি। (গ) ২-২ অঙ্গুরি ভাঙ্গাব খুড়ি (গ)

৩-৩ সাপড়ি (বন্ধ)

৪-৪ পস্থ বধিবার ছলে (গ)

৫-৫ তবে সে আপদে আমি তরি। (গ)

বৈণিকে প্রণাম করি দিল বীর অঙ্কুরী জোখে বেক্সা চড়ায়্যা পড়ান। বিকাঁচ দিয়া করে মান ধ্যাল রতি হুই ধান শ্রীকবিকস্কণে বস গান॥

কালকেতুর অঙ্গুরী বিক্রয়

সোণা-রূপা নহে বাপা এ বেঙ্গা পিতল।
ঘিনিয়া মাজিয়া বাপু করেছ উজ্জ্বল ॥
রতি প্রতি হৈল বীর দশগণ্ডা দর।
ছই যে থানের কড়ি পাঁচগণ্ডা ধর॥
অন্তপণ পাঁচগণ্ড। অঙ্গুরীর কড়ি।
বাকি আর মাংসের ধারি যে দেড়বুড়ি॥
একুনে হইল অন্তপণ আড়াইবুড়ি।
চালু খুদ কিছু লহ কিছু লহ কড়ি॥
অঙ্গুরীর মূল্য শুনি ব্যাধের নন্দন।
ভভাবে—অঙ্গুরীর মূল্য হবে সপ্তম্বড়া ধন॥
কালকেতু বলে খুড়া মূল্য নাহি পাই।
যে জন দিয়াছে ইহা তার ঠাঁই যাই॥
গোণ্যা বলে দরে নাহি বাড়ে এক বট।
আমা সনে সওদা কৈলে না পাবে কপট॥

১-১ বির দেয় অঙ্গুরি বানিয়া জোহার করি (গ)

२-२ काँि मिल भविभान (१)

৩-৩ অঙ্গুরীর সমান হৈল দাত ঘড়া ধন॥ (গ)

⁸⁻⁸ বাক্যা বলে দরে বাজা হৈল পঞ্চ বট। (ক, খ এবং দী)

*

ধর্মকেতু ভায়া সনে কৈলু লেনা-দেনা।
তাহা হইতে ভাইপো হয়াছ সেয়ান।
কালকেতু বলে খুড়া না কর ঝগড়া।
অঙ্গুরী লইয়া আমি যাব অন্য পাড়া॥

非米

হাত-বদল করিতে বেণ্যার গেল মন।
পদ্মাবতী সঙ্গে চণ্ডী গগনে হাসন॥
এমন সময় হইল আকাশ-ভারতী।
বীরের লইতে ধন না করিহ মতি॥
সাত কোটি তঞ্চা হয় অঙ্গুরীর মূল।
চণ্ডিকা দিয়াছে বীরে হয়্যা অনুকূল॥
অকপটে সাত কোটি তঙ্কা দেহ বীরে।
বাড়িবে তোমার ঘর চণ্ডিকার বরে॥
'আকাশ-ভারতী শুনে বাণ্যার নন্দন।
দৈবযোগে আর নাহি শুনে অন্ত জন॥

* অতিরিক্ত--

এ বোল শুনিঞা বির অঙ্গুরি নিল করে। হাত ধরি বাণ্যা কিছু বুঝায় ভাহারে॥ (গ)

* অতিরিক্ত—

পুন দে আড়াই বুড়ি দর কহে বাতা।
চালু খুদ নাহি লৈয় কড়ি লহ গলা।
মনে ভাবে মোহাবীর দেখিল শপন।
অঙ্গুরী শমান মিথ্যা দপ্ত ঘড়া ধন। (দী)

১-১ বণিক সে দব কথা স্থানিলা আকাশে।
 অন্ত জন কেহ নাহি স্থানে দৈববদে। (দী)

ইছদয়ে চিন্তিয়া বাণ্যা বলে নহাবীরে।ই এতক্ষণ পরিহাস করিলাম তোমারে॥ সাত কোটি তক্ষা নেহ অঙ্গুরীর ধন। তবে অনুমতি দিলা ব্যাধের নন্দন॥ ইথলি হৈতে গুণে দিল সাত কোটি টাকা।ই ইঅকপটে ধন দিল করি লেখা-জোখা॥ই ইলেখা করিই দিল তারে অঙ্গুরীর ধন। বলদে করিয়া ধন আনিল ভবন ॥ই ইসক্র ধন রাখিলেন সম্বরিয়া খুন্তে।ই ব্যয় করিবারে তার কিছু রাখে গুণ্যে॥ অন্তির্বাধ পাট গোলাহাটে যান। অন্তির্বাক্তর কবিকঙ্কণে গান॥

১-১ शमी शमी विश्व वलन भाशवीत । (मी)

২-২ খুনে হৈতে হারে মাপি বিবে দিলা টাকা। (দী)

৩-৩ অকপটে দিল ধন না হইল বাঁকা। (থ) অকপটে ধন দিতে না করিল সহা। (গ)

⁸⁻⁸ সায় করি (**দী**)

৫-৫ কুঞ্জরে না দিয়া তাহা আনিলা ভবন। (-দী)
 বলদ শকটে বহি আইল নিকেতন। (বহু)

৬-৬ সর্বাধন লৈয়া জায় আপন ভবনে ! (থ)

কালকেতুর দ্রব্যাদি-ক্রয়

লইয়া টাকার পাট চলে বীর গোলাহাট পিছে ধায় শতেক কিঙ্কর।

সেবকে যোগায় পান ১চামর ঢুলায় আন১ বসে বীর ছুলিচা উপর॥

কানে কলম হাতে দোত আসিয়া কায়স্থ-স্থৃত মহাবীরে কৈল নত মাথা।

রাহুত মাহুত মাহুত মাহুত মাহুত মাহুত মাহুত মাহুত মাহুত মাহুত বিয়া ধায় কথা।

'আনন্দে পূর্ণিত মন' ভাঙ্গায়া চণ্ডীর ধন কেনে বস্তু শত শত লেখা।

কৈহ বিচারিয়া দেখে কাগজে কায়য় লেখে
 সায় কর্যা বেণ্যা দেয় টাকা॥

কনকের সাজাকুড়া বিচিত্র পাটের গড়া সাজাকুড়া হীরায় জড়িত।

চন্দন-কাঠের কুড়া নামিছে মুকুতা-ছড়া দোলা কেনে রতনে ভূষিত ॥

১-১ বিয়নী বিচয়ে আন (খ এবং দী) বিছানা বিছায় য়ান (গ)

২-২ মোহাবীর ক্লেক মন (দী)

৩-৩ বিচারিয়া কেহ দেখে কায়স্থ ভাগুর লেখে (গ)
বিচারয়ে কোন জনে কেহ লিখে সাবধানে (দী)

পাৰ্বত্য টাঙ্গন 'তাজি' বাছিয়া কিনিল বাজী গজ কেনে পর্বতের চূড়া। লম্বমান মোতি-হার ব্যক্তদ কন্ধণ আরু কিনে বীর কনক-সাপুড়া॥ যুদ্ধের জানিয়া মর্ম্ম "কিনিল অভেছ চর্ম্ম" নানা রত্ন বিচিত্র মুকুট। কিনিল মহিষা ঢাল তাডিপত্র করবাল মুঠ যার রচিত পুরট n তবক বেলক টাঙ্গি ভিন্দিপাল শেল সাঙ্গি ভূষণ্ডী ভাবুণ খরশান। হীরামুঠি যমধর প্রতীশ খেটক শর কেনে বীর কামান কুপাণ । পুরিতে জায়ার সাধ কিনিল পাটের জাদ °মণিময় মুকুতার বেডি।° 'হীর। নাল মোতি পলা কল্ধোত-কণ্ঠমালা কঙ্কণ কিনিল স্বৰ্ণচডি ॥

১-১ জাতি(দী

২-২ অঙ্গদ কঙ্কণ হার লহ্মান মতি যার (বঙ্গ)

যথগু ধনশারে হিরা নিলা মোতি হারে (দী)

৩-৩ অম্ভ কেনে নানা বৰ্ণ (গ)

^{৪-৪} কেয়া পেড়া মুক্তার বেড়ি। (গ)

৫-৫ অঞ্চ কছণ পালা তত্ব সায়বাণী দোলা
 কুণ্ডল কিনিলা স্বর্গাতি ॥ (দী)

নিয়ে জিয়ে জনে জনে গোধন মহিষ কেনে বলদ করভ কিনে খাসী। ^১শকট চৌদল রথ কিনে বীর শত শত খাট পালন্ধ কিনে দাস-দাসী ॥ সরিষা মুস্কুর মাষ ধান্ত নাহি দিশপাস গুড় তিল মুগ বরবটী। তণ্ডুল কিনিল ছোলা ২মূল্যা লয় চিনির গোলাং তৈলা কিনে "উমানিয়া" ঘটী॥ কিনে বীর নানা ধন গজপুষ্ঠে আরোহণ নিকেতনে করিলা গমন। রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিল বন্ধ চক্রবর্ত্তী জ্রীকবিকঙ্কণ।।

কালকৈতুর নিকট বেরুণিয়াগণের আগমন

মহাবীর কাটে বন শুনি বেরুণিয়াগণ আইদে তারা নানা দেশ হৈতে। কাঠদা কুঠার বাসি টাঙ্গী বাণ রাশি রাশি কিনে বার সবাকারে দিতে॥

১-১ লেপ তুলি খাট পাটি পালক মুদরি দাটী চক্রাতপ পোর্ণীমার শলী। (দী) २-२ (भोना मिन्ना कना शोना (१)

৩-৩ মূলাইয়া (বন্ধ)

উত্তর দিকের জন শামে আস্তে দাসমন শতেক জনের আগুয়ান। তাহারে দেখিয়া বীর মনে বড় স্থস্থির জনে জনে দিলা গুয়া পান।। ুদক্ষিণ দেশের জন আইল নাম বিকর্ত্তন[ু] পঞ্চত জনের অধিকারী। আশ্বাসিয়া মহাবীর বেরুণিয়া কৈল স্থির দেখি বীর জন সারি সারি॥ পশ্চিমের বেকণিয়া আইল দফর মিয়া সঙ্গে "চঙ্গা বাইস হাজার। °ছোলেমানী মালা করে জপে পীর পেগম্বরে° বন কাট্যা পাত্য়ে বাজার॥ ভোজন করিয়া জন প্রাবেশ করয়ে ধন শত শত বেরুণিয়া জন। শুনি কুঠারের নাদ মনে ভাবি প্রমাদ ধায় বাঘা 'করিয়া গজ্জন ।।

১-১ ভুনি আন্তে হটমন (থ)

e-e कतिवादा द्वा (क)

যেন আইদে দানাগণ (বন্ধ)

২-২ ভেজিয়া দক্ষিণ দেসা আত্মেজন নামে চাসা (ধ)
৬-৩ জন (খ এবং বন্ধ)
৪-৪ রুটি যুত মুছলমান সেবে পির পেথস্থান (দী)
কটীমুট তুই কর জপে পীর পেগছর (বন্ধ)
রুটি জুত তুই কর সিরে পির পেথস্থর (খ)

দেখি জ্বন মূর্চ্ছা পড়ে 'কদলী যেমন ঝড়ে'
কেহ বীরে নিবেদে অঞ্চলি।
রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিল বন্ধ
বাহ্মণ রাজার কুতৃহলী॥

বনে ব্যাস্ত্র-ভীতি

মহাবীর তোমার বেরুণে নাহি সাধ।

কানন-ভিতরে বাঘ পায়্যাছিল মোর লাগ
হয়্যাছিল বড় পরমাদ।

বিষম বাঘের কোপ ঝাঁটা পারা ছট। গোঁপ
গগনে লাগ্যাছে ছটা কান।

বিকট দশনগুলা যেমন মাঘের মূল।
জিহ্বাখান খাণ্ডার সমান।।

ধাইতে চঞ্চল গতি নথে আঁচড়য়ে ক্ষিতি
দেউটি-সমান ছটা আঁখি।
আতি তার ক্ষীণ মাঝ যেন দেখি মৃগরাজ
চলিতে উড়য়ে যেন পাখী॥

বিষমখ যমধার দেখিয়া লাগয়ে ভর
লাজুল লাগ্যাছে তার শিরে।

কপাট সমান বুক 'গিরিগুহা সম মুখ'
কুমারের চাক আঁখি ফিরে॥

১-১ কেহ প্লান্ন বড়ে (দী)

২-২ যমসম ভীম মুথ (বঙ্গ)

পায়্য বেরুণ্যার সাড়া মেলিয়া বিকট দাড়া
সবারে ধরিয়া খাত্যে ধায়।
মার পরমায়ু-বল তোমার পুণ্যের ফল
বিদায় হইব তুয়া পায়॥

'শুনি বেরুণ্যার কথা বীরকে লাগিল ব্যথা
আশ্বাস করিল জনে জন।
প্রাণাম করিয়া ভান্ত হাতে লয়য়া শরধন্ত
প্রবেশ করিল গিয়া বন॥

উকটয়ে ঝোপঝাড় নিহালি পর্বত আড়
পাইল বাঘের দরশন।

'উমাপদহিত-চিত রচিল নৌতুন গীত
চক্রবর্ত্তী শ্রীকবিকশ্বণ॥'

ব্যাঘ্রসহ কালকেতুর যুদ্ধ

বাঘ দেখি আকর্ণ পূর্ণিত কৈল বাণ।
•আকর্ণ পুরিয়া বীর করিল সন্ধান॥•
বীরকে দেখিয়া বাখা নাহি করে ভয়।
পথ আগুলিয়া আসি মুখ মেলি রয়॥

- ১-১ বেরুনীঞা যেত কয় মোহাবীর আশাসয় বনে জায় করে ধস্থবাণ। (দী) ২-২ বিচারিতে বনভাগ পাইয়া বাগের লাগ
- २-२ । विशायत्व वस्त्रांग नाश्या पारगप्र नाग व्यक्तिकद्भन यमगान ॥ (मी)
- ৩-৩ কালকেতু বলে ভান্ন তুমি হে প্রমাণ। (থ এবং দী)

লঘুগতি ধায় বাঘা আঁচড়িয়া ক্ষিতি। ুজাড় হাতে বীর নিবেদয়ে দিনপতি n² ৈতুমি না উদয় হৈলে সকলি আন্ধার। ভাল মন্দ সভাকার কর্হ বিচার॥ ধন দিয়া সতা কৈল নগেন্দ্রনন্দিনী। আজি হইতে কালকেতু না বধিহ প্ৰাণী॥ মোর কিছু দোষ নাই হইবে প্রমাণ। তুই জান্ম পাতি বীর ছাডি দিল বাণ 🖁 সাঞি সাঞি করি বাণ যায় ব্যোমপথে। বাণগোটা লোফি বাঘা চিবাইল দাতে 🖪 জুড়িতে উত্তোগ বীর করে আর বাণ। লাফ দিয়া বাঘা তার ধরে ধনুখান ॥ বজ্র মুটকি বীর মারে তার মুণ্ডে। ঝলকে ঝলকে রক্ত পড়ে তার তুণ্ডে॥ মুটকির তেজ যেন তবকের গুলি। এক ঘায়ে ভাঙ্গিলেক বাঘার মাথার খুলি। ুমুটকি খাইয়া বাঘা পুনরপি ধায়। বজ্র চাপড় মারে মহাবীরের গায়॥° মহাবীরের অঙ্গে তার নথ নাহি ফুটে। চাপড় খাইয়া বীর বলে নাহি টুটে॥

১-১ হাতে শর কালকেতু ধায় জ্বতগতি॥ (ক)

২-২ বাহু তুলি ভাহু দাক্ষী করে বারেবার। (ক)

৩-৩ মূথ পদরিঞা বাদা পুসুরূপি ধায়।

বচ্চদম থাবা মারে মহাবিরের গায়॥ (গ)

পাছু হইয়া বীর জুড়িল কুপাণ।
সেই ঘায়ে বাঘারে করিলা ছইখান॥
ইরি হরি বলি সর্বজন কাটে বন।
অম্বিকা-মঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ॥
*

বন-কর্ত্তন

মহাবীর হাতে গাণ্ডী ফিরয়ে কানন।
বন কাটে মহানন্দে বেরুণিয়া জন।
শর নল-খাগড়া ইকড়ি টাক্স।
গুকড়া বোকড়া কাটিল আপাক্স।
আকড়া মাকড়া কাটে নিয়লি সিয়লি।
আটসর খাটসর কাটিল নাটা।
ভাতুল্যা ভারুল্যা চোর পালিটা।
ঝোকড়া ঝাউ কাটে হাফরমালী।
গোরক্ষ বহতী কাটে সোমরাজি।
পাটল্যা পারুল্যা কাটে ভারদ্বাজী।
টায়ুর ঝাটি কাটিলা কল্যালোয়া।
ঘোড়াসিজ পাতাসিজ গুড়কাউলী।
বাকস বেতস পানিসিউলী।
সাজাতা পাজাতা কাটে সর্বজয়া॥

১-১ তুরে হৈ মহাবির মারএ কুণান। কুণানের ঘাএ বাঘা হইল তুইখান॥ (গ)

২-২ ৰাঘ মারি মহাবির হরিস য়স্তরে। গাইল মুকুন্দ কবি য়স্তিকার বরে॥ (গ)

নেয়াতি সেয়াতি বক্ষণা সাঁই।
বেউড় বাঁশের অবধি নাই।
কেতকী ধাতকী কাটে বামনআটি।
শিয়াকুল ভামাকুল শিঙ্গাবেত।
কোদালে কাটিয়া করিল ক্ষেত।
কুলিতা চালিতা কাটিল মারাটি॥

দেবধান গড়গড় ময়না কাটা।
শাল পিয়াল চাকুল্যা তপন জটা।
বেউচ যাড়া কাটিল আতথা।
পোঙাতি বিছাতি কাটে বনশর।
বনবাইগুণ কাটিলা উড়ুম্বর।
পড়াসি পুড়াসি কাটিল ভুরগুটা॥

চাকন্দা কাসন্দা নিস্কুন্দা ভালা।
গোর্থ চাউল্যা গিলা কাশীমালা।
চিঞ্চার বহু বাঁশ কাটিল মান্দারী।
আমড়া বহেড়া হরিড়া ধব।
শুকনা কাননে ভেজাল্যা দব।
সকল ছাড়াা কাটিল গাস্তারী॥

মঘর তবলা ভালুকা বাঁশ।
মুড়া উপাড়িয়া করে বিনাশ।
শেমলী সোনলা কাটিল ধনিচা।
সরল ছাতিম কাটিল নিম।
পারুল শিরীষ বরুণাসীম।
ভাদিয়া শিমুল কাটিল বলিচা॥

এরও করবট বনচালিতা।
বালিগড়া। বাকুলি কুচাইলতা।
আঁটি ভাঁটি কাটিল আদাড়ে।
পলাশ কাটিল খেজুরবন।
মহাকড়া কেল্যাকড়া উলু বেণাবন।
নাকুল ভাকুল কাটিয়া উপাড়ে॥

মাণ্ডার পণ্ডার কাটে শতমূলী।
ফলহীন আম জাম কাটিল কুলী।
তমাল অৰ্জ্জন করঞ্জাবন।
দেবছাট বীরছাট জয়ন্তী সোনা।
ফুলহীন দেখিয়া কাটে বাকসনা।
কাটে কোকিলাক্ষ চিরাতা কানন॥

ঘাটুফুল ঘাটুকাল কাটিল কেয়া।
উকুন্সা চিরুণ্যা বারাহিলোয়া।
হেঠকরিকঠ রাখিল নারঙ্গ।
কাঁঠাল কদলী রাখিল গুরা।
অখন্থ রাখিল মূল বান্ধিয়া।
রাখিল রুপ্রাঞ্চ জাইফল লবঙ্গ॥

মালতী মল্লিকা রাখিল চাঁপা।
ভূজককেশর রাখিল জবা।
টগর ভূলসী রাখিল রঙ্গণ।
করণা কমলা ছেলজ টাবা।
ভাল নারিকেল নগরের শোভা।
শৃহ্বর পূজিতে রাখিল বিশ্ববন॥

বটতক রাখিল ষষ্ঠীর ধাম।
মহাতক রাখিল জন-বিশ্রাম।
মূল বান্ধিবারে আনিল থৈকর।
নুপতি রঘুনাথ অশেষ গুণধাম।
দিলেন বহুধন কবিল বহু মান।
গাইল মুকুন্দ নামে কবিবর॥

কালকেতু কর্ত্ব ভগবতীর স্তব

ৰত মায়া জান

ওগো মায়াধারি

কে তোমা চিনিতে পারে।

ব্ৰহ্মা যে ধেয়ানে

ও চারি বয়ানে

১অকুদিন স্তুতি করে॥১

আ্ছা সনাতনী

শস্তুর ঘরণী

শক্তিরূপা তিন দেবে।

শঙ্খিনী শূলিনী

কপালমালিনী

তিন লোকে তোমা সেবে॥

গৌরী দিগম্বরী

ধাতী শাক্তরী

जरासी काली प्रक्रमा।

ছুমি ভদ্রকালী

সেবে পুণ্যশালী

হর-তকু-হেমমালা॥

^২ছুৰ্গা শিবা ক্ষমা

চণ্ডী চণ্ড ভীমাং

বালশশি-শিরোমণি।

হৈৰবী ভাবতী

বাণী বস্তমতী

সংসার-তঃখ-তারিণী॥

১-১ করজোড়ে ছতি করে।। (থ এবং বদ)

২-২ চঙা চিত্ৰ চঙী

চণ্ড মৃণ্ড দণ্ডী (ক)

কৌশিকী কুমারী রোগ-শোক-হারী >বারাহা বিষ্ণাবাসিন।। চণ্ডা উগ্ৰচণ্ডা চামুণ্ডা প্রচণ্ডা গ্রীফল-শাখা-বাসিনা॥ ২ছর্গা ছর্গা পরাং দক্ষ-মথ-হরা মহাকালী বর্গভীমা। °ব্রহ্মা মহেশ্বর চন্দ্র দিবাকরঙ দিতে নারে কেহ সীমা॥ যাদ্ব-দেবিতা নন্দ্ৰোপ-স্কুতা নিশুন্ত-শুন্ত-নাশিনী। °ক্ষমা কপদ্দিনী ° মহিষ-মর্দ্দিনী শক্ষরী সিংহবাহিনী॥ রাজ। রঘুনাথ গুণে অবদাত রসিক মাঝে স্থজান।

তার সভাসদ

রচি চারুপদ

শ্রীকবিকঙ্কণে গান।।

১-১ বরাহ সিংহবাহিনী ৷ (খ)

্ ২-২ ভবত্ব:খহরা (খ)

ভবভয়পারা (ক)

৩-৩ ব্রহ্মাপুরন্দর হরি দিবাকর (খ)

8-8 माक्नाय़गी तांगी (क)

*অতিরিক্ত:--

বিপদের কালে প্রবেশি পাতালে রমানাথে কৈলে দয়া। থণ্ডিয়া তুর্গতি বামে ভগবতি

দহ চেবণের ছায়া !! (বন্ধ)

কালকেতুর গৃহনিশ্মাণ

এত স্তুতি কৈল যদি ব্যাধের নন্দন। ৈকলানে চণ্ডীর হইল অস্থির আসন॥ পদ্মা পদ্মা বলিয়। ডাকেন ঘনে ঘন। স্মরণ করিতে পদ্মা দিলা দরশন n গণনা করিয়া পদ্মা বলেন বচন। কালকেতু মহাবীর করিছে স্মরণ 🗈 বন কাটি নগর বসাতে কৈল মন। এই হেতু মহাবীর করিছে স্মরণ॥ এতেক শুনিয়া চণ্ডী পদার ভারতী। ^২বিশ্বকর্মে পান দিয়া দিলেন আবতি ॥২ মোর বাকা বিশ্বকর্মা কর অবধান। মহাবীরের পুরী করহ নির্ম্মাণ।। সঙ্গে মোর দেহ যদি বীর হন্তমান। তবে সে হরিতে পুরী করি গো নির্মাণ।। স্মরণ করিতে মাত্র আইলা মারুতি। হাতে পান দিয়া চণ্ডী দিলেন আরতি॥ বিশ্বকশ্বা শিরে ধরি চণ্ডীর আদেশ। বেরুণিয়া বেশে তথা করিল প্রবেশ । তার সঙ্গে প্রবেশ করিল হন্ত্রমান। বীরের তোলেন পুরী হয়্যা সাবধান॥ আওয়াস তুলিল চারিক্রোশ-পরিমাণ। আপনি কোদালি ধরে বীর হতুমান॥

১-১ किनाम इहेन हिख्य अस्ति य मन।। (थ)

২-২ আসির্বাদ দিআ তারে দিলেন আরতি॥ (গ)

বিশ্বকর্ম্মা নির্ম্মাইয়া দিলেন কোদাল। ই সাহত দশ বেঙ্দীর্ঘে দিগুণ বিশাল।। যখন কোদালি ধরে বার হনুমান। ^২বাস্থুকি সহিত মহী হয় কম্পুমান ॥^২ *নাহি গাড়ী পাতে বীর নাধরে সিয়নী। সঞ্জলি করিয়া হতুমান তোলে পানি॥ • আরম্ভ কবিল বিশাই শুভক্ষণ বেল।। পোয়ালের কুড়-সম হন্ত তোলে চেলা।।* প্রথমে প্রাচীর বিশাই কৈল চারি পাট। ুবাউটা পাথরের বার দিল ঝনকাট॥ ত।লতক সম উচ্চ হইল প্রাচীর। পাথরের দাত্যা দিল হতুমান বীর॥ "মুডলা" রচিয়া তাহে আরোপিল কাট। চারি হালা খড়েতে ছাইল চারি পাট॥ পুরীর ভিতরে রচে চারু চতুঃশালা। বান্ধিল ঘরের পিড। তথি দিয়া শিলা।।

১-১ আড়ে দশ বিঘা দীর্ঘে প্রমাণ বিশাল ! (বঙ্গ)

২-২ বাস্থুকি প্রভৃতি নাগ হয় কম্পুমান।। (থ)

৩-৩ নাহি গাড় কোঁড়ে বীর না পাতে সিউনি। (क)

৪-৪ স্তাধেরে বিশ্বকর্ম শুভক্ষণ বেলা। হন্মুমান বীর তোলে বড় বড় চেলা।। (দী)

৫ ে হিরামনি পাথর দিলেন ঝনকাট।। (থ)

৬-৬ মৃগুানী (দী) মৃড়ানি (ক)

৭-৭ পুরের ভিতরে রচে চারি পাটসালা। (খ)
বিরের ভিতরে তোলে চারা চতুশালা। (দী)

অন্তঃপুরে সরোবর করিল নির্মাণ।
পাষাণে বান্ধিল তার ঘাট চারিখান।
উত্তরে খিড়কি সিংহছার পূর্ব্বদেশে।
শিলাতে রচিল 'নাটশালা' চারিপাশে।
শাতার বন্ধেতে বিশাই ধরে সূতা।
ইন্দ্রনীল-পাষাণে রচিত কৈল পোতা।
সপ্তম মহলে তোলে চণ্ডীর দেউল।
'নানা চিত্র লিখে বিশাই হৈয়া অনুকূল।'
নানারত্ব দিয়া তাহে রচিল পিণ্ডিকা।
রত্বসিংহাসন বারী স্থাপিলা চণ্ডিকা।
দেখি বড় হর্ষিত হৈলা ব্যাধস্ত্ত।
এক চিত্তে অভ্যা পূজিল বিধিমত।
অভ্যার চরণে

গুজরাট নগর-নির্মাণ

াসত্পক্ষ ত্রয়োদশী তরহে গুরুষ্ত শশী

*তথি যোগ নাম আয়ুমান।

সুধতা কার্তিক মাস বিশাই তোলে সাওয়াস

সঙ্গে লৈয়া বীর হতুমান।

- ১-১ পাটশালা (থ) পাকশাল (বন্ধ) পাটশাল (দী)
- ২-২ নানা রত্ত্বে বিশ্বকর্ম লিথে নানা ফুল।। (দী)
- ৩-৩ প্রক্ক তারা যুত শশী (ক, থ এবং দী)
- s-s শুভ যোগ অষ্ট্রমী যুক্তান। (ক)
 ভাগ্যযোগে তথি আমুখান। (দী)

দেবকারু বিশ্বকর্মা তার পুত্র দারুবর্ম।
শিরে ধরে চণ্ডিকার পান।
সঙ্গে বন্ধু জ্ঞাতি নাতি উজাগর করি রাতি
নানা চিত্র কর্যে নির্মাণ ॥

*

হমুমান মহাবীর নথে করে তুই চির শিলা-তরু-পর্বত-সঞ্জয়।

পিতাপুত্র 'একচিত' পাষাণে রচিয়া ভিত গিরিসম তুলিল আলয়।।

চারি চৌরি-চতুঃশালা মেঝা পিড়া ংখোয়ে ঢালাং পাষাণে রচিল নাচ-বাট।

বিবিধ °বিচিত্ৰ° তথি পুরী জিনি দ্বারাবতী পাট-শালে পুরট-কপাট ॥

আওয়াসের পূর্ব্বদেশে বিচিত্র কলস বৈস্থে বিরচিল বিষ্ণুর দেউল।

দিয়া হীরা নীলা খণ্ড রচিল বিষ্ণুর পিণ্ড অনল বিজুরী সমতুল।।

অভিবিক্ত—

আদেশে করিলা ভীমা রচিয়া পৃথক সিমা পরিখা কোড়েন হতুমান। করাতে পাথর কাটি প্রাচীরের পরিপাটি নিরমিল ছারকা শমান।। (দী)

১-১ সাবহিত (দী)

२-२ कैंकि जोना (मी)

৩-৩ বিচ্ছম্ম (বন্ধ) বিছম্ম (ক) বেহদ (দী) বামভাগে তুর্গামেল। তার পাশে নাট-শালা সিংহদ্বার পূর্বের জলাশয়। খিডকী উত্তর ভাগে জলহরি তার আগে প্রতিবাড়ী কুপের সঞ্চয়। নগর চত্তর মাঝে শিবের মন্দির সাজে অনাথমগুপ ভাত-শালা। *ৰাসাড়ে জনের তরে খীঘল মন্দির করে অতিথি জনার তথা মেলা॥ কাষ্ঠ আনি বোঝা বোঝা পোড়াইল ইট-পাজা ^২নানা হাট করয়ে নিশ্মাণ। °দিয়া হীর। নীলা খণ্ড মধ্যে কৈল দোলপিণ্ড কদম্ব-কানন সলিধান॥* পশ্চিম দিকেতে সেহ তুলিলা নমাজ-গৃহ দলিজ মসজিদ নানা ছন্দে। সুধন্যা কৌশলকল। তুলিল রন্ধন-শাল। বিবি চাখে বান্দী তথি রাম্বে ॥ অযোধ্যা সমান পুরী বিশাই নিশ্মাণ করি পুরদ্বারে রচিল কপাট। চণ্ডী পদে করি ধ্যান শ্রীকবিকল্পংগ গান পত্তন নগর গুজরাট ॥#

১-১ ৰাসা দিতে প্ৰবাসীরে (থ) ২-২ নানা ইট পোড়ে শাবধান। (দী) ৩-৩ নানা চিত্তে ইট কাটে দেউল ···· বা কঠে সৌধময় কৈলা পুরিখান। (দী)

শভিবিজ্ঞ

 বির হভকণ করে

 বভল পভ্র ছিলগন।

 পৃতি পতকা কাঠ

 বিরাজ করএ হাট

 দামা বাজে ব্যালিদ বাজন।

কালকেতুর প্রার্থনা

দারকা সমান পুরী করিয়া নির্মাণ।
তৃইজনে চণ্ডীর প্রসাদ পাইল পান॥
পুরী দেখি না পুরয়ে বীরের অভিলাষ।

'কেহ নাহি গুজরাটে শৃক্য দেখি বাস '

কুম্বকার ইটা গড়ে দুস বিস পাঁজা পোড়ে নিরবধি থাটে স্তভ্রধার। মুনসিবে করিয়া মন খাটার বেরুণিয়া জন গজাল জোগায় কৰ্মকাৰ ॥ ছন গুড়া পাথি টাল নির্ম্বান করএ জাল হদবা সাজাএ হই সারি। গাছ বান্ধে পাথি টালে আওয়াস ভুলিল ভালে চৌকাট নগর আওয়ারি॥ হুদর্গর চৌকাঠে স্তত্তধার চিত্ত গর্ফে সবপু সমান কপাঠ। হ্রবর্ণ কলস ছড়ে নেতের পতাক। উড়ে এক চাপে বইদে গুজুরাট। বটিল বজিলা মরে নগরের অন্তরে পদাতিক রহেত চৌয়ারী। গুয়া নারিকল বডি নগরে তুলিল বড়ি দেখিতে দেখিতে চিত্ৰ সারি সারি। গুজুরাটের সোভা দেখি চণ্ডিকা হইলা স্থুখি জান মাতা গঙ্গার সদন। পাঁচালি কৰিয়া ৰন্ধ রচিয়া ত্রিপদি ছন্দ বিরচিল শ্রীকবিকৰণ । (গ) ১-১ কেহ রহে গুজরাটে কেহ জার বাস। (দী) কেহ গুজরাট মাঝে না করে নিবাস। (क)

বিষাদ ভাবেন বীর শৃন্থ দেখি পুরী।
সন্তাপনাশিনী গুগা সোঙরে শঙ্করী ॥
তুমি সত্ত তুমি রজ তুমি তমোগুণ।
বিষ্ণু মহেশ্বর তুমি তিন জন ॥
তুমি সিদ্ধি ধৃতি লক্ষ্মী বিষ্ণা লক্ষ্যাবতী।
সন্ধ্যা রাত্রি প্রভা নিদ্রা আতা বসুমতী ॥
তুমি ক্ষ্যা ক্ষেমা সর্বরূপা সর্বজ্ত।
আমি মূঢ়মতি ব্যাধ কি জানি বলিতে॥
বিষাদনাশিনী তোমা গায় হরিবংশে।
কুফের করিলে কার্যা ভাগুইয়া কংসে॥
যন্না আবর্তশালী বিষম করালী।
ত্থি পার কৈলে তুমি ইইয়া শুগালী॥

ধন দিয়া কাটাইলে গুজবাট বন।
কি কারণে এতগুলা তুলালো ভবন॥
প্রজাকে আনিতে নাহি আমার শক্তি।
নুমার বসাতে মাতা উব ভগবতা॥
১

১-১ আরাধিলা হরিহর তুমি তিন জন। (मै) আর গুণে তুমি হরি হর তিন জন। (थ) আরাধনে হরিহর তুমি তিন জন। (বঙ্গ)

অতিরিজ—

ভূভার শশুন কৈলে আপনি প্রকার।
কংস-ভয়ে কৃষ্ণ কৈলে কালিন্দীর পার॥

ভূর্ণ তুর্গা পরা তুমি জগতের মাতা।
শৈলনন্দিনী শিবা স্কল দেবতা॥ (বঙ্গ)

২-২ নগৰ বদাত্যে মাতা কর য়বগতি 🛚 (খ)

এত স্তুতি কৈল যদি ব্যাধের নন্দন। কৈলাসে চণ্ডীর হইল অস্থির আসন।। পদ্মাবতী বলিয়া ডাকেন ঘনে ঘন। স্মরণ করিতে পদ্মা আইলা তথন।। গণনা করিয়া পদ্মা বলিলা বচন। কালকেতু মহাবীর করিছে স্মরণ॥ ইঅবিলম্বে চল মাতা কলিঙ্গ নগরে। স্বপন কহগা সব প্রজার মন্দিরে॥^১ শুনিয়া এমত মাতা পদ্মার ভারতী। কলিঙ্গে প্রজারে স্বপ্নে কন ভগবতী॥ নগর বৈসায় কালু বনের ভিতরে। ধান্ত গরু টাকা কডি দেয় সবাকারে॥ তোমারে বলিরে শুন বুলন মণ্ডল। তথা গেলে তোমাদের অনেক কুশল।। স্থপন কহিলা চণ্ডী কেহ নাহি শুনে। পদ্মা বলে চল যাব গঙ্গার সদ্নে॥ · ডুবাব কলিঙ্গদেশ **ছঃখ** দিব লোকে। গুজুরাটে যাব প্রজা যবে পাব শোকে অবিলম্বে যান মাতা গঙ্গা-সন্নিধানে। অম্বিকামঙ্গল কবিকস্কণে ভণে॥

১-১ অবিলম্বে গেল মাতা কলিন্দ নগরে। স্থপ্ন কহেন মাতা প্রতি ঘরে ঘরে ॥ (বঙ্গ)

গঙ্গার সহিত ভগবতীর কলহ

সাধিতে আপন কাম আইন্থ তোমার ধাম

শৈহিবে আমার কিছু ভার।

প্রাণের বহিনী গঙ্গে চলগে। আমার সঙ্গে

যাব রাজ্য কলিঙ্গ-রাজার ।

গঙ্গা, সন্তাপ করহ মোর দূর।

হইয়া উন্মত্ত-বেশ ডুবাহ কলিঙ্গ দেশ

তবে বৈদে গুজরাটপুর _।

হইগো বিষ্ণুর দাসী বিষ্ণুপদ হইতে আসি সেই প্রভু গতি সবাকার।

হইয়া বিষ্ণুব অংশা কার নাহি করি হিংস। কেন রাজ্য হাজাব রাজার ॥

দিদি, পর পীড়া দেখি লাগে ভয়। পরের দেখিলে তৃঃখ °হই আমি অশ্রুমুখ° °তারে বড় সদয় হৃদয়॥°

১-১ তোমারে আমি কিছু দিএ ভার। (গ)

২-২ কিবা আমি কৃষ্ণ-অংশা (দী)

৩-৩ হই আমি অস্বথ (গ) হই আমি অধোম্থ (থ)

৪-৪ বড় দয়া আমার হৃদয়। (থ) থাকি তায় শদম হিদয়। (দী)

কুম্ভীর মকরগণ ^১প্রাণী হিংসে অনুক্ষণ^১ কি কারণে ধর তারে কোলে। মহা পাপ যার গায় সে পাপী তোমাতে নায় বৈষ্ণবী তোমায় কেবা বলে। গঙ্গা, গরব কর না মোর আগে। আসিয়া তোমার নীরে বালি-ঘট করি মরে সেই বধ তোমারে সে লাগে॥ ভূগা, পুর্বব জনমের ফলে আসিয়া আমার জলে প্রাণ ত্যক্তে আপন ইচ্ছায়। ভূমি, মহিষ ছাগল মেষ খাইয়া কৈলে অবশেষ সেই পাপ লাগয়ে তোমায়॥ নীচ পশু নাহি ছাড বরা। নারী হয়্যা কৈলে রণ বধিলে অস্তরগণ সমরে করিলে পান স্থরা॥ গঙ্গা, তোরে আমি ভাল জানি পিয়েছিল জহ্ন মুনি তোমার না করি জল পান। কোন মড়া পোড়ে কুলে কোন মড়। ভাসে **জলে**

শ্মশানে তোমার অধিষ্ঠান॥

>-> হিংসাবিত্তি গ্রহকন (খ)
ভার হিংসা অঞ্কন (গ)

২-২ তাহার পূর্বের ফলে আপন কর্মের বলে প্রাণ ছাড়ে আপন ইচ্ছার। (গ)

ছাড় গঙ্গং আপন বড়াই।

উচিত বলিব যদি তোমা সম পাপ নদী

খুঁজিলে পাইতে আর নাই॥

দোহার কোনদল শুনি পদ্মাবতী বলে বাণী

চল যাই সমুদ্রের স্থান।

আজ্ঞা দিলে জলনিধি আসিবে সকল নদী

শ্রীক্ৰিক্ষণে রস গান॥

সমুদ্র ও ইন্দ্রের নিকট ভগবতীর গমন

ংকাপে কম্পমান তন্তু কাঁপে সর্ব্ব গ:।
বোজন যোজন বহি পড়ে এক পা॥
শ্বিতে গেলেন মাতা সমুদ্রের ধাম।
সন্ত্রমে সমুদ্র উঠি করিলা প্রণাম
পাছ্য অর্ঘা মধুপক দিলা আচনন।
পূজা করি সিন্ধু তবে করেন স্তবন॥
ভাবনী লোটায়্যা পুটাঞ্জলি কার কর।
শলে---কিসের কারণে মাতা আইলে মোর ঘর॥
চিরকাল হেথায় না আস্ত ভদুকালা।
ভামার আশ্রম আজি হইল পুণাশালা।
বিমার পুণ্যতক্ষ আজি হৈল ফলবান।
ভামার আশ্রমে চণ্ডী হইলা অধিষ্ঠান॥

১-১ কম্পিত শক্ল অন্ন কোপাবের মন। সিংহন্ধানে মোহামাইয়া করিলা গমন। (দী)

২-২ মোর তন্ন হৈল আজি সফল পুণাবান। (থ)
শামার স্কৃত তন্ন ইবে ফলবান। (দী)

পূর্বেতে পবিত্র আমি গঙ্গার মিলনে। ত'তোধিক হইল তব পদ দরশনে॥ অভয়া বলেন ভিক্ষা দেহ সিন্ধুপতি। দেহ নদ-নদীগণ আমার সংহতি॥ হাজাব কলিঙ্গ দেশ বসাব নগর। ছে। ধণা রাখিব বীরের অবনী-ভিতর ॥ 2এমন শুনিয়া সিন্ধু চণ্ডীর বচন। হাতে হাতে নদ-নদা কৈল সমর্পণ॥১ প্রণাম করিয়া দিল পুষ্পক বিমান। ইক্রের ভবনে মাতা করিলা পয়ান।। ্বসম্রনে উঠিয়া ইন্দ্র কৈল জ্বোড কর। কিসের কারণে মাতা আইলে মোর ঘর॥ । নীলাম্বরে ক্ষিতি লয়া মনে পাই ব্যথা। *দেখিয়া তোমার মুখ নাহি তুলি মাথা॥* শুনি পুত্রশোকে ইন্দ্র ইল বিকল। স্থ্রপুরে উঠিল ক্রন্দন-কোলাহল।। চণ্ডিকা বলেন বাছা শুন পুরন্দর। অবিলম্বে আনি দিব তোমার কুমার॥ সাত দিবসের তরে দেহ চারি মেঘে। নীলাম্বরের কার্যা সাধি আনি দিব বেগে॥

১-১ অদভূত হুনী সিন্ধু চণ্ডীর কথন। নদনদি সকল করিল শমর্পণ। (দী)

২-২ পূজন করিয়া জিজ্ঞাদেন স্থরপতি। কহ মাতা কি কারণে আমার বদতি। (দী)

৩-৩ মহেন্দ্র তোমার লাজে নাহিতু লি মাধা। (খ এবং দী)

°এমন শুনিষা ইন্দ্র চণ্ডীর বচন। হাতে হাতে চারি মেঘ কৈল সমর্পণ॥° অভয়ার চরণে ইত্যাদি।

মেঘগণের প্রতি ইন্দ্রের আদেশ

শুন শুন মেঘগণ কর ঝড় বরিষণ
কলিঙ্গে হইয়া প্রতিকুল।

মোর যজ্ঞ-ভঙ্গকালে আকুল করিলে জলে
যেন মতে নন্দের গোকুল॥
পান লহ মেঘ দ্রোণ সাধিবে আমার লোণ
শীঘ্র চল চণ্ডীকার সঙ্গে।
পুগুরীক ঐরাবতে তুই গজ লহ সাথে
বৃষ্টি করি ডুবাহ কলিঙ্গে।
চল রে পুক্ষর মেঘ তুক্ষর তোমার বেগ
চল গজ কুমুদ বামন।

*তুমি যদি মন কর প্রাল্ডবৈ কতক্ষণ॥

*তুমি যদি মন কর প্রাল্ডবৈ কতক্ষণ॥

*তুমি যদি মন কর প্রাল্ডবিবে কতক্ষণ॥

*তুমি ব্যান্ডবিবে কতক্ষণ॥

১-১ স্থনী ইন্দ্ৰ মেঘগজ ডাকাইয়া আনে। অভয়া দক্ষিত শ্ৰীমুকুন্দ ভণে॥ (দী)

২-২ ইন্দ্রমথ ভঙ্গকালে (খ)

৩-৩ তোর কোপে অতিশয় প্রলয় শমান হয় কলিঙ্গের কোথাহ গণণ 🛚 (দী)

²¹⁻²³⁰³ B. T.

ইআবর্ত ই জলদ-রাজ সাধহ চণ্ডীর কাজ লহরে অঞ্জন পুষ্পদস্ত।

ইবানঝনা বৃষ্টি শিলা সঙ্গে লয়া কর খেলা কলিঙ্গপুরের কর অন্ত॥

ইসংবর্ত্ত করহ হিত তুমি প্রলয়ের মিত সার্ব্বভৌম সুপ্রতিক লয়া।

মোর কার্য্যে কর দৃষ্টি কলিঙ্গে করহ বৃষ্টি যেমন বলেন মহামায়া॥

গজ যোগাইবে নারে বরিষ মুখল-ধারে ঝাট যাহ কলিঙ্গ-নগর।

ইবজাঘাত ঝড় শিলা সঙ্গে লয়া কর খেলা কলিঙ্গের নারাখিবে ঘর॥

*

- ১-১ সংবর্ত্ত (বঞ্চ) অবথ (দী)
- ২--২ চলিবে চণ্ডীর কাজে সঙ্গে করি হুই গজে কলিঙ্গের নাহি থাকে অস্ত ॥ (বাদা)
- ৩-৩ আত মেঘ পুস্কর আমার বচন ধর অবধানে হুন মন দিঞা। মোর বাক্য মনে ধর জাঞা ঝড় বিষ্টি কর ক্রোধে বলেন মহামায়া॥ (গ)
- ৪-৪ স্নহ পঞ্চাশ নাতে চলহ চণীর শাতে কলিকের না রাখিছেঘর ॥ (দী)

ই দ্রের আদেশ পায় শীঘ্রগতি মেঘ ধায়
পঞ্চাশ পবনে করি ভর।

নৈমেষে পবনবৈগে গগন জুড়িল কেছে
বেড়িল সে কলিঙ্গ-নগর॥

মহামিশ্র ইত্যাদি॥

কলিঙ্গদেশে ঝড়-বৃষ্টি আরস্ত *

মেঘে কৈল অন্ধকার মেঘে কৈল অন্ধকার। তদেখিতে মা পায় কেহ অঙ্গ আপানার ॥৩

১-১ আদেশীলা স্থাবায় মেঘ জন্ত গজ ধায় পঞ্চাশ প্রনে কবি ভর। (भो) ২-২ কণে উঠে বায়্বেগ নিমেযে ১। জিলু মেঘ চৌঘাট কলিখ নগব॥ বধ * পাঠান্তর:-প্রালয় বহে ঝ**ড়** উড়ায় চালেব থড ভাঙ্গএ বড বড় গ ছ। উঠিল প্ৰ ভাঙ্গিল জগ আড়ায় পড়িল মাছ। যুড়িল অস্ব উ**ঠিল জ**লধর कत्रिवत जुलि एवरे भागि। বহুজল বরিদে কলিঙ্গদেশে ত্রক তুক হুড় হুড় হুনি ॥ বহু জুল বাদল ভাসএ ফেনা জুল ভাদে মরাইর বার্থা . ডুবিল কাপাস ঘরে ঘরে তপাস গ্রামগুলি ফিরে ফেণে। ৩-৩ চিনিতে না পারি ভাই তত্ত আপনার। (বল)

ঈশানে উড়িল মেঘ সঘনে চিকুর।
উত্তর প্রনে মেঘ ডাকে ছর ছর॥
নিমিষেকে জোড়ে মেঘ গগন-মণ্ডল।
চারি মেঘে বরিষে মুষলধারে জল॥

মেঘ গহন হরিদে থরতর বরিদে দ্বারের পড়িল কাথ। জলের হিল্লোল স্থনিএ গণ্ডগোল তাতির ডুবিল তাঁত। ভাসএ হাথি ঘোড়া সিফাএর ভিজে জোড়া তরাসে পালায় নড়ে। দাত পাচ ভাবিয়া পালায় বানিঞা বাদায় রাখিঞা কড়ে । ভাসায় স্থরঙ্গ থাট। পালায় মালি য়ার তা**ম**লি ডুবিল গবাকের পাট। শৃগাল কুকুর ভাসি জায় দুর ভাসিল বনের বাগ। হরিনি হ্কর ভাসিল বিস্তর কেছ কারু না পাইল লাগ॥ কতেক বেপারি কান্দএ সারি সারি বেপার ভাসিঞা জান। জলের হিল্লোল স্থান প্রথান রাজার উড়িল প্রান। পালধি বংদে জগদবতংশে নুপতি বঘুরাম।

শ্ৰীকবিকৰণ গান ॥ (খ)

जिन्मी इन

ললিত প্ৰবন্ধ

কলিঙ্গে উড়িয়া মেঘ ডাকে উচ্চনাদ। প্রলয় গণিয়া প্রজা ভাবয়ে বিষাদ।। ইভড় হুড় হুড় বহে ঘন ঝড়। বিপাকে ভবন ছাড়ি প্রজা দিল রড ॥১ ংধুলে আচ্চাদিত হইল যে ছিল হরিত। উলটিয়া পড়ে শস্ত প্রজা চমকিত।। *চারি মেঘে জল দেয় অষ্ট গজরাজ। সঘনে চিকুর পড়ে বেঙ্গ-তড়কা বাজ ॥* করি-কর সমান বরিষে জলধারা। জলে মহী একাকার পথ হটল হারা॥ ঘন ঘন শুনি চারি মেঘের গর্জন। কারো কথা শুনিতে না পায় কোন জন।। ংপরিচ্ছির । নাহি সন্ধ্যা দিবস রজনী। **'কলিকে সোঙরে সকল লোক যে জৈমিনি॥**' হুড় হুড় হুড় গুনি ঝন ঝন। না পায় দেখিতে কেহ রবির কিরণ।।

১-১ নিরবধি আট মুথে বরিষায় ঝড়।
নগর চত্তর ছাড়ি প্রজা দেই রড়। (দী)

হড় হড় হুর হুর বিম্বিয়া ঝড়।

বিদেষে চত্তর প্রজা ছাড়ি যায় ঘর॥ (খ)

২-২ জলেতে কলিপপুর শকল ব্যাপীত। বিপাকে পড়িলা লোক প্রজা চমকীত॥ (দী)

৩-৩ শঘন বিজুলী মোহাশবে পড়ে বাজ।
দেখিয়া কলিঙ্গরাঞা পায় বড় লাজ। (দী)

৪-৪ পরিচ্ছয় (বঙ্গ)

^{≀-}৫ সোঙ্রে সকল লোক জনকজননী । (খ এবং বঙ্গ)

গর্ভ ছাড়ি ভুজঙ্গ ভাসিয়া বুলে জলে
ন হি জানি জলস্থল কলিঙ্গ-মগুলে।।

*
নিবৰ্ষি সাত দিন বৃষ্টি নিরন্তর।

ইআছুক শস্তোব কাহা হেজ্যা গেল ঘর॥

কিঝাতে পড়য়ে শিল বিদারিয়া চাল।
ভাজপদ মাসে যেন পড়ে থাকা ভাল॥

চণ্ডীর আদেশ পান বীর হন্তুমান।

মঠ অট্টালিক। ভাজি করে খান খান॥

চারিদিকে বহুং চেউ পর্বত-বিশাল।

'চওীর আদেশে ধায় নদনদীগণ। অস্থিকামজল গান ঞীকবিকস্কণ॥

উঠে পড়ে ঘরগুল। করে দল্মল।।

* খতিরিক্ত—

গঙ্গা আদি নদনদী সিন্ধুর আদেশে। কলিঙ নানিতে কংশনদে প্রবেশে॥ (দী)

- ১-১ আছুক অভারে কাজ হাজিল সহর ॥ (থ এবং বঙ্গ) আছুক অভারে দায় হাজি গোলা সর । (দী)
- ২-২ চণ্ডিকার চরিত্রে পালায় প্রজাগণ। অভয়া-মঞ্চল কহে শ্রীকবিকশ্প । (দী)

নদনদীগণের কলিঙ্গদেশে যাত্রা

আজা দিলা ভবানী চলিলা নন্দাকিনী ছাড়িগা গগনে স্থিতি। **্স:স্থানরজাল ভাডিলা পাতাল** বেগে ধায় ভোগবতী॥ প্রবল তর্ক্স ধাইল গঙ্গা ভৈনবী ক**ৰ্মানাশা**। ধাইল দ্রুপদ ্শাণ মহানদ ু ধাইল বাহুদ, বিপ্লো॥ আমেদির দানোদির ধটিন দারুকেশ্বর ্শ্র্ট চল্ডাগা ৷ কোবাই দেবাই চলিল ছুই ভাই হাগ্ডিব খাল ধায় বেগা॥ করিয়া দামাদামি বাইলা বৃষ্ঠ্যম ্ছিয়াই মৃড়া**ই সঙ্গে।** ধাইল তারাজ্বলি । ঘুছৰ কুতৃহলী त्वा धार्मे त्रम । খরতর লহরী ধাইলা গোদাবরী কাণা ধার দামোদর। शंनि জ्नि मरङ हिना नरङ বুড়া "মুড়েশ্বর"॥ .

১-১ সজে মগবার জল, হই আ উথল চলিলা সঙ্গে ভগবতি॥ (থ) ২-২ বাহু দধি সঙ্গে পাসা॥ (থ) ৩-৩ মস্ত্রেখর (বঙ্গ)

ধাইল বরুণা গঙ্গা যমুনা অজয় সরস্বতী। ধাইল কুন্তী বেগে ধায় গোমতী সর্যু সুধাবতী॥ পাইল কাঁসাই মহানদী বিড়াই খরক্রোত বামুন্সার থানা। ^১চারিদিকে জল হইল ধবল কলিঙ্গ জুডিয়া বহে ফেনা॥১ ব্যাগনা বাগল ধায় গোক্সডী খড়ী তায় ব্ৰহ্মপুত পদ্মাবতী। চিন্তা বিফুকী ধাইল পাবকী ভীমা খ্যামা বেগবতী ॥^২ গিরি-দরি-বনচয় করিয়া জলময় দনাই চলিলা ধায়া। চলিলা রঙ্গে বড়াই তার সঞ্জে অতিশয় বেগবতী হয়।।। বাজায়্য। দণ্ডী আপনি চণ্ডী ধাইলা সত্তর হয়া। সঙ্গে কোলাঘাই চলিলেন "মহামাই" স্বর্ণরেখা লইয়া।।

>-> পারঙ্গ তরঙ্গ ধাইল উরজ
কংসনদী যুজিয়া ফেণা ॥ (খ)

২-২ স্থরনদি গঙ্গা
বেগে ধায়া পঞ্চাবতি।
পশ্চিম ভাসা ঝটিত পিয়াস।
ভাতি ধায়া বেগবতি॥ (খ)

৩-৩ মহানই (বঙ্গ)

জগদবতংসে

পালধি বংশে

নৃপতি রঘুরাম।

>শ্রীকবিকশ্বণ

করয়ে নিবেদন

অভয়া পূর কাম ॥১

কলিঙ্গরাজ কত্ত্ ক বর্ষার শান্তি

*

দেখিয়া জলের রীতি মনে চিন্তে নরপতি
সাজন করিয়ে আনে নায়।
পরিবার সনে রাজা করিয়া নায়ের পূজ।
আরোহণ কৈল দণ্ডরায়॥

১-১ তার সভাসদ্ রচিয়া চারুপদ শ্রীকবিকত্বণ গান॥ (বঙ্গ)

২-২ উচ্চস্বরে কান্দে রামাগণ। (গ) ৩-৩ লোক ভাস্থা জায় অফুক্ষন ॥ (খ)

* অতিরিক্ত—

ভূবিল কলিজদেশ সহস্রাক্ষ ভাবে ক্লেশ
মঞ্জিল প্রজার সন্তাবনা।
বহিল বিষম স্রোত ভাসিল ভূবক রথ
কোন দেব কৈল বিভূষনা । (বক)

*

এ সন প্রমাদ দেখি মনে রাজা হৈলা ছুঃখী
দ্বিজগণে করে নিবেদন।
বিশেষ পণ্ডিত যত বিচারিয়া বিধিমত
নুপতিরে কহে বিবরণ।।
দ্বিজগণ নূপে কয় শুন রাজা মহাশ্য
নিবেদন কব অবধান।
দেখিয়া জলের বয় হেন মোর মনে লয়
নিপ্রাজা কৈল অভিযান।।
১৮খিয়া তে,মার দোষণ কোন দেব কৈল রোষ
মজিল গোমার জনপদ।
কলাধৌশ তহ্নান সাধ্য দেবের মান
ব্যাভিবেশ তোমার সম্পদ।।
১

ভূবিল সকল দেশ সহস্রাক্ষ ভাবে ক্লেশ মাজলে রাজার সম্ভাপনা। রাজারে বিষম রথ (?) ভাসিলা তুরঙ্গ রথ সাঁতে ভাসি গেলা কত জনা ॥ (দী)

ঋডিবিজ-

5 জী শ আজ্ঞান হক্ত হাথে পাঁজি কাঁথে জক্ত উপনীত রাজার সভায়। শঙ্কিকা জুনাঞা কয মহাবাজ নাহি ভয় গণণ আমি কহিলে উপায়। (বঙ্গ) ১-১ নবম শনির দেখি (বঙ্গ) ২-২ ঘুচিবেক ভোমার আপদ। (বঙ্গ) ুষিজের বচন শুনি নরপতি মনে গুণি

দিল জলে কনক-অঞ্জলি।

নদনদী পেয়্যা মান সবে গেল নিজ স্থান

দেখি রজে। মনে কুতৃহলী ॥১

ধীরে ধীরে টুটে নীর দেখি সবে হইল স্থির

দ্বিজগণে দিল নানা ধন।

রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিলা বর্ক
চক্রবতী শ্রীকবিকশ্বণ॥

কলিঙ্গবাসিগণের খেদ

বিষাদ ভাবিয়া প্রজা করয়ে ক্রন্দন।

9ই চক্ সবাকার আবিদেশ ঘন॥

কেই কই বলে ধন থুয়াছিলু চালো।

চালের সহিত ধন ভেস্তা গেল জলো॥

দেশমুখ বলে ভাই শুন মোর বোল।

স্পোতে ভেস্তা গেল মোর কাপাদের ডোল

১-১ বিজ্বাক্যে নানাধনে পুজে দেবদেবীগণে
কনক অঞ্জনী দিলা জনো।
নদনদি মান পাল্যা নিজ স্থানে সভে গেলা
বাজার স্কৃতি কর্মকলে॥ (দী)
বিজের বচন শুনি নরপতি মনে গুণি
ভিলাঞ্জলি দোণা দিল জলো।
নদনদী পায়্য মান সভে গেলা নিজ-স্থান
বাজা স্থান্থির কর্ম-ফলে॥ (বাজ)

ধরণী লোটায়্যা কান্দে মহেশ্বর দাস।
কোথা ভেস্থা গেল মোর গুড় তিল মাষ॥
আর একজন বলে শুন মোর বাণী।
সর্ববৃষ্ব যে ভেস্থা গেল সাত মণ চিনি॥
কোন কোন জন বলে শুন মোর কথা।
প্রাণধন পাইলু আমি ধরি চালবাতা॥
সকল সহিত ভেস্থা গেল নিকেতন।
অনেক যতনে ভাই পাইলু জীবন॥
ভাডুদত্ত বলে মোর করমের ফল।
আমার ছ্য়ারে জল হইল অথল॥
উঠানে ছ্বিয়া মরি না জানি সাঁতার।
জটে ধরি মাগু মোরে করিল উদ্ধার॥
বুলান মগুল বলে শুন প্রজা ভাই।
হাজিল বিলের শস্য তাহে না ডরাই॥

^১মসীল করিবে রাজা দিয়া হাতে দড়ি। প্রথম মাসেতে চাহি এক তেহাই কড়ি॥^১ এদেশে বসতি নাহি ঘর নদীকুলে। হাজিবে সকল শস্ত বরিষণ-কালে॥

* অতিরিক্ত—

দারুন বিধাতা মোরে কৈল অপমান। সোতেতে ভাদিয়া গেল তিল কাপাদ ধান॥(থ)

১-১ মশাত করিলা রাজা দিয়া থাট দড়ি। মাইশরে চাহি তিন তেয়াইর কড়ি॥ (দী) মূসগর্গদ করিব রাজা দিয়া থাট দড়ি। প্রথম য়ন্ত্রানে চাই এক তেহাই কড়ি॥ (খ) তেসনী ইনাম পাব গুজরাট যাই।
ত্বিনি ভাঁচুদত্ত সেই রাজার দোহাই।।
বুলান মণ্ডল বলে শুন মহাশয়।
তোমার সকল প্রজা জানিবে নিশ্চয়।।
তেসনী ইনাম পাব গুজরাটপুর।
আগুয়ান তোমার প্রজা তুমি সে ঠাকুর।।
মিলি যত প্রজাগণ করিল বিচার।
কলিঙ্গ রাজার ঠাই না পাব নিস্তার।।
বুলান মণ্ডল বলে শুন প্রজা ভাই।
সবে মিলি বীরের নগরে চল যাই।।
সবার প্রধান ভাঁচুদত্ত আগে যান।
কলিঙ্গ ভেজিয়া সবে করিল প্য়ান॥
*
বলান মণ্ডল ভাই যায় লঘুগতি।

বুলান মণ্ডল ভাই যায় লঘুগতি। শ্রীকবিকঙ্কণ গান মধুর ভারতী॥ক

* অভিরিক্ত-

ভেলাতে বান্ধিয়া সভে হৈলা নদি পার। চলিলান প্রজাগণ বিবের হুয়ার। (দী)

ণ অতিরিক্ত—

বুলান মণ্ডলের গুজরাটে আগমন

বুলান মণ্ডল রলে গুন সব ভাই।
কলিক ছাড়িয়া চল গুজরাটে যাই॥
কালকেতু মহারাজ বড় ভাগ্যবান্!
ধান্ত গোক টাকা দিয়া করিবে সম্মান॥

বুলান মণ্ডলের প্রতি কালকেতু

শুন ভাই বুলান মণ্ডল।
আস্তাগা আমার পুর সন্তাপ করিব দূর
কানে দিব কনক-কুণ্ডল॥

গুজরাটে গেলা তবে বুলান মণ্ডল। পশ্চাতে চলিল প্রজা হইয়া বিকল। সিংহাদনে বসিয়াছে কালু দণ্ডধর। নক্ষত্রগণের মধ্যে যেন নিশাকর ॥ পণ্ডিত পুরাণ পড়ে স্তব করে ভাটে। গায়কে গাইছে গীত নর্তকীরা নাটে॥ হেনকালে তথায় বুলান উপস্থিত। আইস আইস বলি রাজা করিল সম্বিত। কহ কহ বুলান স্বদেশের বারতা। কিসের কারণে আইলে কহ সত্য কথা # বুলান বলেন রায় কর অবধান। রহিতে নাহিক ঘর বসিবারে স্থান । জলেতে ভাসিয়া গেল সকল আমার। কি থাইব কিবা দিব থাজনা রাজার॥ ভাবিয়া চণ্ডিকা পদন্বয় একচিতে। বচিল নৌভুন গাঁত মুকুন্দ পণ্ডিতে।। (বন্ধ)

* অতিরিক্ত—

মনে না ভাবিবে আন মুলে তোরে দিব ধান
গর দিব লাঙ্গল বাহনে।

যার যেবা নাহি থাকে সেই ধন দিব তাকে
কোন চিন্তা না করিহ মনে। (দী)

আমার নগরে বৈস যত ইচ্ছ: চাষ চষ তিন সন বহি দিহ কর। হাল প্রতি দিবে তঞ্চা কারে না করিং শক্ষা পাটায় নিশান মোর ধব ॥ নাহিক বাউড়ি দেড়ি রয়া। বস্তা দিবে কড়ি ডिহিদার নাহি দিব দেশে। **সেলামী বাশগাড়ি নানা বাবে যত কড়ি** নাহি নিব গুজরাট বাসে ॥ পাৰ্বণী পঞ্চ যত গুড়া লোণ সানা ভাত ेধানকাটি কলম-কস্থারে। যত বেচ চালু ধান তার নাহি নিব দান অঙ্ক নাহি বাড়াইব পুরে॥ ংযত বৈদে দ্বিজবর কার নাহি নিব কর চাষ্ভূমি বাড়ি দিব দান। হইয়া ব্রাহ্মণে দাস পুরিব স্বার আশ জনে জনে সাধিব সম্মান।। ভাঁড় দত্ত হেন কালে আসিয়া মধুর বলে মোর আগে কেব। নিবে পান। রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালা করিয়। বন্ধ জীকবিকঙ্কণে রস গান। #

১-১ ধান্ত কাটি কম শেকস্থরে। (দী)
বালি কাটি যতেক অপরে। (ক)
২-২ যত প্রজা বৈদেঘর তার না

২-২ যত প্রজা বৈদে ঘর তার না শইব কর চাষিজনে বাডি দিব ধ:ন। (বাস)

* অতিরিক্ত:--

কালকেতুর সভায় নীলাম্বর দত্তের আগমন

বির বিবাদে প্রজা হইল মৃস্থির। টল বল করে **জে**ন প্রত্পত্তের নির॥ পালাই আ জাই বহিতে নাহি স্থান। চতুর্দ্ধিকে জলময় প্রজার বিথান ॥ উভারে প্রধান জন বুলন মণ্ডল। গাড়ির ভূঞা লৈআ বলে কোথা পাব স্থল। বিবের মানুষ দবে মারিল কোন কাজে। ভাবে মন্দ্ৰন্দ বলিলে কেনে লা**ভে**। দেশের নাএক ছিল নিলাম্বর দত্ত। কহিতে লাগিল সেই বিরের মহত ॥ সাজাইল ঘরপ্রলা নারিকেল বাডি। সর্বকাল ক্ষেম থাবে নাঞি দিবে কডি॥ রক্ষ হ: থিজনে বির হবে অমুকুল। উধার আগাড়ি দেহ বংশুল সম্বল। ছোট বড় প্রজা জদি দেহ অমুমোতি। ভেট ঘাট সজা করি অনেক সকতি। ধুবাসিত তওুল বান্দিআ নিল গাছ। কানে দড়ি দিয়া নিল গোটা বহিমাছ। মর্তমান কলা নিল নাড় গঙ্গাঞ্চল। বোঝা ভারে চালাইল মিঠা নারিকেল। বার্তাকু মূলক নিল কুমড়ার ছা। নিলাম্বর চলে ভূমে লোটাইয়া কাঁছা। বেগারি বহি আনিল জত ভেট ঘাট। কথোক্যানে পাইল নগর গুজরাট । বস্তাছিল মহাবির করিআ দেয়ান। নিলাম্বর দতে গিয়া হৈল সন্নিধান ।

ভেট ঘাট এডি বিরে মুঙাইল মাথা। বির জিজাসিল তারে কুসল বারতা॥ নিলাম্ব দত্ত নাম নিবাস উত্তরে। তোমার লিখন পত্র গয়াছিল মোরে॥ সেই পত্র পড়্যাছিল মুক্ষ্যার হাতে। পড়িতে নারিল পত্র মুক্ষ্যা ভালমতে।। কথোদিন বই আমি পাইলাম সেই পাতি। বুঝাইয়া সভাকারে নিল সম্মাতি॥ পূর্ব্বের আস্বাষ জদি হয় সন্নিধান। প্ৰজা সৰু আনাইব দেহ ফুলপান।। নিলাম্বরে বোল জিদি হইল সমাধান। অবিলম্বে কালকেতু দিল ফুলপান।। মাথায় বান্দিল তার পাটের আঁচলা। স্রবনে কুণ্ডল দিল করে তাডবালা॥ নিলাম্বর চলে বিরে করিয়া প্রনাম। সভাকারে কহিল জত বিরের বাথান।। বিবের বাথান কছেন নিলাম্বর দত। তাডবালা দেখিখা প্রজা হইল উনমন্ত।। গো প্রালা চালায় গোর গোধের ভিতবি। সঞ্চপত্র চালায় বোঝা ভারি ভারি।। চলিলা কালিকের লোক হইআ পাগল। মাথায় বোঝা কাথে পো হাতেতে ছাগল। নিরাসয় ছাড়ি প্রজা নিজ গ্রিহবাস। বিদ্ধজন চলে মনে বডই উল্লাস গুরুজন মাঝে চলে কুলবতি সতি। ছরিস বক্সের প্রজা চলে বাতারাতি। ভঞারা সকল জান চড়িআ ত ঘোড়া। পাইক সত সত নডে ঝাটী ঝগড়া॥

কালকেতুর নিকটে ভাঁড়ুদত্তের আগমন

২ ভেট লয়াা কাঁচকলা ২ পশ্চাতে ভাঁড়ুর শালা আগে ভাঁড়ুদ্তের প্রান।

বভালে কোঁটা মহাদন্ত ই ছেঁড়া ধুতি কোঁচা লম্ব প্রবান কলম থরশাণ॥
প্রণাম করিয়া বীরে ভাঁড়ু নিবেদন করে সম্বন্ধ পাতায়া। বলে খুড়া।
ছেঁড়া কম্বলেতে বসি মুখে মন্দ মন্দ হাসি ঘন ঘন দেয় বাহু নাড়া॥

উত্তর ভাগিআ প্রজা আন্তে গুজরাটে।
তা দেখিয়া দকল লোক আইদে করপুটে।
উত্তর ভাগিআ প্রজা পালাইয়া জায়।
প্রজার উৎকট করে ছাগলের রায়।
পশ্চিম ভাগিআ আইদে হাদান হদন।
বিরেব নগরে আদি দিল দরদন।
বিরেব নগরে আদি হইল অক্রচর।
বিরেব নগরে আদি হইল অক্রচর।
বারের নগরে আদি হইল অক্রচর।
না বড়ি কহিআ জার বাড়এ মহত্ত।
চারিদিকে মণ্ডলিয়া ছিল বিভ্যমান।
বিরকে সম্বাদে ভাণ্ড সভার আগুরান।
খ্ডা বলি বির দক্ষে করিল সম্বন্দ।
বিরকে কহিতে প্রজার প্রবন্দ।।
অভ্যার চরণে ইত্যাদি।। (খ)

১-১ नशा हिड़ा मधि कना (मी)

২-২ ফোটা কাটা মহাদম্ভ (বন)

আমি বড় প্রতিআশে এসেছি তোমার দেশে > আগুয়ান ডাকিবে ভাড়ুরে। যতেক কায়স্থ দেখ ভাড়ুর পশ্চাতে লেখ কুলেশীলে মহত্ত-বিচারে n কহি যে আপন তত্ত্ব আনলহাঁড়ার দত্ত তিন কুলে আমার মিলন। ছই নারী মোর ধক্স। ঘোষ বস্তুর কক্স। মিত্রে কৈল ক্সা-সম্পণ n গঙ্গার তুকুল কাছে যতেক কুলীন আছে মোর ঘরে করয়ে ভোজন। ঝারী থালা অলঙ্কার দিয়া করি ব্যবহাব কেহু নাহি করয়ে রন্ধন।। বহু পরিবার মেল। তুই নারী চারি শালা চারি পুত্র বহিনী শাশুড়ী। ^২ছয় জামাই ছয় ঝি বিশেষ বলিব কিং ধান্ত দিবে নাহি দিব বাডি॥ হাল বলদ দিবে খুড়। দিবে হে বিছন-পুড়। ভান্ত। খাত্যে ঢেকী কুলা দিবে। আমি পাত্র রাজা তুমি আগে পূজা পাব আমি পরিণামে ভাড়ুরে জানিথে॥

১-১ আহ্বানে ভাকিবে ভাঁডু দত্তে। (বঙ্গ) ২-২ ছি জাঙাঞী দশ চেড়ি য়েই হেতু সাত বাড়ী (দী) ছয় জামাই ছয় চেড়ী এই হেতু সাত বাড়ি (বন্ধ)

ইভাড়ুর বচন শুনি মহাবীর মনে গুণি
্ করিল তাহার বহু মান।
দামুক্তা-নগরবাসী সঙ্গীতের অভিলাষী
শ্রীকবিকশ্বণ রস গান॥

কালকেতুর প্রতি ভাঁড়ুদত্ত*

সঘনে নাড়িয়া শিরে গাঙ্গুটি-প্রবন্ধে ধীরে ভাঁড়ুদত্ত কহে "কাণ-কথা"। ংযে হৈলে প্রজা বৈসে কহি আমি সবিশেষে একে একে সকল বারতা॥

১-১ পুনহ ভাতু কয় মোহাবীর প্রশংশয় (দী)

২-২ চাতুরী প্রবন্ধে (বঙ্গ)

৩-৩ কণা-কথা (দী)

৪-৪ শুন খুড়া সবিষেদে জেই পাকে প্রজা বৈদে শ্লেকে শ্লেকে তাহার বারতা॥ (দী)

* পাঠান্তর:---

বিরের নিকটে জায় বদিতে আদন পায় বাডিল ভাগুর অহংকার।

স্থনে নাড়এ মাথা আরম্বিল কান ক**থা**

না বড়ি কহিতে সভা**কা**র॥

জত মণ্ডলিয়া জন লয়া আল্য প্রজাগন

সভাকার কথা আমি জানি।

আইল আপন কামে ছলি জাব নিজ ধামে জত দেখ সব বান্দ পানি।। ুমি থাক নিশ্চিম্নে নিশয়।
বহু প্রজা বসাইব

বন্দে বন্দে যেন প্রজা রয়॥

আমারে করহ ভারি বদাব ভোমায় পুরি আমি ভাল জানিয়ে সন্ধান। শভাকারে নিব লাগ্যা নগর না জাব ভাগ্যা জনে জনে হইব সন্ধান॥ ভাতুত না বড়ি কহে প্রজা জে দেখিতে পারে সভে বলে হইয়া য়ভিমানি। তুমি যুনিলে ভাতুর কথা কেহ না সাসিব হেথা কর যুড়ি মাগয়ে মেলানি 🛚 স্থান আ**স্থাস** করে প্রজারা রাহ্য়া দারে সভারে আতাদে মহাবির। চাহি হুয়ারির পানে আথি ঠারিব আনে ঠকে করে হয়ার বাহির। অপমানে নাহি লাজ কহে সভাব মাঝ বির বাড়ি অগ্রিলিয়া রহে। দামূক্তা নগরবাসি হৈ আ বড য়ভিলাসি শ্রীকবিক্ষন রশ কহে ॥ (খ) ১-১ তাড় বালা দিবে মান করজ বলদ ধাৰ উচিত কহিতে কিবা **ভ**য়। জিনিতে প্রজার মায়া জমি দিবে মাপিয়া

वल्म वल्म (यन প্রজা লয়॥ (वक्न এবং क)

যখন পাকিবে খন্দ পাতিবে বিষম দ্বন্দ্ব 'দরিদ্রের ধাত্যে দিব নাগা। খাইয়া তোমার ধন না পালায় প্রজাজন শেষে যেন নাহি পাহ দাগা। দেওয়ান ভেটের বেট। বহিত আমার চিঠা যারে বল বুলান মণ্ডল। ংথাকিতে সকল প্রজা সাগুয়ান মোর পূজা কহিলাম প্রকার সকল ॥ পরি ছু-পণের কাচা ভানিত আমার ভাচা °সেই বেটা হবে দেশমুখ। •নফরের • হাতে খাণ্ডা বহুড়ীর হাতে ভাণ্ড। পরিণামে দেই অতি তুথ। শুনিয়া ভাড়ৣর বাণী
 মহাবীর মনে গুণি মনে ভাবি না দিল উত্তর। করিয়া চণ্ডিকা ধ্যান শ্রীকবিকঙ্কণ গান নায়কেরে দেহ চণ্ডী বর ॥

>-> मात्री एवत धनी नव नागा। (मी)

৩-৩ স্থকা বেটা হব দেশমূখ। (দী)

৪-৪ রাখালের

২-২ বুঝিয়া করিবে কাজ মোর জেন নহে লাজ কয়া দিব প্রজার শকল॥ (দী)

৫-৫ আমি কায়দের মোক্ষ তুমি খুড়া প্রতীপক্ষ মোরে কর শহর মণ্ডল। রচিয়া ত্রীপদি ছন্দ গান কবি শ্রীমৃকুন্দ থৈমবতি-সন্ধিতমক্ষল॥ (দী)

মুসলমানগণের আগমন

কলিঙ্গ-নগর ছাড়ি প্রজা লয় ঘর বাড়ী নানা জাতি বীরের নগরে। পাইয়া বীরের পান বৈসে যত মৃসলমান দিলেন এশ্চিমদিক তারে॥ আইল চডিয়া তাজি সৈয়দ মৌলনা কাজি খয়রাতে বীর দেয় বাডি। পুরের পশ্চিম পটি বোলয়ে হাসন হাটী ^১বৈসে কলিঙ্গ দেশ ছাড়ি।^১ ফজর সময়ে উঠি বিছায়ে লোহিত পাটী ^২পাঁচ বেরি^২ কর্য়ে ন্মাজ। ছোলেমানী মালা করে জপে পীর পেগন্ধরে পীরের মোকামে দেয় সাঁজ। [°]দশ বিশ বেরাদরে[°] বসিয়া বিচার করে অনুদিন কেতাব কোরান। কেহ বা বসিয়া হাটে পীরের শীরিনি বার্টে 'সাঁঝে বাজে দগড নিশান n'

১-১ য়েক ম্ধুনীতে গৃহ বাজি ॥ (দী)

এক সম্দায় গৃহ বাজী ॥ (বঙ্গ)

२-२ পाठीववि (मी)

७-७ हिनिमिन (वकः) हिनम्मनी (नी)

৪-৪ দশ বিশ রোজাধরে (গ)

e-e नांद्ध प्रवे श्राफ़ निनान ॥ (मी)

বড়ই দানিসবন্দ 'না জানে কপট ছন্দ' প্রাণ গেলে রোজা নাহি ছাড়ি। যার দেখে খালি মাথা তার সনে নাহি কথা সারিয়া চেলার মারে বাডি॥ ধর্য়ে কম্বোজ বেশ মাথাতে না রাখে কেশ বুক আচ্ছাদিয়া রাখে দাড়ি। না ছাড়ে আপন পথে দশ রেখা টুপি মাথে ইজার পরয়ে দৃঢ় ^২দড়ি^২॥ আপন টোপর নিয়া বসিলা গাঁয়ের মিয়া ভুঞ্জিয়া কাপড়ে মোছে হাত। শেরানি নোহালি পানি কুড়ানি বিটুনি হুনি পাঠান বসিল নানা জাত॥ বসিল অনেক মিঞা আপন ভর্কভ নিঞা কেহ নিকা কেহ করে বিয়া। মোলন। পড়ায়্যা নিকা দান পায় সিকা সিক। দোয়া করে কলমা পড়িয়া॥ করে ধরি থর ছুরী কুকুড়া জবাই করি দশ গণ্ডা দান পায় কডি। বকরি জবাই যথা মোল্লারে দেই মাথা দান পায় কডি ছয় বৃডি॥

১-১ কাহাকে না করে ছন্দ (বঙ্গ)

২-২ নাজি (গ এবং দী) করি (বঙ্গ)

৩-৩ টবর (গ এবং দী)

যত শিশু মুছলমান তুলিল 'দলিজখান'
মখদম পড়ান পড়না।
রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালা করিয়া বন্ধ
গুজরাট-নগর-বর্ণনা॥

মুসলমানদিগের শ্রেণী-বিভাগ

রোজা নমাজ না করিয়া কেই হৈল গোলা।

তাসন করিয়া নাম ধরাইল জোলা।
বলদে বাহিয়া নাম ধরাল্য মুকেরি।
পিঠা বেচি কেই নাম ধরাল্য পাঠারি।
মংস্থা বেচিয়া নাম ধরাল্য কাবাড়ি।
নিরস্তর মিথ্যা কহে নাহি রাখে দাড়ি।
হিন্দু ইইয়া মুছলমান হৈল পরসালাও।
কেই রাত্রিকাণা হৈয়া মাগে নিশাকালা।
সানা বান্ধিয়া ধরে সানাকার নাম।
সুল্লং করিয়া নাম ধরয়ে হাজাম।
পট্টা পরিয়া কেই ফিরয়ে নগর।
ভীরকর ইয়া। কেই নিশ্মাণ্য়ে শালা।

১-১ মক্তব থান (বঙ্গ)

২-২ তাঁত বুনিঞানাম ধরাইল জোলা॥ (গ)

৩-৩ গয়দাল (গ এবং বন্ধ)

কাগজী ধরিলা নাম কাগজ করিয়া। নানা স্থানে-বুলে কেহ কলন্দর হৈয়া।

*

কাটিয়া কাপড় সিয়ে দরজির ঘটা।
নেয়াল বুনিয়া নাম ধরয়ে বেনটা॥
বরজারজ নাম ধরে রক্ষণ করিয়া।
ধরিলা হালান নাম কুদ্দুর ধরিয়া॥
কোমাংস বেচিয়া নাম ধরয়ে কসাই।
এই হেতু য়মপুরে তার নাই ঠাই॥
নামা রুজি করিয়া বসিলা মুছলমান।
অবধান করি শুন হিন্দুর আখ্যান॥
অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

অতিরিজ্ঞ—

বিদিলা সিবনকর করিয়া রশাণ। কম্বল বুনীঞা ধরে দেসধি বিধান॥ (দী)

১-১ বসন রঙ্গায়্যা কেহ ধরে রঙ্গরেজ। লোহিত বসন শিরে ধরে মতাতেজ। (বঙ্গ)

ব্রাহ্মণগণের ত্যাগমণ

১পাইয়া বীরের পান বৈসে যত কুলস্থান গুজরাটপুরে বিপ্রগণ। আশীষ করয়ে বীরে শাস্ত্রের বিচার করে নিত্য পান ভূষন চন্দন॥১ কুলে শীলে নহে নিন্দা চাটুতি মুখটী বন্দা কাঞ্জিলাল গাঙ্গুলি ঘোষাল। চৌথণ্ডী পলসাঞি দিঘাড়ী কুসুমগাঞি বিসল কুলভি পারিয়াল॥

* অতিরিক্ত—

ব্রাহ্মন বৈশু তথি নানা সাস্ত্র বহে পাতি মহাবংসে কুলের বিসার।

কাব্য বস অলঙ্কার ভারত পুরান সার সাম্ভবিধি জতেক প্রকার॥

নিবাংসি **দ্বিজ জ**ত কথা সুরোদয় হার তথা নাটক নাটিকা ভাল জানে।

কণ্ঠে তার সরস্বতি মুথে তার বৃহস্পতি আগম আদি বেদ বাথানে।।

বীর ভাঙ্গায় চণ্ডির ধন আনন্দে পূর্ণিত মন নগরে রাজার বৈদে হাট।

পাড়াপাড়ি গ্রামে **ছ**ত তাহা না কহিব কভ অ**জোদ্ধা সদৃস গুজ**রাট॥ (থ)

১১ পান লৈয়া বিপ্রাগণ পায়্যা ভূষা নানা ধন গুজুরাট মধ্যে নিবসয়।

বিচারিয়া লয় পুরি বিরেরে আদীশ করি ফুথে দ্বিজ্ব শাস্ত্র বিচারয় । (দী)

পুতিতুও বৈদে হড় রাইগাই কেশরগড় ঘণ্টেশ্বরী বৈসে কুলস্থান। মতিলাল পীতমুগুী ঝিকরাড়ী মালখণ্ডী ঘুষুণ্ডী বড়াল কুলমান । কড়িয়াল সিমলাঞি কুলিয়াল পিপলাই তার কাছে বৈসে পূর্ব্বগাঞি। ধনে মানে অতি চণ্ড বাপুলা পিশাচখণ্ড কৰ্ণাই সেড়ে। বৈসে গাঞি॥ পালধি হিজলগাঁই মাসচটক ডিঙ্গসাই কড়ারী দানড়ি ভুরিষ্ঠাল। বটগ্রামী নন্দিগাই ভাট্যাতি শীতলশাঞি নাল্সী কোঁয়াড়ী মতিলাল n ^১গাঁই নাই গোত্র আছে ^১ ব্যিল তাহার কাছে বারেন্দ্র ব্রাহ্মণ শত শত। ংব্যবহারে বড় ঋজু নিত্য পড়ে বেদ যজুং বেদবিভা মুখে অবিরত ॥ দেখিতে স্থসার সারি ব্রাহ্মণের আগুয়ারি ঠাঞি ঠাঞি বিষ্ণুর সদন। কনক-ঝলস-চূড়ে নেতের পতাকা উড়ে গৃহ-শিরে শোভে স্থদর্শন॥

১-১ সাঞি গাঞি গোত্র আছে (গ)
২-২ ব্যবহারে বড় থেদ নিত্য পড়ে জযুর্বেদ (গ)
ব্যবহারে বড় ক্ষেদ নিত্য পড়ে চতুর্বেদ (থ)

কেহ হয় অধিষ্ঠাতা কোন দ্বিজ কহে কথা কেহ বলে আগম-পুরাণ :

নানা দেশ হইতে আসে পড়ুয়া বিভার আশে তারে বীর দেয় নানা দান॥

মূর্থ বিপ্র বৈসে পুরে নগরে যাজন করে শিখিয়া পূজাব অনুষ্ঠান।

চন্দন-তিলক পরে দেব পুজে ঘরে ঘরে চাউলের কোচড়া বান্ধে টান ॥

ময়রা-ঘরে পায় খণ্ড গোপ-ঘরে দধি-ভাণ্ড তেলি-ঘরে তৈল কুপী ভরি।

কেহ দেয় চাল কড়ি কেহ দেয় ভাল বড়ি •গ্রামযাজী আনকে সাতরি॥

বসি গুজরাটপুরে যেই জন বিভা করে গ্রামযাজী করে অমুষ্ঠান।

সাঙ্গ হৈলে দ্বিজ কয় কাহন দক্ষিণা হয় হাতে কুশে দক্ষিণা "ফুরাণ"॥

গালি দিয়া লণ্ডে ভণ্ডে °ঘটকে কুলীন দণ্ডে° কুলপঞ্জি করিয়া বিচার।

যে নাহি গৌরব করে সভাতে বিভ্স্নে তারে যাবত না পায় পুরস্কার।

১-১ দেয় বির হয় গজ দান।। (খ এবং গ)

২-২ গুজুরাট আনন্দ নগরি॥ (গ / জ্বিজ্ঞা ভানন্দে পুরে পুরি॥ (খ)

৩-৩ শারণ (দী) সারান (খ)

৪-৪ কপট ব্ৰাক্ষণ দণ্ডে (গ)

গুজরাট এক পাশে গ্রহ-বিপ্রগণ বৈসে বর্ণ-বিপ্রগণ মঠপতি।

দীপিকা ভাস্বতি ধরে শাস্ত্রের বিচার করে লিখে তারা শিশুর জায়তি॥

মাথাতে পিঙ্গল জটা কাপালী সন্ন্যাসী ঘটা। ঝুপড়ি বান্ধয়ে এক পাশে।

গায়ে নানা তীর্থ-চিন ভিক্ষা মাগে অনুদিন গুজরাট এক পাশে বৈসে।

সদা লয় হরিনাম ব্যক্তিভূমি পায় দান বিষয়ব বসিলা গুজরাটে।

কাঁথা কমগুলু লাঠি গলাতে তুলসাঁ-কাঁঠি
সদাই গোঙ্য় গীত-নাটে।

কুশহন্তে বাক্য পড়ি * বার দেয় ভূমি বাড়ি*
কুশ নার তিল করি করে।

রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ গান কবি শ্রীমুকুন্দ স্থা থাকি আড়রা নগরে।

ৰীর দেয় বাস যত বৈসে প্রজা শত শত কলিক্ষের ছাডিয়া নিবাস।

তেসনি ইনাম বাড়ি কেহ নাহি দেয় কড়ি

'সবাকার হৃদয়ে উল্লাস ॥'

১-১ সন্তাসী তপসি ঘটা (গ)
সন্তাসি কাপাড়ি ঘটা (থ)

২-২ ভূমি প্যায়া ইনাম (থ এবং বঙ্গ)

৩-७ दिक्ष्व दरमन स्मष्टे स्मर्म ॥ (मी)

৪-৪ আইয়োজন ভূমি বাড়ি (দী) আয়তনে ভূমে বাড়ি (খ)

e-৫ দেখি বড় বিরের উল্লাস।। (গ)

সর্বলোক-অবতংস ক্ষত্রি বৈসে ভান্থবংশ
চন্দ্রবংশী বৈসে মহাজন।
পুরাণ-শ্রবণ-আশে আনি বিপ্র নিজ বাসে

ব্যক্তি নিম বানা ধন॥
দোসর যমের দৃত বৈসে যত রাজপুত

ক্ষম সেবে অনুক্ষণ দিজে দেয় নানা ধন
দেশে দেশে যাহার খেয়াতি॥
ভৌলিয়া আখড়া-ঘরে নল্লযুদ্ধ কেহ করে
নানা বিভা গুলী চাপগরি।
হাতে ধরি ঢাল খাড়া কেহ করে ভোলাপড়ঃ
প্রাণে মারে যদি পায় অরি॥
আসি পুর গুজরাট নিবাস করয়ে ভাট
অবিরত পড়য়ে পিজল।
বীর দেয় খাসা জোড়া চড়িতে উত্তম যোড়া

নিত্য চিন্তে বীরের ম**ঙ্গ**ল।

- ১-১ অবিরত দিজে দেই ধন।। (দী)
 অফুদিন দিজে দেই ধন।। (খ)
- ২-২ ম**ল বংশে বাজচক্রবতী। (খ)** মল বৈদে রাজচক্রবর্তী। (দী)
- ৩-৩ তুলিয়া (বন্ধ)
- 8-8 লইয়া বাজা বাজা কেহ করে মালপাজ। মাংস হক্ষে কেহ পায়ে হারী॥ (দী)

১বৈসে বৈশ্য মহাজন কৃষ্ণকথা অনুক্ষণ ু কৃষিকর্ম করে গো-রক্ষণ। কেহ কলন্তুর লয় কেহ বুষে ধান্স বয় কালে কিনে রাখে কোন জন 🛚 কেহ দর করি তোলা হীরা নীলা মোতি পলা ুকেই মরকত মণি কেনে। সাজন করিয়া নায় কেহ নানা দেশ যায় শঙ্খ চন্দন কিনি আনে॥ চামরী চামর ভোট সাকলাৎ গজ ঘোট খেটক পটিশ আঙ্গরাখি। এক বেচে আর কেনে নিতি নিতি বাডে ধনে গুজবাটে বৈশ্য-জন সুখী। বৈগ্ৰন্ধনাৰ তত্ত্ব সেন গুপ্ত দাশ দত্ত কৰ আদি বৈসে কুলস্থান। *বটিকায় কার যশ কে**হ** প্রয়োগের বশ* নানা তন্ত্র করয়ে বাখান 🛚 উঠিয়া প্রভাতকালে 💎 উর্দ্ধ ফোটা করি ভালে বসন-মণ্ডিত করি শিরে। পরিয়া লোহিত ধৃতি 💎 কাঁখে করি খুঙ্গি পুথি গুজরাটে বৈছজন ফিরে॥

১-১ বৈশ্র বৈদে অবিবাদে মগ্ন মন হরিপদে (দী)

২-২ জ্ঞাতিকর্ম করে অমুক্ষণ। (খ)

৩-৩ নানা যে সফর ভ্রমা আনে। (খ) নানা সফর ভ্রমি শ্লানে। (গ) নানা সহর লমে স্থানে। (বঙ্গ)

৪-৪ মুনিকাম করে যশ কেহ প্রিয়াদের বশ (থ)

দেখি জ্বর শিরোরোগ

বুকে ঘাত করে প্রতিজ্ঞায়।

দেখিলে অসাব্য রোগ

নানা ছলে মাগয়ে বিদায় ॥

কপুর পাচন করি

কপুরের করহ সন্ধান।
রোগী সবিনয় বলে

শেসই পথে বৈত্যের পয়ান ॥

বৈত্যজনার পাশে

নিত্য করে রোগীর সন্ধান॥

রাজ-কর নাহি দেই

হেমযুত তিল লয় দান॥

মহামিশ্র ইত্যাদি॥

কায়স্থগণের আগমন

ঘৃত-কুস্তে বান্ধি গাছ ভেট নিয়া দধি মাছ কায়স্থ আইল মহাজন। •প্রণাম করিয়া বীরে নিজ নিবেদন করে• সুখী হইলা ব্যাধের নন্দন॥

১-১ বুকে ঘাত মারি অঞে পায়। (দী)
বুকে ঘা মারিয়া অর্থ চায়। (বদ)
বুকে মারি করে ভাঙ্গে দায়। (থ)
২-২ তবে করে কর্পুর উপায়।
৩-৩ শেই পথে রোজার পালান। (দী)
৪-৪ মোহাবীরে করি নতি করে আপনার স্থীতি (দী)

23-2303 B. T.

সকল কায়স্থ ভাষে আইন্থ তোমার দেশে গুজরাটে করিতে বসতি।

>বিচার করিয়া তুমি দিবে ভাল বাড়ী ভূমি > প্রজাগণে কর অবগতি॥

কোন জন সিদ্ধ কুল কেহ সাধ্য ধর্মমূল দোষহীন কায়স্থের সভা।

প্রসন্ন সভারে বাণী লেখাপড়া সভে জানি ভব্যজন নগরের শোভা ॥ং

অনেক কায়স্থ মেলা °শুনিয়া তোমার লীলা° °আইন্থ তোমার সন্নিধান।°

কুলে শীলে নাহি দোষ কেহ মাহেশের ঘোষ বস্থু মিত্র কুলের প্রধান॥

তব গুণে হইনু বন্দী পাল সে পালিত নন্দী সিংহ সেন দেব দত্ত দাস।

কর নাগ সোম চন্দ ভঞ্জ বিষ্ণু রাহা বিন্দ সবে হেথা করিব নিবাস ॥

করি বীর অবধান প্রজাগণে দেহ পান ঘব বাড়ী করিয়া চিহ্নিত।

কিছু দিবে ধাস্থ বাড়ি বলদ কিনিতে কড়ি শ্বাধন লইবা বিলম্বিত ॥*

১-১ স্থনিয়া তোমার নাম ছাড়িলা আপন ধাম (দী)

২-২ সভে ভব্য ধর্মপথে লোভা ॥ (ক)

৩-৩ দেখিয়া তোমার খেলা (খ, গ এবং বঙ্গ)

⁸⁻⁸ য়েই দেশে কর্যাছি গমন। (দী)

ধন করহ বিশ্বস্থিত। (খ)শ্রাধন না কর বিল্পিক্ত। (বঙ্গ)

ত্যাগ করি, কলিঙ্গে লক্ষ ঘর প্রজা সঙ্গে এক স্থানে করিব নিবাস। বিচার করিয়া তুমি দিবে ভাল বাড়ী ভূমি ১গুনি বীর করয়ে আশ্বাস ॥১ যত চাবে দিব তঙ্ক। কারে না করিবে শৃক্ষ। দক্ষিণ আওয়াসে কর বাস। রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ গান কবি শ্রীমুকুন্দ রাজা কৈলা মঙ্গল প্রকাশ 🛚 ।

গোপ প্রভৃতি জাতির আগমন

নিবসে বিণিকং গোপ না জানে কপট কোপ ক্ষেতে উপজায় নানা ধন। মুগ তিল গুড় মাসে গম সরিষা কাপাসে সভার পূর্ণিত নিকেতন n

১-১ স্থান বড বিরের উল্লাস ॥ (খ) ভনি বীর হৃদয়ে উল্লাস । (বন)

* অভিবিক্ত-ৰীৰ দেই ৰাসা শভ আঁতা প্ৰজা শভ শভ ছাড়ী দবে নিজ নিজ ৰাদ। তেশন ইনাম বাড়ী প্রজা নাহি গণে ক্ডি स्नी প्रका रुपय उद्योग ॥ (मी)

२-२ इनीक (मी) ইনিড (গ)

তেলি বৈসে শত জন৷ কেহ চাষী কেহ ঘনা কিনিয়া বেচয়ে কেহ তেল। কামার পাতিয়া শাল কোড়ালী কোদালী ফাল গড়ে টাঙ্গী 'যমধার' শেল II লইয়া গুৱাক পান বৈসে তাম্বুলী জন মহাবীরে নিত্য দেই বীডা। ংকপূর সহিত পান বীড়া বান্ধে সাবধান^২ কভু নাহি পায় রা**জপী**ড়া। কুম্ভকার গুজরাটে হাঁড়ি-কুড়ি গড়ে-পেটে মৃদঙ্গ দগড়ি গড়ে কড়া। শত শত এক জায় বৈসে তথা তন্তুবায় ভুনী খুনী ধুতি বুনে গড়া॥ मानी रेतरम शुक्रतारि माना स्थान मारे थारि মালা মৌড় গড়ে ফুলঘর। ফুলের পুটলি বান্ধে পুষ্পসাজি করি কান্ধে "দেই পুরে দেব-দেরী-ঘর॥" বারুই বসিয়া পুরে বরজ নির্মাণ করে মহাবীরে নিত্য দেই পান। বলে যদি কেহ লেই বীরের দোহাই দেই অনুচিত না করে বিধান॥

১-১ আঙ্গরাথ(मी)

২-২ লবন্দ কর্পুর চুর্ণ বিড়া বান্ধে অঞ্কণ (দী)

৩-৩ ফিরে তারা নগরে নগর ॥ (খ)

^১নাপিত নিবসে তথা কক্ষতলে করি কাতা^১ করে ধরে রসাল-দর্পণ।

বিশেষ বীরের পাশে বস্তু পায় মাসে মাসে বীরে আসি করয়ে মর্দ্দন॥

[ং] আগুরি বসিয়া পুরে আপনার বৃত্তি করে অমুক্ষণ চিস্তা করে রণ।

করি নানা অস্ত্র-শিক্ষা গুরু বিপ্র করে রক্ষা অনুচিত করে না কখন ॥ ২

মোদক প্রধান জনা করে চিনি-কারখান। খণ্ড লাড়ু করয়ে নিশ্মাণ।

প্সরা করিয়া শিরে নগরে নগরে ফিরে শিশুগণে করয়ে যোগান॥

প্ররাক বৈসে গুজরাটে জীবজন্ত নাহি কাটেও সর্বস্থানে তার নিরামিষ।

পাইয়া ইনাম বাড়ী নিত্য বুনে পাট-শাড়ী দেখি বীর পরম হরিষ ॥

পুরে বৈসে গন্ধবেণ্যা গন্ধ বেচে ধৃপধূনা প্রসরা সাজায়্যা যায় হাটে।

শঙ্খবেণ্যা কাটে শঙ্খ • কেহ তার নহে বঙ্ক•
•মণিবেণ্যা বৈসে গুজরাটে ॥•

আর জত বদে স্থ্র শমরে জেমন করে ধরে তারা কোপাবেস অতি । (দী)

৩-७ मावक चाहे निया वतन जिवक ह नाहि हिश्स (मी)

৪-৪ কেহ তার করে বন (গ)

e-e জার সভ্য য়ানে গুজুরাটে I (গ)

১-১ নাপিত বৈদে পুরে নিত্য দেখাদেখি বিরে (খ)

২-২ আগুরী নিবসে জানা কাম ভূজে বীরবানা বীরের প্রধান শেনাপতি।

কাঁসারি পাতিয়া শাল ঝারি থুরি গড়ে থাল বাটী খোরা বড হাগুী সীপ। সাপুড়া চুণা-বাটা নূপুর ঘাঘর ঘণ্টা সিংহাসন গড়ে পঞ্দীপ 🛚 স্থবর্ণবিণিক বৈসে রজত কাঞ্চন কয়ে ^২পোডে ফোডে দেখায়া সংশয়। কিছু বেচে কিছু কেনে 'নিতি নিতি বাড়ে ধনে' পুর-মধ্যে তাহার নিলয় 🛚 গুজরাটে করি ঘর নিবসে পশ্যতোহর নির্মাণ করয়ে আভরণে। দেখিতে দেখিতে জন হরয়ে সবার ধন হাত বদলিতে ভাল জানে। পল্ল গোপ বৈদে পুরে "কান্ধে ভার করি ফিরে" *ব্যগণে বাখিয়ে বাথানে। রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিয়া বন্ধ শ্রীকবিকম্প রস ভণে॥

১-১ পোড়ে কাটে দেখিলে শংশয়। (ক)

২-২ মহুন্তের ধন আনে (থ এবং দী)

৩-৩ কিনে বিকে বেবহারে (খ)

৪-৪ বনভাগে বদায় বাথান। (দী)

ধীবর প্রভৃতি অগ্যাগ্য জাতির আগমন

পাইয়া ইনাম ক্ষিতি বৈদে প্ৰজা নানা জাতি আনন্দিত বীরের নগরে।

দিয়া দিব্য বাস দান করে বীর বহু মান গীত-নাট সবাকার ঘরে n

মংস্থা বেচে করে ঢাষ তুই জাতি বৈদে দাস কলুরা নগরে পাতে ঘানী।

বাইতি বসিয়া পুরে নানাবিধ বাছা করে ^১মাজুরি বেচয়ে ঘরে বুনি ॥^১

বাগদি বসিল পুরে নানাবিধ অস্ত্র ধরে দশ বিশ পাইক করি সঙ্গে।

মাছুয়া নিবদে পুরে জাল বুনি মাছ ধরে কোচেরা খালই বোনে রঙ্গে॥

নগর করিয়া শোভা বসিল অনেক ধোবা দড়াতে শুকায় নানা বাসে।

দরজী কাপড় সীয়ে °বেতন পাইয়া জাঁয়ে° গুজুরাটে বৈসে এক পাশে ॥

১-১ পুরে ভ্রমে মাঞ্রি বিকি কিনি । (**খ**) পুরে ভ্রমে মাজুরি বিকিনী॥ (দী)

২-২ যাও দিতে তুল্যা (?) জাত স্থতা কা ব্যাটা (?) मलहे घड़हे दिस्म भूदि । মাথা জাল্যা কৃরি মেলা বান্ধিয়া দোলার ভেলা ष्यगांध मनित्न भरम धरत । (मौ)

৩-৩ বেড়ন কবিয়া জীয়ে (বঙ্গ) বেঙত করিয়া লএ (গ)

সিউলী নগরে বৈসে খজুর কাটিয়া রসে
গুড় করে বিবিধ বিধান।
ছুতার পুরের মাঝে চিড়া কুটে মুড়ি ভাজে
কেহ চিত্র করয়ে নির্মাণ॥
পাটনী নগরে বৈসে নিরস্তর জলে ভাসে
পার করি লয় রাজকর।
আসি তথা জগা ভাট বিস পুর গুজরাট
ভিক্ষা মাগি ফিরে ঘরে ঘর॥

'চৌছলি কোরঙ্গা মাঝি চুণারী বাউরি বাজী'
মাল বৈসে পুরের বাহিরে।
চণ্ডাল বসিয়া পুরে লবণ বিক্রেয় করে
্পানীফল কেস্কর পসারে॥

১-১ চছলী চ্নারা মাঝি কোরন্ধা ধোয়রা ধাজী (দী)
চৌহলি চ্ণারী মাঝি কোরান্ধা ভরদাজী (বন্ধ)

অতিরিক্ত—

বিদলা নাগরী ভাট দেখিতে উত্তম ঠাট
বদনে বিশাল জার গোঁফ।
কালসী শ্বমক ধবি অনিরত গায় হরি
টাকা সিকা দণ্ডি লয় গোপ ॥
নগরে অনেক যোগী বিদলা ভিক্ষার ভোগী
কেহ বুনে বদন কম্বল।
সিন্ধা দে ডমুর বায় শ্লপতি-গীত গায়
কানে শোভে শঙ্খের কুণ্ডল ॥
গুজরাটে এক পাঁতি স্ব্যুক্তম ধব্যা তাঁতি
টুরী বৈদে মহেদ মণ্ডপে।
আঙ স্থতে বাদ বুনে শ্লেকব নাহি গণে
ভরত রাজার অবিশাপে ॥

>গায়েন
স্বায় গায় গায়
স্বায়
কয়ালি
ফিরয়ে নিত একদিকে বৈসে মারহাটা। ফিরে তারা গুজরাটে শোলকে 'পিলুই' কাটে ছানি ফাঁড়ে চক্ষে দিয়া কাটা n নিবসে কিরাত কোল হাটেতে বাজায় ঢোল জায়াজীব বসিল °কামিলা • i বাহিরে বসিল হাড়ি ঘাস কাটি লয় কডি ° শুউীর অঙ্গনে যার মেলা ॥° মোজা পানই জিন নির্মায়ে অফুদিন চামার বসিয়া এক ভিতে। বিয়নী চালুনী ঝাঁটা ভোম করে টোকা ছাতা জীবিকার হেতু একচিতে 🛭 লম্পট পুরুষ আন্দে বারবণ্গণ বৈদে একভিতে হইয়া অধিষ্ঠান। রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিয়া বন্ধ শ্রীকবিকঙ্কণে রস গান॥

সিথিয়া ভোজের মাইয়া লইয়া আপন জাইয়া বাজিকর বাজার নিকটে। ঢোল বায় গায় গীত দেখাইয়া বিপ্রীত কুতৃহলে বৈদে গুজুরাটে॥ (দী)

- ১-১ (शायाना (मी) গোছাল্যা (বন্ধ)
- ২-২ পেনই (দী) পিলীহা (বন)
- ৩-৩ কোয়ালা (বন্ধ)
- ৪-৪ মৃচির য়ঙ্গনে যার মেলা॥ (গ)

হাট পত্তন

১মস্করা পুতিয়া বীর বান্ধে বনমালা।১ ুহাট্য়া আনিয়া বীর দিল তাড় বালা॥ ুবেরুণিয়া জন আসি বান্ধয়ে দীপনী। °যত সাধু আসিবেক হাটের কথা শুনি ॥° কেহ তৈল বেচে কেহ বেচে খণ্ড দধি। ভক্ষা দ্রব্য উপহার বেচে নানাবিধি॥ এমন সময়ে ভাড়ুদত্ত হাটে আইসে। পসারী পসার ঢাকে ভাঁডুর তরাসে 🛭 পদবা লুটিয়া ভাঁড়ু ভরয়ে চুপড়ী। যত দ্রবা লয় তার নাহি দেয় কড়ি॥ লতে ভতে গালি দেই করে শালা শালা। আমি মহামণ্ডল আমার আগে তোলা॥ টানাটানি করে ভাড়ু তোলা নাহি ছাড়ে। জটে ধরি কীল লাথি মারে তার ঘাড়ে॥ পিঠে চূণ মাখি হাটুয়া চলিল আদ্দাসে। ভাই বন্ধ পসরা তুলিয়া গেল বাসে॥ নগর দেখিতে হইল বীরের গমন। প্রণাম করিয়া প্রজা করে নিবেদন।।

১-১ য়ম্মবাদ পুতিয়া বির দিল বনমালা। (গ) বাদ পুতিয়া বির বাদে বনমালা (খ)

२-२ श्रभाती (ही)

৩-৩ বেকুণিয়া জন আনি বান্ধে নদীর পানী (বন্ধ)

৪-৪ জত লোক আস্থ্যে সব রাজহাট যুনি ॥ (থ) জত লোক আইসে সভে করে ধলি ধলি ॥ (গ) দুরে হৈতে আসিবেক রাজহাট শুনি ॥ (বঙ্গ)

শুন মহাবীর ভাঁছু দত্তের চরিত।
হাটে গিয়া পদারীকে করয়ে লাঞ্ছিত॥
যত যত জব্য লয় নাহি দেয় কড়ি।
পদার লুটিয়া ভাঁছু ভরয়ে চুপড়ী॥
লণ্ডেভণ্ডে দেয় গালি বলে শালা শালা।
আমি মহামণ্ডল আমার আগে তোলা॥
শুন মহাবীর এই ভাণ্ডুর চরিত।
শ্রীকবিকস্কণে গান মধুর দঙ্গীত॥

রাজসমীপে হাটুরিয়াগণের আবেদন

মহাবীর রাজ্য কর ভাঁডু দত্ত লয়া।
হের দেখ পিঠে চূণ ভাঁডুদত্ত করে খুন
সবে যাব বিদায় হইয়া॥
জানে ভাঁডু নানা ছলা পরদ্ধন্দে ধরে ছলা
টাকা-সিকা নিত্য খায় ধূতি।
ভাঁডু যত পীড়া করে কেবা সহিবারে পারে
পালাইব ছাড়িয়া বসতি॥
চালু লয় চালকির ঘরে কড়ি চাহিলে মারে তারে
ভায়া পান নিত্য লয় ঠেটা।
বানা দেশ হইতে আসে সাধুজন এই দেশে
মিছা বাদে দেয় তারে লেটা॥

১-১ না জানি পালাঞা জাব কতি॥ (থ এবং গ) ২-২ নানা দেস হৈতে আদে সাধু তুমার দেসে নানা বাদ দেয় ভাবে ঠেটা॥ (গ)

নানা দেশ হৈতে আত্যে সাধব তোমার দেশে
নানা বাদ তারে দেই বেটা॥ (খ)
নানা দেশ হৈতে আদে পড়ুয়া বিভার আশে
নানা বাদ দেয় তার বেটা॥ (বঙ্গ)

- ১-১ নিভা ধরে ঘাস-কর দার। (বল)
- ২-২ নিবেদিতে নাহিক স্থহায়॥ (ক এবং গ)
 নিবেদন কৈলু বাঙ্গা পায়॥ (বঙ্গ)
- ৩-৩ গাছ রোপে তায় কলা। (দী) গাছ গাছ রোপে তায় কলা। (বন্ধ)
- ৪-৪ ছাগ মেস জার পথে যায় (দী) ছাগ মেষ যথা পায় (খ এবং বঙ্গ)
- গাছে উঠ্যা তারে মারে ঢেলা। (খ)
 গাছে হইতে ফেল্যা মারে ডেলা। (বন্ধ)
 গাছে উঠি পেলী মারে ঢেলা। (দী)

'নিত্য তার বনী রাণ্ডী কুমারের লয় হাণ্ডী
ভাল ভাল জনে দেয় ঢেশা।'
বাজারে আইলে মাছ লয় তার বাছে বাছ
গালি দেয় বলি কটু ভাষা।
'প্রজার বচন শুনি রোষ-যুত বীরমণি
দূত দিল ভাড়ুরে আনিতে।'
রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ গান কবি শ্রীমুকুন্দ
গিরিরাজ-স্থতার সঙ্গীতে।

কালকেতু-সমীপে ভাঁড়ুদত্তের আগমন

দূতের বচনে ভাঁড়ু আল্য লঘুগতি। জুড়িয়া উভয় পাণি বীরে করে নতি॥ মহাবীর বলে ভাঁড়ু কি তোর ব্যাভার। °কি কারণে লোট হাট রাজার বাজার॥°

১-১ জেবা জার বনী রাণ্ডী লুট ক্মারের হাণ্ডী
ভাল ভাল জান লয় বেটা (দী)
নিজে তার বন্ রাড়ী লুঠ করি লয় হাঁড়ি
কুমার ধরিয়া করে লেটা। (বন্ধ)
২-২ প্রজা দেখি রোসমূত নুপতি পাঠায় ত্ত
সম্ভরেতে ভাপ্তরে আনিতে। (খ)
প্রজাগন যেত ভাসে স্থনী কালকেভ্ রোষে
ভুত দিল ভাঁডুরে আনীতে। (দী)

কি কারণে সূট মোর বেরাজ বাজার । (দী)

হিত উপদেশ বলি শুন ভাঁছু দত্ত।

>আপনি রাখিলে রহে আপন মহত্ব॥
ইনাম বাড়ি তোলা ঘরে তুমি কর ঘর।
ধান বাড়ি নাহি দাও নাহি কলস্তর॥
ইহা শুনি ভাঁছু কহে নত করি মাথা।
ফাহার বচনে খুড়া কহ হেন কথা॥
যতেক আছিলা প্রজা আমার নফর।
আমার বচনে আল্য তোমার নগর॥
কিসের কারণে খুড়া কর মোরে হেলা।
পরস্পরা আছে মোর মগুলিয়া তোলা॥
মগুল বলাতে তোর মুখে নাহি লাজ।
খর্বব হয়া ধরিবারে চাহ দ্বিজরাজ॥

প্রজা নাহি মানে বেটা আপনি মণ্ডল।
নগর ভাঙ্গিলি ঠকা করিয়া কন্দল॥
শুন শুন মহাবীর শুন মোর কথা।
উচিত কহিতে তুমি পাবে মনে ব্যথা॥
যেখানে আমার খুড়া ঘুচালে মণ্ডলী।
দেখিয়াছি খুড়া হে তোমার ঠাকুরালি॥
২তিন গোটা শর ছিল এক গোটা বাঁশ।
হাটে হাটে ফুল্লরা পসরা দিত মাস॥
১

এখন বলহ বেটা রাজার নফর। গৌরব জিনিঞা দেহ তিন সনের কর। (খ)

১-১ আপনি করিলে ত্র আপন মহত। (খ)

^{*} অতিরিক্ত-

২-২ তিন গোটা বাণ ছিল কুলিতার বাঁস। হাটে ফুলরা পশরা দিত বারমাস॥ (দী)

ইএতেক নিষ্ঠুর বল আমার কপাল।
ছুমি ধনমন্ত এবে আমি সে কাঙ্গাল।।ই
ইএমন শুনিয়া বীর ভাণ্ডুর বচনই।
লাঘব করিয়া তারে দিল বিসর্জ্জন।।
ইত্তিজন গজ্জন করি ভাণ্ডু যান পথে।
একলা চলিলা পথে কেহ নাহি সাথে।।ই
ইরিদত্তের বেটা ইই জয়দত্তের নাতি।
হাটে লয়া বেচাইব বীরের ঘোড়া হাতী।।
তবে সুশাসিত হবে গুজরাট ধরা।
পুনর্বার হাটে মাংস বেচিবে ফুল্লরা।।
এত বলি ভাঁডুদত্ত যায় পথে পথে।
দশুমাত্রে ভাঁডু গেলা নিজ আবাসতে।।।

অমুক্ষণ চিম্ভা করে বীরের বিপাক। রাজ-ভেট নিল কাঁচকলা পু[']ইশাক॥

১-১ দৈবযোগে আমি জদি ছিলাম কালাল।
 দেখিরাছি খুড়া হে তোমার ঠাকুরাল॥ (খ এবং গ)
 ২-২ মেত ফনী বীর ভ্তা আদেশন। (দী)
 ৩-৩ বিরের——মে ভাঁড়া তব্জন করিয়া।
 গৃহে জায় ভাঁড়া ওঠ দংশন করিয়া॥ (দী)

* অভিরিক্ত-

নিজগণ লৈরা ভাপু করে অগ্নান।
নাৰজি কহিতে জার নূপতির স্থান ॥
ধনগর্ভে নিচের বেড়্যাছে অহকার।
রাজারে কহিয়া জে ঘুচাব অধিকার ॥
প্রকার বিসেসে আমি আনিব রাজদল।
শুজুরাটে হব ভাপুর সহর মণ্ডল॥ (থ)

চুবড়ি ভরিয়া নিল কদলীর মোচা।
মাগের বসন পরে ভূমে নামে কোঁচা।
মস্তকে বান্ধিল পাগ নাহি ঢাকে কেশ।
১মৃত্তিকার ওতিলক কৈল রঞ্জিত কৈল বেশ।
কৈফিয়তী পাঁজিখান নিল সাবধানে।
১ শ্রীহরি বলিয়াও ভাড়ু কলম গোঁজে কানে॥
ভাড়ুদত্তের জ্যেষ্ঠ ভাই নাম তার শিবা।
পৈঁতাল্লিশ বৎসর হইল নাহি হয় বিভা॥

ছোট ভাই সাম্যবাক্যে নিবারিল ক্রোধ।
বিভা নাহি হয় তার ছই পায়ে গোদ॥
বলে ভাঁডুদত্ত দাদা দৃঢ় কর হিয়া।
এবার মগুলী পাইলে আগে দিব বিয়া॥
"বড় ভাই" শিরে নিল ভেটের আয়োজন।
ধীরে ধীরে ভাঁডুদত্ত করিল গমন॥
দক্ষিণে বিজয়ীপুর বামে গোলাহাট।
সম্মুখে মদনপুর সওয়া কোশ বাট॥
রাজার সভাতে গিয়া হৈল উপনীত।
প্রণাম করিয়া ভেট রাখে চারি ভিত॥

১-১ কেশাইর (দী) কেশরের (বঙ্গ)

২-২ শিব শোঙরিয়া (দী)

শ্বিক্ত—
 অভিমানে ভাপুর দৃষ্ঠি নাঞি চলে।
 কাদ্ধা অন্থবোধেতে তাহার পায়ে পড়ে। (খ)
 ভোট ভাই (খ, গ এবং দী)

° হাস্তি আস্তা বলে তারে রাজপাত্রগণ। অনেক দিবস নাহি আস্তাকি কারণ ॥° জুড়িয়া উভয় পাণি করে নিবেদন। অভয়া-মঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ॥

কলিঙ্গরাজ-সভায় ভাঁড়ুদত্তের আবেদন

ভাঁড় দত্ত বলে বাণী নিবেদিতে ভয় মানি কি তিনাথ চবণে তোমাব।
দিন গোঁয়াও মিছা কাগোঁ মন নাহি দেহ রাজ্যে চোর-খণ্ড না কর বিচাব॥

ংকাননে বধিয়া পশু উপায় করিত বধুং ফুল্লরা বেচিত নাংস হার্টে।

•কোটাল ভ্রমিয়া দেশ দেখুক বীরের বেশ

কালকেতু রাজা গুজরাটে।

পূর্বেক ভাণ্ডে পিত বারি এবে ভেল হেমঝারি বাটী ঘটী থালা হেমময়।

চড়ন পার্ব্বত্য ঘোড়া পরিধান খাসা জোড়া •ঘর তার কুবের-আলয়॥•

১-১ নুপতি ভেটিয়া ভাড়ু বন্দে সবাকায়। রাজা বলে আস্থা ভাড়ু শ্রীমুকুন্দ গায়। (দী)

২-২ কাননে বিশ্বিত্মা পক্ষ্য উপায় করিতা নিত্য (থ)

৩-৩ কোটাল ভ্ৰময়ে দেশ না দেখে বীরের বেশ (বঙ্গ)

⁸⁻৪ দিবা কুপ শকল সাপ্রয়। (দী)

^{24- 2303} B. T.

রন্ধ-তুঃখী নাহি জানি হেমঘটে পিয়ে পানী গীত-নাট প্রতি ঘরে ঘরে। ²या लाक हिन पार्म हिन वीरतत शास्त्र কেহ নাহি কলিঙ্গনগরে॥ বীর বড় ভাগ্যবান তথা লক্ষ্মী অধিষ্ঠান চারিদিকে পাথরের গড়। দ্বারে বাঁধা মত্ত হাতী আছে তার দিবা রাতি কেবা তার হইবে নিয়ভ॥ বার দেয় দণ্ডপাটে রাজ্য করে গুজরাটে কার তবে নাহি করে শঙ্কা। ^২অযোধ্যা-সমান পুরী আমি কি বর্ণিতে পারি স্থবর্গের পুরী যেন লঙ্কা॥ ভাড়ু দত্ত যত কয় এক যদি মিথাা হয় কর তবে প্রাণবধ-দণ্ড। কহি আমি হিতবাণী মন দেহ নূপমণি কালকেতু হইল প্ৰচণ্ড॥

১-১ ঘরে ঘরে জেবা আছে চলিল বীরের কাছে
না থাকীব কলিক নগরে॥ (দী)

ঘরে ঘরে জত বৈদে চলিল বিরের দেশে
না থাকিল কোলিক নগরে॥ (খ)

তব প্রেজা জত বস্তে কলিক রাজার দেশে
না থাকিব ভোমার নগরে॥ (গ)

২-২ জেমন অজোধ্যা স্থান কহি তব বিভ্নমান
বস্থুময় দেখি জেন লাক॥ (দী)

শ্মরিয়া তোমার গুণ শুধিতে আইমু লুণ তার বার্ত্তা জানাবার তরে। চণ্ডী-পদ করি ধ্যান শ্রীকবিকঙ্কণ গান স্থুখে থাকি আড়রা নগরে।

গুজরাটে কলিঙ্গরাজের দৃত-প্রেরণ

ভাড়ুর বচনে উঠে নৃপতির রোষ।
পাত্র-মিত্র বলে সবে কোটালের দোষ।
কোপে আঞা করে রাজা লোহিতলোচন।
কোটাল কোটাল বলি ডাকে ঘনে ঘন॥
আসিয়া কোটাল নূপে করিল জোহার।
কোটালে বান্ধিতে আঞা হইল রাজার॥
রাজা বলে কোটালিয়া রুথা খাস ভূমি।
দেশের বারতা বেটা নাহি পাই আমি॥
১এক রাজ্যে ছই রাজা কেমন বিচার।
ধৃতি খেয়া বুল বেটা কোটাল আমার॥
১এত শুনি কোটালিয়া রাজার বচন।
সকরুণ ভাষে কিছু করে নিবেদন॥১

১-১ এক রাজ্য হই রাজা কৈল মবিচার। (খ) শ্বেক রাজ্যে হুই রাজা কি তোর বেভার। (দী) এক রাজ্যে হুই রাজা হেন অবিচার। (বঙ্গ)

২-২ স্লেতেক কহিলা ভূপ তৰ্জ্জন করিয়া। নিলাপতি কহে তাবে পুটাঞ্চলি হৈয়া।। (দী)

খলেব বচনে নাহি করিবে প্রমাণ।

কালি জানি দিব আমি বীরের সন্ধান।

শ
পাত্র-মিত্র সবে ধরি রাজার চরণ।

দূর কৈল কোটালের নিগড়-বন্ধন।

'ঢাল-খাণ্ডা ছাড়িয়া যোগীর ধরে বেশ।

বিভূতি নাখিয়া কৈল্য জটাভার কেশ।

প্রহরী যতেক পাইক সবে হৈল চেলা।

দক্ষিণ চরণে বান্ধে লোহার শিকলে।

ত্রিবন্ধ মন্ধরা দণ্ড নিল করতলে।।

কেশভার কৈল জটা গলে সিংহনাদ।

কি জানি শিরের পায় হয় অপরাধ।।

১-১ প্রভাতে আনিঞা দিব বিরের সন্ধান। (থ)

* **অ**তিবিক্ত-

এতেক কেটাল জাদি বলিলেক বড়ি।
কোন বেটা কয় আসি আমা নাবুড়ি॥
ভাপুদত্ত বলে গালি দেহ নিসিবাসে।
ভাপুর বচনে লাগে কোটালি তরাসে॥
অকারনে থাসি বেটা রাজার মাহিনা।
নারিকে স্থনায় সিঙ্গা দগড় বাজনা॥
রাজার শুনে থেম ধায় মাগের শুনে পো।
নিসবদে থাকু বেটা না ঘণটাসি মো॥ (গ)

২-২ রাজার বচনে কোটাল ভ্রমিতে চলে দেশ। অভরন তেজি ধরে সন্থাসির বেস। (থ)

ণ অতিরিক্ত—

অঙ্গাত্মলম্বিত ধরে পৃষ্টে ভার জটা। কপালে সোভিত কৈল মৃতিকার ফোটা॥ (ৠ)

দক্ষিণে বিজয়ীপুর বামে গোলাহাট। সম্মুখে মদনপুর সভ্যা কোশ বাট ॥ গুজরাটে নিশীশুর দিল। দর্শন। শিবের মণ্ডপে কৈল ১অজিন আসন ১॥ ভিক্ষাছলে ফিরে চেল। ২পুরে অন্ত দিশাই। কেহ গেল বীর যথা খেলিছেন পাশ।॥ মিষ্ট অন্ন-বাঞ্জনে পূরিয়: দিল থালা। কপূর তাম্বল দিল ঘৃত পুষ্প-মালা॥ নিশাকালে নিশীশ্বর দেখেন নগ্র। °পুরেব দেখিয়া শোভা ভাবেন অন্তর ॥° চারিদিকে ফিরে যত নকর-চাকর। দেখিয়া ফিবেন ভারা নগরে নগর॥ ⁸স্বর্ণময় দেখে ঘব নেতের পতাকা। রাকাপতি বেডি যেন ফিরয়ে বালাক।॥* হাতি ঘোড়া দেখিল বাবের সৈক্সগণ। অভ্যামঙ্গল গান শ্রীক্বিক্স্থণ।।

১-১ বজনি সয়ন (খ)

২-২ পুরে অন্ত দিশা (দী)প্রহরি অষ্ট দিসা (গ)

৩-৩ পূর্ব্বকর্মনা দেখিয়া চিন্তিত অন্তর। (গ) পুরের বর্ণীমা দেখি চিন্তেন অন্তর। (দী)

৪-৪ সৌধময় দেখে ঘর পতাকা স্থলর। দেখে জেন চিত্রের পুত্রী বিশেশর॥ (দী)

কোটালের গুজরাট-দর্শন

দেখিয়া নগর

ভাবে নি**শী**শ্বর

ভাঁড়া কহে সত্য বাণী।

গুজরাট-পুরে

বীর রাজ্য করে

ইহা আমি নাহি জানি॥

মণির প্রকাশ

তম করে নাশ

নিশি-দিন সম দেখি।

বীরের নগরে

রজনী-বা**স**রে

তারা ভাতু চন্দ্র সাক্ষী॥

যত বৈদে লোক নাহি রোগ-শোক

ेमवात मञ्चल वारम I²

স্থুগন্ধি চন্দ্ৰ

অঙ্গে বি**লে**পন

মাল্য শোভে কেশ-পাশে॥

শঙ্খ বেণু বীণা

তুরী ভেরী **না**না

বাচ্চ বাজে ঘরে ঘরে।

ংহয় নাট-গীত

সবে পুলকিত

মঙ্গল প্রতিবাসরে ॥২

১-১ সভার কোশেয় বাস। (हो) সভার স্থন হাস। (গ) সভার কমলবাদে। (বঙ্গ) হরে মোর চিত ২-২ চাকুনিতাগীত মঙ্গল প্রতি মন্দিরে । (দী) দেখি স্বচকিত হয় নাট গীত চঙীর মঙ্গলবারে। (গ)

রম্ভা তিলোত্তম। শচী সত্যভামা বাণী শিবা কিব। উমা। নগরে নাগরী দেখি সারি সারি ভূতলে নাহি উপমা॥

*
বীরের সম্পদ দেখি ক্রতপদ
চলিল। রাজার স্থানে।
কণ্ঠেতে কুঠার মাগে পরিহার
শ্রীকবিকস্কণে ভণে॥ ক

🛊 অতিবিক্ত---

গুজুরাট কথা গুডু চারি ভিতা চৌদিকে বেউড় বাঁশ। অন্তোর সামস্ত নাহি পায় অন্ত

যদি ভ্ৰমে এক মাস॥

পাথরের জড় পাথরের গড কঙ্গুরা পুরট শোভা।

মধ্যে মধ্যে মণি থেন দিনমণি চারিদিকে করে আভা।

নগরের নারী ঘেন বিভাধনী

ভূষণে ভূষিত কায়।

যতেক পুরুষ সনোহর বেশ পীডিত বসন্ত-বায়॥ (বন্ধ)

ণ অতিরিক্ত—

রাজদূতের গুজরাট-বার্ন্তা-নিবেদন

জুড়িয়া উভয় কর মুখে গদগদ স্বর

निद्यमस्य नृপতि-চর্বে।

শুন শুন নরনাথ কহি আমি জুড়ি হাত গিয়াছিলাম বীরের ভুবনে। লৈয়া রাজা নিজ ঠাট মৃগয়াতে গুজুরাট ভ্রমিতে মুগের অন্নেষণে। যত মহাবন ছিল এক চিহ্ন না পাইল তার মধ্যে স্থবর্ণ ভুবনে । সেই গুজরাট-পুরে কত মহাজন ফিরে যেন দেখি দেবতার বেশ। কত কত গুণবান সাধুজন ভাগ্যবান যেন দেখি শ্রীবামের দেশ। কোন জন নাহি তুথী উত্তম অধম স্তথী ধবে দবে বেশ মনোহব। যেমন দেখিলু পুরী কহি তুয়া বরাবরি হেন বুঝি অমর-নগর॥ যথন প্রবেশে নিশি সভে হয়াা সন্ন্যাসী প্রবেশ করিলুঁ সেই স্থানে। प्रिया नीरतद श्रुत मत्म्वर रुवेल मृद ভাড়ুদত সব সহ্য ভণে॥ এক ক্রোশ পথ জ্ডি দেখিল বীবের বাডী পাথবেব গড় চারি ভিত। শত শত সেমাপতি হাথে করি ঢাল কাতি আছে তাৰ সাওয়াস বেষ্টিত।। ঘোড়া হাথী নাহি দীমা তুণ্ডি বাজায় দামা চতুর্দ্ধিগে পদাতির রোল। অনেক সামস্ত সেনা বাবি গড়ে দিয়া থানা অফুক্ষণ করে গণ্ডগোল।। ব্যাধ বড ধনবান দ্বিজে ভাটে দেই দান দাতা বীর কর্ণের সমান। ত্থিলোকে দয়া করে ভয়ানকে ভয় হরে

অৰ্জ্জন সমান ধরে বাণ।।

ব্যাধের ধন্থক-শিক্ষা কেবা ভাহে পায় রক্ষা পেল্যা ধন্ত লোফে হাতৃক্ষণ। দর্পের সমান গজে গোফে তোলা দিয়া ভর্জে বড ক্ষেত্রী ব্যাধের নন্দন ॥ দশুপাটে করে দিয়া আপনার সেনা ন্যা আছে বীর রাজ প্রয়োজনে। কাহারে না করে ভর থজা ধবে থরতর দেখি ডব পাহল বড় মনে॥ - বীর স্থ্যের কান্ডি নথ জিনি হন্দুর্ণাতি গজমতি জিনিয়া দশন। প্রাফুল্লিভ চুই গণ শিরে ধরে ছত্ত দণ্ড বসিয়াছে প্রচও তপন॥ ভন রাজা নর-স্থামি যতেক দেখিল আমি কহি থাদ ২য় পাচ মূথ। দেখিয়া বীরের দাপ অঙ্গ মোর হৈল কাপ বেগে আইল মনে পায়া তথ ॥ যোদ্ধাপতি বীরবর জিনিতে কদাচ পার নিশ্চয় কহিতে নাহি পারি। কোটালিয়া যত কয় 💍 শুনিয়া অন্তরে ভয় ক্রোধয়ত হৈল মধিকারী॥ আরে বাজাহ দামামা কাড়া ঝাটে বাতে দেহ সাড়া দাজন করহ ব্যাধপুরে। যদি সহস্ৰ বাহু হয় শ্ৰীকবিকশ্বণ কয়

তবুত নারিবে মহাবীবে ॥ (বঞ্চ)

কলিঙ্গরাজ-সমীপে কোটালের গুজরাট-বর্ণন*

দেখিলাম গুজরাট প্রতি বাড়ী গীত-নাট যেন অভিনব দারাবতী। ^১অবোধা মথুরা মায়া নাহি ধরে তার ছায়া^১ যেন দেখি ইল্রের বসতি। প্রতি বাড়ী দেবস্থল বৈষ্ণবের অন্ন-জল তুই সন্ধ্যা হরিসংকীর্ত্তন। দেখিলাম অপরূপ স্থান্ধি অগুরু ধুপ বসায়ংকালে ব্যাল্লিশ বাজন ॥^२ প্রতি ঘরে সন্ধ্যাকালে মণিময় দীপ জ্বলে শঙ্খ-घणे। वार्क वीना-(वनी। কাশর মহুরি পঢ়া জগঝন্প বাজে কাড়া মুদক্ষ মন্দির। বাজে সামী। 4 বঙ্গবাসী-সংস্করণ হইতে। ১-১ মথুরা অজোধ্যো পুরী তার শম নাহি ধরি (দী) ২-২ প্রতি বাড়ি অতি ফুশোজন। (দী) ণ অতিরিক্ত --পুরের পরম শোভা দেখিল পণ্ডিত-সভা নানা দায় বিচারে কুসল। বিজ্ঞা-- - বিপ্রগণ নানাম্বানে নানা জন আস্তে বীর যোগায় সম্বল ॥

> হেম **তুলা ধে**ফ দেই দান। প্রতি ঘরে হরিনাম **জপিরা ভাবেন** কাম ইতিহাদ স্থানেন পুরাণ ॥ (দী)

দেথিলাম রাজধর্ম

বিরের নিয়ম কর্ম

আশ্রয়ী কালুর স্থল খেলে পাশা বৃদ্ধিবল গুণিজন থাকে গীত-নাটে।

যেন বীর রাম রাজ। তুঃখিত নাহিক প্রজঃ কোন চিন্তা নাহি গুজরাটে।

নগরে নাগর জনা কানে লম্বমান সোনা বদনে গুৱাক হাতে পান।

চন্দনে চচিচত তন্ত্ৰ হেন দেখি যেন ভানু ত্সর-ব্সন প্রিধান ॥

পাষাণে রচিত গড় দারে মত্ত হাতী বড় নিয়োজিত চৌদিকে কামান।

^২পদাতি সার্থি র্থী কত শত সেনাপতি^২ সেনা-ভরে মহী কম্পান।

১-১ চতুর স্থল (দা)

২-২ রথি পদাতীক হয় কত আছে শয় শয় (দী)

* অতিরিক্ত-

হাটে বাটে আদি করি দেখিলাঙ দর্ব পুরী আড়ে দিগে অনেক জোজন।

দেখিল অনেক বীর বেঞা পাতি বিন্ধে তীর মানে মানে শহণ সাধন।

পত্তীতে পত্তীতে কক্ষা মালের মালানী শিক্ষা তান লাটে গীতের বাথান।

হইয়া বাশ্লী পাতা দেলাশীল চালে মাথা न में ख्या ठाल एवं वर्गभान।

বালক দশমী যুবা সানন্দে খেলায় কিবা সত্য সত্য ভাড়ুব ব**চ**ন [।]

হেন বুঝি মোহাবীরে তোমারে না ভয় করে বির্চিলা একবিৰ ছণ । (দী)

বীরের ঐশ্বর্যা দেখি অনুমানে আমি লখি
ভোমারে না করে ভয় বীর।
রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ গান কবি শ্রীমুকুন্দ
কালকেতু সমরে সুধীর।

কলিঙ্গরাজের যুদ্ধ-সজ্জা

ইকালুর সম্পদ-বাণীই কোটালের মুখে শুনি
কোপে রাজা লোহিত-লোচন।
সাজ সাজ ডাক পড়ে রাহুত নাহুত নড়ে
উত্রোল ব্যাল্লিশ বাজন॥
ইকাট কাট বলি তাজে কলিঙ্গ-নুপতি সাজেই
গজ ঘন্টা বাজে উত্রোল।
সাজ সাজ পড়ে ডাক বাজে দামা রণ-ঢাক
কলিঙ্গে উঠিল গণ্ডগোল ॥
শত শত মন্ত হাতী লইলেন সেনাপতি
শুণ্ডে বাদ্ধে লোহার মুদ্গর।
মাত্ত হাতীর পিঠে ইদল শর খাণ্ডা জাঠেই
গগনে পড়য়ে আড়স্বর ॥

১-১ বীর কালকেতু ধ্বনি (দী এবং খ) কালকেত্র ধ্বনি (বঙ্গ)

২-২ কালু কালু ডাক পাড়ে কলিঙ্গ নৃপতি নড়ে (গ)
কালু কালু বলি তাজে কলিঙ্গ নৃপতি সাজে (খ)

৩-৩ শেষ টাঙ্গি লয় ভীঠে (দী) নানা অন্ত নিয়া ওঠে (গ)

চারি চারি মহা হয় রথেতে জুড়িয়া লয় মহার্থী ধার সারি সারি। ^১ভিন্দিপাল খরশান ত্বক বেলক বাণ ভূষতা ভাবুশ খরধারী ॥ * সঙ্গে নব লক্ষ কাল ধাইল মদনপাল সঘনে ফেলিয়া খাণ্ডা লোফে। <mark>ংহংসহ সেনার ভাবে কিভি টলমল কাবে</mark> ফ্ৰিপতি আদি নাগ কাপে ॥২ আশী গণ্ডা বাজে ঢোল তের কাহন সাজে কোল ুকরে ধরে ভিন ভিরক।ঠি। পরিধান পীতধাড় নাথাতে জালের দড়ি অঙ্গে সবে মাথে রঞ্জা মাটি॥ বিবিধ পাইক ধায় বাজন-নূপুর পায় রায়বাশ ধরে খরশান। সোনার টোপর শিরে ঘন সিংহনাদ পুরে বাঁশে বান্ধে চামর নিশান॥* ১-১ তবক বেলক মাদি প্র অস্ত্র নানাবিধি ভূষতী ভাবুশ শবধারী॥(দী) ২-২ চতুর্গ ভার্থি থরহণ ফনিপতি কোলাহলে য়াদি দেব কাঁপে।। (গ) ৩-৩ কাঁড় ধরে তিন তিন কোটি। (ক) িতিন ভিন তির সভে ধরে। (গ). *-* পাঠান্তর:--দাকে নৃপতির হত় বছ ভূঞা গণযুত করবাল বর্দ্ধ ণিশান। গাজন ণিশানধারী বহু শেনা দক্তে কবি

বৈবীশল চলে আগুয়ান।।

চত্রক দল ধায়

্বৈদ্থিতে না পায় দীননাথ।
বাজার চরণে ধরি

অঞ্জলি করিয়া জোড় হাত ॥
কোন ছার কালকেত্ আপনে তাহার হেতু
কেন রাজা করিবে প্রাণ।
বিহিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিয়া বন্ধ
শ্রীকবিকঙ্কণ রস গান॥

কলিঙ্গরাজ-সেনার যুদ্ধযাত্রা

পাত্রের বচনে করে কলিঙ্গ-ভূপতি।

ত্যাগুদলে যুবরাজ ধায় শীভ্রগতি॥

ভাহিন দিকে কোটাল ধাইল ভীমমল্ল।

ত্রাজার জামাতা ধায় নামে বীরমল্ল॥

•

দোদৰ যমের কালে কোচ দাজে কাংবালে

রণ মাজে আগে দেই হানা।
কৈহ অথে আরোহণ গজপিঠে কোন জন

আগুদলে চলে থানথানা।।

দাজিলা জবনগণ কিরাত কোপীত মন

নানা অল্পগারী আদি টাঙ্গী।

গায় উড়ে পত্রশানা বনজয় বীরবাণা

শিলী ধরি ধাইলা ফিরিঙ্গী॥ (দী)

>-> আচ্ছাদিত কৈল দিননাথে। (থ)

২-২ কোপেতে উমর গাজি ধায় লমুগতি॥ (দী)

৩-৩ বোহিত লোহিত সাজে বিজমে বিদাল ॥ (গ)

সাজ সাজ বলিয়া পড়িল ঘন সাড়া।
আগুদলে ধায় গজ পাখরিয়া ঘোড়া।
বৈণসিংহ রণভীম আর রণঝটা।
তিন ভাই কাঁড় বিদ্ধে দিয়া চুনের কোঁটা॥
পাইক প্রধান তিন ভাই আগুদল।
বাণ-রৃষ্টি করে যেন মেঘে পড়ে জল॥
হয়-বলে আগুদলে রাঘ্য ঘোযাল।
রাজ-পুরোহিত সেই বিষম করাল॥
বতবক বেলক কাছে কামান কুপাণ।
পৃষ্ঠদেশে ভূণেতে পূর্ণিত কৈল বাণ।
পথ ঘাইতে বিভাগ করিয়া দিল ঠাট।
চারিদিকে বেডিল নগর গুজরাট॥

১-১ রণজয় রণিসিংহ রণভীম বীরে। রণঝটা আদি সাজে নানা অন্ত্র করে॥ (দী)

২-২ অজ বিভূশীত জানে শমর-সন্ধান।
পিঠদেশে তুনেতে পুণীত শোভে বান॥ (দী)

* অতিবিক্ত---

পূর্বাহারে নিজোজে কোটাল ভীমরথ।
রাউত মাহত সঙ্গে শেনা শত শত।
নিজোজে বিশাল নাম হয়ার দক্ষিণে।
জার কোলাহলে লোক কিছু নাহি শুনে।
চাপীলা উমরগাজী পশ্চিম হয়ার।
বোল শত তাজি রহে সঙ্গতি জাহার।
বর্গাগল থান বহে উত্তর হয়ারে।
ববে ভঙ্গ দেই অবি স্থনিলা জাহারে।
শহীক্ত সামস্ত চারীদিকে শত শত।
শুকুরাটে শেনা ধায় আচ্ছাদিয়া পথ।

সম্ভ্রমে বীরের পায় নিবেদয়ে চর। গাইল পাঁচালী মুকুন্দ কবিবর॥

চর-মুখে কালকেতুর গুজরাট-আক্রমণ-বার্ত্তা-শ্রবণ

সভা মাঝে বসিয়া দশ দশ বলিয়া

- মহাবীর পাশা খেলে।

*হেনই সময়ে চর জোড় করি তুই কর্ম
সচকিত হৈয়া কিছু বলে॥
শুন হে রণবীর বার হৈয়া দেখ বীর
আস্থো কোন নুপতির ঠাট।
হেন মোর লয় মতি কলিঙ্গ-নরপতি
- খাসিয়া বেড়ে গুজরাট॥

এমন শময়ে বীর ব্যাধের নন্দন।
প্রদক্ষিণ হৈয়া পূজে চণ্ডীর চরণ ।
লইয়া ভণ্ডল তুর্বা চণ্ডীব প্রশাদ।
, মন্তকে বন্দনা করি পাগ বান্ধে ব্যাধ ॥
পাসা খেলিবার হেতু বীর কৈলা মন।
হেন কালে চর আসী করে নিবেদন । (দী)
>-> হেন কালে চরে
সচকিত হৈলা কিছু বলে ॥

ভীষণ অতি বড় আইসে গজ-ঘোড় সিন্দুরে মণ্ডিত মাথা।

ি পূর্বের নাওভ নাথা। ইসিন্দূরিয়া যেন মেঘ আইসে অতি বেগই

গগন ছাড়িয়া হেথা ॥

দেখ্যাছি নিকটে লাখ লাখ শকটে

কামান আস্তে থরে থর।

দেখিয়া সন্ধান করি যে অনুমান

আইসে সেই নূপবর 🛚

গজ-রব শুনি কাঁপয়ে মেদিনী

ঘোরতর আড়ম্বর।

^২করিবর-করে লোহার মুদগরে^২ দেখিয়া লাগয়ে ডর ॥

ঘন বা**জে সিঙ্গ**া-কাড়া।

সানী আর ঢোল চারিদিকে গোল ডিঙিমি বাজিছে পড়া॥°

১-১ সিন্দ্রিয়া মেঘনদ আইদে ফ্রন্ত পদ (থ)

সিন্দ্রিয়া মেঘ যেন আইদে হেন মন (ক)

২-২ করি ঘণ্টা রণ যুনি উড়ে প্রান (থ)

করিবর পৃষ্ঠে শবদ বৃড় উঠে (বঙ্গ)

করিবর ঘণ্টা স্থনী উত্তর্গা (দী)

৩-৩ বাজ্লয়ে অণুপামা রণভেরি দমামা

ঘন বাজে মহুরি কাড়া।

মর্দন বাজে ঢোল বারীয়া স্থন গোল

ভিত্তিম ঘন বাজে পড়া। (দী)

শত শত বাজে ঢাক পাইক ধায় লাখে লাখ কেহ কার নাহি শুনে বাণী। রায়বাঁশ তবকী বেগে ধায় ধান্তকী >অসুরকুলে নিশানী॥> হয়-রবে লাগে তালি উঠয়ে পথধূলি তেজোহীন হৈল ভামু। ছাড়িয়া এই পুর মমতা করি দূর শরণ করহ সানু॥ চর-মুখে ভাষা শুনিয়া পাশা ফেলিয়া মহাবীর সাজে। **ঐ**কবিকশ্বণ কৈলা গীত পণ চণ্ডিকা-পদ-সরসিজে॥

কালকেতুর রণ-সজ্জা

শাজে তবে মহাবীর বিষম সমরে স্থির
চর দেয় নগরে ঘোষণা।

শৈসাজ সাজ ডাক পড়ে রাহুত মাহুত নড়ে
শুনি পুরে ধায় সর্বজনা॥

**

>-> অবনে কলকলি হংগী।। (দী)
আভাদলে কনক নিশানী।। (বঙ্গ)

২-২ শত শত পড়ে শিলী ধায় পাক্য মোহাবলী
বীরপুরে বিবিধ বাজনা ॥ (দী)
শত শত শৈল পড়ে রাহত মাহত নড়ে
শুনি ধায় পুরী-সর্বজনা ॥ (বঙ্গ)

#

কোপে তমু কম্পমান বীর-কাছ পরিধান কনক-টোপর শোভে শিরে।

যুদ্ধের জানিয়া মর্মা পরিল অভেদ বশ্ম

ছই দিকে কাছে যমধরে n

'দোয়াড় চিয়াড় বাণ করবাল খরশাণ' ভূষণ্ডী টাবুস খরশাণ।

ধায় পাইক °বেড়াজাল° ঢালে বান্ধে উরুমাল পায়ে শোভে সোনার নুপুর।

কোন পাইক শিঙ্গা বায় রাঙ্গা ধূলা মাখে গায় রণসিংহ পাকের ঠাকুর॥

বাহুমূলে বান্ধে বাণা রণমধ্যে দেয় হানা "খেদা-পাইক রণে অকাতর।"

ধাইল যতেক রাঢ়
 জাড়ে চৌখণ্ডিয়া কাড়
 বাঁশে বান্ধে হাঁড়িয়া চামর।

মহামিশ্র ইত্যাদি॥

* অতিবি**ক্ত**—

কোপীলান ব্যাধের তনয়। অভয়া-চরণ-ধন ভাবী বীর য়েকমন সাজ সাজ ডাকে অতিশয়।। (দী)

১-১ তুনপূর্ণ করি বাণ চোখ চোখ থরদান (গ)

২-২ কোকন্দ ক্ষচির বয়ান (বঙ্গ এবং থ)

৩-৩ চাপ ঢাল (খ এবং বঙ্গ)

৪-৪ দেখি পাইক রণে অকাতর (গ এবং বছ)

৫-৫ ধাৰাড় পাথার বাঢ় (খ এবং বঙ্গ)

কালকেতুর যুদ্ধ-যাত্রা

>পূর্ব্ব ছুয়ারে রহে কোটাল ভীমরথ। রাহুত মাহুত আর সৈক্স শত শত n⁵ বনিয়োজে বিশাল দামা প্রয়ার দক্ষিণে। যার কোলাহলে কেহ কিছুই না শুনে 🖪 পশ্চিম ছয়ারে রহে সৈদ উমার গাজী। তাহার ভিডনে রহে যোল শত তাজী॥ উত্তর হুয়ারে থাকে রণাগল খান। রণে ভঙ্গ দেয় সেনা দেখি তার বাণ ম চারি দ্বারে রাহুত মাহুত শত শত। গুজরাটে ধায় সেনা আগুলিয়া পথ। এমন সময়ে কালু ব্যাধের নন্দন। প্রদক্ষিণ করি বন্দে চণ্ডীর চরণ॥ অন্ত তণ্ডুল দূর্ববা চণ্ডীর প্রসাদ। মস্তকে ধরিয়া যুদ্ধে চলিলেন ব্যাধ 🛚 পশ্চিম ছুয়ারে গিয়া দিলা দরশন। রাজসেনা সনে বীর করে মহারণ 🖪

অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

শ্ৰীবাম চলিলা জেন বাবন মারিতে। লব কুস ধুৰে জেন শ্ৰীবাম সহিজে॥ (খ)

১-১ উত্তর ত্য়ারে রহে কোটাল মহামতি। রাহত মাহত রহে তাহার সংহতি।।। (প)

২-২ নিয়োজে বিশাল নামা ত্য়ার দক্ষিণে। (বঙ্গ) নিজোজি বিশাল রাম ত্য়ার দক্ষিণে। (খ)

^{*} অতিরিক্ত---

কালকৈতুর যুদ্ধ

(;)

²বীরবাল। তুই ভুজে² বীর কালকেতু যুঝে পশ্চিম তুয়ারে দেয় হানা।

রাহত মাহত পড়ে কদলী যেমন ঝড়ে খর বহে ক্ধিরের খানা॥

^{*}বায়ু বৈসে পত্রভাগে^{*} শমন শরের আগে করাল ভৈরবী বৈসে ভুজে।

শিঞ্জিনীতে বৈদে শেষ উন্মত্ত-ভৈরব-বেশ্ যতক্ষণ মহাবীর যুঝে ৷

° যুঝে দানা রণস্থলে কালকেতু-অন্ধুবলে * উলটি পালটি দেই হান!।

°বাণ-বৃষ্টি করে বীর মেঘে যেন ফেলে নীর ঘন উঠে কৃধিরেব ফেন।॥°

বীর রাজসেনা হানে কৌতুকে যোগিনীগণে সাঁথিয়া পরয়ে মুগুমালা।

রণে অলক্ষিত হৈয়া চৌষটি যোগিনী লয়া উরিলেন সকলমঙ্গলা।

>-> বির বানা বান্দে ভূজে (গ) বীরবাণা ত্ই ভূজে (দী এবং ধ)

২-২ বায়ু বৈদে ধহু আগে (বজ)

৩-৩ যুঝে দানা মহীতলে কালকেতু বীর বলে (ক)

৪-৪ মারে বান ভীমরথ মোহাবীর শত শত আদপথে লুফি লয় দানা ॥ (দী)

রাজদলে দিতে হানা ধায় ষোলকোটি দানা
চণ্ডীর 'আদেশ' ধরি শিরে।
আনন্দে যতেক দানা পিয়ে ক্ষধিরের ফেনা
কালকেতু সনে রণে ফিরে॥
চৌদিকে রাজাব ঠাট ঘন বলে কাট কাট্
পরাক্রমে বীর নাহি টুটে।
চণ্ডিকা সহায় তায় বীরের পাষাণ-কায়
শেল-টাঙ্গি গায়ে নাহি ফুটে॥
'তার বাণে নাহি রক্ষে বাণ এড়ে লক্ষে লক্ষে
ভীমমল্ল রাজ-সেনাপতি।
হয়্যা আনন্দিতমনা মধ্য পথে লোফে দানা
মহাবীর রণে অব্যাহতি॥
'

মহামিশ্র ইত্যাদি ॥

১-১ প্রসাদ (मी)

২-২ জ্বার বলে নাহি রাথ বাণ ছাড়ে ঝাকে ঝাক ভিমমল্ল রাজশেনাপতি। চাল পাতি চালি তায় বানে নিবারিলা তয় (?)
কালকেতু রণে অব্যাহতি। (দী)

শ অভিরিক্ত—
 কোপেতে উমর গাজী চাপিয়া আইলা তাজী
 বিরে বান করয়ে শঘন।
 বণে মোহাবীর তারে তুরঙ্গ শহিত মারে
 ভাজে কোটালের শেনাগণ॥ (দী)

(\(\)

ফেলে অন্ত্র লোফে বীর মারে মালসার্ট।

বিপক্ষ মারিয়া বীর জুড়িলেক নার্ট ॥

চৌদিকে দানা বাজায় দামামা

তবকী তবকে গদেয় রোল।

পাইক দেয় উড়া পাক ঘন বাজে বীর-ঢাক
কেহ কার নাহি শুনে বোল॥

দক্ষিণ ত্য়ারে বীর যুঝে তেজোধাম।
রাবণের রণে যেন যুঝেন শ্রীরাম॥

•

১-১ বিপক্ষ মারিতে বীর জুড়িলেক কাট । (বঈ)

২-২ তবকি তবকি (থ এবং বঙ্গ)

৩.৩ সমরে স্থধীর দক্ষিণ ছ্য়¹রে বীর যুঝায়ে অতি তেজধাম।

বাবনের সনে যেমন মহারণে

যুঝয়ে প্রভু রাম। (क)

দক্ষিণ ত্য়ারে যুঝে বিরবরে

জে ছিল তেজধাম।

লইয়া বানরগণে জেন রাবনের গনে যুঝেন ঞীরাম। (থ)

* পাঠান্তর:---

তুন্দভি সুমধুর ঘন বাজে রণতর

ঘন ঘন বাজয়ে ঢোল।

ছুই দলে মিলিয়া নানা বাণ কাছিয়।
শুজুবাটে উঠিল গোল।

ডিণ্ডিম ডম্বর

পুরয়ে অম্বর

ঘন ঘন বাজে জগঝম্প।

বাজয়ে বেণী

রণজয় সানী

গুজরাটে উপজিল কম্প॥

কোটাল বীরবরে জোরয়ে খর শরে

মেঘে যেন পানির পশলা।

ঠেকিয়া বীরের গায় পাছু হৈয়া পুন যায়

যৈছন পুষ্পের মালা॥

দ্বাগিনী ভৰ্জন অভিশয় গৰ্জন

সমরে বহু আগুলালী।

বেড়িয়া গুজুরাট ভাকয়ে মারকাট

প্ৰকতে বহে নদী থালী॥

নুপতি শেনাগণ হইয়া কোপমণ

করয়ে বাণ ৰবিষণ।

দেখিয়া মোহাবীর হঠল অন্থির

আসীয়া লোফে দানাগণ॥

রণমাঝে আসিয়া মোহাবীর কোপিয়া

ধরিয়া মারে করিবর।

ধরিয়া ধন্ত্বাণে জতেক শেনা হাণে

শত শত পড়ে বীরবর ৷

কোপীয়া বৈরীশন্ত প্রবেশে রণতল

মোহাবীরে সন্ধান পুরে।

কোপে কালকেতু বীর মুঠকী শারী কর

করিবর-সংহতি মারে॥

বীরের পরাক্রম

দেখিয়া ণিরূপম

नुभरमना (महे छन।

জিনিলেক শমর দক্ষিণে বীরবর

স্থনী বিজ নুপতির রঙ্গ। (দী)

কোটালের আগুদল

ধাইল গজবল

লোহার মুদ্দার শুণ্ডে।

রুষিয়া বীরবর

করিল জরজব

মুটকি মারিল মুতে।

ধরিয়া রণে

তুর্ঙ্গ-চরণে

মাথাতে তুলিয়া দিল নাড়া।

>রঙ্গ ছাড়িল

তুরক্ষ পড়িল >

হাতেতে রহিল ফড়া।

বীরবল-লা:ম্ফ

বস্ধা কল্পে

অপ্তকুলাচল ফিরে।

ফণিগণ ছাড়িল

মণিগণ পড়িল

ফণিপতি-মাথা ঘুরে॥

বীরের বিক্রম

দেখি নিরুপম

রাজ্যসনা দিল ভঙ্গ।

<u>শ্রীকবিক</u>ঙ্কণ

করিল নিবেদন

দ্বিজবর নূপতির রঙ্গ॥

(•)

উত্তর ছ্য়ারে ঘন বাজয়ে ডিভিন। বীর তথি যুঝে যেন কুরু-রণে ভীম॥

১-১ ছাড়িল তরঙ্গ

পড়িল তুরক (বঙ্গ)

* অতিরিজ্ঞ-

রণসিংহ রণভীম ধায় রণঝাটা।
তিন ভাই তীর বিদ্ধে দিয়া চূপ-ফোটা।
শেণার প্রধান তিন ভাই আগুদল।
নাণ-বৃষ্টি করে জেন মেঘে ফেলে জল।

সন্ধান পুরিষা মোহাবীর ছাড়ে বাণ। কাডি লয় দানা আসী ধন্থ তিন থান। কোপেতে য়েডিলা বাণ রণাগল খান। রণে ভঙ্গ নাহি দেই অতি কোপবান। তুরক্ষ পদাতি কথ পড়ে তার বাণে। কোপীত হইয়া বীর জুঝে তার শনে। বীব দেখি রণাগল বলে অতি রোসে। বসতি করহ তুমি নুপতির দেশে। নিজ হীত নাহি চিস্ত মরিবার তরে। বাজার প্রধান জন বধিলা শমরে। কাঠুরিয়া ছিলা কিনা কলিল নৃপতি। বর দিয়া রাজা কৈলা দেবী ভগবতি॥ কলিঙ্গ বাজার জানি শকল বারতা। বণ ছাড়ি জাহ তুমি লৈয়া ণিজ মাথা। ঝন ঝন বাজ্যে দোঁহার তর্যার। তুই দলে শিলী ফেলে ধুমে অন্ধকার ॥ কালকেত বীর জানে শমরের শন্ধি। মালে মালে রণ জেন ছ'হে ৰিন্ধ্যাৰিন্ধি॥ ত্বই দলে গোলাগুলী তুঁহে কম্পবাণ। আকর্ণ পুরিয়া তুই দলে য়েড়ে বাণ। তাদিপত্র থাণ্ডা করে বীর মোহাবল। গজের শহিত পডিলান রণাগল। বিষম শহিন্ত চলে দক্ষিণ হুয়ারে। ভ্যানিক বাজে কাডা বীরের নগবে ! উত্তর দুয়ারে জয় করি মোহাবীর। দক্ষিণ ভরারে উত্তরিলা রণধীর। উত্তর ত্য়ারে রাজ-দেনা দিল ভঙ্গ। শ্রীমুকুন্দ কহে সুনী বিজ্বাজ রঙ্গ। (দী) তাড়িপত্র খাণ্ডা প্রসারিল বীরবর।
তুরঙ্গ সহিত কাঁপে পাত্র হরিহর॥
বলে বীর রূপ-সেনা শুনরে উত্তর।
তোহার বেটার সঙ্গে নহিব সোসর॥
সেবকের যোগ্য নহে তোর রূপবর।
বামন হইয়া চাহ ধরিতে শশধর॥
গালাগালি বলাবলি ছই বীরে রোষে।
ফুইজনে যুঝে যেন তুরঙ্গ মহিষে॥
মণি-হেতু রণ যেন কেশরী প্রসেনে।
মাংস হেতু যুদ্ধ যেন সঞ্চানে-সঞ্চানে॥
বীরেব দাবড়ে পড়ে রূপতির দল।
গজবর-চাপনে যেন ভাঙ্গে বন-নল॥

*
ভাঙ্গিল রাজার বল হৈয়া। ছত্রাকার।
শ্রীকবিকঙ্কণ গান পাঁচালীর সার॥

২-২ বিক্রম বাজিল জেন তুরঙ্গ মহিসে॥ (গ)

* অতিরিক্ত:—

কোতৃকে দানাগণ পিএত রুধির।
রাবনের সেনা জেন মারে রঘুবির।
বাণ বিষ্টি করে বির জেন ঝনঝনা।
সিদ্ধু মথনে জেন উঠিল ত ফেনা।
অকালেতে বরিদা হইল গুজারাটে।
রুধিরের তেজেতে বস্থদেবি কাপে।

১-১ বির কোটালের সক্ষে দিছেন উত্তর।
তুছার বেটার দঙ্গে কিদের সমর। (গ)
জানী জানী অরে বট রাজার নফর।
তো সনে উচিত নহে আমার উত্তর। (দী)

(8)

গিয়া পূৰ্ব্ব দ্বারে

মহারণ করে

কালকেতু বীরবর।

বীরের দাবড়ে

সেনাগণ পড়ে

রক্তে নদী বহে খর।।

রধিরের তটনি বহিল সত সত।
দেখি দেবগণ সকল হইল চমকিত॥
থড়া করিয়া হাতে বিরবর যুঝে।
পবন জিনিঞা জেন থগপতি গাজে॥
জম জিনিঞা রাবন মনে হরসিত।
পড়িল য়স্থর জেন বুদ্ধিরহিত॥ (খ)

* পাঠান্তর:--

বীর শমরধীর পুরব ত্রারে ঝাপাই সিংহ-আকার।
অভয়া-পদে নিজচিত্ত ণিবেশীয়া শীর্ভয়ে করে মোহামার। ১।
কোটালের আদেশে জত সেনাপতি ফরিকাল হয় আগুয়ান।
কোপীয়া মোহাবীর ফরিকাল ণিজোজি কাটিয়া করে থান থান। ২।
কোপেতে কোটাল মত্ত করিবর পাঠাইয়া দিলান শমরে।
চণ্ডীর আদেশে দানা আথির নিমিষে স্থণ্ডে ধরি আছাড়িয়া মারে। ৩।
কোপেতে ধানকী পাতিলান ধন্তুক মার মার উঠিলা গোল।
বিয়ের শহীক্তে জত কোটালের শেনা হানে ঘন বাজায় জয়ঢোল। ৪।
কোপেতে নরসিংহ শমর তলে আসিয়া ধন্তুক পাতিলা অতি কোপে।
শেনাপতি বিরেরে মারয়ে অতি থর বাবে দেখিয়া দানাগণ লোফে। ৫।
যোগিণী মিলি অভয়া রণে আসিয়া দৈত্য দানব দানা আনে।
ছক্ষার খাসে পড়িলা রণে কোন বীর দৈত্য দানব করে হানে। ৬।
রাজ পুরোহিত জেত ভিমরণ দেখিয়া ধন্তুকে সন্ধান জোড়ে।
রণপণ্ডীত শেনা মারয়ে লাথে লাখ দৈত্য দানবপতি—। ৭।

বিষম করাল রাঘব ঘোষাল করবাল মারে অঙ্গে। বাজি বার-অঙ্গে করবাল ভাঙ্গে ত্রিপুরা হাসেন রঙ্গে॥ ^১সেনা পায় লাজ দেখি যুবা রাজ বাণ-রৃষ্টি করে বীরে। বরিষয়ে নীরে যেন জলধরে ঢালে বীর তা নিবারে n2 ্রণভীম মল্ল আর বীর শলা শূল-শেল-টাঙ্গী মারে। বীরবর অক্তে তাহা সব ভাঙ্গে রঙ্গে শিবা শঙ্খ পূরে॥१

অধর শুনা কিবা কম্পিত হইলা দ্বাগিনী তর্জন স্কনী।
পুন দেবী বাধতনয়-রণে কোপীয়া জুঝে রণে নাচয়ে যোগীনী।৮।
নানা অস্ত্রে শহীশ্র পড়িলা রণে শত শত রণ তেজে কোটাল আশে।
জিনীয়া শমর বীর চলিলা নিজ পুরী মুকুল ভালে। ২। (দী)
১-১ রণ করে যুবরাজ দেনাপতি পায় লাজ
রাজ-শ্রাসন পুরে।
উভারে বীরে বীর চর্ম-ধরে
চর্মের উপরে ঘুরে। (বঙ্গ)
২-২ ভীমরণ ভীমমল্ল. আর বীর্দেন শল্য

ভান্দি উভারে বীরে।

রক্ষে শিবা শহ্ম পুরে॥ (বঙ্গ)

বীরের অঙ্গে

শেল জাঠি ভাকে

এমন সময়ে

দানাগণ নাচয়ে

বীর মারে মালসাট।

²বীরের বিক্রম

অতি নিরুপম

যমসম জোড়ে কাট ॥^১

রণে বারবর

ধরি করিবর

মাথে তুলি দিল পাক।

গেল শুও ছি'ড়ি

হক্তী রণে পড়ি

সেনা মারে লাখে লাখ 🛭

রাজা রঘুনাথ

গুণে অবদাত

রসিক মাঝে স্থজান।

তার সভাসদ

রচি চারুপদ

শ্ৰীকবিকঙ্কণে গান॥

যুদ্ধ-দর্শনে ভাঁড়ুদত্তের চিন্তা

রাজসেনা ভঙ্গ দিল ভাড়ু ভাবে হুঃখ।
আজি মোরে হৈল বুঝি বিধাতা বিমুখ ॥
পরিবার রহে মোর পাপ গুজরাটে।
গণিতে কাঁকড়ি হেন মোর প্রাণ ফাটে ॥
চিস্তাতে চিস্তিত ভাড়ু বিক্রমে বিশাল।
বিনুর বচনে বলে শুনরে কোটাল ॥
১

১-১ বীরের বিক্রম

ভীম সম যম

সমরে জোড়ে কাট্ কাট্॥ (বঙ্গ)

২-২ নিষ্ঠ্ব বচনে বলে গর্জ্জিয়া কোটাল ॥ (দী)
নির্চ্ব বচনে বলে ভাণ্ডিয়া কোটাল ॥ (বঙ্গ)
বিষ্ণু সঙ্গিয়া বলে গর্জ্জিয়া কোটাল ॥ (ক)

সেনাপতি সামস্ত সভার বিজ্ঞমান।
বীরকে ধরিতে তুমি আগে নিলে পান।
বৈক লক্ষ টাকা তুমি খাইলে যে ধৃতি।
ভাঁডুদত্ত জীতে পালাইয়া যাবে কতি।
গাছ দাগে ডাল ভাঙ্গে লোকে করে সাক্ষী।
কোটালে ভাঁডুর বোলে লাগিল ভেলকী॥
তরাসে কোটাল পুন গুজরাট বেড়ি।
রহ রহ বলিয়া দামামায় পাড়ে বাড়ি॥
সমর করিতে পুন আইসে কালকেতু।
ব্লুল্লরা নিষেধ করে জীবনের হেগু॥
অভ্যার চরণে ইত্যাদি।

কালকেতুর প্রতি ফুল্লরার উপদেশ

প্রাণনাথ শুনহ আমার উপদেশ।
হারিয়া যে জন যায় পুনরপি আসে তায়
হেতু কিছু আছয়ে বিশেষ।

১-১ ভন্ধা লক ৰিরের খাইয়া পারা ধৃতি। (দী)

এখন কোটাল খেম খাঞা জায় ধৃতি। (গ)

এখন লক্ষ খানেক তন্ধা খায়া যাহ ধৃতি। (বন্ধ)

২-২ ফুল্লরা ব্ঝান তারে জীবনের হেতু। (থ এবং বছ)
ফুল্লরা বলয়ে কিছু জীবনের হেতু। (দী)

^১যদি আছে জীতে আশ ছাড়ি এদেশের বাস ^১ প্রাণ নিয়া যাহ মহাবীর। ্মাজি পূর্ণ হৈলা কাল সাজি আইল মহীপাল তার রণে কেবা হবে স্থির ॥ °নখর-রঞ্জিনী নক় • নাহি কাটে তাল-তরু ফুল্লরার রাখহ আদাস। কহি আমি সবিশেষ যদি না ছাড়িবে দেশ শুন রামায়ণ-ইতিহাস॥ সুগ্রীবে জিনিয়া রণে দয়াতে রাখিল প্রাণে আরোপিয়া হৃদয়ে পাষাণ। বিষম সমরে বীর কিষ্ণিন্ধ্যা আইলা ধীর জয়-ঘণ্টা বাজায়ে বিষাণ॥ •স্থীব পালায়্যা যায় সাশাসিল রাম তায় সখাভাব দোঁহে ঋষ্যমুকে। স্থাীব রামের তেজে বালির ছয়ারে গর্জে ধায় বালি রণ-অভিমুখে॥

১-> যদি আছে জিজিবিদা তেজিয়া দেশের আসা (দী)

যদি থাকে প্রাণ-আশ ত্যুক্তি নিজ দেশ বাস (বন্ধ)

২-২ পোহাইলে রাত্রিকাল কালি আসি ক্ষিতিপাল

তার বানে কেবা হব স্থির ॥ (স)

৬-৩ চোথ নর্মনি ভির (গ)

নথর রঞ্জিণী খুর (দী)

⁸⁻⁸ স্থগ্রিব পালাঞা জায় য়াইনে রামের ঠাঞী সক্ষা করে পর্বত রিসিমূখে। (গ)

কান্দিয়া এমন কালে চরণে ধরিয়া বলে পতিব্রতা বালির রমণী।
শুন মোর নিবেদন আজি না করহ রণ হেতু কিছু আমি মনে গুণি।
যে জন তোমার ভয়ে ঋয়ুমূকে স্থির নহে সে জন হুয়ারে দেয় ডাক।
ইহন বুঝি কার বলে আইল বীর রণস্থলেই ছলে পাছে পাড়য়ে বিপাক।
বালিরে বিড়ম্বে বিধি না ধরে জায়ার বুদ্দি সমরে পড়িল রাম-শরে।
ফুল্লরার কথা রাখ কতক কাল জীয়া থাক না যাইহ রাজার সমরে।
ফুল্লরার কথা শুনি হিতাহিত মনে গুণি লুকাইল বার ধান্ম-ঘরে।
রামায়ণ-উপাখ্যান শ্রীকবিকক্ষণ গান

কোটালের চিন্তা

স্থাংখ থাকি আড়রা নগরে।

লইয়া রাজার ঠাট বৈড়ে পুন ওজরাট কোটাল ভাবয়ে মনে মনে। নাহি শুনি শিঙ্গা কাড়া না পাই বীরের সাড়া হেতু কিছু আছয়ে গণনে॥

১-১ হে মোর লয় মনে কোন জন আল্যা রণে (ক এবং খ) 26—2808 B.T.

শক্কিত হইয়া মনে নাহি রহে এক স্থানে

'নির্থয়ে চঞ্চল লোচনে।'
লুকাইয়া রহি ব্যাধ পাড়ে পাছে পরমাদ

এই চিস্তা করে মনে মনে॥

দেয় কোটাল লাফঝ^{*}াপ তরাসে অন্তর কাপ আশ্বাস করয়ে সেনাগণে।

প্রবি দিব কালকেজ ভয় নাহি তার হৈছ

ধরি দিব কালকেতু ভয় নাহি তার হেতু একলা ধরিয়া দিব রণে॥

আপনা ব্ঝাতে নারে পরেরে প্রবোধ করে শভয়ে আসে করে টলটল।

চলিতে না চলে পা মুখেতে না সরে রা তরাসে কোটাল ক্ষীণবল॥

উভ করি হুই শ্রুতি গুজরাটে দিল মতি নিবারিয়া সকল বাজন।

যদি উচ্চ স্থল পায় সন্থরে উঠিয়া তায় আট দিকে করে বিলোকন n

সখনে স্মরয়ে ধর্ম কেন কৈলু হেন কর্ম মনে ভাবে সংশয় জীবন। বীর কালকেতু-ভয়ে কেহ লুকাইয়া রহে ছল করি রহে কোন জন॥

১-১ নিরবধি চঞ্চল লোচন। (দী) অফকণ চঞ্চল নয়ন। (গ)

২-২ ভয় য়ঙ্গ পূলকে পট্টল।(দী) ভয়ে অঙ্গ পূলকি উঠিল।(বন্ধ)

কোটালের ভয় দেখি ভাঁড়ু দত্ত হইল তুখী
কহে কিছু বিশেষ উপায়।
রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ গান কবি শ্রীমুকুন্দ
হৈমবতী যাহারে সহায়॥

ভাঁড়ুদত্তের কালকেতু-অন্বেষণে গমন

ৰাহির-গড়েতে সবে থাকহ বসিয়া। মোর বুদ্ধে মহাবীরে আনিব ধরিয়া। মোর সঙ্গে দেহ তুমি একটি ব্রাহ্মণ। তার হাতে পান দেহ কুসুম-চন্দন॥ রাজা দিয়াছেন পান তোমারে প্রসাদ। এবোল বলিয়া আমি ভাণ্ডাইব ব্যাধ। ছলবুদ্ধে দেখে আসি বীরের চরিত। সাড়া নাহি দেয় বেটা করে কোন্ রীত ॥ আপনার বলে তুমি থাক সাবহিত। বীরের বুঝিয়া কাজ আসিব ঝটিত।। ২তোমা সনে নিবন্ধ করিত্ব ছই দণ্ড।^১ ইহা বহি পুর বেড় হইয়া প্রচণ্ড।। ভাঁড় র সুযুক্তি কোটালের লাগে মনে। আপনার ব্রাহ্মণ দিলেন তার সনে॥ ব্রাহ্মণ সহিতে ভাঁড়ু চলে সচকিত। বীরের হুয়ারে গিয়া হৈলা উপনীত।

১-১ তোমার সঙ্গে সঙ্কেত করিল ছয় দণ্ড। (গ)

এক দার ত্ই দার ভাঁড়ু দন্ত যায়।

ত্য়ারী প্রহরী কিছু দেখিতে না পায়॥

সভয় হইয়া যায় চারি পাঁচ দ্বার।

'জনশৃত্য দেখে যত উন্তান বেহার॥'

সপ্তম মহলে দেখে ফুল্লরা স্থানরী।

আগে পাছে বসিয়াছে পঞ্চ সহচরী॥

খুড়ী খুড়ী বলি ভাঁড়ু করয়ে জোহার।

অঞ্জলি করিয়া কহে 'কপট প্রকার'॥

অভ্যার চরণে ইত্যাদি॥

ফুল্লরার নিকট ভাঁড়ুদত্তের কপট-বা

শুন গো শুন গো খুড়ী যত কার্য্য ছিল ডেড়ি আমি তাহা কৈলু সমাধান। খুড়া মোর কোথা গেলা এই শুভক্ষণ বেলা লউন আসি নূপতির পান॥ না করিয়া নিবেদন কাটাল্য গহন বন এই হেড়ু নূপতির রোষ। গ্রীরের পাকাল্যা দেখি রাজা হইলা বড় সুখীণ বীরে বড় হইলা সম্ভোষ॥

১-১ রাজার ঐশ্বর্যা দেখে উভামে অপার। (বঙ্গ)
রাজার লক্ষণ দেখে উভাম অপার॥ (ক)

২-২ কপট ব্যভারী (বন্ধ) কপট বেভার (খ)

৩-৩ বীরের মর্দ্ধানা দেখি রাজ্পা হৈলা মোহা মুখি (থ) বীরের দেখিয়া বন নিপ বিশায় মন (গ)

বীরের ধনের বাদ ছিল বড ১পরমাদ নাবড়ে কহিল রাজ-স্থানে। কহিতু অনেক স্থায় খণ্ডিল সকল দায ভয় কিছু না করিহ মনে। মনে পেয়াা পরিভোষ ক্ষেমিল সকল দোষ বীরকে করিব সেনাপতি। গুজরাটে জায়গীরি আর দিবে মধুপুরী হবে তুমি বড় ভাগাবজী 🖪 আমার বচন শুন খুড়ারে ভাকিয়া আন মনে কিছু না করহ শঙ্কা। ^২নিজ যদি পর হয়^২ তবে বিপক্ষের ভয় বিভীষণে নাশ কৈল লক্ষ্য 1 রথ পত্তি ঘোড়া হাতী যত সৈক্য সেনাপতি বীর হবে সবার প্রধান। পান দিয়াছেন হাতে ব্ৰাহ্মণ দিলেন সাথে অবিলম্বে করুন পয়াণ॥ প্রাণদাতা তোর স্বামী তাহার সেবক সামি মনে না করিবে কিছু আন। খুড়া কৈল অপমান শনাহি মোর অভিমান তার কার্য্যে আমি সাবধান ॥

১-১ অপবাদ (গ)

২-২ নিচ যদি আপন হয় (খ)

৩-৩ আমি না করিল মান (গ)

'ঠকের মধুর বাণী' এক চিত্তে রামা শুনি
ধান্য-ঘর কৈল বিলোকন।
স্ফাতুর ভাঁডুদত্ত
ইঙ্গিতে বুঝিলা তত্ত্বং
বিরচিলা শ্রীকবিকশ্বণ।

একাকী কালকেতুর যুদ্ধ

ভাঁডুর বিলম্বে কোটোয়াল দপ্তে

বেঢ়িল বীরের ঘর।

*গজের আড়স্বর শুনিয়া বীরবর বাহির হইলা সহর ॥

যুঝয়ে বীর-কোটালে।

ধরিতে যেই যায় মুটকির ঘায়

পড়য়ে অবনীতলে॥

ৎদেখিয়া রণজয় তেজিয়া প্রাণভয়

বাধতে ধায় তুই মাল।

তুই মুটকির ঘায় তুহে গড়াগড়ি যায়

শিরে ঘা হানে কোটোয়াল।।*

১-১ এত বলে ঠগ বাণী (বঙ্গ)

২-২ বুঝিল কার্য্যের তত্ত্ব (বঙ্গ, খ এবং গ)

৩-৩ গজ বারে গর্জে স্থান বির তর্জ্যে (গ) ৪-৪ মুটকীর ঘায়ে কুঝিবারে জায়ে

৫-৫ তেজি প্রাণভয় রণে স্থির নয়

ধরিতে আইল ছই মাল।

হুই মুটকির খায় গড়াগড়ি জায় তাহারে আনে কোটোয়াল ॥ (গ)

>ধরিয়া বীর রণে তুরঙ্গ-চরণে মাথাতে তুলিয়া দিল নাড়া। ত্রঙ্গ পড়িল রঙ্গ ছাড়িল হাতেতে রহিল ফড়া॥ ধরিয়া মুতে করিবর শুংগু মটকি মারিয়া দিল টান। ভাঙ্গিল মণ্ড ছিভিল শুও কাঁকডি যেন খান খান॥ বীরের বিক্রম দেখিয়া নিরুপম অভয়া চিন্তেন মনে। ললিত ছন্দে পাঁচালী প্ৰবন্ধে শ্রীকবিকঙ্কণ ভণে॥ তেজিয়া প্রাণভয় ন্নে বীর রণজ্ঞয় ধরিতে আইল তুই মাল। িঘায় তুহে গড়াগডি যায় শিরে ঘা হানে কোটাল॥ (বঙ্গ) তুই মুটকির ঘায় ১-১ পাঠান্তর---কেহ কাছি ধন্দকে হইয়া কৌতুকে বাণেতে ছাইলা আকাস। শাণাতে ঠেকি বাণ হইলা থান থান দেখি সবে পাইলা তাশ। বীর কাহে ধরিয়া পেলিলা তুলিয়া ভূমিতে পড়ি হইলা চুর। · উভ করি বীরবর ধরিয়া করিবর পাকা দিয়া ফেলাইলা পুর। পদ্মাবতী মিলিয়া এত সব দেখিয়া অভয়া চিস্তেন মনে। অভয়া-চরিত স্থ্রচন ললিত মনোহর মৃকুন্দ ভণে। (দী)

কোটাল-কর্তৃ ক কালকেতুর বন্ধন

বীরের শাপের কাল হৈল অবসান।
স্বরপুরে না যায় ইন্দের অভিমান ॥
সমপুর্ণ সময় হৈল কাল নাহি আর।
ইহার ভিতরে চাহি পুজার প্রচার ॥
বৈমন বিচার চণ্ডী করি পদ্মা-সনে।
ইঙ্গিতে বীরের বল হরিলা সেখানে॥
চতুরঙ্গ দলেতে কোটাল বীরে বেড়ে।
সৈত্যের ঠেলাঠেলি বীর ভূমে পড়ে॥
দশ বিশ জনেতে ধর্য়ে এক হাত।
বীরে ধরি কোটাল সোঙ্রে বিশ্বনাথ॥
গাজের শিকলি দিয়া বান্ধে মহাবীর।
হাতে বাঘ-হাতা দিল গলাতে জিঞ্জির॥
কন্টী করি মহাবীরে করিলেন দ্য়া॥
বন্দী করি মহাবীরে করিলেন দ্য়া॥

১-১ বিংশতি বৎসর হইল (থ, গ এবং বঙ্গ)

২-২ এমন যুক্তি মাতা কৈলা পদা সনে । হয়িল বিরের বল দেবি সেই স্থানে ॥ (খ) স্থা সঙ্গে জুক্তি চণ্ডী করিয়ে সকল । সেই ক্ষণে হরিলা বীরের বাছবল ॥ (দী)

৩-৩ হাথে হাতা দিয়া বান্দে কালকেতু বিরে।
চরনে ভাষুকা দিল গলায় **জি**ঞ্জিরে। (খ)
মাথে হাথ দিয়া কান্দে মহাবির।
চরণে ভাঙকা দিল গলাতে জিঞ্জির॥ (গ)

এমন সময়ে আসি ফুল্লরা স্থন্দরী। গলাতে কুড়ালি বান্ধি করয়ে গোহারি॥ অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

কোটালের প্রতি ফুল্লরার বিনয়

না মার না মার বীরে নির্দিয় কোটাল।
গলার ছিণ্ডিয়া দিব শতেশ্বরী মাল॥
চুরি নাহি করি আমি ডাকা নাহি দি।
ধন দিয়া গেল হুর্গা হেমস্তের ঝি॥
গো মহিষ ধান্ত লেহ অমূল্য ভাণ্ডার।
নফর করিয়া রাখ স্বামীরে আমার॥
কুলিতার ধন্ত দেহ তিন গোটা বাণ।
মাটিয়া পাথরা আর পুরাণ খুঞা খান॥
'ইহা দিয়া নেহ কোটাল যত আছে ধন।
বারেক রাখহ মহাবীরের জীবন॥'
বিচার করিয়া দেখ দোষ নাহি করি।
নিজ্ঞ ধন দিয়া চণ্ডী বসাইল পুরাঁ॥

১-১ মোর নিবেদনে তুমি রাথ প্রাণনাথে।
ফুলরার রক্ষা কর বারেক আইয়াতে॥ (দী)
দিয়া কুলিতার ধয় তিন গোটা বাণ।
ধন নিয়া তুমি বীরে কর পরিত্রাণ। (বঙ্গ এবং থ)

কারু নাহি লই রাজ্য কড়ি এক পণ।

তৌলিয়া গণিয়া নেহ যত আছে ধন।।
ঘোড়াশালে ঘোড়া নেহ হাতীশালে হাতী।
নেহ মোব যত আছে যুদ্ধ সেনাপতি।।

*নিশ্চয় বধিবে যদি বীরের পরাণ।
এক অসি-ঘাতে আগে ফুল্লরারে হান।।
তবে সে করিহ তুমি বীরের প্রাণদণ্ড।

*পিতৃ-পুণ্যে আগে মোরে জ্বালি দেহ কুণ্ড।

*
কুঞ্জরে লাদিয়া নেহ যত আছে ধন।
বারেক রাথহ মহাবীরের জীবন।।

কুঞ্জরে লাদিয়া নেহ যত আছে ধন। বারেক রাখহ মহাবীরের জীবন।। ফুল্লরার বিলাপ শুনিয়া নিশীশ্বর। মধুর বচনে তারে দিলেন উত্তর।। অভয়ার চরণে ইত্যাদি।।

১-১ ললিয়া গজিয়া (ক*)* ললিয়া গড়িয়া (দী)

২-২ নিদ্য়া হইয়া জ্বদি বধিব পরাণ। একু অদি ঘাতে নেহ আমার পরাণ। (গ)

৩-৩ চিতা জালি আমারে দেহ অগ্নিকুণ্ড। (খ)

^{*} অতিরিক্ত—

গো মহীষ ধান্ত লহ অমূল্য ভাণ্ডার। বিপদ-শাগরে তুমি হয় কর্ণধার॥ পিতা হৈয়া দোহাকার রাখি জাহ প্রাণ। দিয়া কুলিতার ধহু ভিন গোটা বাণ॥ (দী এবং থ)

ফুল্লরাকে কোটালের সাস্ত্রনা-দান

কালকেতুকে লইয়া রাজসভায় গমন

শুন শুন মোর বাক্য ফুল্লব। সুন্দরি। আমার শক্তি বীরে ছাড়িতে না পারি 🛭 পরের অর্ধান আমি নহি স্বতন্তর। 'লঘুদোষে গুরুদণ্ড করে নুপবর॥' কহিছে তোমারে আমি স্বরূপ বচন। রাজারে বুঝায়ে আমি রাখিব জীবন। প্রবোধ না মানে রামা কান্দয়ে ফুল্লরা। বীরে নিয়ে যাইতে হৈল কোটালের তর। ॥ হাতে বাঘ-হাত। দিল গলাতে জিঞ্জির। চরণে ডাড়ুকা দিয়া বাংশ্ব মহাবীর n তুলিল কোটাল বীর গঞ্জের উপর। চৌদিকে বেডিয়া সেনা চলিল সহর॥ দক্ষিণে বিজয়পুর বামে গোলাহাট। সম্মুখে মদনপুর সভয়া ক্রোশ বাট॥ দিবা অবশেষে কোটাল প্রবেশে কলিঙ্গ। ংকলিঙ্গনগর ধায় দেখিবারে রঙ্গ ॥ १ বার দিয়া বসিয়াছে কলিঙ্গ-ভূপাল। ত্রাজ্ঞার দক্ষিণে বৈসে বিজয় ঘোষাল॥°

লঘু দোদে রাজা দণ্ডে তব প্রোণেশ্ব ॥ (দী)

কলিঙ্গের জ্বত লোক দেখিতে গায় রঙ্গে॥ (গ এবং বন্ধ)

ডানী ভাগে পুরোহিত বিষয় ঘোষাল।। (मी) সমুখেতে পুরোহিত বিজয়ী ঘোষাল।। (বন্ধ)

বামদিকে মহাপাত্র নরসিংহ দাস। সম্মুখে পাঠক চন্দ পড়ে ইতিহাস।। রাজার সভাতে বৈসে স্থপগুত-ঘটা। পরিধান পীত বাস ভাল-জুডি কোঁটা।। নয় পুত্র ছয় নাতি আঠার ভাগিনা। গুণিগণ গায় গীত বাজাইয়া বীণা॥ চারিদিকে রাহুত মাহুত সেনাপতি। মহলা করয়ে গজ তুরঙ্গ পদাতি॥ সামস্তের অধিপতি নূপতির মামা। সভাতে বসিয়া শুনে কোটালের দাম।॥ বিচার করয়ে তারা নিয়া সভাজন। হেন বুঝি কোটাল জিনিয়া আলা রণ॥ এমন সময়ে আইল তথা নিশাপতি। বীরে ভেট দিয়া কৈল রূপেরে প্রণতি।। বীরকে দেখিয়া রাজা লোহিতলোচন। ভীষণ ভাষায় কিছু বলেন বচন।। অভয়ার চরণে ইত্যাদি॥

কলিঙ্গ-নৃপতির সহিত কালকেতুর কথোপকথন

কোন্ দেশনিবাসী নিবাস কোন্ গ্রাম। তোমার রাজ্যের রাজা তার কিবা নাম॥ কেবা তথা মহাপাত্র কেবা অধিকারী। ব্যার তেজ ধর তুমি কার আজ্ঞাকারী॥

১-১ এত তেজ ধর ব্যাধ কার অজ্ঞাকারি॥ (খ) য়েতেক বা ধর তেজ কার আজ্ঞাকারী॥ (দী)

আমারে না চেন ব্যাধ হইয়া প্রবল।

মচিরাতে তোরে আজি দিব প্রতিফল॥

গুজরাটে বসতি নিবাস চণ্ডীপুর।
আমার রাজ্যের রাজা মহেশ ঠাকুর॥

মামি তথা মহাপাত্র চণ্ডী অধিকারী।
ভাঁর তেজ ধরি আমি ভাঁর আজ্ঞাকাবী॥
বিচার করিয়া রায় মোরে কর রোষ।
পরিণামে জানিবে কালুর নাহি দোষ॥
ছুত্যে না যুয়ায় বেটা অতি নাচ জাতি।
সভামাঝে বসিয়া কথার দেখ ভাতি॥

কোন্ সাধুজনে বধি নিলি বেটা ধন।

মোরে না কহিয়া বেটা কাটাইলি বন॥

গগুজরাটে রাজা হইতে কর অভিলাষ।
কত শত সেনাপতি করিলি বিনাশ॥

কোন সাধুজনে রায় নাহি করি বধ।

ধন দিয়া চণ্ডী মোর বাড়াল্য সম্পদ।

১-১ অচিরাতে পাবে আজি জনমের ফল ॥ (গ)

২-২ পদ্মা (গ)

৩-৩ কোন সাধু বধিয়া তাহার পাইলে ধন।

য়ামা য়গোচর বেটা কাটাইলে বন॥ (গ)

কোন সাধুজনে বধি পালী বহু ধন।

আমা না গোচর করি কাটালী কানন॥ (দী এবং খ)

⁸⁻⁸ ধনের গরবে বেটা কর উপহাস।
সে সকল সেনা মোর করিলে বিনাষ॥ (খ)
ধনের গরবে মোর কর পরিহাস।
কত কত সেনাপতি কৈলী মোর নাশ॥ (দী)

নিজ ধন দিয়া চণ্ডী কাটাইল বন। >তাঁর ধন দিয়া তথি বসাইল জন॥> মোর বোলে অবধান কর নুপমণি। দোষ-গুণের ভাগী হন নগেন্দ্রনন্দিনী। মরীচি বিরিঞ্চি প্রজাপতি পুরন্দর। ধেয়ানে যাহার পদ না পায় গোচর।। নীচ জাতি ব্যাধেরে চণ্ডিকা দিলা ধন এমন কথাতে পাতিয়ায় কোনু জন 🛭 অবিলম্বে এই ব্যাধে দেহ গজতলে। এমন বচন যেন কেহ নাহি বলে॥ দেহ যদি গজতলে নিবারিতে নারি। ^২লভ্য অপচয়-ভাগা হন মহেশ্বরী॥^২ বেচেছি আপন তন্ত্র চণ্ডিকার পায়। তোমার ভর্জনে কালকেতু না ডরায়॥ অবধান কর রায় শুন নিবেদন। জনম লভিলে আছে অবশ্য মর্ণ॥ রাজার বচনে গজ আনে মহাকায়। চরণে ধরিয়া সবে রায়ে নিবেদয়॥ নিবিষ্ট করিয়া মন অভয়ার পায়। মধুর মঙ্গল কবি এীমুকুন্দ গায়॥

১-১ চপ্তির রাদেলে য়ামি বসাইল জন।। (গ)

২-২ লভ্য অপচয় অধিকারী মাহেশ্বরী॥ (দী)

কালকেতুর কারাদণ্ড

পাত্রমিত্র পুরোহিত বুঝার নূপতি। বীরকে বধিতে কেহ না দিলা গন্থমতি॥

চণ্ডীর চরণ বিনে নাহি জানে আন।
বীরকে বধিতে কেহ না দিলা বিধান॥
সভার বচনে রাজা নাহি বধে বীরে।
বন্দী করিতে আজ্ঞা দিল কারাগারে॥
দশ বিশ পোতামাঝি বীরে নিয়া যায়।
১এক-মুঙা বন্দিঘরে১ প্রবেশ করায়॥
১শওয়া ক্রোশ ঘরখানি একটি ছয়ার।
দিবসৈ ছপুরে তাহে ঘোর অন্ধকার॥১
প্রবেশ করায় নিয়া আন্ধারিয়া কোণে।
১শত শত বন্দী তথা আছে স্থানে স্থানে॥১
কিচি কিচি করে ছুঁচা মৃষিকী মৃত্তিকা।
বহু কীট পোকা আছে উড়ধ মন্দিকা॥

^{*} অতিরিক্ত-

রাজার ভর্জনে ব্যাধ নাহি করে ভয়। দেবভার রুপা হেতু আছয় নির্ভয়। (দী)

১-১ য়েকম্কি বন্দীঘরে (দী)

২-২ ঘর্থান শ্য়া ক্রোশ বন্দির আলয়। অন্ধকার দিবদে তুপরে তায় হয়। (দী)

৩-৩ অত পাষী বন্দী তথা আছে চিরকাল। (দী) শত শত বন্দী তথা আছে পণে পণে। (বঙ্গ) অত বাস বন্দি তথা আছে পনে পনে। (থ)

বন্দী দেখি কালকেতু বলে ভাই ভাই।

'উসারিয়া দেহ মোরে একটুকু ঠাঞি॥'

'হাড়ি দিয়া মহাবীরে কৈল উভমুঙা।'

চারিদিকে পোতামাঝি দেয় ভূষের ধুঁয়া।
জাটে দড়ি দিয়া চালে টাঙ্গে মহাবীরে।

'হাতে বাঘ-হাতা দিল গলায় জিঞ্জিরে॥'

বুকে ভূলি দিল পাঁচ সাঙ্গের পাথর।

পাথর চাপনে বীর করে থর থর॥

"মনে ভাবে মহাবীর বড় পরমাদ।

ফুল্লরা স্মরিয়া বীর জুড়িল বিষাদ॥'

অভয়ার চরণে মজুক মোর চিত।

শ্রীকবিকঙ্কণে গান মধুর সঙ্গীত॥

কালকেতুর খেদ

কান্দে বীর ফুল্লরার মোহে।
দাবানল জিনি শ্বাস মুখে গদগদ ভাষ
জলশ্যা। লোচনের লোহে॥

- ১-১ উদরি পদারি দেহ একটু কি ঠাঁই ॥ (বৃঙ্গ) উর্বরি উদরি দেহ একটুকু ঠাঞি ॥ (ক)
- ২-২ চালে দড়ি দিয়া তারে করিল উভমুঙা। (গ)
- ৩-৩ বিষম বন্ধনে তার চক্ষে পড়ে নীর । (দী)
- ৪-৪ মনে ভাবে মহাবীর শংশয় জীবন। ফুল্লরা শ্বরিয়া বীর করক্তে রোদন ॥ (বন্ধ)

প্রিয়ে, তোর বাক্য নাহি ধরি চণ্ডিকার অঙ্গুরী লইনু আপন মাথা খায়্যা।

স্থথেতে থাকিতে বিধি বিভৃষিলা দিয়া নিধি কেবা মোরে দিবে পদছায়া॥

যেই কালে মহেশ্বরী মনোহর বেশ ধরি বস্থাছিল আমার কুটীরে।

'তুমি কৈলে কছত্তর' আমি জুড়িলাম শর এই হেতু ছাড়িল আমারে।

মরিলাম কারাগারে তোমা সমর্পিত্র কারে ফুল্লর। হইল অনাথিনী।

মাংস বেচি ছিন্তু ভাল এবে সে পরাণ গেল বিবাদ সাধিল কাত্যায়নী॥

কুলিতার ধনুখান তিন গোটা ছিল বাণ আছিলাম আপনার দস্তে।

কেব। চাহে সম্পদ ধন দিয়া কৈল্যা বধ চণ্ডিকা আমারে বিড়ম্বে ॥

সোঙ্তরে চণ্ডিকা-মস্ত্র পূজার বিধান-তন্ত্র মনে মনে পূজে ভগবতী।

তেজিয়া বিষাদ-মতি কালকেতু করে স্তুতি হৃদয়ে ভাবিয়া হৈমবতী॥

মহামিশ্র ইত্যাদি॥

১-১ তৃমি বৈলা অম্বর (দী এবং খ) 27—2303 B. T.

কালকেতু কত্ৰ্ক চৌতিশা স্থতি

কালী কপালিনী কান্তা কপোলকুন্তলা। কালরাত্রি 'কঞ্জমুখী' কত জান কলা॥ ংকলিকালে কালুর কলুষ কর নাশ। কলিকে কপট করি রাখ নিজ দাস।। খরতর রাজা বড় যেন খুর-ধার। তথড়া খর্পরধারী উর একবার ॥৩ খেদ খণ্ডন করি খলে কর নাশ। খণ্ডিয়া সকল দোষ রাখ নিজ দাস॥ গিরিজা গণেশ-মাতা গতি সবাকার। °গোকুল রাখিলে° গোপকুলে অবতার॥ গহন নিগড়ে ছুর্গা দগধে শরীর। গলিত করহ মাতা গলার জিঞ্জির ॥ ঘোররূপা ঘোরতপা ভীয়ণ-ঘোষণা। **ংঘন ঘন কৈলে** রণে ঘণ্টার বাজনা ॥ ঘন শ্বাস বহে মুখে গায়ে কাল ঘাম। ঘরের সেবকে মাতা সোঙরয়ে নাম।।

১-১ কুন্দমুখি (গ)

২-২ কলিকার কলুশ করছ মোর নাস। (দী)
কলিকালে কালুর করছ ক্লেস নাস। (খ)
কারাগারে কালুর কলুষ কর নাশ। (বন্ধ)

৩-৩ থণ্ড থণ্ড কলেবর করিল আমার। (বন্ধ ও দী)

৪-৪ গোধন বাখিলে (গ)

e-e ঘনরবা কৈলা রণে ঘণ্টার বাজনা। (দী)

ইউন্মন্ত হইল রাজা মোর দৈবফলে।
উমা মহেশ্বরী ছায়া দেহ পদতলে॥
উগ্রচণ্ডারূপে রঘুনাথে কৈলে দয়া।
উরিয়া সেবকে রাখ দিয়া পদছায়া॥ই
চঞ্চল-চেতন আমি চল্লিশ বন্ধনে।
চোরের চরিত্র হইল চণ্ডিকার ধনে॥
চড় চাপড়ে মাতা চণ্ড কর চুর।
ইচরাচর গতি গো বন্ধন কর দূর॥ই
ছল ধরি রাজা গো ধনের ছলে বান্ধে।
ছলে ধন দিয়া বধ বিনি অপরাধে॥ই
ছেদন করয়ে রাজা তব ধন-ছলে।
ছায়া দিয়া রাখ মাতা চরণকমলে॥ই
জন্ম-জরা-মৃত্যু-হরা জয়স্তী জননী॥ই

১-১ উচ নীচ সমান করিতে জান তুমি।
উমা মাহেশ্বরী মাগো বেরুণীয়া আমি।
উদ্ধার করহ মাতা রাজ কারাগারে।
উচিত বলিতে মাগো নাহিক আমারে। (বন্ধ)

২-২ চরণে ধরিয়ে মাতা চণ্ড কর চুর। (গ)
চকিতে চাহিলে মাতা ঘাই নিজ পুর। (বঙ্গ)

৩-৩ ছলে ধন দিয়া মাতা বধ অপহাধে। (বঙ্গ) ছিএে ধন দিয়া ছাড় বিহু অপহাধে। (দী)

৪-৪ ছাইয়া দিয়া ছাইয়া-রূপা বাধলে (?)॥ (দী)

अन्नकाती ভূমি অইয়া জয়ণতাকিনী।
 জনকনশীনী ভূমি জিবের জিবনী। (দী)

 জটাজ টবতী গো যাত্রিক-শিরোমণি। জীবের জীবন জনার্দ্দন-সহায়িনী ॥^১ ঝোড-অঙ্কারেতে মাতা বধিতাম পশু। ঝগড়া করিলে মাতা দিয়া নিজ বস্থু॥ ঝনঝনা সমান হইল তব ধন। ংঝটিতি করহ মাতা বন্ধন মোচন॥১ ইঙ্গিতে অবনী ভার তুমি কৈলে নাশ। ইহারে ভাণ্ডিয়া রাথ আপনার দাস ॥ ইহ ক্রোধ করিয়া বিনাশ করে মোরে। ইহারে ভাণ্ডিয়া শীঘ্র রাখহ আমারে॥ ॰টানাটানি করে কেশে ধরিয়া কোটাল। টক্স টাঙ্গী কেই হানে কেই করবাল।।° •টিটকারী করে পাইক মানে পরাজয়ী। টঙ্কার দিয়া রণে উর কুপাময়ি॥• ঠগ নহি ঠাকুরাণি নহি ঠগ-স্থত। ঠাকুর করিলে মোরে করি ধনযুত।। ঠন্ ঠন্ করিয়া রাজার ঠাট বিস্কে। ঠাঞি দেহ ঠাকুরাণি চরণারবিন্দে॥

>-> জীবন উপায় ধনে জিবন হাকার। জীবনের বীজ জিউ রক্ষ য়েকবার ॥ (দী)

২-২ কটিতে ঘূচাহ মাতা গাঢ়-বন্ধন ॥ (গ)

কটিত করহ মাতা কগড়া নাশন ॥ (দী)

৩-৩ টল টল করে প্রাণ জটে টানাটানি। টঙ্কর সমান মোরে টানে নুপমনী। (দী)

৪-৪ টকারিয়া ধহু টানী বিন্ধ রাজদল। টলি ভোর রাথ টুটাইয়া নুপবল।। (দী)

ডাকিনী হাকিনী মাতা 'ভমর-রূপিণী'। ভমরুমধামা জয়। ডিগুম-বাদিনী॥ ব্দাকা নাহি দেই নহি ডাকাতের সাথী। ডাড়ুকা চরণে কেন হু'হাতে চামাতি ॥° ঢঙ্গ ঢাঙ্গাতি নহি আক্ষ্মীর জাতি। *ঢোল নাহি করি কভু পরের যুবতী॥° ॰ ঢেকা মারে এককালে দশ বিশ জন। ঢালিন্থ তোমার পায় আপন জীবন॥**॰** আনিয়া আমারে বধে বিনি অপরাধে। অক্স নাহি জানি আমি ছাড়ি তুয়া পদে। আনের অনেক আছে মোর কেহ নাই। আন ছলা করি মোরে রাথ রাজার ঠাঁই॥ ৫ ত্রিপ্রণা ত্রিবীজা তারা ত্রৈলোকা-তারিণী। ত্রিশক্তিরাপিণী তুমি কুরঙ্গ-নয়নী।। শ্বরিতে তারিয়া তোল তাপিত তনয়। তোমা বিনে ত্রাণকর্তা আর কেহ নয়॥

১-১ ७ इत- ऋ भिनी (मी)

২-২ ডাকাতির শম হৈল ডাড়ুকা বন্ধন। ডাক শোহি দিবে কর ডাড়ুকা খণ্ডন॥ (দী)

৩-৩ ঢাক্বনাকরি চক্বলেনরপতি়ি (দী)

⁸⁻⁸ চোক ণীঞা নাহি চঙ্গ তোমার প্রশাদে। চাক চোল বাজায়া কলিঙ্গ গাঁজা থেদে। (দী)

৫-৫ তৈলোক্যভারিণী ত্বরা তাপিনী তপনী।
 ভাব-হেতু তুমি তোমা বিনে নাহি জানী।
 ভরীত তারহ মাতা তপীত তনয়।
 ভাব-হেতু তুমি তোমা বিনে অন্ত নয়।(দী)

ইথর থর করে প্রাণ পাথর-চাপনে। থরহরি কাঁপে প্রাণ রাজার তাড়নে ॥> থাকিয়া রাজার আগে বন্ধন কর দূর। স্থির কর পুনর্বার গুজরাট পুর॥ তুর্গা পরা তুর্গা তুমি দক্ষের তুহিতা। ***দমুজ-দলনী দ**য়াবতী বেদ-মাতা॥* তুর্জ্য দক্ষিণাকালী তুরিত-নাশিনী। ত্বংখী দাসে কর দয়া ত্বংখ-বিনাশিনী।। শ্বর কর তুর্গা মোর অকাল মরণ। •তুস্তর সাগরে মোরে করহ রক্ষণ॥• ধিষণা ধারণাবতী ধেয়ান-ধারিণী। °ধরিত্রী-ধারিণী ধরাধরের নন্দিনী ॥° •ধরিয়া ধনের ছলে ধরাপতি বান্ধে। ধন দিয়া বধ কৈলে বিনি অপরাধে ॥ নমো নিতা। নারায়ণী নগেন্দ্রনন্দিনী। নিশুস্ত-নাশিনী মাতা নীল-পতাকিনী॥ নিগম-নিগৃঢ়া তুমি নিজা সনাতনী। ু নুপতি-নিলয়ে ভয় ভাঙ্গহ ভবানী॥

১-১ থর থর করে প্রাণ সহে মাতা বীর। থরহরি আদি মাতা স্থাপ মোহাবীর ॥ (দী)

২-২ দক্ষযজ্ঞবিনাদিনি বেদবতী-মাতা । (গ)

৩-৩ দূর কর হুর্গা তুমি দেহের বন্দন। (গ)

8-5 দয়া কবি ছংখহরা দিলে গো স্বর্ম। (খ

धातिनी धाविनी धत्राधातत नमना॥ (मी)

৬-৬ ধরনি ধাবনি মাতা ধর নব দণ্ড। ধরিয়া সমরে মার বৈরি প্রচণ্ড॥ (গ)

৭-৭ নৃপতি-নিলয় হয় নিগড়-নাশীনী 🛚 (দী)

নন্দ-গোপ-স্থতা হয়্যা রাখিলে গোকুল। রূপতি-সভায় মাতা হও অনুকৃল n ^১পশুপতি প্রজাপতি পুরুষপ্রধান। পদ্মযোনি পুরন্দর নিতি করে ধ্যান ॥^১ ২প্রতিদিন পূজে তোমা প্রকৃতি-রূপিণী। পশুসম ব্যাধ আমি কি বলিতে জানি ॥ প্রণত-বৎসলা তুমি পরম মঙ্গলা। পাদপদ্মে দেহ স্থান সেবক-বৎসলা॥ **°ফিকিরে** মারিয়ে পশু ফাদ পাতি বনে।° ফল বেটি ফল খাই কিবা কাজ ধনে n ফণি ফণামণি দিয়া ফের দিলে মোরে। °ফাপর হইগো ফুল্লরা পাছে মরে ॥° বৃদ্ধিরপ। 'বৃদ্ধিহর। দংসার-বন্দিনী। বন্দি-শালে হও মাতা বন্ধন-হারিণী॥ বন্ধে জিউ হল্য যেন নলে জলবিন্দু। বন্ধ দূর কর মাতা জগতের বন্ধু॥

১-১ প্রধান পুরুষ প্রজাপতি পুরুদর।
পশুপতি পদজোনী দেবে নিরম্ভর॥ (দী)
পশুপতি প্রজাপতি পুরুষ প্রধান।
পদ্মযোনি-প্রিয়া দেবী পার্ববতী আথ্যান॥ (বহু)

২-২ পরম প্রকৃতি পরা পর পুরাতনী। পৃষ্ণাতি পাপমতি কি বলিতে জানি ॥ (দী)

৩-৩ ফার করি পশু বাণে ফান্দ পাতি বনে। (দী এবং গ)
ফাঁস্ করি পক্ষগণ ফান্দে পাতি বনে। (খ)

৪-৪ ফেকাতৃড়া থাইয়া ফুলরা পাছে মরে। (বয়)
ফেফাদিওি থাইআা ফুলরা পাছে মরে। (থ)

e-e বন্দী-ছবা(দী)

ভযঙ্করা ভয়-হরা ভৈরবী ভারতী। ভয়স্করী ভয়-হারী ভীমা ভগবতী॥ 'ভদকালী ভূতমতি ভামরী ভীষণী।' ভূপতি-ভবনে ভয় ভাঙ্গহ ভবানী॥ ্মুগাহ্মকুট-মণি মস্তক-মালিনী। মহিষ-মৰ্দ্দিনী মধ-কৈটভ-নাশিনী ॥° °মহামায়া মহেশ্বরী মূগেন্দ্র-বাহিনী। মৃচমতি ব্যাধ আমি কি বলিতে জানি॥° ° যশোদা-নন্দিনী জয়া যজ্ঞ-বিনাশিনী। যমের জননী শুস্ত-অসুর-নাশিনী॥ যমের যন্ত্রণা হৈতে রাজার যন্ত্রণা। যশ গাই যদি পূর আমার কামনা॥ রক্ষ হৈয়া ছিন্নু মাতা রক্ষু-বধে রত। রত্ন দিয়া রাজার ঠাই করাইলে হত।। রাজা সংন রণ কৈন্তু রক্ষা নাহি আর। রঙ্গিণী করহ রক্ষা তবে সে উদ্ধার॥ লুট হৈল ধন লওভও হইল গারী। লক্ষ্য কেই নাহি লোক যথা নোর নারী॥

১-১ ভদ্রকালী ভূতবতী ভ্রমর-ভূষণী। (বন্ধ)

২-২ মোহাকাইয়া মোহামাইয়া মস্তক-মালীনা। মোহাকালী মোহাদেব-মগুনকাবিণী॥ (দী)

৩-৩ মহেশুর অর্দ্ধতন্ত্ব করাল বদনা।
মরিয়া না মরে দেই জেই জঞ্জ তোমা। (গ)
মারীলা মহীলা আদি মহেন্দ্র-মোহীতা।
মহিপাল-ভয় মোর তুর কর মাতা। (দী)

⁸⁻⁶ য**ভ**ষুশা যুগান্তরা যজ্ঞবিনাদিনী। যশোদা-নন্দীনী জইয়া যমুনা জামীনী। (দী)

<- ে রত্ন দিয়া রঙ্গরস করিলা বহুত। (দী)

লোভমতি অতি আমি লম্পট পাতকী। লোভে লক্ষ ধন লয়া লাভ কৈলু কি।। ैবুদ্ধিরপা বুদ্ধিহর। সংসার-বন্দিনী। বস্থদেব-সহচরী নন্দের নন্দিনী। বিসঙ্কটে কৈলে বস্থুদেবের উদ্ধাব। বল-বৃদ্ধি দিয়া কৈলে কালিন্দার পার।। শঙ্খিনী শূলিনী মাতা শিবসহচরী। শর্কাণী শিবানী শক্তিরূপা শাকন্তরী॥ শिन-भिरताभि शिल-भिथत्वाभिनौ। °শাবদা শরণদাতা উরহ আপনি॥° ষড় গুণধারিণী মাত। ষডঙ্গরূপিণী। ষ্টানন-মাত। ষ্ট্রিপু-নিবারিণা ॥ সর্বলোক গায় তোমা সেবক-বৎসলা। সেবকে তারিতে উর সকলমঙ্গলা। সশক্ষিত সেবকেরে রাখ মহামায়া। সানুকুল। হইয়া পাদপদ্মে দেহ ছায়া॥ হরি হর হিরণাগর্ভের তুমি মূল। হইয়া নন্দের স্থতা রাখিলে গোকুল।। *হর-জায়া হৈমবতী হেমন্ত-নন্দিনী। হও অনুকূল মাতা হরের ঘরণী॥°

১-১ বলাইপৃদ্ধিতা বলদেবের ভগিণা। (দী)
বশালাকী বিশ্বমন্থী বিশ্ব-নিশায়িণী। (বঞ্চ)

২-২ বিপদেতে দাসে মাতা করহ উদ্ধার (খ)

৩-৩ শরণদা শান্তীমুর্তী উর্হ আপনী। (দী)

⁸⁻⁸ হিতাহী ভহিন হৈল হর পাপচ্য। হৈমবতি আদি হেলে রক্ষ পাপাসয়॥ (দী)

কোণীর হরিলে ভার দৈত্য কৈলে ক্ষীণ।

'ক্ষেণেক উরিয়া রক্ষ দাস আমি দীন।।

'ক্ষেমা কর ভগবতী ক্ষয় কর অরি।
ক্ষেমস্করী রক্ষ আমি কি বলিতে পারি।

মহাবীর এত যদি কৈল স্তুতিবাণী।

"কৈলাসে জানিল মাতা হরের ঘরণী॥

অবিলম্বে কারাগারে উরিলা অভ্যা।
করহ করুণাময়ী শিবরামে দয়া।

কালকৈতুর বন্ধন-মোচন

অবতরি কারাগারে বন্ধনে দেখিয়া বীরে

'অভয়া হইলা লজ্জাবতী।'

নয়নে গলয়ে নীর কালকেতু মহাবীর

কৈল তার চরণে প্রণতি।

কৈল চণ্ডী বীরে আশ্বাসন।

'কার দেবী অবললা' বুকের ঘুচাল্যা শিলা

হুহুস্কারে খ্যাল্য বন্ধন।

১-১ ক্ষণেক আদীয়া ক্ষমি দোষ বক্ষ দিন !। (দী)

২-২ ক্ষেমা কৃধ্ব ভয় ক্ষোভ তোমার করণ। ক্ষণেকে রক্ষিতা তুমি ক্ষেণেকে নিধন।। (দী)

৩-७ धार्ति जानीना माजा दशक्रतिकतो ॥ (मी)

৪-৪ লজ্জিত হইলা ভগবতি। (গ)

e-e ধরি চণ্ডি নিজ গিলা (গ)

^{•-}७ ध्ठांना (१)

চাহিতে তোমার মুখ মনে বড় লাগে হুখ
পাইলা হুখ হুরদৃষ্ট-দোষে।
প্রভাতে উঠিয়া রাজা করিবে তোমার পূজা
আরোপিবে গুজরাট দেশে॥
শুন পুত্র কালকেতু পশুগণ-বধহেতু
আছিল তোমার গুরুপাপ।
নাশ গেল এতকালে রাজার বন্ধন-শালে
মনে না করিহ পরিতাপ॥
ঘুচিল বন্ধন-ক্লেশ প্রভাতে চলিবে দেশ
পুত্রসম পাল্য প্রজাগণ।
নিজ-হস্তে নরপতি মাথাতে ধরিবে ছাতি

প্রসাদ করিবে নানা ধন 🛭

অতিরিক্ত—

কি কাজ আমার ধনে আনন্দে আছিছ বনে
নিত্ত গিতে করিয়া আশ্রয়।
ফুল্লরা পদার করে সন্ধ্যাকালে আন্তে ঘরে
ঘূথে থাকি আপন নিলয়।
নাহি চিনি রাজা সাধু দেবায় ফুল্লরা বধু
কিনে বিচে আপনার মনে।
সহজে কুমতি ব্যাধ তাহা তুমি দিলে বাদ
মরি আমি বর্তিদ বন্দনে।
নিজ ধন লেহ মহামায়া।
পূর্ব্বে কয়্যাছিল তত মুগ মারি থায় ভাত
সব পাদরিহু তুমা পায়্যা। (খ)

ু চণ্ডিকা বলেন যত নহে ত বাঁরের মত পালাইতে চাহে ঘ:ন ঘন। বিদ্যা ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিলা বন্ধ চক্রবর্ত্তী শ্রীকবিকঙ্কণ ॥

কলিঙ্গরাজের প্রতি চণ্ডীর স্বপ্নাদেশ

কালকেতু বলে মাতা শুন ভগবতি।
কাঁথ ভেঙ্গা যাই আমি কর অনুমতি।
দেহ কুলিতার ধন্থ তিন গোটা বাণ।
ধন লৈয়া চণ্ডি মোরে কর পরিত্রাণ॥
বন্ধন ঘুচায়া তুমি যাইবে কৈলাস।
প্রভাতে উঠিয়া রাজা করিবে বিনাশ॥
'চণ্ডিকা বলেন বাপা না যাব আগার।'
যাবত না করে রাজা তোমা পুরস্কার॥
"এ বোল বলিয়া মাতা করিলা গমন।"
ডানি-বামে দেখিল অনেক বন্দিগণ॥
কুপাদৃষ্টে সবাকার ঘুচাল্য বন্ধন।
ছরিতে গেলেন হথা পোতামাঝিগণ॥
তবক বেলক টাঙ্গী কামান কুপাণ!
ডানি-বামে শিক্ষা কাড়া ঠমক নিশান॥

>-> যুনিঞা চণ্ডির কথা মহাবীর তেজে ব্যথা জোড় হাথে করে নিবেদন। (খ) ২-২ চণ্ডিকা বলেন জাত্রা নাঞিথ আমার। (গ) ৩-৩ দ্বারে হুতিআ য়াছে পোতামাঝিগণ। (গ) কোপে আঁখি-ঠার চণ্ডী দিলা দানাগণে। এক এক মাঝিকে কিলায় তিন জনে॥ লুট করি খাঁড়া ডাণ্ডা লইলা বসন। মৃচ্ছিত হইয়া পড়ে পোতামাঝিগণ॥

চণ্ডিকা চলিলা ওথা নূপতি-বদতি।
চৌষট্টি যোগিনী সঙ্গে চামুণ্ডা-মূরতি।
গলে মুণ্ডমালা দোলে বিকট দশন।
কাতি থপর হাতে লোহিত লোচন।
বিভীষিকা অনেক দেখাল্য নূপবরে।
স্বপনে কহেন মাতা বিসিয়া শিয়রে॥
রাজা বলি ওরে বেটা কর অভিমান।
বারের বিধ মহাবীরে ধরাইব ছাতা।
বীরের করাব দাসী তোমার বনিতা॥
অনেক স্বপন দেখাইল মহামায়া।
মহাপাত্র পুরোহিতের শিয়রে বিসিয়া॥

রাম রাম বলিয়া উঠিলা নরপতি।
১পদ্মা সঙ্গে গগনে রহিলা ভগবতী॥১
প্রভাতে করিয়া সভা রাজা দিলা বার।
সবে মিলি স্বপনের করেন বিচার॥

বিবিধ প্রকারে সপ্ন কহিল তাহারে। এই সপ্নের কথা সভে কহিয় সভারে । (থ) গণসঙ্গে গগণে উরিলা ভগবতী । (ক)

১-১ আমার সেবকে কর এত অপমান ॥ (গ)

^{*} অভিবিজ---

সভাজন শুনে রাজা কহেন স্থপন। অম্বিকা-মঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ॥

রাজার ম্বপ্ন-বিবরণ

আজি নিশি দেখিলাম বিষম স্বপন। পরমায়ু বলে মোর রহিল জীবন।। দেখিত্ব ভৈরবী ভীমা লোচন বিশাল। কাতি খর্পর হাতে গলে মুগুমাল॥ হান হান করিয়া আমার ধরে কেশ। চৌষ্টি যোগিনী সঙ্গে ভয়ক্ষর বেশ।। পীঠে লম্বমান তার শোভে জটাভার। শঙ্খের কুণ্ডল কানে ভীষণ আকার।। পরিধান স্বাকার লোহিত বসন। বাকসনা ফুল হেন তুপাটি দশন।। বিভূতি ভূষণ শোভে সবাকার গায়। চৌদিকে যোগিনীগণ নাচিয়া বেডায়॥ গজ ঘোড়া কাটি পীয়ে রুধিরের পানা। নাচয়ে অবনীতলে প্ৰেত ভূত দানা॥ মড়ার আঁতড়ি কেহ পর্যাছে উত্তরী। অঙ্গুলিতে আরোপিল 'কেশ-কুশাঙ্গুরী'।। তিলক করয়ে দানা হাডের চন্দনে। তর্পণ করয়ে নর-কপাল-ভাজনে।।

>-> হাড়ের অঙ্গী (ক) সঞ্জ অঙ্গী (থ)

গাধায় চড়ায়ে মোরে দিল ১ওড়মাল ।
পশ্চাতে ঢালের বাত বাজায় বিশাল ॥
পশ্চাতে যোগিনীগণ করে তাড়াতাড়ি।
১কেই লাগ পেয়া মোরে পৃষ্ঠে মারে বাড়ি ॥১
গজপৃষ্ঠে কালকেতু কৈল আরোহণ।
শরে ছত্র ধরে ইন্দ্র আদি দেবগণ॥
চৌদিকে শঙ্খের ধ্বনি মঙ্গল বাজন।
রাজার বচন শুনি বলে দ্বিজগণ॥
১নর নহে কালকেতু দেবতা–নন্দন।
১তার অপমানে চণ্ডী কৈল বিড়ম্বন॥
এই মত কহিল সকল সভাজন।
অম্বিকা–মঙ্গল গান শ্রীকবিকঙ্কণ॥

পাত্রমিত্রসহ কলিঙ্গরাজের পরামর্শ

রাজার বচন শুনি সভাজন বলে বাণী
কোপে রাজা কৈলা অমুচিত।
আজিকাব শেষ নিশি অমঙ্গল রাশি রাশি
স্থপন দেখিলা বিপরীত॥
অবধান কর নরপতি।
ঠক নাবড়ের বোলে চণ্ডীর কিন্ধর মাল্যে
এই হেতু স্থপনে হুর্গতি।

১-১ হাড়মাল (বৰ)

২-২ কেহ লাগি পায়্যা মোরে মারেক শাবাড়ি । (দী)

৩-৩ নর মহে কালকেতু ব্যাধের নন্দন। (দী)

৪-৪ তাঁর অপমানে চণ্ডিকে অপমান।। (দী)

স্বপনে তোমার ভয় দেখিলে বারের জয় পুরস্কার করিলা ভবানী।

^১সেই কথা নূপবর কহিতে করয়ে **ড**র ১ আর কিছু মনে নাহি গণি॥

^২আপনার দিয়া ধন চণ্ডী কাটাল্য বন^২ বসাল্য নগর গুজরাট।

আখেটীর কিবা দোষ কেনে তারে কৈলে রোষ ভাঁড়ুদত্ত কৈল যত নাট॥

কোন বা ছারের বোলে এত প্রমাদ কৈলে
 মিছা কাজে করিলে আবেশ।

° ছাড়ান করিয়া আনি কহিয়া মধুর বাণী বীরকে পাঠায়ে দেহ দেশ ॥ °

রথ গজ ঘোড়া দোলা সকল্লাত ঝারি থালা বিভূষিত ভূষণ চন্দনে।

বীরের করিয়া পূজ। গুজরাটে কর রাজ।
চণ্ডীর সন্ফোষ হবে মনে।।

পোত্রের বচন শুনি নুপতি হৃদয়ে গুণিৎ কারাগারে করিল পয়ান।

বীরের বন্ধন-ক্ষয় দেখি রাজা সবিস্ময় শ্রীকবিকঙ্কণ রস গান।

১-১ দেখিলু অভূত যত তাহা বা কহিব কত (ক এবং বঙ্গ)

২-২ যে বুঝি চণ্ডিধন দিয়া কাটাইলা বন (দী)

৩-০ কোন ছার বনভূমি তার তরে রায় তুমি অকারণে করহ আবেশ। (থ এবং দী)

8-৪ ছোড়ন করিঞা বিবে য়ানিয়া আপন ঘরে পাঠাইয়া দেহ নিজ দেশ ॥ (গ)

e-e য়েশৰ বচন জত স্থনী বাজা জানী তভ (দী)

কলিঙ্গরাজ-কর্তৃক কালকেতুর সম্মান

রাজা দেখি কালকেতু করিল উত্থান। প্রণাম করিতে রাজা না দিলা বিধান।। ভাই ভাই বলি রাজ। কৈল আলিঙ্গন। প্ৰেমকথা আলাপনে বসিলা তুই জন॥ রাজা বলে কালকেতু ক্ষেম অপরাধ। চণ্ডীর সেবক তুমি কর আশীর্বাদ।। বন্দি-ঘর মহাবীর মাগি নিল দান। বসন ভূষণ দিয়া করিলা ছাড়ান॥ অবনী লোটায়্যা কান্দে পোতামাঝিগণ। ইরপতিরে কহিলা নিশির বিবরণ॥ই অঙ্গদ বলয়া হার কুম্কুম্ চন্দ্রে। পুরস্কার কৈল রাজা ব্যাধের নন্দনে।। গজ তুরঙ্গম রথ দিল হেম-দোলা। চন্দন-চৌথরি দিল ঝারি কণ্ঠমাল।।। অভিষেক করাইয়া বসাইল খাটে। আজি হৈতে কালকেতু রাজা গুজরাটে।।

নিজ-হক্তে ভালে টীকা দিল নরপতি। যত ভূঞা রাজা মিলি ধরাইল ছাতি॥

১-১ রাজারে কহিলা দবে খপন কারণ। (ক)
নুপতিরে কহে ক্থা নিসির সপন। (থ)

শ্বাহিল নিকটে আছিলা ভূঞাগণ।
 বিধিমতে কর্ম আদি বিবিধ বাজন। (দী)
 28—2803 B. T.

গজবাজে চাপাইয়া দিলেন বিদায়। ১পদব্রজে । নরপতি পিছে পিছে যায়। পুরে প্রবেশিতে শুনে নারীর কান্দনা। অনুমূতা হইতে যায় যতেক অঙ্গনা।। পুরের ভিতরে বীর জিজ্ঞাসে বারতা। বীরেরে গঞ্জিয়া নারীগণ কহে কথা ॥* কালি যেই মৈল তোমা সনে করি রণ। অনুমৃতা হইতে যায় তার নারীগণ।। শুনি লজ্জা পেয়্যা বীর হেট কৈল মাথা একভাবে সোঙরিলা হেমন্ত-ছুহিতা।। অভিপ্রায় বীরের বৃঝিয়া ভগবতী। কহেন আকাশবাণী মহাবীর প্রতি॥ জিয়াইয়া দিব আমি মৃত সেনাগণ। কহিলা ভারতী নাহি শুনে অহা জন॥ শুনি বীর অনুমূতা কৈলা নিবারণ। মরা জিয়াইব বলে ব্যাধের নন্দন।। ভৃগুস্থুতে ভগবতী কৈলা সোঙরণ। ভৃগুসুত আইলা যথা বীর কৈলা রণ॥ আহিলেন ভৃগুস্থত যথা বারবর। দেখিয়া করিলা রাজা প্রণাম বিস্তর ॥ পাত্রমিত্র সঙ্গে রাজা পাছে পাছে যায়। বীর সঙ্গে রণস্থলে বৈসে দণ্ডরায়॥

১-১ অমুব্রজে (গ এবং দী)

২-২ বির**দ বদনে বীর জ্বিজ্ঞাসে বারতা।** বীর**কে গর্জিয়া কেহ ক**হে কটু কথা॥ (ব**ল**)

কৌতুকে বসিয়া দোঁহে কহে মৃত্ বাণী। শ্রীকবিকস্কণে গান অপূর্ব্ব কাহিনী॥

মৃত সৈত্যগণের জীবনলাভ

উশনা কুশপাণি চিন্তিয়: সঞ্জীবনী মন্ত্রিত কৈল কুশজল। দিলেন যার অঙ্গে করিয়া অঙ্গ ভংগ উঠিল সেই মহাবল।

উঠিলা পদাতি ধরিয়া ঢাল কাতি

কচালে যুগল লোচন।

পদাতি কেহ কান্দে আছিলুঁ কাঁচা নিন্দে
কে মোর নিল শরাসন॥
আনহি কন্ধ শির পড়িল যেই বীর
জুড়িল তার কন্ধ মুণ্ডে।
পাইয়া কুশজল উঠে দস্ভিদল
লোহার মুদগর শুন্ডে॥

* অতিরিক্ত—

জ্বের পায়্যা বাস উলটে দেই পাষ উষনা,জ্ব দিলা মাথে। কাছীয়া বীর বান ডাকিয়া হানেহান উঠিলা বীর থাণ্ডা হাথে।। (দী) ১-১ কচালে কেহ বিলোচন। (দী এবং বন্ধ)

গুজরাটে আনন্দোৎসব

ধন্য ধন্য বীরের চরিত।
মৃত সেনা প্রাণ পায় আনন্দিত দণ্ডরায়
সভাজন পুলকে পূরিত।।
উঠিলা সকল সেনা রাজা আনন্দিত-মনা
নাচে রাজা সেনার জীবনে।
শঙ্খ বেণী বাজে পড়া ঢাক ঢোল সানী কাড়া
বাজায় হুন্দুভি কোন জনে॥

১-১ दिन्छा त्म मानरवद नीत । (भी)

২-২ রাজার থাও দৈয়া জিয়ায়া দকা শৈয়া (দী এবং বন্ধ)

মধুর মধুর স্বরে মন্দিরা লইয়া করে গায়নে মঙ্গল গায় গীত। পরিয়া উজ্জ্বল ধুতি কাঁখেতে করিয়া পুথি > হাতে কুশে নাচে পুরোহিত। বীরকে বিদায় দিয়া সেনাগণ সঙ্গে নিয়া গেলা রাজা কলিঞ্চ নগরে। গুজরাটে যত লোক ঘুচিল সবার শোক বীরকে দেখিতে আগুসরে 🗈 শুভক্ষণ করি বেলা চডিয়া পাটের দোলা প্রবেশ করিল বীর বাসে। ব্দসন্ত্রমে ফুল্লরা আসি পতির বদনশশী দেখিয়া আনন্দ-রসে ভাসে ॥ বুলান মণ্ডল আদি প্রজা আসি যথাবিধি নানা বন্ত্র দিয়া কৈল নতি। হাট ঘাট গৃহ মাঠে নৃত্য-গীত গুজরাটে সবার স্থৃস্থির হৈল মতি n দিয়া বীর দ্বিজে দান সারিল সবার মান *চন্দন-কুসুম-অধিবাসে।* **ংভাডুদত্ত হেনকালে আসিয়া মধুর বোলে** শ্রীকবিকঙ্কণ রস ভাষে ॥°

ভাড় আদী হেন কালে ভাষে । (দী)

১-১ পবিত্র বসন পরি পুথি খুদি কাকে করি (দী)
২-২ ফুল্লরা সম্ভ্রমে আম্ম্রে পতিদরসন আসে
দেখি আনন্দিত রস ভাসে॥ (খ)
৩-৩ চন্দন কৃষ্ম অভিলাসে। (দী)
৪-৪ রচিয়া ত্রিপদি ছন্দ গান কবি শ্রীমুকুন্দ

কালকে<u>তু</u>র প্রতি ভাঁড়ুদত্তের কপট বাক্য

ভেট নিয়া কাঁচকলা শাক বেগুন কচু মূলা ভাড়ুদত্ত করিল পয়ান। নিবেদয়ে ভাড়ুদত্ত বুঝিয়া কার্যোর তত্ত্ব পশ্চাতে করিয়া অবজান দ ভাড়ুদত্ত করয়ে জোহার। ^১ প্রণাম করিয়া বীরে ভাড়ু নিবেদন করে খুড়া দেখি খণ্ডিল আন্ধার॥ তুমি ছিলে গুপ্ত-বেশে প্রকাশ করাল্য দেশে সম্ভাষ করিলা রূপমণি। ^২টীকা দিয়া নরপতি^২ ধরিল ধবল ছাতি ভূঞা রাজা মাঝে তোমা গণি॥ ঘুষিত সকল জন কোথা বীর পাল্য ধন পরিবাদ ছিল লোক মাঝে। প্রকাশ করাল্য আমি "বড় স্থুখ পাবে তুমি ংখাতি হইল কলিঙ্গ-সমাজে⁸

১-১ নোয়াইয়া বীরে মাথা কহে প্রবিঞ্চন কথা খুড়া দেখি খণ্ডিল আন্ধার ॥ (দী)

২-২ নিজহস্তে নরপতি (ক)

৩-৩ বড় ছঃখ পাইলে তুমি (গ)

৪-৪ মান হৈল নুপতি সমাঝে॥ (খ)
প্রকাসিল লোকের সমাঝে॥ (গ)
ক্ষতি হৈলা ভূপতি শমাঝে। (দী)

- যেই আপনার হয় সেই কভু ভিন্ন নহ আপনা জানিবে ভাডুদত্তে।
- রাজার সভাতে বাণী আমি সে কহিতে জানি ভাঁডুদত্ত বিদিত জগতে ৷
- যখন তুপুর নিশি সম্ভাষিয়া পাশে বসি অনেক বুঝালু নরপতি।
- খুড়ী সে জানয়ে মোর মতি।
- তুমি খুড়া হৈলে বন্দী অনুক্ষণ আমি কান্দি বহু তোমার নাহি খায় ভাত।
- দেখিয়া তোমার মুখ পাসরিলু সব তুখ দশ দিক হইল অবদাত॥
- হইয়া লোকের চূড়। সিংহাসনে থাক খুড়া ২আমারে রাজ্যের লাগে ভার।
- থাকহ পুরাণ শুনি *রাজ্য সব আমি জানি* নফরেরে করিবে বেভার n

১-১ করিল য়নেক স্থায় (থ) ধবিয়া পাত্রের পাঁয় (দী)

২-২ আমারে আরোপী দর্বভার। (দী)

৩-৩ বাজা জানে আমি জানি (খ, বঙ্গ এবং গ) রাজ্য জানে আমী জানী (দী)

ইভাঁড়ুদন্ত যত ভাসে শুনি বীর মনে হাসে
কট্টভাষে বলেন বচন।
রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ পাঁচালী করিয়া বন্ধ
বিরচিল শ্রীকবিকস্কণ।

ভাঁড়রে, নিজ দোষে খাইলে আপনা। ব্যাড়ি কড়ি গুণি দিয়। করজে ফারাক হয়া ছাড় গুজরাটের বাসনা॥

তোর পিতামহ ছিল অকালে লুটায়্যা মৈল লোক-মুখে জগতে বিদিত। তোর বাপ উজাড় দত্ত কলিঙ্গ নগরে খ্যাত মুখ-দোষে দশন-বর্জ্জিত॥

যখন আছিলে পূর্বে মাগু পুত্র অন্নাভাবে
অকালে কুড়ায়া খাল্য হাটে।
জগতে নাহিক জ্ঞাতি কুলের নাহিক স্থিতি
কায়স্থ বোলহ গুজরাটে॥

১-১ ভাঁডুর বচনে রায় পাত্রের বদনে চায়
কোপে কম্পবান কলেবর।
উমাপদ-হীত চিত্য মুকুন্দ গাইলা গীত
প্রকাশে ব্রাহ্মণ মহীধর।। (দী)
২-২ বাড়ীর রাজ্য দিয়া (দী)

বাড়ির চালিথা দিয়া (খ)

সেবকের যোগ্য নহ শুড়া খুড়া বলি কহণ কুলের মহিমা কৈলে নাশ।।

আমি হই নীচ জাতি তাহে তোমার কিবা ক্ষতি ধন-গর্বে বল তুরক্ষর।

শিয়রে কলিঙ্গ রায় গোহারি করিয়া তায় খারিজ করিব বাড়ি-ঘর॥ কাহারে ছাড়িব ঘর-বাড়ী।

তোমা সনে কিবা দায় • মসাতে যতেক হয়•
সদরে গণিয়। দিব কডি॥

ভাঁড়্র শুনিয়া বোল কালকেতু উতরোল কোপে বলে ব্যাধের নন্দন।

মৃড়াহ ভাঁড়ুর মুগু অভক্ষ্যে পূরিয়া তুগু
ফুই গালে দেহ কালি-চূণ ম

বীরের আদেশ পাইল নিকটে নাপিত ছিল হাতে ধরি ভাঁড়ুরে বসায়।

রচিয়া ত্রিপদী ছন্দ গান কবি শ্রীমুকুন্দ হৈমবতী যাহারে সহায়।

১-১ হয়া তুই রাজপুত (বন্ধ)

२-२ वनाह त्योनिक म्ख (थ)

৩-৩ কুটুম বলিয়া কহ (খ)

৪-৪ তোমা হৈতে কিবা হয় (খ)

৫-৫ কোপদৃষ্টে লোহিত লোচন। (খ)

৬-৬ বাজাব হুকুম পেল্য (গ)

ভাঁড়ুদত্তের মস্তক মুগুন

ভাঁডুদত্ত কপট প্রবন্ধে যত বলে। শুনিয়া বীরের কোপ অগ্নি হেন জলে। ^১কোপে কম্পবান তমু লোহিত লোচন।^১ ভীয়ণ ভাষায় কিছু বলেন বচন॥ ংবলে বীর ছাড় ঠক কপট চাতুরী। তোমার কলিঙ্গ রায় কি করিতে পারি॥ কহিতে জানিস বেটা কপট প্রবন্ধ। হৃদয়ে পুরিত বিষ মুখে মকরন্দ॥ ুমিথ্যা কথা কহি বেটা পাড় মহা ধন্দ। কলিঙ্গরাজার সনে করাইলি দ্বন্দ্র॥৩ ইবে সে জানিলুঁ মুঞি ঠগ ভাঁড়ুদত্ত। আপনি করিলি নাশ আপন মহত্ব॥ ইনাম বাডীতে বেটা তুমি ঘর কর। ঋণবাডি লহ নাহি দেহ 'কলন্তর' ॥ এখন বলিস আমি রাজার নফর। গৌরব রাখিয়া দেহ তিন সনের কর॥ নগরিয়া মেলি তোরা মার বেড়া বাডি। যাবত না দেই ঠগা তিন সনের কডি॥

৮-১ দেহ কম্পমান হৈল কাঁপে দ্বাদন। (থ)
 কম্পাযুদ হৈলা তত্ব লোহীত লোচন। (দী)

২-২ বির বলে ছাড় বেটা বচনচাতুরী। (গ)

৩-৩ মিথ্যা করিয়া বেটা পাতি নানা ফান্দ। বাড়ির খাজানা বেটা দায় এক চন্দ ॥ (গ)

⁸⁻⁸ কর (বঙ্গ)

হেরিয়া নাপিতে বীর দিল আঁখিঠার। °মনের সন্তোষে ক্ষুর আনে বোড়া-ধার ॥° দঢ়ায়্য। হুকুম পায় নাপিতের স্তুত। ভাঁড়ুর ভিজায় মাথা দিয়া ঘোড়ার মুত। চামতা থাকিতে পদতলে ঘষে ক্ষুর। দেখিয়া ভাঁড়_ুর প্রাণ করে ত্রত্র 🛭 দূরে হৈতে শুনিয়া ক্ষুরের চড়চড়ি। [৽]নাক সাঁড়া দিয়া তার উপাড়িল দাড়ি ॥[•] বসন ভিজিয়া পড়ে শোণিতের ধার। °ভাড়ু বলে থুড়া ক্ষেমা কব একবার**॰**॥ পাঁচ ঠাঞি ভাঁড়ুর মাথায় রাখে চুলি। °এক গালে দিল চুণ আর গালে কালি॥° শ্রানিয়া ভাড়ুর শিরে কেহ ঢালে ঘোল। পিছে পিছে কোন জন বাজাইছে ঢোল 🛚 মালাকারে আনি গলে দেয় ওড়মাল। টিটকারি দেয় যত নগর্যা ছাওয়াল।। পুরের বাহির করি মারে বেড়া বাড়ি। •কাল হাঁড়ি ফেলি মারে কুলের বহুড়ী॥•

১-১ ভণীর সন্তাপে খুর আনে বোড়াধার॥ (भी)

২-২ নাকমুতে হর্যা তার উপাড়য়ে দাড়ি॥ (দী) নাক মোচে ধরি তার উপাড়য়ে দাড়ি॥ (বঙ্গ)

৩-৩ ভাণ্ডু বলে খুড়া প্রাণ রাথ এইবার 🛙 (গ)

⁸⁻⁸ নগরিয়া মেলি মৃথে দেই চুনকালি। (থ)
নগরিয়া ছাওআল মেলি দিল চুনকালি। (গ)

৫-৫ পুরের কোটাল আনি শিরে ঢালে থোল। (দী)

৬-৬ কুলবধুজন মাবে ফেলাইয়া হাড়ি॥ (গ)
কালী হাড়ি ফেলি মাবে কোণের বহুড়ী॥ (দী)

'ভাঁড়ুর লাঘবে বীর ছঃখ ভাবে বড়ি।'
কুপা করি পুনর্কার দিল ঘর-বাড়ী॥
ন্তন মঙ্গল কবিকঙ্কণে ভণে।
ঠগ নাবড় এই কথা কর্ণ পাতি শুনে॥

কালকেতুর শাপাস্ত

গুজরাটে কালকেতু খ্যাত হৈলা রাজ:।

যত ভূঞা রাজা মেলি কৈল তার পূজা ॥
কোন রাজা সম নহে করিতে সমর।

পরাজয় মানি সবে দেয় রাজকর ॥

শুজরাটে রাজত্ব করিল চিরকাল।

অবনীমগুলে যশ বাড়িল বিশাল ॥

পুষ্পকেতু নামে পুত্র হৈল মহাবলং।

শুস্ববিশাস্ত্রে বিশারদ যেন বৃহয়ল॥

বিহানে বিকালে বীর শুনেন পুরাণ।
কুষ্ণের করেন পূজা হয়্যা সাবধান॥

১-১ ভাঁড়ুর **জন্ত্রনা বির হৃঃথ ভা**বে বড়ি। (খ)

২-২ পরাজয় পায়্যা রাজা পুন দেই কর॥ (খ)

৩-৩ প্রজ্বাটে বাজদণ্ড করি বহুকাল। (থ)

৪-৪ হইল প্রবল (ক) হইল ছাওয়াল (গ)

৫-৫ নানা সাজে বিসাবদ বিক্রমে বিশাল। (গ)
নানা বিভা ধিরমতি যেন বছয়ন। (দী)

পরিপূর্ণ হৈল তার অভিশাপ-কাল। মহেশের ঠাঁই গেলা দেবের ভূপাল ॥ ভ্রমঞ্জলি করিয়া হরে করে নিবেদন। দিক্পাল আদি করি শুনে দেবগণ॥ ভ্রমার চরণে ইত্যাদি॥

নীলাম্বরের জন্ম ইন্দ্রের শোক

১-১ ইন্দের পুত্তের সাপ হইল পুর্নকাল। (গ)

২-২ ইত্রের হৃদয়ে সোক বাড়িল বিদাল। (ক এবং দী)

৩-৩ ক্বতাঞ্চলি পুরস্কর করে নিবেদন। পাবক প্রভৃতি আদি শুনে দেবগণ। (দী)

৪-৪ মুক্তি-সময় হৈল (দী, গ এবং বঙ্গ)

e-e আনহ আপন কাছে (ক)

কালকেতুর প্রতি স্বপ্নাদেশ

শঙ্করে করিয়া নতি অবিলম্বে ভগবতী
পদ্মা সনে গুজরাটে যান।

°গিয়া অবশেষ নিশি বীরের শিয়রে বসি॰
কহিলেন তারে দিব্যজ্ঞান॥
স্বপন কহেন মহামায়া।
শুন পুত্র নীলাম্বর অবিলম্বে চল ঘর
সঙ্গে নিয়া ছায়াবতী জায়া॥

১-১ বিধি মোরে দিলেক জন্তনা। (গ)

২-২ স্থন প্রিয়ে নড় ঝাট সিদ্র যাহ গুরুরাট (ক)

৩-৩ বিশি ছুঁছে নিশি-শেষে বীরের শিয়র-দেশে (দী)

পূর্ববকথা মনে কর পিতা তোর পুরন্দর
পুলোমজা তোমার জননী।

সংখ্যাপ্তরে উত্থিতি সংগ্রে প্রকর্মটে স্থিতি

ব্যাধকুলে উতপতি শাপে গুজরাটে স্থিতি ঝাট চল ছাড়িয়া অবনী॥

তোর বাপ দেবরাজা করিত শিবের পূজা ফুল যোগাইতে নীলাম্বর।

দেখি ধর্মকেতু ব্যাধ ব্যাধ হইতে কৈলে সাধ তেঞি আইলে অবনী-ভিতর॥

হয়্যা বড় ব্যাকুল সম্ভ্রমে তুলিলে ফুল শ্লারুপিপীলিকা ছিল তথি।

হরের মস্তকে কাটে শিব তোরে মনে টুটে অভিশাপে গুজরাটে স্থিতি॥

তেজিল অমর লোক মাতা তোর করে শোক শোকাকুল দেব অধিকারী।

°তোর তরে বড় মোহ নয়ানে গলয়ে লোহ কান্দে তারা দিবা বিভাবরী॥°

>-> নাম তোর নিলাম্ব (দী)
স্থন পুত্র নিলাম্বর (খ এবং গ)

২-২ শ্রীফল কণ্টক রছে তথি (ক, গ এবং বন্ধ)

৬-৩ মৃত-হৃত যেমন কুররী।(দী)
মৃতহৃতা জেমন কুবেরি।(থ)
মৃতহৃতা জেমত ফুকারে।(গ)

⁸⁻৪ কেবল ভোমার মোহে নয়নে নীর বহে
ভূথে জায় দিন বিভাবরী I (দী)

কেবল চণ্ডীর বর দোহে হৈল। জাতিম্মর

মাতা পিতা 'সোঙরিয়া কান্দে'।

চণ্ডিকা করিয়া ধ্যান শ্রীকবিকঙ্কণ গান

মনোহর পাঁচালী প্রবন্ধে।

পুষ্পকেতুকে রাজ্য-সমর্পণ

প্রভাতে উঠিয়া কালু ব্যাধের নন্দন।
নিত্য নিয়মিত কর্ম কৈল সমাপন॥
প্রান্ধ চন্দন অঙ্গে আভরণ করি।
মহাবীর মনে হাই পুজে মহেশ্বরী॥
দৃত দিয়া আনাইল যত ভূঞা রাজা।
একে একে কালকেতু করে তার পূজা॥
আপনি আইল তথা কলিঙ্গ-নূপতি।
মহাপাত্র পুরোহিত করিয়া সংহতি॥
আটদিকে বাজনাতে হৈল গগুগোল।
ঘন বাজে ধার কাঁসা শিক্ষা কাড়া ঢোল।
পুপাকেতু রাজা হৈব পড়িল ঘোষণা।
নৃত্য-গীত আদি ঘরে ঘরে স্থবাজনা॥
স্থাতে রাজ্য দিব বীর মনে অভিলাষ।
শুভক্ষণে করাইলা গন্ধ-স্থিবাস॥

১-১ তোর শোকে কান্দে।(দী)

২-২ স্বপ্ন দেখি উঠে বীর্হৈয়া সাবধান। প্রভাতের কর্ম করি কৈলা স্নান দান । (দী)

পুষ্পকৈতু পুরে রাজ। কৈল গুজরাটে। অভিষেক করি তারে বসাইল পাটে n আপনে কলিঙ্গরাজা টিকা দিলা ভালে। সর্ববাজা ছাতা ধরাইলা শুভকালে 🗈 ৈহেন কালে রাজাগণ করে নিবেদন। কুপাময় তুমি বীর দেবতা-নন্দন ॥১ ংআপন তনয়ে সবে কর সমর্পণ। তোমার সমান যেন করেন পালন 📭 এমন শুনিয়া সব রাজার বচন। পুষ্পকৈতু হাতে হাতে কৈল সমর্পণ ॥ सर्ग याव विन वीत फिल्म (चार्या)। ঘরে ঘরে গুজরাটে উঠিলা ক্রন্দনা॥ হয় জুড়ি মাতলি যোগায় পুষ্প-যান। তথি চড়ি নীলাম্বর দ্বিজে দেয় দান 🛚 বাম ভিতে বৈসে তার ফুল্লরা স্থন্দরী। পরম রূপসী কন্সা রূপে বিভাধরী ॥° পদ্মাবতী সঙ্গে চণ্ডী যান আগে রথে। • সিদ্ধণণে নমস্কার করে বীর পথে॥ অভয়ার চরণে ইত্যাদি ॥**•**

>-> রাজাগণ মিলী তথা জোড় কৈলা কর। আনীর্কাদ কর তুমি চণ্ডীর কিছর ॥ (দী) .

২-২ হেনকালে মোহাবীর বলেন প্রণতি। স্ভাকারে শম্পিলা আপন সম্ভতি । (দী)

৩-৩ মোহন-ম্রতি বামারপে বিভাধরী॥(দী এবং বৰ)

⁸⁻⁸ निःश्काल (मी)

²⁹⁻²³⁰⁸ B. T.

নীলাম্বরের ম্বর্গারোহণ

পুষ্পক-বিমানে চাপি হৈলা বীর দেবরূপী লুকাইল মান্ত্র্য-মূর্তি।

মর্ত্তো রাখি কীর্ত্তি শেষ নীলাম্বর যান দেশ সঙ্গে লৈয়া জায়া ছায়াবতী ॥

বায়্বেগে রথ ধায় উভমুখে লোক চায় পুষ্পকেতু উভরায় কান্দে।

গুজরাটে যত নারী কাঁদে বুকে ঘাত মারি কেশপাশ কেহ নাহি বান্ধে॥

যান বীর 'ব্যোম-পথে' মাতলি সার্থি সাথে 'জিজ্ঞাসেন মায়ের বারতা।'

ত্রিদশগণের নাথ কেমন আছয়ে তাত ত্বহ সর্ব্ব সুরপুর-কথা।।

•

সন্থা যত দেবগণ কহ তার বিবরণ কহ স্থরপুরের কল্যাণ।

কেবা দেবতার রাজা কেবা করে শিব-পূজ। কেবা এবে কুসুম যোগান॥

মাত*লি কহে*ন কথা কুশলে আছেন মাতা কলাাণে আছেন পুরন্দব।

প্রাণে আছে সবে ভাল ^৪তোমার বিহনে কাল⁸ ইবে ফুল যোগান প্রবর ॥

১-১ জম-পথে (দী)

२-२ क्रिकां निल चरत्र वांत्र । (थ এवः १)

৩-७ कर भारत समज्ज कथा। (भी)

৪-৪ তোমা দেখি হবে আল (থ এবং দী)

ঘরের কথাতে মতি রথ যায় শীস্ত্রগতি
উত্তরিলা মন্দাকিনী-কুলে।

চণ্ডীর আদেশ পেয়া। সঙ্গে ছায়াবভী জায়। স্নান দান কৈল তার জলে।

স্নান করি নীলাম্বর ধরে পূর্ব্ব কলেবর নাট্য়া ফিরায় যেন বেশ।

ইন্দ্র হাগ্নি দণ্ডধর জলাধিপ নিশাকর কুরের বরুণ সমীরণ।

শিরে দিয়া দূর্ব্যা-ধান নিছিয়া ফেলিলা পান ব্যবহার কৈলা নানা ধন ॥

ং আইলেন জৈমিনিং ব্রহ্মস্থতা বীণাপাণি বশিষ্ঠ অঙ্গিরা পরাশর।

॰কুশাস্থ করিয়া দান॰ উচ্চস্বরে বেদ গান অভিযেক লয় নীলাস্বর ।

ংদৈন্য শোক তৃঃথ খণ্ডি নীলাম্বরে নিয়া চণ্ডী চলিলা শঙ্কব-সন্নিধান।

কুপা-দৃষ্টে হর চান নীলাম্বরে দিলা পান পুনর্বার কুমুম যোগান।

মহামিশ্র ইত্যাদি॥

১-১ আগে রাজা হটব ষ্বেষ। (খ)
আপনে রাজা আইলা স্থকেন। (গ)

২-২ তুৰ্বা লোভে মীলী মূনী (দী)
আইলা তুৰ্বাদা মূনি (বন্ধ)

७-७ कुन इट्ड कवि मान (थ)

৪-৪ অশেষ-ছ্রিড-খণ্ডী (দী) নিলাধ্যের সাপ খণ্ডি (গ) 'পুত্রের বারতা শুনি শচী আনন্দিতা। উঠানেতে চান্দয়া টানায় চারিভিতা॥ পুত্রবধূ নিছিয়া ফেলিল শচী পান। শুভক্ষণে ঘরে দোঁহে করিল পয়ান॥'

নীলাম্বর হৈতে হৈল পূজার প্রকাশ।
সাঙ্গ হৈল বীরের পূজার ইতিহাস॥
নীলাম্বর স্বরপুরে রহিল হরিষে।
পদ্মাবতী সঙ্গে চণ্ডী গেলেন কৈলাসে॥
কৈলাসে রহিলা হর-গৌরী ছই জনে।
ধনপতির জন্ম কথা শুন সাবধানে॥
খেলেন পাশার খেলা আনন্দিত মতি।
একাসনে বসি দোঁহে শঙ্কর-পার্ববতী॥

১-১ পুত্রের বারতা পায়্যা আইলা ইন্দ্রাণী।
নৃত্যগীত উলশীত নানা বাঅধ্বনী।
জতেক মাঙ্গল্য বস্তু স্থাপে স্থানে স্থানে।
পুত্রবধু উর্থীয়া লইলা নিকেতনে॥ (দী)

* শতিরিক্ত—

শতি পুরন্দর অতি উলনীত মন।
নয়নের জলে পুত্রে করিলা সিঞ্চন।
দেব ঋষি সিদ্ধাগণে দেই নানা ধন।
সানন্দে পুনীত হৈলা ইন্দ্রের ভবন।
কামনা করিয়া জেবা হ্মনে য়েই গীত।
পূর্ব কর মোহামাইয়া তার মননীত।
জার গৃহে হয় য়েই ব্রতের প্রকাশ।
সর্বাপদ থণ্ডে অস্তে হয় অর্গবান। (দী)

মণিকর্ণ কুবের-তনয় রহে কাছে। শিবের পরম প্রিয়া যেইখানে আছে। অভয়ার চরণ-পঙ্কজ-মধুকর। গাইলা পাঁচালী শ্রীমুকুন্দ কবিবর।

७कवारतत मिवाभान। माक ॥

আখেতী-খণ্ড সমান্ত।